॥ श्री ॥

श्रीधर्मशील सद्गुरुभ्योनमः

महाजनवंश मुक्तावली.

४ वर्णकी उत्पत्ति

युक्तिवारिधिः उपाध्याय श्रीरामलाल-
जीगणिः निर्मित.

[प्रकाशक]
शिष्यक्षेम अमर बालचंद्र

द्वितियावृत्ति २०००

सं॥ १९७८ सन् १९२१.

पुस्तकका पत्ताः—उपाध्याय श्रीरामलालगणि, बीकानेर
मारवाड मोहल्ला, रांघडी

निछरावल २॥)

प्रिंटर —रा. रा. चिंतामण सखाराम देवळे, मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स् ऑफ
इंडिया सोसायटीज् बिल्डिंग, सँढर्स्ट रोड, गिरगाव-मुंबई

प्रकाशक—शिष्यक्षेम अमर-बालचंद्र, बीकानेर मारवाड मोहल्ला, रायडा.

॥ श्री ॥

॥ अथ प्रस्तावना ॥

धर्म्म मुख्तम् जैन धर्म्मी महाजन महाजन वंश मुक्तावली जो मैंने संग्रह करी है उसमें वृहत खरतर भट्टारक गच्छके श्रीपूज्यजी महाराज बीकानेर बिराजितके दफतरका मुख्य आश्रय तद्वत श्रीबीकानेर बड़े उपाश्रयके ज्ञान भंडारका आश्रय महोपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी उ। श्री आसकरणजी पं। प्र। श्रीमोतीचंद्रजी उ। श्रीलक्ष्मणजी तथा हमारे परमगुरु सम्यग् दर्शन ज्ञानवन दाता पंडितशिरोमणि साधुजी महाराज इत्यादिकोंके श्रीमुखसे श्रवण करा जो जो प्राचीन इतिहास उपलब्ध हुआ वह मैंने लिखा है यदि मेरी अल्पज्ञताके कारण लिखनेमें भूल रही हो तो सज्जन जन क्षमा प्रद होंगे किसी भी महाशयका चित्त दुखानेके लिये उद्देश नहीं किंतु सत्य लिखना धर्म्म है चंद्रमें शीतलता सूर्यमें उष्णता समुद्रमें क्षारता इत्यादि अनेकानेक गुणवाले पदार्थोंमें अंशासेंस किंचित अपगुण भासमान है लेकिन वह चंद्र आदि पदार्थोंके अपगुणभी प्राणी जनोंके लिये हितावह ही है यदि किसीको न हो तो क्या यथा चंद्र किरण राशि विरही जनोंको अप्रिय है तथापि सर्व्वजनक अप्रिय नहीं सूर्यके प्रकाशमें उल्लूकको नहीं दीसता तो सूर्यका प्रकाश सार्व्वजनक अप्रिय नहीं ऐसा कोई कार्य नहीं जिसमें दूषण खलजन नहीं देते यथा त्यागवैराग्य सर्व्वजन सम्मत है तो उसमें भी एकसमाजके त्यागी दूसरे समाजके त्यागीमें अनेक दूषण निकालते हैं यदि एकांत ध्यान करने कोई स्थित हो तो अन्य समाजके जन उसको खुदगरजी कहते हैं यदि ज्ञानकी उत्कृष्टता प्राप्तकर अन्य जनोंको सदुपदेश दे खुदगरजी पना त्यागता है तो अन्य समाजके मनुष्य कहते हैं परोपदेश देनेमें ही तत्पर हैं आपका उद्धार यथा करा यदि विरक्तता धारकर भिक्षावृत्ति करता है तो अन्यसमाजके जन कहते हैं पुरु- षार्थहीनहोकर पराये की आशा त्यागी- नहीं यदि परासा है तो विरक्तता कहां यदि वनोवासी हो नग्नपने नदीका जलपान वृक्षोंसे गिरे फल पुष्पसे निर्वाह करता है तो अन्य समाजके जन कहते हैं यह जीव अदत्त सचित्तजल सचित्तफला- दिखाते हैं इस लिये ये साधु नहीं इस प्रकार जन्मसे ब्रह्मचर्यधारी रहता है तो अन्यसमाजके जन कहते हैं यदि ऐसे सर्व्व मनुष्य समाज हो जाय तो संसारका नाशही हो जाय और राज्य धर्म्म वर्त्तमान समयका गृहस्थ पन श्रेष्ठ मानते हैं

इत्यादि कारणोंको विचारते है तो गुण मेंभी अपगुण निकालनेवाले जगतमें विद्य-- मान है इस लिये बुद्धिमानोंने बुद्ध्यानुसार सत्मार्ग हितावह जो हो उसमें यथा शक्ति प्रवर्त्तना, लोकतो चंद्रको भी हसते है और प्याडलको भी हसते है सर्व्वजनकी एक सम्मति हुई न होगी इति

यत तथापिक्रियतेग्रंथशाति यद्यपि दुर्जना, नहि दस्युभयाल्लोका दैन्यवानिह वर्तते १ [अर्थ] ये श्लोक वैद्यजीवनमें लिखा ह तो भी ग्रंथ करता हु यद्यपि दुर्जन जन है यथा चोरोके भयसे संसारके लोक क्या दीन दलिद्री बणते हैं, कदापि नहीं, यतः खल सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति ॥ आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति २ [अर्थ] ये श्लोक चाणक्य ब्राह्मणने सहानशाहचंद्रगुप्तके कथन करा है, दुष्ट मनुष्य सरसवप्रमाणभी परछिद्र देखते हैं अपणा दुर्गुण बिल प्रमाणको देखता हुआ भी नही देखता २,

इसलिये बुद्धिमना वह कहाती है यदि किसीने उपदेश देते दुर्गुणोंको त्यागना बतलाया तो वर्ण जहांतक अपना वा अपने समाजको सुधारनेका प्रयत्न करे यदि दुर्गुण नहि त्यागा जावे पूर्वकर्म्मयोगसे तो फेर उपदेश दाता ऊपर द्वेषभाव धारण करना बुद्धिमनाका कार्य नहीं कलियुगमें सत्यवक्ता पना किसी पुण्यवत दीर्घ- दृष्टि न्यायवतकोंही अछा लगता है, बाकी तो जैसे सत्ववोले बालकने अपणी बंध्य मानाको कहा है माता, पिता तो मरगया, तेने ये सुरम २ का जल क्यों सारा ह बस तत्काल माता क्रोधातुर हो मारने दोडी तब भागते हुये सत्ववोलेने कहा सत्य कहे मांमारे, यदि मनको रुचता असत्य गुण भी किसीका वर्णन करो तो वडे लोक प्रसन्न होते है क्योंकी आज संसारमें खुसामदी ताजा रुजगार हो रहा है लेकिन् चर्पट पजरीमें स्वामी शंकरने कहा है यद्यपि शुद्ध लोकविरुद्धं नाचरणीयं २ इस प्रकार जैनधर्म्मके शक्रस्तवके अनंतर प्रणिधान दंडकमें भी लिखा है लोग विरुद्धचाओ, अर्थात् जो कार्य शुद्ध है यदि लोक विरुद्ध है तो नहीं आचरण करना पुनः ऐसा भी है सत्ये नास्ति भयक्वचित्

जैनधर्म्मपर आक्षेप करनेवालोंको निरुत्तरकर्त्ता खरतर गच्छके श्वेतांबराचार्य उपाध्याय समय २ पर विजयकर्त्ता होते रहे, विक्रमसीले शताब्दीमें श्री जिनचंद्र- सूरिः बादशाह जहांगीरके सन्मुख मसूरपठाणको धर्म वादमें जयकरा, जिनआज्ञाके लोपक निन्हवोंका पराजय करा, खरतर गच्छपर आक्षेप करनेवाला धर्मसागरजी तपागच्छीको, पाटणनगरगुजरातमें ८४ गणके उपाध्याय वाचकादि मुनिमंडल समक्ष,, शास्त्रार्थ करने बुलाया लेकिन् असत्यवादी होनेके कारण आये नहीं, केइ दिन सभा.

रही, आखिर उहां आये हुये सर्व गच्छके गीतार्थोनें धर्म सागरजीको मृषावादी समझ ८४ गणसे निकाला खरतगच्छकों जिनाज्ञा पालक विजयपत्र लिखा जिसका तांबा पत्रवाडी पार्श्वनाथजीके मंदिरके ज्ञान भंडारमें रखा, नकल सामाचारी शतकमें उपाध्याय समयसुंदरजीनें लिखी है, उससमय भव्यजीव श्री संघमें हर्षका पारावार छागया, ग्रंथ रचनेवाले आप धर्म सागरजी अपने लिखे लेखको सत्य नहीं कर सके तो उस ग्रंथकों माननेवाले खरतरगच्छका पराजय करना लिखते है विजयसारमें यह लेख स्वमताभिमानसूचक सर्वथा असत्य है, यदि सत्य होता तो विक्रम संवत उगणीश शय चोहत्तर पचहत्तर, छिहत्तर पर्यंत खरतर गच्छके मणिसागर सुमति-सागर मुंबईमें शास्त्रार्थ करने कितने छापे द्वारासूचना देते रहे लेकिन् एक भी सन्मुख परपक्षी नहीं हो सके, बस मालूम हुआ आपके विजय सारके लेखकी सत्यता वृथाकुसंपकी वृद्धि करणी, बुद्धिमत्तानहीं है,

पूना नगरमें श्रीजिन भक्तिसूरिः जीनें पेसवाराव शिवाजीके सन्मुख वेदांतमति-योंसे चर्चाकर जैनधर्मका विजयडंका बजाया, सादडीगाममें तपागच्छ वालोंनें खरतर गच्छकों जिनाज्ञा विरुद्ध कथन करा, तब शास्त्रार्थमें तपोको निरुत्तर करा, श्रीसंघ भव्य जीवप्रमुदित हुए, निर्मल जलको गदलाकरनेवाला महिष और शूकर ग्रीष्मसे तपायमान गदलाकरता है लेकिन् जल अपने शीतल गुणको नही छोडता हैं, योधपुरमें राठोडराजा मानसिंघजीके सन्मुख शभामें कारमीरी पंडितोंनं जैनधर्म का उपहास्य करके कहा जैनसनातनवाले तर्कसे अलग किये अनंतर दो घटिकाके नवनीतमें समुर्छिम पंचेंद्रीजीवोंकी उत्पत्ति तद्वर्ण कहते है, येसर्व्व मृषावाक्य अप्रमाण है, तब माहाराजानें जैनयति महाविद्वान् शंभु (शिवचंद्र) जीको शास्त्रार्थके लिये पालीसें आमंत्रन करा तब इसवाक्यके प्रत्युत्तरमें शिवचद्रजीनें एकगऊ मंगवाकर उसकी पूंछकों इधर उधरकर देखनें लगे तब माहाराजा आश्चर्यमें आकर पूछा हे गुरु पूंछ म क्या देखते हो शिवचंद्रजीनें उत्तर दिया हे नरेन्द्र प्रश्णकर्त्ता पंडितोंके मंतव्या नुसार गऊकीपूंछमे तेतीस कोटिदेवता रहते हैं इसलिये इतनी देर देखा लेकिन् एकदो भी देखनेंमे आया नही ३३ कोटि तो दूर रह ये वचन सुण राजादिक हसपडे वे पंडित लज्जितहो शिवचंद्रजीकी काव्यबंध स्तुति करी नृपनें वादिगज सिंह पद दिया इसप्रकार विक्रमशताब्दीउगणीशमें खरतर गच्छ मंडलाचार्य बालचंद्रसूरिनें नाशकमें महाराष्ट्र तेतीस पंडितोंकों जैनधर्म नास्तिक नहीं आस्तिकोंमे अग्रेश्वरी है सिद्ध कर दिया पंडितोंनें विजय पत्र लिख दिया इसप्रकार उज्जणमें पंडित रायचंद्रजी यतिनें दक्षणीपंडितोंको शब्दशास्त्र और स्याद्वादन्यायकी शेलीसें अन्य न्यायको सूर्य सन्मुख तेजहीन तारकवत् कर-

दर्शाया शिष्य नहीं मिलनेके कारण काल दोषसें यति गुरुओंकी वृद्धि तथा कालदोषसें अवशेषोंमें विद्याकी न्यूनता हो रही है

हम धारतेथे वर्त्तमानमें साधुनाम धरानेवाले कुछ उन्नती करेंगें लेकिन् ये तो परस्पर द्वेषापत्तिसें ग्रसित होते हुये अन्यदर्शनियोंको सर्वज्ञधर्मकी प्राप्तिकराने किंचितभी उद्यम नहीं करते अमूल्य समय परस्परके रागद्वेषमें व्यतीत करते हैं, यदि शास्त्रार्थ परस्परही करना होतो, शमभावसें निसल्यपने करना चाहिये, वैसा नहीं करते, केवल परस्परमें, कुसपकी वृद्धि करना यथार्थ नहीं, पकडापक्ष कोई नहीं त्यागता, उनोंने तो उसको सत्यही मान रखा है, कषायोंकी चोकडी क्षय करनाही, परम पदका सोपान है

ओर जो साधुओंके नामधारी, भाषाकी कहाणिया गीत गानेवाले है वे तो व्याकरण काव्य कोश न्यायादिकके अणपढ अन्य दर्शनियोंसें किस प्रकार शास्त्रार्थ कर सक्ते है, वे तो यति आचार्योंके प्रतिबोधे हुये, जैन समाजकों अपने कुयुक्तियोंद्वारा, अपना मतव्य मनाते, जन्मव्यतीत करते है, उन अनपठितो कीये प्रशंसा. डाक्टर हार्मन जे कोवी भी, सम्यकुतया कर गया के, संस्कृत प्राकृत अन्य २ जैन ग्रंथ बहुतोंके पढनेकी आवश्यक्ता है. इत्यादि, इनोंकी अणपठितताकों देखकर कह गया था, इत्यादि एक वार्त्ता अद्भुत इस समाजमें देखी, कोई दूसरे धर्मवाला इनका ठाठ देखने इन समाजके मनुष्यसंग उन मताध्यक्षके शमीप चला जावेतो बेठे हुये, हजार पाचसो गृहस्थ, कहने लगते है, संसारसें पार पाना है तो, श्रद्धा धारलो, इहा धनवान हो जाओगे, तब वह मताध्यक्ष अधिपति कहता हैं, कुछ जाण पना है, तब सर्व्व गृहस्थ कहते है, कुछ पूछना हो तो पूछलो, ऐसे अंतरयामी सर्वज्ञ, फेर नहीं मिलेंगें, शंका मनकी निकाल लो, तब जो इन समाजका स्वरूप जानता है, वह तो, कह देता है, मुझे कुछ भी नहीं पूछना है, और जो इन समाजके स्वरूपका, अजाण हो, कोई इनकों जवाब नहीं आवे ऐसी वार्त्ता पूछ बेठता है, बस उसी समय, उस एक मनुष्यके पीछे वे हजार मनुष्य, कोलाहल मचाते है, उसकी बात सुणने नहीं देते और बने जहातक उसकी आजीविका भग करते प्राण कष्टतक पहुचा देते है, और जो इनोंकों मालूम होती है के अमुक् विद्वान हमारी कथन करी वार्त्ताकों जैन सूत्रोसे, वा, हमारी कुयुक्तियोंको, न्याय युक्तिसे खंडन कर्त्ता है, तब अपने समाजके लोकोंकों प्रथम हीस शिक्षा देने लगते हैं, अमुक मनुष्य कुशी लिया है, अपना द्वेषी है, इससे वार्त्ता करनेसैही, पाप लगता है, ऐसा सुणते ही, घणीक्षमा तहत्त, दीनबंधु, कृपासिंधु, पृथ्वीनाथको, घणीखमा, बसवे हियाशून्य, ज्ञानचक्षुरहित,

लकीरके फकीर, बाबा वाक्यं प्रमाणं, उसही डगर चलते हे, इतना विचार नही, घर २ भीख मंगेको हम पृथ्वीनाथ क्या समझके कहते है और जो दुराचारी कुकर्म्मा परधनवचक इन समाजसैं धन ठगना चाहै उनोंके लिये यह सहज मार्ग है, बस वह इनके चरण छूअे, और इन वेषधारियोंकी, असत्य स्तुति करे, जाकर हाजरी भरे, असत्य निंदा दुसरे धर्म्म वालेकी करे, वह इनोंकों अत्यंत वल्लभ होता हे, उसके लिये, अपने समाजियोंसें कहते हैं, अमुक भायो, वाई, सत्य-वक्ता, आछो हे, तब मुख्य कहता है, विशेष आछो है बस वह इस समाजमे, ए, मे, पास हुआ, समझा जाता है, कुपात्रका दान, धर्मसै निषेध करा हे, तथापि, उदार दिलसैं देते है, ऐसे २ मत भी आर्यावर्त्तमें कालके महात्म्यसें, प्रचालित हे,--

जब तक जेनधर्म्मवाले संप्रति राजावत् जैनविद्वान पडितोंको नानादेश भाषा शिखाकर सर्वज्ञधर्म्म सायन्स प्रत्यक्ष प्रमाणसैं हितावहकी पुस्तकें छपाकर सर्व्व देशी जनों कों उपदेश नही करांयगे तावत् उदयकाल आवेगा नही दिनोंदिन जैनधर्म्मी जनोंकी शंक्षान्यून इसी कारण हो रही हे, जिन २ मतों मैंस्थान २ गृहस्थ लोक उपदेश करते फिरते है, उन २ मतांकी दिनोदिन वृद्धि हो रही हे, जैसै आर्या समाज, ईसाई इत्यादिकोंकी, देखते २ वृद्धि हो गई, जैन ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाणसें, इसभव, परभव दोनों में लाभ दायक धर्म्म उसकी दिनोंदिन हानी क्यों होती हे, इसका क्यों नहीं विचार करते हैं, ईसाई धर्म्मके गुरु, मुख्य पोपपादरी, पादरी, मुसलमान मतके पीरजादे पारसियोंके गुरु, शिव, वेष्णव, मतके, ब्राह्मन, गोकुल गुसांई, आर्या, इत्यादि सर्व्व स्त्री धन रखनेवाले है, उन उपदेशकोंके वचन, मुख्य-तया शिरोधार्य करते हैं, जैनधर्म तीन फिरके श्वेतांबरी स्त्री और धन रखनेवाला पूर्ण पडित सत्योपदेश हितकारीभी कहता हो तो, प्रथम तो सुनेतेही नही यदि सुने तो, श्रद्धा प्रतीति नही करते, त्यागी स्त्रीधनका, ऊपरसै इनोंकों दीखना चाहिये बस उसअपठकी वार्त्ता-पर भी श्रद्धा करते हे, जेन सूत्रोंमे, त्यागमार्ग, साधुजनके लिये अत्यंतही कठिन दर्शाया है, वे सर्व देशोमें पहुंचही नही शक्ते, कहांइ जाते हे तो, स्थानमे रहे व्याख्यान करते हे, उहां स्वफिरकेके विना, अन्य दर्शनी आता नही, तब जैन संक्षा कैसैं वृद्धि पावे, महम्मद साहबका मत, ओर स्वामी शंकरका मत तो, बलात्कारपनैं, वृद्धि पाया था, ऐसा करना, विद्वानोंकों मंतव्य नहीं, इस समय जैसैं ईसाई, आर्या, खुल्ले दरम्यान व्याख्यान करते हे, वैसा जैनधर्म्म वालोंनें सर्व्वत्र करना, कराना चाहिये, यदि श्रद्धा सर्व्वज्ञ वाक्य पर हो जावे, अभक्षादिक नही त्यागसके तथापि श्रेय है, यथा नेम प्रभुके

उपदेशसैं कृष्ण नारायेण महावीर प्रभुके उपदेशसैं राजा श्रेणक, इस प्रकार होनेसैं, उनोके शतान क्रमसै व्रतधारी वन जायंगे, स्त्री, धन, रखने वाले सम्यक्त धारियोंने, तथा सम्यक्त युक्त द्वादशव्रत धारियोंने, अनेक जीवोंको, जैन धर्म्मी बनाया है, स्त्री धनके त्यागी हो, उपदेश करते है उनोकों तो धन्यवाद है, लेकिन् स्त्री धन रसकरभी जो मिथ्यात्वीको सम्यक्त्व धारी वनावे उसकों अनंत धन्यवाद है।

इस ग्रथमें जैन खरतर गछाचार्य श्रीजिनदत्तसूरिः मणि धारी श्रीजिनचंद्र सूरि । तथा श्रीजिन कुशलसूरि जी आदिकोंने जो निज आत्मवलसै उपदेश देकर मत्रशक्तिद्वारा राजन् वशियों ऊपर उपगार करके जैनधर्म्मी महाजनवंशकी वृद्धि करी तदनतर विक्रम शताब्दी पनरेके उतरते जगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिन माणिक्यसूरिःके पट्टधर श्रीजिनचंद्रसूरिः गुरुदेव वीर प्रभूके जन्मराशीपर आया हुआ भस्मराशी गृहके उतरनेके समय अवतारी प्रगटे जिनोके ज्ञान और क्रियाकी प्रशंसा अनेक शतजन तथा कर्म्मचद बछावतसै श्रवण कर अकव्वर वादसा खास निज लेखणीसै फुरमाण वीनती पत्र लाहोर नगर देश पजावसे अपने निज उमरावोंको गुरुको आमत्रन करने भेजे उस समय आचार्यके ८४ शिष्यामैंसे, मुख्यशिष्य, सकलचद्र उपाध्यायके शिष्य, समयसुंदरजी, विहारमैं, सगथे, उनोने गुरुगुण, छद, अष्टक भाषावद्ध रचा है, यथा,

संतनकी मुख वाणि सुणी जिनचद मुनींद महतजती, तपजप्प करे गुरु गुज्जरमै प्रतिबोधत है भविकू सुमती, तव ही चितचाहन चूप भई समय सुंदरके गुरु गच्छपती, भेजे पतसाह अजव्वकी छाप वोलाये गुरु गजराज गती, १ गुज्जरते गुरु राजचले विचमें चोमास जालोर रहे, मेदनी तटमंत्र मंडाण कियो गुरु नागोर आदर मानल हे, मारवाड रिणी गुरु वंदनकों तरसे सरसे विच वेगव हे, हरख्यो संग लाहोर आये गुरु पतसाह अकव्वर पावग हे २, ऐजी साह अकव्वर वव्वरके गुरु सूरत देखतही हरखे, हम योगी यति सिद्धसाध व्रती सवही षट् दर्शनके निरखे टोपी वस अमावस चद उदय अज तीन वताय कला परखे तप जप्प दया धर्म्म धारणको जग कोई नहीं इनके सरखे, ३' गुरु अमृत वाणसुणी सुलतान ऐसा पतसाह हुक्कम्म किया, सव आलम मांहि अमारि पलाय वोलाय गुरु फुरमाण दिया जगजीव दया धर्म्म दाक्षणतें जिन शासन वीच शोभाग्य लिया, समय सुदर कहे गुणवत गुरु द्दग देखत हरखत भव्य हिया, ४, हे जी श्रीजी गुरु धर्म्म ध्यान मिले सुलतान सलेम अरज्ज करी गुरुजीव दया नित प्रेमधरे चित्त अंतर प्रीति प्रतीति धरी, कर्म्मचंदवुलाय दियो फरमान छोडाय संभायतकी मछरी,

समय सुंदरके सब लोकनमें नितखरतर गन्छकी क्षातिखरी, ५, हेजी श्रीजिनदत्त चरित्र सुणी पतसाह भये गुरुराजि येरे, चामर छत्र मुरा तब भेट गिगडद धृ धृं वाजियेरे, उमराव सबे कर जोड खडे पभणे अपने मुखहा जियेरे, समय सुंदर तूंही जगत्र गुरु पतसाह अकब्बर गाजियेरे, ६ हेजी ज्ञान विज्ञान कला गुण देख मेरा मन सद्गुरु रीझियेजी हूमायूंको नंदन एम अरे मानसिघ पटो धरकीजियेजी, पतसाह हजूर थप्यो सिहसूरिः मंडाण मंत्री श्वर वींजीयेजी, जिनचंद पट्ट जिनसिंहसूरिः चदसूरज ज्यूं प्रतपी जियेजी, ७, हेजी रीहडवंश विभूषण हस खरतर गन्छ समुद्रशशी, प्रतप्यो जिन माणिक्यसूरिके पट्ट प्रभाकर ज्यूं प्रणमें उल्हसी, मनशुद्ध अकब्बर मानत हे जगजाणत हे परतीति इसी, जिनचंद मुनींद चिरं प्रतपो समय सुंदर देत आशीष इसी ८ इति श्रीदादा श्रीजिनचद्रसूरिः अष्टकम् ॥

उस अकब्बर पतसाहके श्रीजिनचंद्रसूरि. खरतर गच्छा चार्यके प्रथम समागमका चित्र उस समय चित्रकारने लिखा वह बीकानेरके श्रीजी साहब के शमीप विद्यमान हे, इन खरतराचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिःकों युग प्रधान जगद्गुरु पद बादसाहने दिया

खरतर गछाचार्य, श्रीजिनेश्वर सूरिःने अणहिल पत्तनमें चैत्यवासियोंसे, जय प्राप्त करा, तब राजा दुर्लभने खरा विरुद दिया और राजा परमजिन धर्म्मी हुआ, गुरुसें शास्त्र अध्ययन करा, यह वृत्तांत गुजरातीमे छपा गुर्जर भूपावली ग्रथ, ब्राह्मणोंके रचे में भी लिखा हे चैत्यवासियोंके १७ गोत्र श्रावक, खरतरकी शुद्ध क्रिया ज्ञानको देख सुविहित पक्षमंतव्य करा, श्रीपति (ढड्ढा) गोत्र गुरुने प्रतिबोध दे श्रावक किया इनोके चंद्र सूरिः उनोंके अभय देवसूरिः इनोंके श्रीजिनवल्लभसूरिः चामुंडा [सच्चाय] देवीकों उपदेशसे वसवर्त्तीकर ५२ गोत्र श्रावक वणाये, इनोंके दादा श्रीजिनदत्त सूरिः इनोंने आतमलब्धिसें, महात्म्य प्रगटकर, अनेक क्षत्री राजा ओंका कष्ट मिटा, राजन्यवंश, माहेश्वरवंश, ब्राह्मनादि उत्तमज्ञातीवालोकों, सम्यक्त युक्त श्रावक वणाये, इनोके मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः दुसरे दादाजीने भी अनेक राजन्यवंशियोकों प्रति बोधकर श्रावक वणाये, इनोके पंचमपट्टधर दादा श्रीजिन कुशलसूरिः तीसरे दादा प्रगटे इनोंने ५० सहस्रराजन्यवंशियोंके ऊपर ऊपगारकर श्रावक गोत्र किया,

इस प्रकार खरतर बृहद्गछके युग प्रधानाचार्य गुरुदेव जैनमहाजनोका जीवित विद्यमान समय अनेक उपकारकर धन और जनसै जिनधर्म्मकी वृद्धिकरी,

देवलोक गमन करनेके अनंतर भी जो भव्यजीव भक्ति भावसै गुरुदेवका पूजन स्मरण ध्यान करते है उनोंके शंकटमै सहायता, भाग्यानुसार द्रव्यप्राप्ति पुत्रप्राप्ति आदि, अनेक मन वछितकार्य पूर्ण करते हैं, इस कलियुगमै हाजरा हजूर देव है.

प्रश्न, देव गुरुके अर्पणकी वस्तु भक्ष नहीं तो दादा गुरु देवकी चढाई हुइ सेष सीरणी लोक कैसे भक्ष समझते है [उत्तर] हेमहोदय देव वीतरागतो मुक्त शिव हो गये उनके तो मंदिर स्थापनामे गत भोग वस्तु अलीन हे, और दादा श्रीजिन दत्त सूरिः प्रथम देवलोक इकल विमानमैं चार पल्यकी आयुधारी महर्द्धिक देव हे, खरतर संघको श्रीसीमधर स्वामीसे पूछनिश्चयकर तीर्थकरोक्त दो गाथा वडगछ नायक देवभद्रसूरि देवता होनेके अनंतर समर्पण करी वह गाथा गणधर पडवृत्तिमे तथा गुर्वावलीमे लिखी हुई है, पुन. दादा श्रीजिन कुशल सूरिः विक्रमशताब्दी तेरमे सिंधुदेश देरा उरमें फाल्गुण कृष्ण अमावश्याकों देवलोक हुये फाल्गुणपूर्णमासीकों सर्व्वत्र खरतर सघको प्रत्यक्षपनें दर्शन देकर कहा वडे दादा सहावपरमगुरुसोधर्मदेवलोकमै प्राप्त हे मेरा आयु दीक्षा लेनेके प्रथमही भुवनपतिनिकायका बंध पडगया था इसलिये असुर कुमार देवपनें उत्पन्न हुआ हूं इसलिये तुम सर्व्व संघ धर्म्म ध्यानमै तत्पर रहो ऐसा कथनकर अंतर्ध्यान भये उससमय वडे दादासहावकी भक्ति कर्त्ताके मनोरथ श्री जिन कुशलसूरि. गुरुदेव पूर्णकरते है इसप्रकार चारों दादासहाव स्वर्गवासी देव है, उनोंके निमित्त करी शेषसीरणी लीन हे, उसमैसे, जो दादासाहवके सन्मुख चढाई जाती है, वह सीरणी कोई चढानेवाला नही खाता है, किंतु स्वस्थानमै रही सीरणीका भाग खानेमें दोष किंचित् भी नहीं यथा, एक श्रावक साधुगुरुको मोदकादिनैवद्य भक्षवस्तुका पात्र भरा लेकर प्रतिलाभने खडा होता है, भावभी उसका ऐसा हे, गुरु साधूजीको सपूर्ण प्रतिलाभइ, उसमैसे, साधूजी किंचित्मात्र लेते है, अवशेष पात्रमे रहा मोदकादि क्या सपूर्ण गुरुद्रव्य हो जायगा, कदापि नही, सर्व्व श्रावकजन अवशेष पात्रस्थित वस्तुको खाते है, पुनः जहागुरु महाराज उपाश्रयादिमे व्याख्यान करते है उहा श्रावक, प्रभावनाके लिये, मोदकादि गुरुके पट्टपर प्रथम आरोपणकर, अवशेषवाटते है, तो क्या वह प्रभावना गुरुद्रव्य हो जायगी, कदापि नही, इसप्रकार, दादा गुरुदेवको चढाये अनतर, शेषसीरणी, लीन है

प्रश्न, गौतमगणधरादिक महानपूर्वाचार्योंका इतना क्यो नही वहुमान स्थापनाकरके करते दादा श्री जिनदत्तसूरिः श्रीजिनकुशलसूरिः का वहुमान क्यो करते हो [उत्तर] हे महोदय गौतमादि गणधरोंकी यत्र स्थापना हे, और करी भी.

जाती है, पूजन स्मरण भी करते है, लेकिन् श्रीसंघकों सहायकर्त्ता, भक्तजनोंके वंछितपूरक दादा गुरु देवभी महान् आचार्योंकी तरे पूजास्मरणके योग्यहे, यथा सर्व तीर्थंकर एक सदृस देवाधिदेव हे, उनोंमैभी वीरजिनेंद्रका व्याख्यान कल्पसूत्रके पर्यूषणोंमे सविस्तर पनै, स्वप्न उतारणा, जन्म महोत्सव, इन्द्रशोठन इत्यादिविशेषपनै, सूत्रकार भद्रबाहुस्वामी, तैसें टीकाकार प्रकरणानुसार विशेषपनै, रचनाकरी, वैसैही व्याख्यानकर्ता व्याख्यानकर श्रीसंघको श्रवण कराते हैं, अन्य-तीर्थकरोंका, तद्वतविस्तार क्यों नही करते, तब तो प्रत्युत्तरमै यही कहना होगाके, शासननायक आसन्न उपगारी होगये, इसलिये विशेषतासें करा जाता है, इस ही प्रकार जिन २ राजन्य वंशियोंकों मिथ्यात्वका त्याग कराकर अमूल्य सम्यक्त्व रत्न दिया उन राजन्य वंशियोंकी शंतान उनोंके गुणोंसैं आभारी हो उनगुरुदेवकी स्थान २ प्रति स्थापनाकर पूजा स्मरण ध्यान करते हैं, इसकों विचार सक्ते है बुद्धिमान, यथा तपगच्छमै महान् पूर्वाचार्य अनेक ग्रंथोंके रचयिता, ज्ञानक्रिया-वंत अनेक होगये, उनोंकी स्थापना करके अद्यावधि किसी भी तपगच्छके साधु वा श्रावकोंने पूजन स्मरण नही करा था, लेकिन् पंजाब देशमै जोढूंढिये साधु पनेमें स्थितहो श्रधान परावर्त्तन होनेसें सात सहस्र ओसवाल [भावडो] को, जो की खरतरादि गच्छके थे उन्हो जिन प्रतिमाकी पूजा त्याग दीथी उनोकों पूजेरे बणाये, पीछै आप संवेगीसाधुबने ओर जैन तत्वादर्शादि केइ ८।९ ग्रथ भाषामे रच छपवाकर, प्रसिद्ध कर, जैन संघपर उपगार करा, उनोंके देवलोका नंतर, उनोके शिष्य शंतानी, स्थान २ अब आत्मारामजी [आनंद विजयसूरि] जीकी मूर्त्तिया, स्थापनकर, पुज वाते है, गौतमादि पूर्वाचार्योंकी स्थापना पूजा, क्यों नही कराई, प्रश्ण कर्त्ता महाशयजी, आत्मारामजीकी मूर्त्तियां स्थापनेवालोंसे, ये प्रश्ण नही पूछा होगा, तभी तो खरतर गणवालोंसैं ऐसा प्रश्ण छाप कर प्रसिद्ध करा है; सामान्य उपगार कर्त्ताकी मूर्त्ति स्थापकर पूजा करानी, क्योंके एक जिन प्रतिमाके पूजा प्रकरणके सर्व संबधकों वर्जके, अन्य जैन धर्मकी कृतिको वे २२ समुदाय वाले भी स्वीकार करते थे, और पूर्वोक्त श्री जिन दत्त-सूरिः प्रमुख गुरुदेवोंनैं तो मदिरामाससैं प्रवृत्ति कारक, अहिसा क्या वस्तु है, इस प्रकारके मिथ्यात्व निष्ठ राजन्य वंशियोंकों परमार्हत् बणाये, इसलिये दादा साहबका उपगार असंक्ष गुणविशेष, जिनोंकी पूजा स्मरण करना उचितही है, और दिव्य शक्तिसै मनोगत इष्ट प्रवृत्ति, आपदाकी निवृत्ति करणी, ये प्रत्यक्ष उपगार को भक्त जन कैसैं, विस्मरणकर शक्ते है, वृथा आक्षेप करणा, समदृष्टियोंके उचित नही, सुज्ञेषु किंबहुना

[प्रश्न] देवलोकमें प्राप्त भये सम्यक्त्वीका चौथा गुणस्थानक है, और सम्यक्त्व युक्त व्रतधारीका पंचम गुण स्थानक होता है, प्रमाद में वर्तमान साधुका छट्ठा गुणस्थानक, अप्रमादीका सप्तम गुणस्थानक होता है, इसलिये श्रावक और साधु चतुर्थ गुणस्थान प्राप्त देवताका वंदन पूजनस्मरण कैसे कर सक्ता है, [उत्तर] हे महोदय जैसे वर्तमान जिन वंदन पूजनयोग्य होते हैं, तद्वत भावी जिन भी वंदन पूजन योग्य होते हैं, जब प्रथम तीर्थंकर, ऋषभदेवजी. इस अवसर्पिणी कालमें, इस भरत क्षेत्रमें हुये उस समय उन्होंने भरतचक्रीके पूछनेसे आप तुल्य आगे २३ तीर्थंकरोंका होना फरमाया, केवल आयु, देहमान, वर्णादिकका भेद कथन करा, तद नंतर भरतचक्री कैलाश [अष्टापद] पहाड ऊपर सिंह निषद्या प्रासाद बनाकर चोवीस तीर्थ करोंकी प्रतिमा विराजमान करी, यह कथन आवश्यक सूत्रकी निर्युक्तिमें श्रुत केवली भगवान भद्रबाहुस्वामी कृतमें है, इस प्रकार भगवान् ऋषभ तथा ऋषभ पुत्र ९९ मुक्ति कैलाश ऊपर गमना नंतर निर्वाण स्थानपर स्तूप कराया, यह कथन जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र में है, इस प्रकार ऋषभ देवजीके चतुर्विध संघ प्रतिक्रमण षडावश्यक में दूसरा आवश्यक चउवीस थव [चतुर्विंशति संस्तव] करते थे वह लोगस्सके पाठ में सर्व श्रावक प्राय जानते हैं, वह वंदन पार्श्वनाथ स्वामीतक करा, उस में आगामी भावी जिन जो द्रव्य निक्षेप में थे. उनोका वंदन करणा प्रगटपने सिद्ध है, इस कथनानुसार, सीमंधर स्वामी तीर्थ करने, जिन दत्तसूरिको, एक भवावतारी, मोक्ष गमन, फरमाया है, इस लिये वंदन पूजन स्मरणके योग्य निश्चय दादासहाब है, १ दूसरा प्रमाण ऐसा है, नंदी सूत्र में, २२ मी गाथा में जिनके लिखे हुये सूत्र अर्द्ध भरत में प्रचलित हैं, तंवंदेखंधलायरिए उन खंधिला चार्यको वंदन करीहे इस प्रकार २७ पट्टधारी आचार्य देव ऋद्धिगणि: पर्यन्तको, उनके शिष्य सूत्र लेखक देववाचक आगमोकी सूंद लिखते वंदना करी है, प्रभव स्वामीसे लेकर पंचम कालमें जितने जैनाचार्य शुद्धज्ञान क्रिया भगवतकी आज्ञाके आराधक हुये, होते हैं, होयगें, वेसर्व देव लोक में देवता हुये हैं क्योंकि जंबूस्वामीके अनंतर मुक्तितो गये नहीं, नंदी सूत्र में २७ आचार्योंका वंदन लिखा और पढनेवाले करते हैं, सर्व जैन धर्मी नवकार मन्त्रका स्मरण करते हैं, उस में तीनों कालके, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओंको, वंदन करते हैं, वे सर्व पंचम आरे में हुये, होयगें. होते हैं, वे सर्व देवगति धारकको वंदन हुआ वा नहीं, इस लिये ये शंका वृथा है, दादासाहबकी स्थापना गुरु पदकी है, नतु देव पदकी

जो सूत्र वा न्यायसें युक्तिप्रमाण नहीं मंतव्य करे उनोंके लिये स्वरतार्गाद्रिवानी

फोजदारीका कायदा क्या कर सकता, अपने पिताकों पिता भावसै न माननीय करे, तो उसका, प्रतीकार कायदेमै क्या है, लोकीक मैं वह प्रशंसा पात्र नही कृतघ्नीयोंका, शिरोमणि कहाता है,

उन गुरुदेवके शंतान जती साधुओ ने जिनधर्म्मपर महान् आपत्तिया अत्याचारीयोने डाली, उसकों स्वशक्त्यानुसार निवर्त्तनकर लाखों जैन शास्त्र भंडार जिनमंदिर, जिनमूर्त्तियों, जैनतीर्थोंको यथास्थित रखलिया, संघ की आपदा भी, निवर्त्तनकरी, ऐसें जैनधर्म्मके आदि रक्षक धर्म्मोपदेशक, व्रत प्रत्याख्यान करने, करानेवाले, सामायक प्रतिक्रमण पौषध श्रावकोकों करानेवाले, सूत्र प्रकरणादिके व्याख्यानकर्त्ता, मंत्र, यंत्र, चूर्ण, अंजनादि सिद्ध प्रभावक, कविप्रभावक, जोतिषादि निमित्त प्रभावक, लिखत पठत जीवाजीवादिनवतत्वके अध्यापक, इत्यादि अनेक गुणोंसें संघके उपकारकर्त्ता, यती वर्गके उपकारोसै लायकवद कदापि दूर नहीं होगें,

लेकिन् वर्त्तमानमै भारतग्रंथमै लिखा दृष्टांतकी सफलता दृष्टिगोचर हो रही है, जब पांडवोंका वनवास हुआ, तब राजायुधिष्ठिर ब्राह्मणकों संगले वनदेखने निकले आगे देखा तो एकगऊ अपणी जन्मित वत्साका स्तनपान करती है, ब्राह्मणसै पूछा, हे भूदेव ये उलटी गति क्यों, हो रही है, ब्राह्मननैं कहा, हे राजन्, ये कलियुग भावी स्वरूप दर्शाता है, कलियुगमैं, मातापिता पूत्रीका द्रव्य भक्षण करेंगै, उसका ये दृष्टांत कलियुग दर्शा रहा है, आगे जाकर देखातो, चंपक वृक्षके कंटक धूल पत्थर लोकजन डालते है, और उसके निकटवर्त्ती बंबूलका कंटक वृक्ष उसकी पूजा प्रदक्षिणा वंदन नमन स्तुति पुष्पमाल धूपोत्क्षेपन आदि कर रहे है, धर्मराजनैं ब्राह्मनसै पूछा ये असमंजस स्वरूप क्यों हो रहा है, ब्राह्मननै कहा, कलियुग भावी स्वरूप दर्शता है, आगे निर्विवेकी कलियुगी मनुष्य, गुणवंत जनसै द्वेष रखेगै, दुःखदेगें, और निर्गुणी, विद्यारहित, मिथ्या वासितोंकी सेवा, पूर्वोक्त विधि बहुमान करेंगें २, आगे चलकर देखा तो, तीन पुष्करणिया, समश्रेणी है, प्रथम पुष्करणीका जल उछलता है, वह दूरवर्ती, पुष्करणी मै जाकर गिरता है, शमीपस्थपुष्करणीमै एक बिंदू मात्र भी नही गिरता, तब धर्मराजने पूछा ब्राह्मण कहता है कलियुगमै, जो निज होंयगै, उनोंकों द्रव्यादिनहीं देगे, अन्यजनकों विशेष देनेमै प्रीति श्रीमंत जन रक्खेगें ३ इत्यादि कलियुगमैं प्रवर्तनाके आगामी दृष्टात सार्द्धशतमित कहे है, वह तो कलियुगी स्वरूप अवश्य प्रभाव दिखाने लगा है

वाजे जैन गृहस्थ यती जनोंकों उपदेश देने लगते है, आपकों द्रव्यसैं क्या करणा है, लेकिन् जिनोंसे शरीरकी ममता छूटे नहीं, उनोकों तों द्रव्यकी अवश्य वाछा रहेगी, यदि इनोसैं त्यागी पना पूर्णतया निभसके तव तो जो जाणकार होता हे वह यती तो अवश्य द्रव्यका त्यागी हो जाता हैं, कहनेकी आवश्यक्ता नहीं, लेकिन् विचार करना चाहिये यदि यती गुरुजनोंकों श्रावक जननगद द्रव्य नहीं भेट करतें तो, यतिगुरु कैसै द्रव्य रखते, असाढमैं पछे वडी पर्यूषणोंमै व्याख्यान पूर्ण होनेपर, तपश्याके पारणे, ओसरमैं, विवाहमैं, इत्यादि अनेक स्थानपर, द्रव्यदानके लिये पात्र सम्यक्त्वी व्रतधर मानकर भेट करना सुरुकरा, वह ही अद्या वधि प्रचलित हैं, इस आभ्यासै यति, श्रावक जनोंके लिये धर्म्म उपदेश करने उपाश्रयमै, तथा गृह ऊपर पर्यंत भी जाते है, यदि आश्यात्याग दे तो, निस्पृहस्य तृणं जगत् ऐसा स्वरूप वणजावै, लेकिन् यह भी स्मरणमै रहे, श्रावक जो जैन धर्म्म सनातनकों मतव्य करनेवाले हैं उनोंके केई धर्म्म कार्य मंदिर उपाश्रयके, द्रव्यधारी यति गुरु विना, नहीं निकलेगें, जिन २ क्षेत्रोंमै, जैन गृहस्थोकों, यति पंडितोंका सहवास रहा, वे तो जिन धर्म्म पर स्थित रहे, और जिनोकों, यति पडितोंका, सहवास, नहीं रहा, वे अमूल्य चितामणि रत्नसमान, जिन धर्म्मकों, अज्ञानपणे, त्याग कर, मिथ्यात्वियोंकी सगतसै, मिथ्यात्ववासित हो गये, काशीस्थसन्यासी, महान्यायवेत्ता, रामा श्रमाचार्यजीनै, व्राह्मन, सन्यासियोंकी, शभामै, मुक्तकंठसै, भाषण करा था, की, जैनधर्म्मका, स्याद्वादन्याय दुर्ग, ऐसा अभेद्य, और दृढ है, इसको, कोई नही खंडन कर शक्ता, और जिन २ महाशयोंनैं, इसके खडनार्थ लेखनी उठाई, वे वालचेष्टावत्, विद्वानोंके सन्मुख, हास्यास्पद, माने गये है, इसके स्वरूपको, प्रथम समझले, वह कदापि स्याद्वादीके सन्मुख, तर्क नहीं करेगा, अद्यावधि जितनें श्वेताम्बर जिन धर्म्मी श्रावक हैं, उनोंका जिन धर्म्म, यतियोकी सगतिसैं ही, रहा है, अव चाहै जिनके उपदेशका लाभ मतव्य करे, अब तो यतिविद्वान ही समयके फेरसै, अल्पही रह गये, तादृसलाभ सर्वत्र प्राप्तही कैसै हो,

जिन मंदिरोंसैं जैनधर्म्मकी प्राचीनता अन्य दर्शनियोंकों भी विदित हुई, संवत् १९७५ के वर्षके मासिक पत्र प्रयाग सरस्वतीनै लिखा है मथुरामै पृथ्वी तल खोदते एक जिन मंदिरका तोरण लेखयुक्त निकला हे उस पर लिखा हे शिवयशानै अर्हतकी पूजाके अर्थ ये जिन प्राशाद कराया, महावीरजीद्विवेदी सरस्वती संपादक लिखते है, नोट मैं, यह जिन मंदिर, ईशवी सन्के, केइ शताव्दी प्रथमका वना हुआ, अंगरेजविद्वानोंनै सिद्ध करा है, वह

लखनेऊके अजायब गृहमें, अंगरेज सरकारनें रखा है, इस प्रकार जिन मंदिर जिन मूर्त्तियोंद्वारा जैनधर्म्मकी प्राचीनता, अन्य दर्शनियोंके दृष्टि गोचर विश्वास करने योग्य हो रही है, क्यों कि बहुतसे जिनधर्म्मके द्वेषी जिन धर्मको विशेष प्राचीन नहीं मानते थे, लेकिन् जिन मंदिरोंके प्राचीन प्रादुर्भावसें उनको भी जिनधर्म प्राचीन है ऐसा मानना पडा है.

इस भरतक्षेत्रमेंकेइयक मत मतांतर प्रथम होगये लेकिन् उनोंका नाम निशान तक अन्य दर्शनी नहीं जानते, यथा श्वेतांवर भगवती सूत्रमें गोसालेका कथन है, लेकिन् दिगांबर जैनी नामधारकोंके पुराणोंमें उसका नामचिन्ह पर्यंत भी नहीं है, श्वेतांबरोंका ग्रंथ लेख, प्रथम आर्यावर्त्तमें रहनेवाले जो बोद्धोंने गोसालेको वीरप्रभुसंग दृष्टिसें देखा था, वे बोद्धग्रंथमें लिखते हैं, निग्रंथ महावीरका एक शिष्य गोसाल कभी था इस न्याय श्वेतांबरोंका ग्रंथ लेख सत्यप्रतीति करनें योग्य है, गोशालेके मतको माननेवाले उसशमय ११ लक्ष श्रीमत गृहस्थ थे, और महावीर स्वामीके यथार्थ धर्म्मानुयायी सौराजा और एकलक्ष गुणसठ सहस्त्रव्रतधारी गृहस्थ श्रीमंत लिखा है, लिखनेका तात्पर्य ऐसा है, इग्यारेलाखके मताध्यक्षका नामचिन्ह तक आर्यावर्त्तमें नहीं रहा, और जैनतीर्थकरोंकी प्राचीनता और होना अन्य दर्शनियोंमें क्यों-कर प्रगट होगई, सम्यक्त्वधारी श्रावकोंके जिनमंदिर करानेके प्रभावसें इसप्रकार गोशाले आदिपूर्व्व मतांतरियोंके गृहस्थ मंदिरमूर्ति बनवाते तो, इससमय उनोंका होना अन्य दर्शनी भी स्वीकारते, ऋषभदेव के शमय पर्यंतकी भी मूर्तिया अद्यावधि मिलती है, क्योंके निर्विवाद सिद्ध है, जैनगृहस्थ असंक्षकालसें जिनमंदिर, जिनमूर्ति कराते चले आये, [प्रश्न] जिनमंदिर जिनमूर्ति, पुनःउसकी पूजामें जल, पुष्प, अग्नि, फलादि आरोपण करना, हिंसा है, और हिंसाका कृत्य जिनधर्मी श्रावक कैसें करे, [उत्तर] हे भव्य यह तो तुमभी बुद्धिसें निर्धार कर सक्ते हो, विना तीर्थ करके भक्त श्रद्धानवाले विना जिनमंदिर कोन करावेगा, और वेही जिनमंदिर कराते चले आये हैं, और तीर्थंकरके भक्त श्रद्धावंतको, मिथ्यात्वी कहे, वह मिथ्यात्वी जिनाज्ञाका विराधक होता है तुम विचार लो तीर्थकरकी श्रद्धा भक्ति मिथ्यात्वीको कैसें हो सके, जिनमंदिरोंके करानेवाले निश्चय सम्यक्त्ववंत सिद्ध होते हैं, मिथ्यात्वी वोही कहाता है जो तीर्थंकरसें वे मुख हो, अब रही ये कुतर्क की, पूर्वोक्त विधिमें हिंसा है, सो स्वरूपहिंसा यत्किंचित् एकेंद्री जीवोंकी दिखती है जिनमंदिर, जिनप्रतिमा, कराने, वा पूजामें, तबतो तुमलोकोने उपवास, बेला, तेला, अठाई, पक्ष, मासक्षमणादि तपस्याको भी त्यागदेना चाहिये, इस मनुष्य देहधारीके शरीरमें, बेइंद्री, तेंद्री, त्रसजीव भी असंक्ष है, चूरणिये,

गिडोले, जूं, लीख, चर्म्मजूं आदिक २० जातिके, पन्नवनासूत्रजीवपदमै, अर्श मे, कठवेलमैं, द्विन्द्रियजीव कहा है नारूकों, बेइन्द्री जीव कथन करा है, उनोंका जीवतव्य मनुष्यकृत आहारपानीसै है, जबउपवाशादिमैं, उन जीवोंकों, आहारपानी नहीं मिलता, तब वे, मर जाते हैं, अब तुम विचार करो, धर्म्मके अर्थ असंक्षजीव हलते फिरतेको, मारना, ये हिसा विशेष, वा जिनमदिरादिमैं, एकेन्द्रीजीवोंकी हिंसा बताकर त्यागदेना, वह विशेष, इसलिये ही आचारांगसूत्रमै, लिखा है

आसवासेनिरासवा, निरासवासेआसवा, अर्थात् आश्रव वह निराश्रव, निराश्रव वह आश्रव, धर्म्मकार्यमै हिंसाकी दलील करणी, जिनाज्ञासै विरुद्ध है सर्व्व कार्यमै इरादा (भाव) अनुसार, धर्म्म, और पापका बंध होता है

प्रतिष्ठाकल्प नामग्रंथ १० पूर्वधर श्रुतकेवली भगवान वज्रस्वामीका रचा हुआ है, इस लेखानुसार, जिनमंदिर, जिन प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई जाती है,

१२ कालीके अनंतर ८४ आगमोंमैं २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्त्ति आदि १६३ शलाका पुरुषोंका इतिहास, श्रावकोका जिवन चरित्र आदि पूर्ण पनै नहीं लिखागया, अन्य २ अनेकस्थल जैसै दृष्टिवाद विछेदगया वा ११ अंगमै बिंदुमात्र-स्थल लिखागया, वाकी पूर्वधारियोंने, वा श्रुतधर आचार्योंनै, जो लिखा, वह घोर जुल्मसैं बचेबचाये लाखों शास्त्र जैनके विद्यमान है, पाटन, पट्टन, खभायत जेसलमेरादिकोंके भंडारोंमै, वे शास्त्र जैनधर्म्मके अगाध ज्ञानका परिचय दे रहे है, सूत्रोंमै विशेषतया साधुमार्ग काही उल्लेख लिखागया, श्रावकोकी दिन-चर्या, रात्रिचर्यादिक आचार विचार, श्रुतधर आचार्योंनै गुरु परंपरागत श्रवण करे हुये प्रकीर्णलिखे उसमै मिलते है,

ओसवाल मरुधरदेश वासतव्योंसै दान लेनेवाले १६॥ जातिके भोजक मग जाति अपनेको साकलद्वीपी कहते है, लेकिन् काशी गयाके देशमै वसने वाले, साकलद्वीपी ब्राह्मन और हैं, वे भी भोजक कहाते है, काशीमे उनोंनै अपणी ब्राह्मनोंमैं, श्रेष्टता सिद्ध करने, संस्कृतमै पुस्तक छापी है, उन भोजक साकलद्वीपियोंसै, इन भोजकोंसै कुछभी संबंध सिद्ध नहीं, इन ओसवाल मारवाडियोंके, भोजकोंका, इतिहास, टाडसहाबके लिखे, राजपूताने इतिहाससै, सबंध मिलता है, तत्व क्या है, वह तो सर्वज्ञ जानें,

ब्राह्मन ज्ञाति मुख्य तो एकही स्थापित हुई यथावेदोक्त श्रुती है, ब्राह्मणोमुख-मासीत्, जैन धर्मवाले भी माहण [ब्राह्मण] संज्ञा सम्यक्तयुक्त उत्कृष्ट द्वादश व्रत धारक, उभयकाल षडावश्यक, तथा षट् नियम नित्यधारक, पांचसै मनु-

ष्योंका नाम प्रचलित प्रथम हुआ, उनोंमै आज्ञाकर्त्ता आचार्य्य कहलाये, वाचना देनेवाले उवझाय [उपाध्याय] कहलाये, उवझायशब्द जैनसूत्र प्राकृतका है, वृद्ध बहु श्रुती आर्श कहलाये, कल्याणकारी तपकर्त्ता कल्याण कहलाये, विस्तार अर्थयुक्त व्याख्याकर्त्ता, व्यास कहलाये, आगे जिनोंके वाक्य हितावह वह पुरोहित कहलाये, एवंज्ञाति उन माहनोंमे नानाकारणोंसे होती गई उसके अनंतर इनोंमें भेद हुआ ऐसा जैन धर्म्मका मंतव्य है, तदनंतर दिनोंदिन वृद्धि होनेसें देश २ मे भिन्न भिन्न वसनेसै, देशोंकी अपेक्षा जाती स्थापित होगई यथा सारस्वता कान्यकुब्जा, गौडाउत्कल मैथिला, पंचगौड इतिक्षाता, विन्ध्यो उत्तर वासिनः १ इसप्रकार द्रविडदेशकी अपेक्षा पंच द्राविड कहलाये

सर्व ब्राह्मणप्राय अपनेकों इनदशोंके अंतर्गतही मतव्य करते है, जिसमै सरस्वती नदीके शमीपवर्ती सारस्वत कहलाये कनोजदेशवास्तव्य कनोजिये कहलाये, (सरवर) केशमीपवर्ती सरवरिये, गौडदेशवासी गौड, गुजरातके वास्तव्य गुज्जर गौड, उत्कल देशवास्तव्य उत्कल कहलाये, मिथिलावास्तव्य, मैथिल कहलाये, संखारङ्षीऋषिकी शंतान शरस्वाल, पाराश्वरकेपारीक, दाधीचके दायमे, खंडेलाके शमीपवर्ती खंडेलवाल, भृगुऋषिकेभार्गव (दूसर) इत्यादि अनेक भेदातर गौडोके इससमय है, द्राविड, कर्णाटी, तैलिग, महाराष्ट्र, औदिच्य, गुज्जर, इनगुज्जरके भेद्रातर, श्रीमाली, पुष्करणे, गूगली, तैलिगके भेदातर भट्ट, गोस्वामी, इत्यादि है, साकलद्वीपी भोजक, राजगुरुप्रोहित, भोजक, चौबे, सनाढ्य, पांडे इत्यादि ८४ भेद्रांतर माने जाते है, जिन २ जातिकी पुरानोंमे, उत्पत्ति लिखी है वह पीछैबने सिद्धहोते है, और जिसकी उत्पत्ति पुराणोमे नही लिखी है, वह सनातन प्राचीन ब्राह्मण सिद्ध होते है, (उदाहरण) पुष्करणे ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति किसीभी देवतासे, वा अमुक ऋषिके शंतान ऐसा लिखत नही देखनेमे आता, इसन्याय, जबसे ब्राह्मणवर्णकी स्थापना प्रचलित हुई तब हीसै पोसह करना ब्राह्मण हुये, ये बलात्कार सिद्ध होता है, सूर्यचंद्रादिग्रह, इंद्रादिकदिव्य शरीरधारी देवोकी तेजोमई प्रतिछाया उनोंकी ये पहचान है, उच्च दरजेके देव, मनुष्य लोककी दुर्गधिके कारण, एकाएक मृत्युलोकमै, आते नही, किसी तपेश्वरीके तपासिद्धिसे, वा पूर्वभवके स्नेहके वश ध्यानके वस आते है, तो भूमिसे स्पर्श उनोंका पाव नही होता, न्यूनमैं न्यून चार अंगुल पृथ्वीसें अधर रहते है, आंख नही टमकारते, पुष्पमाल कंठस्थ नही म्लान होती, मनमै धारे कार्य करने समर्थ, इतने चिन्ह दिखाई दैतो, देव समझो, अन्यथा मनुष्य, मनुष्यलोकमै तथा वागवगीचोमैं, जो देव रहते हैं, वे व्यंतर जाति, वनव्यंतर जाति एवं १६ उनोंमैं भी, महानपुण्यशाली व्यंतर देवभी मृत्युलोकमैं पूर्वोक्तकारणविना नहीं आते, देव देवांगनासे, रतिक्रीडा करते, पूर्णतृप्ति, वायुके

श्वेतपुद्गलोंके, सगाट निकलनेसैं, होती है, मनुष्यवत् शप्तधातुका शरीर देवका नहीं, इसलिये नतोवीर्य (शुक्र) निकलता, मनुष्य, तिर्यचवत् पुत्रोत्पत्ति नहीं होती, जिनधर्म्मवाले, तथा सायन्सवाले, तो मनुष्यसै मनुष्योंकी उत्पत्ति, तिर्यंचोसैतिर्यंचोंकी उत्पत्ति मानते है, सूर्य, चंद्र, इद्र, इत्यादिनामके मनुष्यकों उत्पत्तिके कर्त्ता किसी स्त्री सबधमै, नामके कारण देव ठहराया होगा, ऐसा अनुमान होता हे, १८ पुराणोमै तथा ईसाईमतावलम्बी, ईसाकी माता मिरयमको, ईश्वरसै गर्भवती हुई ईसाको जन्मा, ऐसा लिखा है, दुसरोंका मंतव्य ऐसा हे, जेनधर्म्मका नहीं है, कबीर पंथी कबीरजीकी पुष्पोंमै उत्पत्ति, अतमै पुष्प होना कहते है, गोकुल सप्रदाई कृष्णका अवतार वल्लभाचार्यजीकी, अग्निकुडमै उत्पत्ति, कहते है एव अनेक मत है आर्यसमाज मतके उत्पादक स्वामी दयानंदजी अपने रचे सत्यार्थ प्रकाशमै देवता, और नर्क, ये दोगति परोक्षकों नही मानी, लेकिन् दयानंदजी उक्तवेद क्रिया करनेसैं, मनुष्योंका मुक्त आत्मा होना मतव्य करा, वे मुक्तात्मा सैल करने, इछानुसार इधर उधर घूमते फिरते है, विचार होता है देवगति, नर्कगति, सर्व्व दर्शन सम्मत हे, उसकों, नहीं मानना, सोतो समझा, लेकिन् मुक्तात्मा, इधर उधर घूमते फिरते हैं, इसमैं प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है, क्या उनोंकों मनुष्योंनैं कभी देखा हे, वेदोंके पूर्व भाष्यकार, पुराण, कुराण, सर्व्वमत, देव, इद्र, नर्कादिगति लिखी है, देवतोंकोंही मुक्तात्मा केइ मतधारी मानते हे, मनुष्यवत् शप्तधातु निष्पन्न शरीर नहीं होनेसैं, नास्तिक मत उत्पादक बृहस्पति देव, नर्क, नही मानता, लेकिन् स्वामी दयानंदजी जीव, ईश्वर, माना, बृहस्पतिने नहीं माना इतना तफावत है,

इस महाजनमुक्तावलीमै, राजन्यवंशी विशेषतया, वाकी ब्राह्मणादि ३ वर्ण अल्प सख्यासैं जिनधर्म्मकी शिक्षा विशेषपनै आपदा निवृत्ति होनेसै, पश्चात् सहवास उपगारी आचार्योंका करनेसै प्राप्तकरी उस उपगार कृत्यमै, दादा गुरु देवोंनै, निज आत्मबल शक्तिकी स्फुरणा, नि.केवल अहिसा परम धर्म्मकी वृद्ध्यर्थही करी, स्वार्थवस किंचित् भी नहीं, उन २ चमत्कारोंका लेख देखकर, केइयक आधुनिक जेना भास अपनेमै साधुत्वगुण सिद्ध करने गर्व्वमत्त कहते है, उनोंमै साधुत्वगुण नहीं था, यदि होता तो लब्धि नहीं स्फुरण करते, ज्ञानशून्य, अविद्यामहादेवीके-संतान, ऐसे वाक्योंकों तहत्त कह कर सत्य श्रद्धान इस वार्त्तापर लाते है, लेकिन् उनोंनैं बुद्धि सरच करणी चाहिये, जिस लब्धिके फिरानेमै, आज्ञा भंगका दोष लगे आगे अनर्थकी परंपरा वृद्धि पावे, वह लब्धि फिरानेसै साधुकों आलोचना करना ऐसी आज्ञा जिनेश्वरनै दी है, और जिस लब्धिद्वारा अनर्थ कृत्यानिर्मूल होकर धर्म्मकृत्य वृद्धि पावै, उसमै आलोचन प्रायश्चित्त लेनेकी, किसी ग्रथमै

भी आज्ञा नहीं, २८ लब्धिमें केवल ज्ञान, मन पर्यवज्ञान, अवधिज्ञानकी लब्धि, पदानुसारणी लब्धि कही, जिसलब्धिसे केवल एक पदके पढनेसें लक्ष कोटि प्रमाण पद बिगर पढे आ जावे, तो विचार लो पूर्वोक्त केवल ज्ञानादिक लब्धि प्राप्त होनेसै क्या उसकी स्फुरणा, साधु नहीं करते ह, क्या इनोकों दंड कहाई लिखा है, श्रीजिनदत्तसूरि. प्रमुख आचार्योंनें आत्मबल लब्धि, निःकेवल हिसक धर्म्म मिथ्यात्व त्याग कराने, करी, विचारे करे क्या, आपमें तो अंशमात्र, ऐसी आत्मबलशक्ति नही, तब उन अनभिज्ञ अपठितोंके सन्मुख ऐसी गप्पसप्प लगाकर, निज प्रतिष्ठा जमाते है, जो जिनधर्मके उपगारकर्त्ता आचार्योंके स्थापित ओसवालादिककुलनहीं होता, तो तुमको ये चंगे मालमलींदे मिलने कहाथे हम जब आपके इस कथनकों, सत्य समझै, ओर आप मै, साधुपना समझें, एक राजन्यवंशीकों, प्रतिबोध देकर, ओसवालोंमै मिला तोदी जिये, फक्त रांधेकों, रंधने योग्य होकर, पुन., उनोंमै, साधुपना, नहीं था, ऐसै २ मृषा लापकर पापपिंड भरते है,

ओर इन आत्मबल मंत्र चमत्कारोंसें, प्रतिबोधित महाजनोंके इतिहासोंकों, पढकर, आधुनिक आर्यासमाजी आदिकोंकों, इन २ वार्त्ताओंपर, प्रतीति नहीं आवेगी, लेकिन् उनोंनें दयानंदजीके लेखोंकों, पढा होगा, योगसाधक योगीके, अष्टसिद्धिया, प्रगट होती है, वह अचित्य शक्तिधारक, उस योगद्वारा, अनेक कार्य साधने समर्थ होता है, यथा वर्त्तमान समयमै, उन गुरुदेवके योगमैसै, अल्पास योगसाधक, मेस्मेरिजम कर्त्ता, अनेक, अद्भुत कार्यकी सफलता कर दिखाते है, व्याधि मिटा देते, भूत, भविष्यद् , वर्तमान, दूरवर्त्ती निकटवर्त्ती बता-देना, अपने आत्मबलकी शक्ति, अन्य आत्मासै मिलाकर मुक्तात्मा(मृत)कका आव्हान करना आदि प्रत्यक्षपनै विद्यमान है, सुना है के अमेरिकामै तो चाहे जिस मृत मनुष्यकों बुलाकर, परोक्षपने वार्त्तालाप कराते हैं, वाणी द्वारा ज़ानाजाता है की ये वाणी अमुक मनुष्यकी है, गुप्त गृहका रहस्य बता देता है, दृष्टिगोचर नहीं होता, तो फिर इस योगधारियोंसे असक्ष गुणयोगमै दृढ साधन कर्त्ता श्री जिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंके चमत्कारोंमै संदेह करना, कोनसी बुद्धिमत्ता है,

पुनः दयानंदजीने पचमहायज्ञमैं, विवाहादि शोले संस्कारोंमे वेदोंके मत्र लिखे हैं ओर लिखा है, अमुक मंत्र पढकर अमुक कृत्य करना, इसका हेतु क्या होगा, ईश्वरकों दयानंदजीनें आकाशवत् सर्व्वव्यापी कथन करा हैं, तब तो ससा-रके यावन्मात्र पदार्थ ईश्वरसे भिन्न रहा नहीं, वह सर्व्व ईश्वरके आधीन है, तों फिर मंत्रोंकों पढकर कंठशोप करनेसैं क्या सिद्धि है हवनादि करते, वह तो त्रिकालदर्शी है, मनुष्योंकी अपेक्षा तीन काल है, ईश्वरकी अपेक्षा केवल सर्व्व

वर्तमानकाल है, ये वेदोंके मंत्र ईश्वरनैं अपनी पूजाके अर्थ किस लिये रचे जो कुछ मनुष्य उसके अर्थ कृत्य हवनादि करे उससे ईश्वर प्रशन्न होता होगा, तब तो रागी हुआ, जो ईश्वरके अर्थ मंत्र पढ कृत्य नहीं करे, उसपर द्वेष करता होगा, इसन्याय द्वेषी ठहरा जब राग द्वेष विद्यमान है, एसेको कोन बुद्धिवान ईश्वर मान सक्ता है, यदि वेदोक्त मन्त्र कुछ कार्य साधने समर्थ हे तो, अन्यमंत्रोंको असत्य क्या समझ कहते हैं, मंत्रका अर्थ गुप्त रहश्यका कहना होता है,

भगवंत महावीर सर्व्वज्ञनै पंचम आरेमै, २३ वेर उदयकर्त्ता २००४ युग प्रधानोंका प्रादुर्भाव कथन करा ये आरा २१ हजार वर्षोंका है, उसमैसै, जिन-वल्लभ, जिनदत्त, जिनचंद्र आदि नाम विद्यमान हे, इन गुरुदेवोंनै, जिन धर्म्ममै उदय करा,

फर्मान जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादसा गाजीका हुक्काम किराम व जागीर दारान व करोरियान व सायर मुत्सद्दियान मुहिम्मात सूबे मुलतान विदानंद किचू हमगी तवज्जोह खातिर खैरदेश दर आसूदगी जमहूर अनाम बल काफ फए जॉदार मसरूफ व मातू फस्त कि तबकात आलम दरमहाद्द अमनबूदा बफरागे बालबइबादत हजरत एजिद मुत आल इश्तगाल नुमायद व कब्ले अर्जी मुरताज खैर अंदेश जिनचद्सूरि. खरतरगच्छ कि बफैजे मुला-जिमत हजरते मासरफ इखतिसास याफता हकीगत व खुदातलबी ओव जहूर पैवस्ता बूद ओरा मशगूल मराहिम शाहंशाही फरमूदैम् मुशारन् इले है इल्ति-मास् नमूद कि पेश अर्जी हीरविजयसूरिः सागर शरफ मुलाजिमत् दरियाफ्त बूद दर हरसाल दोवाजदहरोज इस्तद्दुवा नमूदा बूदाकि दरा अय्याम दर मुमा-लिके महरूसा तसलीख जादारे नशवद व अहदे पैरामून मुर्ग व माही व अमसाले ऑनगरदद व अजरूय मेहरबानी बजॉ परवरी मुल्त मसे ऊदरजै कबूल याफ्त अकनू उम्मेद्वारमाकि यकहफ्ते दीगर ई दुबा गोय् मिसले ऑ हुक्मे आली सरफ सुद्दर याबद् विनाबर उमूम राफत हुक्म फर मूदैम् कि अज तारीखै नौमी ता पूरन मासी अज शुक्ल पच्छ असाढ दर हरसाल तसलीख जॉदारे न शवद् व अहदे दर मकाम आजार जॉदार मोरैनगर दद् व अस्ल खुद आनस्त किचूं हजरते वेचू अजबराए आदमी चदी न्यामतहाय गूनागूं मुहय्या करदाअस्त दर-हेच वक्त दूर आजार जानवर नशवद् बशिकमे खुदरा गोर हैवानात नसाजद् लेकिन् बजेहत् बाजे मसालह दानायान पेश तजबीज नमूदा अद दरी विला आचार्य्य जिन सिहसूरिः उर्फ मानसिंह ब अरज असरफ अकद्दस रसानीद् कि फरमाने कि कब्ल अर्जी व शरह सदर अज सुद्दूर याफ्ता बूद गुम शुदा बिनाबरा मुताबिक मजमून हुमा फरमान मुज द्द फरमान मरहमत फरमूदैम् में बायद्द कि

हस्वूल मस्तूर अमल नमूदा व तकदीम रसानंद व अजफरमूदह तखल्लुफ व इन हिराफ नवरजंद दरीं बाब निहायत एह तमाम व कदगन् अजीम लाजिम दानिस्ता तग इयुर व तबद् दुल बकबायद आंराह नदिहंद तहरीरन् फीगेज रोजसी वयकुम् माह खुरदाद इलाही सन् ४९

अहिंसा फर्मान बादशाह अकबर

[१] वरिसालए मुकर्रबुल हजरत स्सुलतानी दौलतखां दग्चोकी [उमदे उमरा]

[२] जुब्रद तुल आयान राय मनोहर दरनौबत वाकया नवीसी रा-जालालचंद

हिन्दी योधपुरस्थ मुन्सी देवीप्रशादजी कायस्थने करा पारसीसे

फ़रमान मोहरछाप अकबर बादसा गाजीका सूबे मुलतानके वडे २ हाकिम जागीरदार करोडी ओर सब मुत्सद्दी [कर्मचारी] जानले कि हमारी यही मानसिक इच्छा हे कि सारे मनुष्यो ओर जीव जन्तुओंको सुख मिले जिससें सबलोग अमनचेनमें रहकर परमात्माकी आराधनामें लगेरहें इससें पहले शुभच्चितक तपस्त्री जिनचंद्रसूरिः खरतरगच्छ हमारी आमखासमे हाजर हुआ जब उसकी भगवद्भक्ति प्रगट हुई तब हमनें उसकों अपनी वडी बादशाहीकी मेहरबानियोंमे मिलालिया उसनें प्रार्थनाकी इससे पहिले हीरविजयसूरिनें सेवामें उपस्थित होनेका [हाजर रहनेका] गोरव प्राप्त किया था ओर हरसाल १२ दिन मागे थे जिनमें बादशाही मुल्कोंमें कोई जीव मारा न जावे ओर कोई अदमी किसी पक्षी, मछली ओर उन जेसे जीवोंको कष्ट न दे उसकी प्रार्थना स्वीकार होगई थी, अबमे भी आशा करता हूं कि एक सप्ताहका ओर वेसा ही हुक्म इस शुभ चिंतकके वास्ते हो जाय इसलिए हमने अपनी आमदयासे हुक्म फरमा दिया कि आषाढ शुक्लपक्षकी नवमीसें पूर्ण मासीतक सालमें कोई जीव मारा न जाय ओर न कोई आदमी किसी जानवरकों सतावे असल बात तो यह हे कि जब परमेश्वरनें आदमीके वास्ते भांति २ के पदार्थ उपजाये है तब वह कभी किसी जानवरको दुख न दे ओर अपने पेटको पशुओंका मरघट न बनावै परन्तु कुछ हेतुओंसे अगले बुद्धिमानोंनें वेसी तजवीज की हे इन दिनो आचार्य जिन सिंहसूरिः उर्फ मानसिंहने अर्ज कराई कि पहले जो ऊपर लिखे अनुसार हुक्म हुआ था वह खो गया हे इस लिये हमनें उस फरमानके अनुसार नया फरमान इनायत किया हे चाहिये कि जेसा लिख दिया गया हे वेसाही इस आज्ञाका पालन किया जाय इस विषयमें बहुतही कोशिश ओर

ताकीद समझ कर इसके नियमोंमें उलट फेर न होने दें ता. ३१ खुरदाद इलाही सन् ४९ हजरत बादसाहके पास रहनेवाले दोलत खाके हुक्म पहुं-चानेसें ऊमदा अमीर और सहकारी राय मनोहरकी चौकी और ख्वाजा लालचंदके वा किया [समाचार] लिखणेकी वारीमें लिखा गया

युग प्रधान जगद्गुरु भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरिः इल्काव इनायत मेजर जनरल सर जान मालकमकी लिखी हुई मेमायर आव् सेंट्रल इंडिया नामकी पुस्तक दो जिल्दोंमे है उसकी दूसरी जिल्दमें उनोनें इस फरमानका जिक्र लिखा है

तथा उज्जैण मालवाके जैनमंदिरमे इस फरमाणका शिला लेख है.

जैन ग्रथोंसे पुष्करत्रय प्रादुर्भाव

वीतभयपत्तन सिंधुदेशमें २५०० वर्ष लगवग राज्यथा उहां उदाई राजाथा उसने विशाला नगरी जो पूर्व देसमे उसका स्वामी चेटकराजा उसकी वडी भगनी त्रिसला जो क्षत्री कुडपुराधीश सिद्धार्थको व्याही थी उससै नंदिवर्द्धन १ और वर्द्धमान [महावीर] ये दो पुत्र उत्पन्न हुये जिसमै महावीर ३० वर्षकी वयमे राज्य स्त्री त्यागकर निग्रंथ हुआ १२॥ वर्ष तपकर मोहादिकर्मोको क्षय कर सर्वज्ञ सर्वदर्शी जैनधर्मका २४ मा तीर्थंकर कहलाया चेटककी ७ पु-त्रिया हुई ६ तो ६ राजोंकी राणिया हुई जिसमें प्रभावती उदाईको व्याही ७मीसु ज्येष्टा कुमारी दीक्षाले साध्वी हो गई इसके संग पेढाल विद्याधर सन्यासीने वलात्कार संगम करा तव उसके सत्यकी नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १४००० सहस्र विद्या सिद्धकर इग्यारमा रुद्र कहलाया जिसको लोक महादेव कहते है उस उदाई राजाकी स्त्री प्रभावतीको देवविनिर्मित जीवित महावीर स्वामीकी मूर्ति प्राप्त हुई, उस प्रतिमाकी पूजा त्रिकाल करती थी, उसकी पूजोपकरण रक्षार्थ कुब्जा-दासी नियत थी, निमित्तज्ञानसे अपनी आयु अल्प जाणकर पर भव सुधारने पति उदाई नृपसें दीक्षार्थ आज्ञा मागी राजाने कहा यदि तू तप सजम ब्रह्मचर्य द्वारा परलोकमै देव पद पावे और मेरे संकटमें सहायता करनेकी प्रतिज्ञा करे तो दीक्षाकी आज्ञा देताहूं राणीनें प्रतिज्ञा करी आज्ञानुसार साध्वी हो षट्मास तपसंजम आराधकर सौधर्म प्रथम देवलोकमै देव हुई, इधर जीवित स्वामीकी प्रतिमा राजा उदाई त्रिकाल पूजते रहा एकसमय गाधार देशी श्रावक जीवित स्वामीके दर्शन पूजार्थ आया उसको अतीसारकी व्याधि हुई तदा साधर्मी जानकर कुब्जा दासीने परिचर्याकी निरोग होनेपर उसनें दो गुटिका प्रत्युपकारमे कुब्जाकोंदी और कहा एक गुटिकासे तेरा कुब्जत्व निवृत्त होगा दूसरी गुटिकासे सौभाग्य वृद्धि होगी, वैसाही हुआ उससमय उज्जैण

१ इनका पूर्ण वृत्तात जैन दिग्विजयछपे हुये ग्रथमे देखो ।

पुराधीस इसके रूपकी प्रशंसा श्रवणकर दूती संचार कर जीवित स्वामीतुल्य अन्य प्रतिमा स्थापन कर उस प्रतिमायुक्त अनल गिरि गंधहस्तीपर दासी और प्रतिमाको लेकर उज्जेण गया दूसरे दिन पुष्पमाला मूर्त्तिकी म्लान देख, राजा शंकित हुआ, क्योंकि मूल देवाधिष्टित प्रतिमाका अतिशय था, जो पुष्प आरोपन किया जाता, वह म्लान नही होकर निजरूपही रहते थे, दासीभी नहीं पाई, तदनंतर राजा, अपनें सर्व हस्तियोंकों निर्मद हुआ देखकर, अनुमान करा, अवश्य अनलगिरि गंधहस्ती इहा आया उसकी गंधसे सर्व हस्ती मेरे निर्मद होगये, वह चंड प्रद्योतविना अन्य राजाके नहीं है तब दूत भेजा दासी तुझै दी लेकिन जीवित स्वामीका स्वरूप पीछा भेज, दासी उस प्रतिमाका इष्ट होनेसें मूर्तिविना रहे नही, इसलिये चंडप्रद्योतनें, देना इनकार किया, तदा राजा उदाई, ससैन्य चढाई करी, लोद्रव पत्तनकी भूमि शमीप, जल नहीं, शेन्या जलाभावसे, व्याकुल हुई, राजा चिंताग्रस्त अत्यंत हुआ, उस समय, वह प्रभावती देवता प्रगट हो, अक्षयजलका, दिव्य कुंडरच, चिंता निवृत्तकरी, पुन अधुना रामदेवका स्थान है, तत्र जलाभावसें, दूसरा कुंड रचा, जो कुष्टी अंधेआदि किसी समय आरोग्य, रामदेवके मेले मे उस दिव्य शक्तिसें होते है, तीसरा जलाभाव अधुना जो अजयमेरु नगर है उसके निकट भूमीमें हुआ, तब तीसरा पुष्कर इहां देवतानें रचा, जिसकों अन्य दर्शनी पुष्कर तीर्थंकर मानते हैं, राजा उदाई चंड प्रद्योतसैं युद्धकर क़ारागार कर संग ले पीछा फिरा, एक दिवस भाद्रपद शुक्ल पंचमीको राजा उपोषित पोषध करने, रसोईदारसै कहा, मैतो आज उपोषित रहूंगा, चंडप्रद्योतको, यथारुचि भोजन करा देना, रसोईदारनें चंड प्रद्योतकों पूछा, तब चंडप्रद्योत भयभीत हो, विचारने लगा, निरन्तर उदाई मुझै, संग भोजन कराता, आज अवश्य विष देकर मारेगा, तब बोला, आज मेरे भी उपवास है, तब रसोईदारने चंडप्रद्योत कथित वार्ता कही, तब राजा भयसेभी उपवास करनेवाला, स्वसाधर्मी समझ, विचार करा साधर्मीको कैदी रखकर मुझै उपवास पोसह करना उचित नहीं, तब स्वर्णकी बेडी तुडा परस्पर क्षमापनाकर, पौषध साथमे करकर, उज्जयणीका राज्य पीछा दै, विदा किया, परस्पर साढू भी थे, क्योंके चेटक राजाकी पुत्री १ चंड प्रद्योतकोंभी व्याहीथी इसलिये, इति त्रिपुष्कर प्रादुर्भाव यह लेख दानादि कुलक, कल्पसूत्र वृत्ति आदि ग्रन्थोंमें लिखा है.

इस पुष्करके, किंचित् दूरवर्त्ती, वृद्ध पुष्कर [बुढ्ढा] पुष्कर अन्य भी हैं, नमालूम विक्रम संवत् १२ शताब्दीमें, मंडोवरका राजा नाहरराव पडिहारने कोनसा पुष्करका जीर्णोद्धार करा, इस देवाधिष्टित पुष्करका जल तो अक्षय

पातालका है, घाट प्रमुख वंधाया हो तो, आश्चर्य नहीं, इहांके पंडे पोकरिये, सेवग कहाते हैं, उत्पत्तिका इतिहास इनोंकाये कहते है, व्यासके पुत्र शुक्देव, उनोके ५ पुत्र हुये, उनोंकी संतान हम हैं, ब्राह्मणोके पुराणोसे सिद्ध है, शुक्देव, यावज्जीव ब्रह्मचर्य धारी ऋषि थे, जैनियोंके ज्ञातासूत्रमे भी ऐसा लिखा है, शुकदेव सन्यासी, द्वारिकामें, थ्रा वच्चापुत्र, जैनसाधूसें, धर्मसवंधी प्रश्णोत्तर पूछकर, पाचसय सन्यासियोंसे, जैन दीक्षा, स्वीकार करी, अतमें सेत्रुजय पर्वतपर पञ्च-शत ही मोक्ष पाये, तव किस शास्त्रानुसार, शुकदेवजीके ५ पुत्र होना, लोक-मंतव्य करे, टाड सहाव २० हजार वेलदारोंका, पुष्करपर ब्राह्मन वनाना लिखा है, वह पुष्करणे ब्राह्मण, सेववारण्य वानियोके संगे विल्कुल नही मिलता, क्योंके न तो पुष्करपर पोकरणोका अधिकार है, न पुष्करके गर्दन वाह पोकरणाकी वस्ती हैं इस लिये, दुसरी यह वात भी है के ओसवालोंके भोजकोंमे ६ गूजर गोड गोत्रोंके ब्राह्मण ६ खंडेलवाल गोत्रोंके ब्राह्मण, ४ गोत्रके पुष्करणे ब्राह्मण, मिलके, भोजक ओसवालोंके गृहकच्ची रसोई खानेसे, भोजनसे भोजक कहाये, जाति-भाष्कर ग्रथमें, श्रीमालमें ५ हजार ब्राह्मण भोजक होना लिखा है, -और- ओस-वालोंके १८ गोत्र ओसियामे उनोंके साथ भोजक होना लिखा है, ओसियां पत्तन भी श्रीमाल नगरीके राजपुत्रोंने ही वसाई थी केवल ३० वर्पका अतर हैं, टाड साहवके प्रत्युत्तररूप ग्रंथ व्यास मीठा लालजीने छपाके प्रसिद्ध करा है, उसमे लिखा है, ओसवालोके भोजक श्वयं मंतव्य करा है कि हमारी १६ जाति ३ ब्राह्मणोंके गोत्र मिलके वनी हैं, जव २२२ वीयेवा इसे पुष्करणा ब्राह्मण-गोत्र विद्यमान था, तभी तो उनोमेंसे ४ गोत्र पुष्करणे, भोजक हो गये, तो फिर पुष्करणे ब्राह्मण पुष्करपर वनना कैसे सिद्ध हो, पोकरिये, पोकरणे, सदृश नाम मिलनेसे क्या दोनों एक हो सक्ते हैं, कदापि नहीं, ओसवालोंके भोजक, साकल द्वीपी सर्वथा नही है, न इनोंकी मग जाति है,-म भी इनोंके कथनानुसार इनोकों प्रथमावृत्तीमें मग लिखा था, अन्य २ प्रमाण मिलनेसे, त्रुटियोंको यथार्थपने सुधारी है, जव परशुरामने कृत्तिकार्जुनका नाशकर हस्तिनागपुरका राज्यपती वना, यमदग्नि-को कृत्तिकार्जुनने मरवाया था, इस द्वेषसे, तदनतर क्षत्रियवर्गका ७ वसत नास करा, उस समय, वहोतसे, क्षत्रिय क्षत्रियधर्मकों त्यागकर, व्यापार करने लगे स्यात् वेही गेडे, क्षत्रिय लवाणे आदि हो तो आश्चर्य नहीं, केइयक दरजी नापित आदि कर्म कर शूद्र वण गये, उस कृत्तिकार्जुन राजाकी स्त्री विद्याधर राजाकी पुत्री गर्भवती परशुरामके भयसे भाग कर तापस ऋषियोंके आश्रममे जाकर शरणागत हुई उनोको निजस्वरूप कहा, वे दयासे इसकों भूमिगृहमें प्रछन्न रक्खा उहाँ पुत्रजन्मा-तापसोंने सुभूम नाम धरा जव वह ८ वर्षका हुआ उस

समय इसका मामा विमानमें बैठा उधरसें निकला उस बालकके पुण्यसे उसका विमान अटका, तब वह तापसोंके आश्रममें उतरा और नमन कर विमान स्खलनका स्वरूप कहा, तब तापसोंने जाति नाम वा स्थान पूछा उसनें कहा, तब भूमि गृहमें बैठी सुभूमकी माता अपने भ्राताको जाण बाहिर आरुदन करती भ्रातासे संपूर्ण वृत्तात निवेदन करा तदनंतर तापसोंकी आज्ञासे भगनी और भागनेयको विमानारूढकर वैताढ्य (तिब्बत) स्वराजधानीमे लेगया एक सहस्र आठशुभचिन्ह अलंकृत भागनेयको देख निमित्तज्ञानी [जोतषी] से पूछा इस बालकके भावी फल कहो। तब निमित्तज्ञनें कहा, ये चक्रवर्ति साम्राट भूचरोंमें होगा और परशुरामका हता यही बालक है, नैमित्तकको द्रव्य सत्कार कर विसर्जन करा अस्त्र शस्त्रकला आदि लीलामात्रसे वह सुभूम अल्पकालमें ७२ कलामें निपुण हुआ इधर परशुरामनें एकदा निमित्तज्ञसें पूछा मेरी आयु कितनी अवशेष है, तदा निमित्तज्ञनें शास्त्रानुसार कहा हे राम जिनक्षत्री राजाओंको मार २ दाढाये उनांकी एकत्रित करी है, उन दाढाओंकी जिसकी दृष्टि मात्रसे क्षीर हो जावे, उस क्षीरका वह भोजन करने लगे, वह तेरा हता जाणना, तब पर-शुराम शत्रुको पहचानने नगरके बाहिर एक महादानशाला बनवाई जिसमें स्वदेशी विदेशी आतिथि तथा पंथी जनोको अन्न जलादि मिले उहा एक शालामें, स्वर्ण-रत्नमई महान् सिंहासन स्थापित कर उसपर स्वर्णस्थाल क्षत्रियोंकी दाढासें भर-कर स्थापन कर पाचसय वीरोंको तद रक्षार्थ ससस्त्रनियत करे और गुप्तरहस्य कहा, इधर एकदा सुभूमनें मातुलके समक्ष मातासे पूछा हे अंब मेरा पिता कहा है और अपना निजस्थान कहां है तब माता रुदन करती संपूर्ण वृत्तांत कहा उससमय माताको सुभूमनें कहा तू निश्चित रह में परशुरामको मेरे पिता शमीप प्राप्त करूंगा राज्य लेलूंगा ऐसी प्रतिज्ञा कर मातुलको संगले सीधा हस्तिनागपुर आया दानशालामे विश्रामार्थ प्रवेश करा इसकी दृष्टिपातसे दाढाओ स्वर्ण स्थालस्थ क्षीर हो गई मातुलको कहा में क्षुधातुरहू क्षीर भक्षणकर्ताहू और भक्षण करने लगा त्योंही सुभट धाये उनोंको मातुलने छिन्नभिन्न कर डाले, ये खबर पाते ही परशु लिया हुआ परशुराम सुभूमके वधार्थ आया तदा उस स्वर्ण स्थालको, अंगु-लीपर घुमाके फेंका वह उससमय चक्ररूप हो परशुरामका शिर पृथ्वीपर गिराया, आकाशमें देव दुंदुभिका शब्द और देवतोंनें जयजय चक्रीश चिरंजिव इत्यादि शब्दकर सुभूमपर पुष्पवृष्टि करी तदनंतर सुभूम पट्खंडके ३२ सहस्र मुकुट बद्धरा-जाओंको वसकरा, १४ रत्न, १६ सहस्र यक्षसेवक, नवनिधान, ८४ लक्ष हस्ती ८४ लक्ष अश्व, ८४ लक्ष रथ, छिन्नूं कोटी सुभट, प्राप्तकर, पिता, और क्षत्रि-योंका, बेर लेने २१ बेर निब्राह्मणी पृथ्वी करी, उस भयसे, ब्राह्मण कोई तो शस्त्र

धारण कर लिये, केई व्यापार, क्षेती, भृत्यकृत्य, तथा केईयक, स्वर्णकार हो गये, जो ब्राह्मणि या सुनार कहाते है, मैथिल ब्राह्मण, चित्रकारपना करने लग गये, रजतस्वर्ण लकडी प्रमुखका कृत्य भी करते है, वह वीकानेरमे जेपुरिया कहाते है।

इस प्रकार मरण भयसे चारो वर्णोंका कृत्य करने लग गये वनोवास त्याग, नगर, ग्रामोंमें, निवास करा, अनुमान होता है, वे अग्निहोत्री, उस निब्राह्मणी पृथ्वी सुभूमके करनेके भयसे, भागकर, केइ इरानमें जावसे, इरानका नाम, अरण्य वास्तव्योंके रहनेसें, अरण्य शब्दका अपभ्रंस हुआ हो तो आश्चर्य नहीं, वे मुसलमानोंके मतके प्रशार समय भाग कर पुनः आर्यावर्त्तमें आये, वे पारसी कहलाते है, ईरानमे भी राज्यशासन सुभूमकाही था उस भयसे यज्ञोपवीत कमरमें प्रछन्नपने रखी थी अभी भी उस मुजब ही रखते है, जेसै ब्राह्मणोंका अग्नि इष्ट है, उससे सविशेष पारसीयोके, अग्नि इष्ट है, सूर्य, समुद्र, गऊ, जैसै इस समय ब्राह्मणोंके मंतव्य है, तद्वत् पारसियोंके भी है, इस कारण उस समयका अनुमान होता है, वकरीद करनेवाले मुसलमान भी, अजेर्यष्टव्यं, इस पर्वत ब्राह्मण कृत वेद पदके अर्थसे छागमेधसे, स्यात्संबंध धराते हैं, मुसलमान होनेसे वेदमंत्रकी जगे, विसमिल्लाह अर्थात् सुरू करता हूं नाम खुदाके, ऐसा इस अरव्वी पदका अर्थ होता है, जैसे पर्वतके चलाये वेद अर्थकी श्रुतियोंमें अनेक देवतोके अर्थ अश्वमेध, गऊमेध, नरमेध, छागमेध, इत्यादि यज्ञयाग, किसी कालमे अत्यंत ही हुआ करता था, क्वचित् २ अभी भी होता है, ये आठमाचक्रवर्ति सुभूम हुआ, इसके पीछे पुनः ब्राह्मणधर्म, जाग्रत हुआ, तथापि चार वर्णोंका कृत्य, सर्वथा छूटा नहीं, वैरानुभाव निकृष्ट वस्तु है, परशुरामजीने क्षत्री धर्म विद्ध्वंस करा, तेसै सुभूमनें ब्राह्मणधर्म विद्ध्वंस करा, इसलिये जैनसर्वज्ञका कथन है, हिसा मत करो, जिसकों जो दुःख देता है, वह समय पाय बदला लेता है यथा मनुस्मृतिमें लिखा है मास इसकी निरुक्ति जिसको मे भक्षण करता हू समा वह मुझकों भक्षण करेगा, ये कथन सत्य विश्वास करनें योज्ञ है

कायस्थ दो प्रकारके हैं, प्रथम चित्रगुप्त क्षत्री ऋषभ भगवानके तनवकसीपर नियत था, आभूपण वस्त्रादि कायाके निमित्त भोगोपभोग वस्तु उसके स्वाधीन थी वह लिखत पठत शस्त्रधारण और षट्कर्मधर्म, और प्रभुकी काया सेवा करता था, उसके ८पुत्र हुये विवाह इनोंका काश्यप गोत्र क्षत्रियोंमें हुआ इनसें ८ गोत्र इनोंके हस आदि नामोंसे विक्षात हुये तनवक्सीका कार्य करनेसे लोकीक कायस्थ कहने लगे, भरतचक्रवर्त्तिनें इनोकों अर्हन्नीतिके वेत्ता जाणकर न्यायालयका कार्य, और राजा, राय, इत्यादि पद दे, पृथ्वीपति वनाया,

दुसरे चंद्रसेन कायस्थ, कृत्तिकार्जुनके परिवारवाले परशुरामके समय भयसे

चारों ही वर्णका कृत्य करने लगे, ब्राह्मणोंकी सेवासे कायस्थ नामसे प्रसिद्ध हुये ये ज्ञातिवाले बडे दक्ष चतुर राज्यकार्यकर्त्ता होते है हेदरावाद दक्षणमें, कायस्थ, तथा खत्री जागीग्दार राजापद रायपदसे युक्त है

आभीरदेशी, अहीर, गऊपालन, सेवा मुख्य वृत्ति है, वीकानेरमें केइ सवास कहाते है गोप, ग्वाले इनोंमेसे केई जाति भिन्न हो गई है,

तीन हजार वर्षसे पहिले तातार देससें शमीरामा महाराणीने दक्षण भरतपर चढाई करीथी ऐसा इतिहास तिमिरनासकके तीसरे भागमें लिखा है उसने महा-संग्राम पूर्वदेशमें कर शंब निसंब राजा जिन धर्मियोंको मार अपणी आज्ञावर्ताई मनुष्योंको कष्ट देने लगी तब उसको प्रशन्न करने श्यामाकी मूर्त्ति सर्वत्र स्थापन कर लोक पूजने लगे ओर ब्राह्मणोके आज्ञानुसार भैंसा वकरा आदिकी वलि देने लगे तब शमीरामा प्रशन्न हो अपने भक्तोंकों सोम्य दृष्टिसें देखने लगी देवी पूजाकी प्रवृत्ति दक्षण भरतमें उस दिवससे हो गई उसके राज्य शासनमें तातार देशी लोक इहा वस गये वे जाट नामसे प्रसिद्ध है इनोंकी स्त्रियोंका वेप धावला आदि देख तातार देशी पना प्रसिद्ध होता है इनोमें कोई धर्म प्रथम नही था इहां मारवाडमें रहते २ जसनाथजी इनोंमे हुये, इनोंमेसे विसनोई भिन्न हुये इनोमें जाभा जी हुये, इन दोनोंने दयाधर्म इनोंमे प्रवर्त्ताया, इन दोनोंके उपदेश रहित जाट मद्यमांसका परेज नहीं करते है, भाटी राजपूत इनोंसै विवाह करा, उस वंसमें, पंजाव देशवासी, भरतपुर आदिके जाटराजा विद्यमान हैं, नाभा पटियाला आदि, थली देशमे भी जाटोंका राज्य था, सवत् १५०० से पीछै राठोड राव वीकाजी इनोंसे राज्य युद्ध करके लेलिया,

कोटंबिक [कुणवी] ये दक्षण भरतके एक तरेके वैस्य जाति प्रथमसे है, गऊ पालन, खेती व्यापार राज्य सेवा इनोका कर्त्तव्य है,

सीरवी यह भी एक कृपक जाति भरतक्षेत्रकी है, इनोंमे वगडावत २४ भाई राजा हो गये थे, इत्यादि नाना जातियोंका निवास स्थान, ४ वर्णोसे विभक्त दक्षण भरत है, इस समय विशेषपने, धर्म नामसै ४ है जैनी, १ पुराणी २ समाजी, ३ और काजी ४ इनोंके भेदातर एक सहस्र होगये है, ईसाई धर्म भी हिन्दमें होगया, वौद्ध धर्म इहां नही है, हिन्द्र मत २० करोड मनुष्य संक्षा, २० करोड मुसलमान मत संक्षा, २५ करोड ईसाई मत संक्षा, ५० करोड मनुष्य, वौद्ध मत सक्षा है,

जिसमें मांस नही खानेवाले वेजेटेरियन ५ करोड भी नही होंगे

मुसलमानोंसे सुणा है, जीवोंकों मारना आजाव है, लेकिन खाना सवाव है इसमे सम्मिलित एक मताध्यक्ष कहता है जीवोंके मारनेसे एक पाप हो, वचानेसे

१८ पाप होय यदि ऐसा यह उपदेश राजा प्रजा सर्व मतव्य करके एकको एक वचावे नहीं तब तो, प्रलयकाल, जैनियोंका छट्टा आरा इस समय हो जावे वा नहीं, यह उपदेश न्याय मार्गका प्रत्यक्ष नाश कर्त्ता है क्योंके जब पोलिस आदि राज्य वर्ग तथा प्रजावर्ग एकको ऐक नहीं वचावे तब तो जगतमें वैरानुभावसे बलवान अवश्य निर्वलकों प्राण रहित कर देगा, उससें बलवान् उस्कों प्राणरहित कर देगा सिंह श्वापदादि जंतु गण मनुष्योका संहार कर देगा, इत्यादि स्वरूप वर्णनेसै, जगत् मै हाहाकार मचेगा, इस लिये बुद्धिवान विचार तो करे, इस उपदेशके कर्त्ता केसे न्यायवत है, और जीव जतु गणके कैसे हित सुख बछक हे राज्य धर्म विरुद्ध, ये उपदेशक सिद्ध होते है.

अन्य दर्शनी ६८ तीर्थ कहते है जैन धर्मकी तीर्थावली इस मुजब है

सोरठ देशमें तीर्थाधिराज शत्रुंजय तीर्थ १ गिरनार नेम प्रभुके चार कल्याणक तीर्थ २ आबू तीर्थ ३ नाडोल तीर्थ नाडोलाई तीर्थ ४ वरकाणा तीर्थ ५ राणपुरा तीर्थ ६ मूछाला महावीर तीर्थ ७ ओसिया तीर्थ ८ संखेश्वरा तीर्थ ९ तारंगा तीर्थ १० भोयणी तीर्थ ११ अतरीक तीर्थ १२ मगसी तीर्थ १३ फलोधी पार्श्व तीर्थ १४ लोद्रवाजेसल मेरु तीर्थ १५ दक्षण हेदराबाद राजस्थ कुलपाक तीर्थ १६ अमी झरा तीर्थ १७ जीरावला तीर्थ १८ साचोर तीर्थ १९ भरु अछ तीर्थ २० खंभात स्थंभन तीर्थ २१ पंचासरा तीर्थ २२ गोगानवखंडा पार्श्व तीर्थ २३ पाटण तीर्थ २४ तिब्बत राजधानी अष्टापद [केलास] तीर्थ बरफसें ढक गया अलोप , २५ बीकानेर भाडा सरादि तीर्थ २६ हस्तिनागपुर तीर्थ दिल्ली शमीप २७ कासी तीर्थ २८ भेलूपुर तीर्थ २९ भदाणी तीर्थ ३० सिंह पुरी तीर्थ ३१ चंद्रावती तीर्थ ३२ ये सब कासी शमीप हे प्रयाग ऋषभ ज्ञानतीर्थ ३३, अयोध्या ऋषभ जन्मकी, सामकी राजधानीमै है, लेकिन् अन्यतीर्थ करके कल्याणक इस अयोध्यामें हुये इस लिये अयोध्यातीर्थ ३४ नवराई तीर्थ ३५ चंपापुरी तीर्थ ३६ पावापुरी तीर्थ ३७ क्षत्रिय कुंड (कुंडलपुर) तीर्थ ३८ गुणशिला तीर्थ ३९ राजगृहीमे ५ पंचपहाड तीर्थ ४४ बराकडनदी [ऋजुवालिका] वीरज्ञानतीर्थ ४५ शिखर गिरिराजतीर्थ ४६ मिथलातीर्थ ४६ कपिलपुरतीर्थ ४७ मथुरातीर्थ ४८ जहा २ तीर्थपतिका जन्म १ दीक्षा २ केवल ज्ञान ३ निर्वाण ४ हुआ वे सर्वस्थल तीर्थरूप हे, अधुना संवत् ६०० विक्रमकावणा भांदक (भद्रावतीतीर्थ) दक्षणमै चंद्रपुर ही गणघाटशमीप हे, ४९, काकन्दी तीर्थ ५० जहा २ जिनमंदिर मुसलमानोंने, नष्टकर दिये, उस स्थानके तीर्थ अलोप हुये, केई जेन तीर्थोंको शिववैष्णवमतियोनें, बलात्कार स्वतंत्र कर लिये, उनोंके नाम नहीं लिखे,

केई कहते हें, तीर्थतो, साधु १ साधवी २ श्रावक ३ श्राविका, ४ इन चारों सिवाय सूत्रोंमें, तीर्थ नाम चलाही नहीं, [उत्तर] जंबू द्वीपपन्नत्ती सूत्रमें तीर्थ करोंके जन्माभिषेकके शमय ६४ इंद्र एकत्रित हो अपने २ आज्ञाकारी देवतोंको आज्ञा दी है, हे देवो तुम गंगा सिंधू पद्मद्रहादि तीर्थोंका तीर्थजल अभिषेकार्थ लाओ तब वे देवता लाये हे यदि स्थावर नदी तीर्थ नहीं होती तो समकितवंत इंद्र तीर्थजल केसे लानेका कहते पुनः भरतचक्रीका दिग्विजय षटखंडका इस ही सूत्रमें लेख हे उसमें मागध १ वरदाम २ प्रभास ३ एवं ३ तीर्थोंको भरतादि चक्रवर्त्ति साधते हें इन स्थावर स्थानोंको तीर्थ सूत्रोंमें लिखा हे वा नही जो प्राणी एकांत पक्ष स्थापन कर्ता हे उसपर एकातनय वादक मिथ्यात्वका अवश्य वज्रपात होता हे सर्वज्ञ जैनधर्म स्याद्वादी हे इस लिये एकातनय नहीं दयादान पूजा, विषय, और कषाय शुद्धभाव विगर एक क्षेत्र हे, ऐसा समयसारमें लिखा है,

तीर्थकर्ता होनेसे तीर्थंकर कहाते हें, ऊपर लिखे स्थावर तीर्थ भी उन तीर्थ पतीकी स्थापनासे हें, जीव जिसद्वारा तिरे, वह तीर्थ कहाता हे, किंबहुना जाति भास्कर वेंकटेश्वर प्रेसमें छपा सो लिखता हे, वैश्योंका कृत्य खेती, व्यापार, गऊ आदि पशुवृत्ति, और व्याज, जैनियोंके उपदेशसे क्षेती गऊआदि पशुवृत्ति वैश्यों-नें त्याग दी, लेकिन् क्षेती करना अवश्य था इत्यादि (उत्तर) सर्वज्ञ जैनाचार्य उपदेशद्वारा लाभालाभ संपूर्णकृत्योंका दर्शाते हें, उसमें जिसको जो रुचे वह व्रत वह अंगीकार करता हे, माहेश्वरी, ओसवालादि तो क्षत्रिय वर्ण थे व्यापारमे विशेष द्रव्यलाभ देखा, जीवहिंसा अल्प, इस लिये, स्वीकारी होगी क्योंकि नीतिका वाक्य ह, यत: वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी, किंचित् २ कर्षणे, अस्तिनास्तिच सेवायां भिक्षानेवच नैवच १ अर्थ. वाणिज्यसे लक्ष्मी वृद्धिपाती हे, व्यापारद्वारा अमे-रिकन जर्मन जापानादि अडबोंपति हो गये, व्यापार द्वारा अंग्रेजसरकार बाद-साह साम्राट हो गये व्यापारसें पारसी मुसलमान बोहरे आदि महाश्रीमंत हो गये, अग्रवाल, महेश्वरी ओसवाल पोरवालादिक हजारों लक्षाधीस सइकडों कोट्याधीस विद्यमान है व्यापार केवदोलत अहिंसा धर्म पालनेसें मनुष्योंमे श्रेष्ठ पदसे अलंकृत हें, अग्रवालादि महाजनोंकी सेवा इस व्यापारमें चारोंवर्ण कर रही हे, प्रथमसाह, बादसाह, इहा तक, उच्च श्रेणीमें व्यापार द्वारा प्राप्त हैं, [किंचित् किंचित् कर्षणे] अर्थात् कृषाणकर्मक्षेतीमें कुछ २ द्रव्यप्राप्ति होय कभी वृष्टि अभाव होय तब धान्योत्पत्ति होय नहीं, तब ऋण लेना पडे व्याज देना पडे वर्षामें उत्पन्न धान्य ऋणमें चलाजावे, शुक [चिडिया सूए आदिपक्षी] सलभ [टीडी] चूए शूकर प्रमुख जीव धान्य भक्षण कर जावे, इस लिये द्रव्यलाभ विशेषतासें किसी भी समय होवे नहीं; और हल चलाते पृथ्वी फाडते

पृथ्वीमें रह त्रण, गिलेरी, साप, आदि अनेक स्थूल और सूक्ष्मजीवोंका संहार होता है टीडियोंके असंख्यदलको, धान्यरक्षार्थ, मारना, वह जीवहिंसाके अत्यंत लाभ प्राप्तिमें, द्रव्य लाभ अधिक कैसे संभव हो, व्यापारियों तुल्य धनपति कोई कृषक एक डोभी तो आपबतावेतो आपका आक्षेप जैन धर्म पर यथार्थ पने सिद्ध हो सके, जाति भास्कर ग्रंथ निर्माता उपासगदशासूत्रसे एक जैनधर्मी वैश्य आनंद गाथा पतीका स्वरूप लिखा है, यह आनंद २४ में तीर्थंकरका धर्मोपदेश श्रवण कर स्वशक्त्यानुसार महावीर भगवानके सन्मुख प्रतिज्ञा करी है के मैं पांचसय हल (वीगा) पृथ्वीमें क्षेती कराऊंगा, लेकिन् महावीर प्रभूनें, उसकूं ये नहीं कथन कराके तूं क्षेती मत कर, वह गृहस्थपने यावत रहा, तब तक क्षेती कराते रहा, लेकिन उसका व्यापार ४ कोटि स्वर्णमुद्रासे चलता था ४ कोटि स्वर्णमुद्रा व्याज वृद्धिमें था ४ जहाज व्यापारार्थ, समुद्रमें चलते थे, पांच शय शकटस्थलभूमीमें माल लाने चलते थे,४कोटि स्वर्णमुद्रानिधानमें निरंतर रखता था, ४०००० चालीस हजार गऊओंका ४ गोकुल था इस प्रकारके ' महावीर प्रभूके एक लाख गुणसठ सहस्र व्यापारी व्रतधर श्रावक ये १०० राजा भरत क्षेत्रके श्रावक उनोंके थे और सामान्य अनुव्रती, तथा व्रतवर्जित जिन वचन सत्य है ऐसी श्रद्धानवाले तो प्राय भारतवासी सर्वही थे, श्रेणिक राजा (भंभसार) दिक राजा, तथा जिन राजपूतोंसे यावज्जीव मांस भक्षण मद्यपान नहीं भी छूटा तथापि जिनवचनानुसार हित अहित, पुण्यपाप, बंध, मोक्ष, का आत्मामें भान हो गया था ऐसे भी लखों राजपूत उस महावीर प्रभूके परमार्हत जैनधर्मी श्रावक सम्यक्त धर कहाते थे, जिनोंका एक दोभवोंमेंही मोक्ष हो गया, तत्वज्ञान होना ये ही अलभ्य पदार्थ है, कायाको अत्यंत कष्ट, और पर प्राणियोंका असंख्य नाश होवे जो क्षेती नहीं करते, उसका जैनधर्म क्या करे, जैनाचार्योंकी पूर्व परिपाटी यह थी के, सर्व जनोंके लिये हितावह, मोक्ष प्राप्तिके मार्गका उपदेश कर देना, तूं अमुक वस्तु छोड ही दे, ऐसा अनुरोध जैनाचार्योंने कदापि नहीं करा है, जो आत्मबोधसे त्याग दे तो भी उस त्यागकी पूर्ण विधिमार्ग समझाना धर्म समझते थे,

द्रव्यव्यय करनेमें, लाभ होनेपर प्रथम श्रेणीमें, फाटका वाज तेसेंड ताल भी, दूसरे श्रेणीमें कपडेका व्यापारी, तीसरी श्रेणीमें जौहरी, चोथी श्रेणीमें धान्यादिके व्यापारी, पांचमी श्रेणीमें सराफीवाले, छट्ठी श्रेणीमें केवल व्याज करनेवाला, सातमी श्रेणीमें सेवाकारक गुमास्ते, उत्तरोत्तर अल्प व्यय कर्त्ता जानना.

-अस्ति नास्ति च सेवायां, अर्थात् नोकरीमें धन होता भी है और नहीं भी होता, वह प्रत्यक्ष है, लिखनेकी आवश्यकता नहीं, और भिक्षा नैवच नैवच अर्थात् भिक्षा वृत्तिसे द्रव्य नहीं होता,

अंग्रेज सरकारके राज्यशासनमें स्वदेशके लोग हाथोंसे व्यापारकी वस्तु बनानेवाले मसीनमें बणती वस्तुके सन्मुख निरु मूढ होकर कलाकोशलको जलां-जली दे बैठे यावन्मात्र पदार्थका व्यापार विदेशी प्रचलित हो गया, उस व्यापारद्वारा मुख्य लाभ तो अन्य २ विलायतोंके व्यापारियोंको प्राप्त होता है, और किंचित २ आर्यावर्त्तके व्यापारियोंको भी मिलता है, लेकिन अंग्रेज सरकारके सुखशांतिमय राज्यशासनके प्रताप लूटेरे डाकूओंसे बचाव होनेसे प्रजा इस समय द्रव्यप्राप्तिसें सुखसें निर्वाह करने लगी, गरीब लोक, कर्म करोंके लिये अनेक साधन आजीविकाके उपस्थित हो गये, जिससें भोजन वस्त्र मात्र गरीबोंको भी मिल जाता है, जो उद्यम करते हैं उनोंको, प्रजाके सुखसाधन, रेलतार विजलीका उद्योत, अग्निबोट [जलयान] में चकुरसी आदि अनेकानेक वस्तु, मणियारी वस्तुमें, हाड, लकडी, टेन, एलोमीन, काच, लोह, आदिके नाना पदार्थ टेम-पीस [घडी] छापखाना आदि विद्यावृद्धिका साधन, वादित्रोंमे हारमोनियम् [वीणा] की प्रतिनिधि, छत्तीस कर्म करनेके अस्त्र, क्षत्री धर्मार्थ तोप, बंदूक आदिके साधन भी विलक्षण, द्रव्यरक्षार्थ तनजोरी नाना भेद, नाना प्रकारके वस्त्र नाना प्रकारके कागद, एसा कोई पदार्थ नहीं रहा, जो की अन्य स्थान यूरोपसे नहीं आता हो, रेसमी [कोसिक] वस्त्र जिसको ५ सय वर्ष प्रथम चीनांशुक आर्यावर्त्तवाले कहते थे, चीन देशसें आता था, बडे द्रव्यपात्रकी स्त्रियें एसे वस्त्रको पहरने उत्कंठित रहती थी, सहस्र मुद्रा देने पर प्राप्त होता था, वह कोसिक वस्त्र, मजूरणियें, पर धापन कर रही है, अर्थात ३।४। मुद्रामें मिलनेलगा, इस्कूल [पाठशाला] दवाखाना [औषधालय] भी प्रजा सुखार्थ प्राय सर्वत्र प्रचलित है, कोई भी हिमायतीवाला किसीके मजबी [धर्म] बाबत अत्याचार नहीं कर सकता, पोष्ट संबधी सुखसाधन अत्यंत ही उपयोगी जिसके सुख लेखनीसे नहीं लिखसकते, संपूर्ण दक्षण भरतमें नदियोंपर पुल [पाज] सर्वत्र मार्ग सडक जिसपर अश्व मनुष्य पशु गण भी सुखसें प्रस्थान करते हैं, यत्र २ जलका अभाव था तत्र २ नहर नल लगाकर जल संबंधी सुखसाधन रच दिया, ब्रिटिस सरकारके राज्य प्रबंधका सुख अवर्णनीय है, सर्व लिखा जावे तो एक बडा ग्रंथ बनजावे हमारी न्यायशील ब्रिटिस सरकारका यद्यपि निजनिवास स्थान इंग्लंड (लंडन) राजधानीमें है, तथापि न्यायनीति सुखसाधन प्रबंधद्वारा, दोनो प्रजावर्गको, एक शरीरके दो नेत्रोंको तुल्यपने वर्त्तती हैं, और वर्त्तेगी, इनका राज्यशासन शांतिसुखसमेत चिरस्थाई रहे, जिससें सर्व प्रजा सुखको प्राप्त हो, परम पदको साधे, किंबहुना,

यदि ग्रंथमें या प्रस्तावनाके संग्रहमें न्यूनाधिक लिखा हो तो विबुधजन क्षमा

प्रदान करेंगे, भूल-होना मनुष्य मात्रका धर्म है, सर्वज्ञ वीतरागही भूलसे वचे है, श्रीरस्तुः कल्याणमस्तुः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

१ उपाध्याय रामलालजीकी विद्याशाला वीकानेर मारवाड मोहल्ला रांघडी.
२ जेन मागरोल सभा, मेघजी हीरजी मुंवई पायधोणी
३ श्री चिंतामणिजीका मंदिर पाटियादारजी मुंवई दूसरा भोईवाडा.

छपे हुये ग्रथ

		न्योछावर
१	रत्नसमुच्चय (रत्नाकर सागर) खरतरगच्छ, तपागच्छके सर्वधर्म कर्त्तव्य,	७)
२	पूजामहोदधि, ३७ पूजागायन विधियुक्त	२॥)
३	दादागुरुदेवपूजा, सिद्धमंत्रयुक्त	।=)
४	दादागुरुगुणरत्नावली, स्तवन, छंद, अष्टकादि,	१॥)
५	व्यवहारालंकार, धन कमानेका	१॥)
६	सिद्धमूर्त्ति भागप्रथम	॥)
७	सिद्धमूर्तिभाग दूसरा, ३२ सूत्रपाठसे मूर्तिपूजा	॥।)
८	शकुन, दुपगे, च उपगे, कालसुकाल, भावी फल मालम होना	१)
९	चाणक्य १६ अर्थ, पाशाशकुनावली, स्वरोदय भाषा	१)
१०	पचप्रतिक्रमण, १६ स्तोत्र अर्थयुक्त	२।)
११	वैद्यदीपक, इसमें, रोगपरिक्षा, इलाज, देशी, यूनानी, डाकटरी, होमियापथी, स्त्री, वाल, पशुचिकित्सा, अजमूदा है	५)
१२	स्वप्नसामुद्रक, तेजी मंदी, नीलामके अंक निकालन विधिः	।–)
१३	जैनदिग्विजय	६)
१४।	२२ समुदायवालोंके उपयोगी गुणविलाश	१)
१५	महाजनवंश मुक्तावली, दुसरी आवृत्ति, अति उपयोगी स्थलवृद्धि,	२॥)

जवाब मंगानेवाला जुडा हुआ कार्ड भेजा करे, पुस्तक मंगाकर विदेशसे पीछा लोटावै, उसको २४ तीर्थंकरकी सौगन है, नाटपेट पत्र नहीं लेंगे, सौ रुपयेसे कम पुस्तक खरीददारको, कमीसन नहीं मिलेगा, इस समय कागद छपाई सबकी मंहगाई, जिसपर पोष्ट वे रजीष्टरी पोथी नहीं लेती, टिकट खरचदूना करा है।

अनुक्रमणिका ।

छापेके कारण अशुद्धियां रही हे पृष्ट १७६ में वंधा करा है उस जगहमूं वंधा पढना, प्रस्तावनाके पृष्ट ४ में वाद् साह जहां गीर करा हे उस जगह शाह जहां पढना,
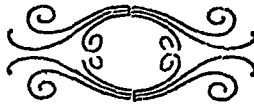
॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ जैनराजपूत महाजन ओसवाल वंशोत्पत्ति प्रारम्भ ॥

वंदोंश्री महावीर जिन, गणधर गौतमस्वाम, मात ।
नमूं जिन सारदा, पूरण वंछित काम ॥ १ ॥
ओसवालबड भूपती, शूर वीर मच्छराल ॥
राजकुमर दाता गुणी, शरणागत प्रतिपाल ॥ २ ॥
अम्बपती महाजन विसद, जिनधर्मी रजपूत ॥
दया धर्म श्रद्धा धरी, अदल करे करतूत ॥ ३ ॥
देव एक अरिहंत जिन, गुरु जती अभिराम ॥
द्रव्य भाव पूजा करे, अहनिशधर्मी धाम ॥ ४ ॥
ख्यात लिखूं इस वंश की, वडक्रूं पसरी म्यात्र ॥
रहोमत्रा चढ़ती कला, धनसुत कीरति लाख ॥ ५ ॥

श्री चौवीसवें तीर्थङ्करके शासनमें उग्रकुल १ भोगकुल २ राजन्य-कुल ३ और क्षत्रीकुल ४ इन चारोंवर्णोंवाले जो जैनधर्म पालते थे वो सब गृहस्थ श्रावक नामसे कहलाते थे, इतिहास तिमिर नाशकके ३ प्रकारमें राजा शिवप्रसाद सतारे हिन्द लिखता है स्वामी शङ्कराचार्य्यके पहले इस आर्य्यावर्त्तमें ४० क्रोड मनुष्योंकी वस्ती सब जैन (बौद्ध) थे, वेदके माननेवाले काशी कन्नौज कुरुक्षेत्र काश्मीर इन चार क्षेत्रमें बहोत कम संख्या मात्र अस्वल रह गये थे, जैनोंको बौद्ध इसवास्ते लिखा है कि और विलायतों वाले जैनोंसे वाकिफकार नहीं है कारण जैनियोंकी वस्ती मध्य खण्ड में कई लाखोंकी संख्या मात्र रह गई है, चीन जापानके जो मांसाहारी तांत्रिक, शराबके पीनेवाले बौद्ध हैं, उनसे आर्यावर्त्तके जैन-(बौद्धों) से कोई संबन्ध नहीं है, मतलब अब जो जैनमतके विरोधी

हिन्दमें २० करोड मनुष्योंकी वस्ती है, वो सब जैनधर्म वालोंकी सन्तान है, कारण इनोके वडेरे सब जैनधर्मी थे, जैनधर्मी राजा, तथा प्रजाकी वस्ती थी, इस वक्त मे अमेरिका, इंगलिस्तान, जर्मन, आदि विलायतेंके, वडे २ विद्वानोंका, निर्धार किया हुआ है, कि, सृष्टीके प्रवाहकी, सरुआतसें ही. जैनधर्म है, बाकी आजीविकाके लिए, पीछेसें, मनुष्योंनें, नये २ धर्मोंकी कल्पना करी है, इस वातकी सबूती देखणी हो तो, अमेरिका वगैरह, देशोंमैं फिर कर, दया धर्मका, उपदेश करनेवाले, स्वामी विवेकानन्दजी कृत, (दुनियाका सबसे प्राचीनधर्म), इस पुस्तकको देखो, इन स्वामीनें आज दिन तक अन्यधर्म वालोंको, विलायतोंमें, मदिरा मामादिक कुकर्म छुडाकर, बडा ही उपकार किया है, स्वामीका वेष, गेरू रंगित है, ऐसे संन्यासीयोंका, जीवितव्य, सदाके लिए, अमर हैं, स्वामी शङ्कराचार्य्य, जिन्होंको हुए हजार आठसै वर्ष हुआ, ऐसा इतिहास तिमिर नाशक मैं, लिखा है, इन्होंनें, राजाओंकी मदद पाकर, जैन धर्मियोंको, कतल करवाया, ये बात माधवाचार्य्य कृत, शङ्करदिग्विजय मैं, लिखी है, बस बलात्कार दयाधर्म जैन छुडाकर मिथ्यात्व हिंसाधर्म लोकोंको, धारण कराया, मरता क्या नहीं करता, इस न्यायसें, लोकोंनें, कबूल कर लिया, पीछे रामानुजादिक, चार सम्प्रदायनें, मास मदिरा, यौंतो खानेके लिए मनाई करी, मगर, यज्ञ कर खाने मे, दोष नहीं माना, इस तरह जैनधर्म घटते गया, राजाओंनें, जैनधर्मके, कठिन कायदे देख, पूर्वोक्त आचारियोंका, माल खाना, मुक्त जाना, उपदेश पर, कायम होते गये, यथा राजा, तथा प्रजा, इस न्यायसें, जैनधर्म, जो मुक्तिमार्ग था, सो लोकोंनें, छोड दिया, वेद परयकी न मनानेवाले, स्वामी शङ्कराचार्य्यनें, ऐसा उपदेश करा, वेदकी श्रुतीसे, जो यज्ञ मे घोडे बकरे आदि जीवोंकों मारते है, उन जीवोंकी हिंसा नहीं होती, ये बात मासाहारियोंकों रुची, तब, देवी, भैरू आदिकोंके, सन्मुख पूजाके बहाने, पशुओंकों मार, मांस खाणेमै दोष नहीं, ये भी यज्ञ है, और रामानुजादिक भक्तिमार्ग वालोंनें, छप्पन भोग, छहों ऋतुओंके सुखदाई, खान पान, पुष्प, अतर, राम, कृष्ण नारा-

यणकी मूर्तिकी, वलि देकर, भक्तजनोंकों, प्रशादी खाणा, शुरू कराया, ऐसे इन्द्रियोके सुख पोपण रूपधर्मके सन्मुख, पांचो इन्द्रियोंका, दमन करणा, ऐसा त्याग वैराग्य रूप, जैन धर्म, कब प्रशन्न, मोजी सोखी लोकोंकों, आता था, इत्यादि कारणोंसें, जैन धर्म थोडे पालनेवाले, लोक रहगये, २४ मैं अन्तके तीर्थंकरने फरमाया था कि, है गौतम, भस्म राशि ग्रह मेरे जन्म राशि पर, मेरे निर्वाण वाद आयगा, इस कारण जैनधर्मका, उदयं २, पूजासत्कार, कम होता जायगा, तब महाप्रभावीक आचार्य्य २१ हजार वर्पके पचम आरेमें २३ वक्त जैनधर्म बढाते २ उद्योत करते रहेंगें मेरा शासन अखण्ड २१ हजार वर्प चलेगा चतुर्विध संघ रहेगा ऐसा लेख निर्वाण कल्किा वगैरह ग्रंथोंमै लिखा है इस तरह जैनधर्मका स्वरूप भगवद्वचनसें जानकर जिन जिन आचार्य्योंनें जैनधर्मकी उन्नती करी नींव पुखता डाली सो सक्षेप वृत्तान्त यहां दरसाते हैं इस जैनधर्मके लाखो श्रावक बनानेवाले पडते कालमै उद्योतकारी प्रथम सवा लाख घर राजपूतोके महाजन वंशके १८ गोत्र थापनेवाले पार्श्वनाथ स्वामीके छठे पाटधारी श्रीरत्नप्रभसूरिः वाद ९२ गोत्र लाखों घर महाजन बनानेवाले श्रीमहावीरस्वामीके ४३ मै पट्टधारी श्रीजिनवल्लभसूरिः एक लाख तीस हजार घर राजपूतोंको महाजन बनाने वाले दादा गुरुदेव श्रीजिन दत्त सूरिः हजारों घर महाजन बनानेवाले मणिधारी श्रीजिन चन्द्र सूरिः ५० सहस्र श्रावक बनानेवाले श्रीजिन कुशल सूरिः इत्यादि फिर गुजरात देश मे लाखो घर जैनधर्मी श्रावक बनानेवाले, मलधार हेम सूरिः, पूर्ण तल्लगच्छी श्रीहेमाचार्य्य, और छुटकर गोत्र कई २ और भी अल्प संख्यासे, और आचार्योंनें, बनाये हैं, ज्यादह इतिहास सर्व गोत्रोका लिखणेसें, लाख श्लोकसंक्षा होणा सम्भव है, इस लिए विशेष प्रसिद्ध २ गोत्रोंका इतिहास लिखते है——

सबसें पहले महाजन १८ गोत्र ओसिया पट्टणसें प्रगट भये, ये पट्टण विक्रम सम्वतके पहले चारसे वर्पके करीब वसा था, जिसका कारण ऐसा हुआ, श्रीभीनमाल नगरीके राजा पमार भीमसेनके पुत्र २ बडा

ऊपलदेव, छोटा आसपाल, और आसल, ऊपलदेव राजकुमार, ऊहड़, ऊध-रण, दो मन्त्रियोंको संग ले, दिल्लीके शाहन्शाह साधुनाम महाराजाकी आज्ञा ले ओसिया पट्टण नगर बसाया, राजाकी रक्षामें चारों वर्णोंके करीब, ४: लाख घर, बस गये, जिसमै सवा लाख घर तो, राजपूतोंके थे, तीस वर्ष जब, राज्य करते व्यतीत हुए, राजा प्रजाका धर्म, देवी उपासी, वाम-मार्ग था, उन्होंकी देवी, सच्चाय थी, मांसमदिरासें, देवींकी पूजा कर खाणापीणा करते थे, इस बातकों, मुक्ति जाणेका, धर्म समझते थे, इस समय, श्रीपार्श्वनाथजी भगवानके, छठे पाटधारी, श्रीरत्नप्रभसूरिः, केशी कुमारगणधरके, पोते चेले, मास क्षमणसें यावज्जीव पारणा करणे वाले, १४ पूर्व्व धर श्रुत केवली भगवान, विचरते २, श्रीआबू पहाड तीर्थ पर, पाचसौ साधुओंके संग, चातुर्मासमै रहैं, जब विहार करणे लगे, तब उस तीर्थकी अधिष्टायिका अम्बादेवीनें, अरज करी, हे प्रभु! मरुधर देशकी तरफ विहार करणा चाहिए, गुरूने कहा, इस देश मै, दयाधर्मी लोकोंकी, वस्ती नही होणेमे, साधुओंकों, धर्मध्यानमै अन्तराय पडता है, आहारपानी मिल नहीं सकता, तब अम्बाने कहा, आपके पधारणेसें, वहुत धर्मका लाभ होगा, तब गुरुने पाचसौ साधुओंकों, गुजरातकी तरफ भेजे, एक शिष्यकों संग ले, विहार करते, ओसियां पट्टण पहुंचे, किसी देवस्थानमै, आज्ञा लेकर मास क्षमण तप करते हुए ठहरे, चेला अपणे लिए गोचरी जाता, धर्मलाभ करते फिरता, लेकिन जैन धर्मकी मर्यादसें, किसी जगह आहारपानी नहीं मिला, तब, किसी गृहस्थका रोग, औषधीसें मिटाकर, उसके घरसें, भिक्षा लेकर निर्वाह किया, ये बात गुरूने, ज्ञानके उपयोगसे, जाणा, तब शिष्यको उपालंभ दिया, तब शिष्यनें, हाथ जोड विनती करी कि, हे प्रभु इस वस्तीमै, हरगिज, ४२ दोषरहित, आहार नहीं मिलता, जानकर मैंनें दोषित आहारसें निर्वाह किया हैं, तब गुरुनें कहा, विहार करणा चाहिये. तैय्यार हुए, तब उस महात्मा मुनि के, तपके प्रभावसें, सच्चाय देवीने विचारा, धिक् २, ऐसे तारण तरण, निस्पृही, मुनिः, इस वस्तीसें, भूखे जायगें तो, इस वस्ती मै अमंगल होगा, तब देवी साक्षात् प्रगट होकर, नम्रता पूर्वक, अरज करी,

हे कृपासिन्धु, ऐसे आपकों, जाना उचित नहीं है, आप इस प्रजाकों लब्धि मंत्रसे, धर्मकी शिक्षा दो, गुरुने कहा, साधू विना कारण लब्धि फिरावे तो, दंड आवे, तब, देवीने कहा, हे भगवान, आपसें कोई वात छिपी नहीं है, तीर्थकरोंकी आज्ञा है, भगवती सूत्र मैं साधुओंको, तलवार ढाल लेकर जिनधर्मके निन्दक, तथा, घातियोंकों समझाणेकों, साधू लब्धि वन्तको, उत्तणा कहा है, संघ मे महा आपदा डालणे वाले, महा दुर्बुद्धि, बली ब्राह्मणकों विष्णु कुमारनें, पुलाक लब्धिसें, जानसें मार डाला, आलोयण प्रायश्चित ले, उसी भव मुक्तिगये, उस दिनसें राखी बांधनेका त्यौहार ब्राह्मनोंनें चलाया, और आगे गोसालेका जीव जो साधुओं पर, रथ डालेगा, उसकों, सुमंगल साधू रथसहित जलायगा, गोसालेका जीव नरक जायगा, मुनिः आलोयण प्रायश्चित ले, उसी भव मै मुक्ति जांयगें, दशा श्रुत स्कंध सूत्रमै, सबकी आपदा मिटाणे, लब्धि फिराणी लिखी है, आज्ञाका आराधक कहा, लेकिन संघके कार्य निमित्त लब्धि फिराणेवाला साधु विराधक नहीं, यदि विराधक होते तो, उसी भवमै मुक्ति साधू कैसें जाते, संसारके जीव भी, लाभ विशेष, और हानि अल्प, ऐसा काम सब बुद्धिमान करते है, ऐसा व्यवहार देखणेमै आता है, और साधू लोक भी ऐसा करते है, जैसै मुनिः, एक गामसें दूसरे गाम, जब विचरते हैं तो, अनेक जीवोंकी हिसा होती है, परन्तु एक जगह जादा रहनेंसें स्नेहबद्ध मुनिः हो जाते है, और, अति परिचय, अति अवग्या, ये दोष भी लगता है, नालक बचन भी है, (दोहा) बहता पानी निरमला, पड़ा गंधीला होय । साधू तो रमता भला, दाग न लगे कोय ॥ १ ॥ और अनेक क्षेत्रों मै, विद्वान मुनिःयोंके उपदेशसे, अनेक भव्य जीव, सम्यक्त्व व्रत धारते है, जिनमन्दिर, ज्ञान भण्डारकी, सम्हाल होती है, मिथ्यात्वी निन्हवोंका, दाव नही लगता, श्रावक लोक स्यादवादन्याय तत्व पढकर, अनेक जीवोंको समझाणेके लिए, समर्थ होते है, इत्यादि अनेक लाभकी तरफ विचार करके, विचरणेकी आज्ञा तीर्थकरोनें दी है, फिर द्वार बन्द करणा, और खोलणेंसें, प्रत्यक्ष पचेंद्री जीवो तककी, हिंसा है, इसलिये साधू साध्वीके प्रतिक्रमण सूत्रमैं, (उग्घाड कवाड उग्घाड-

णाए) इसका पाप तीर्थकरोंने, फरमाया, परन्तु साध्वीयोंको द्वार वन्द करणा और खोलणेकी आज्ञा दी, मतलब कोई लपट रातको, खुला द्वार देख साध्वीयोंका, शील न खडित कर दै जीवहिंसासें शील रक्षाका विशेष धर्म समझ साध्वीयोंको, उपाश्रयका द्वार बन्द करणा, तीर्थकरोंनें फरमाया, इस तरह माछीगर धीवरसोनक कसाई सर्व यवन जातीयोंके देव कुल, मठ मंडपादि कराणेसें, एकान्त हिंसा, आरम्भ आश्रव फरमाया श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रके आश्रव द्वार मैं, और महानिशीथ सूत्रमैं, दानशील तपः भावनाका जो फल, ऐसा फल, श्रीजिनराजके मंदिर कराणेवाले श्रावकोंकों, तीर्थकरोंनें फरमाया है, मन्दिर जिनराजका कराणेवाला, श्रावक, वार मैं देवलोक जावै ऐसा फरमाया है, इसलिये ज्ञाता सूत्रमैं, जहां द्रौपदी पूजा करणे गई, उहां जिन मन्दिर, श्रावक लोकोंका, कराया हुआ था, चम्पा नगरी भगवान महावीरके, केवल ज्ञानयुक्त विचरते समय मैं, वसी, उसके पाडे पाडे याने महोल्ले महोल्ले में, जिन मन्दिर, श्रावक लोकोंके, कराये हुए थे, तभी तो, उवाई सूत्र मै नगरीके वर्णनमैं, लिखा है, श्रावक लोकोंने जिन मूर्त्तिया असंख्या करवाई, तभी तो, व्यवहार सूत्रमैं, साधुओंकों जिन प्रतिमाके सन्मुख, आलोयण लेणा, लिखा है, विगर प्रतिमा भराए, किसके सामने, आलोयण लेणा सिद्ध होता है, इत्यादि अनेक बातोंसें, सिद्ध है कि, जिसमें अल्प पाप बहुत निर्जरा, वह काम साधु श्रावकोंका, करनेकी आज्ञा तीर्थकरोने दी है, आप श्रुतकेवली, सर्व जाण हो, मैं इतने दिन, मिथ्या धर्म मै, मुरझा रही थी, आज आपकों अवधि ज्ञानसें जाण, मिथ्यात्व त्याग, अर्हत भाषित तत्वको अक्षर अक्षर सत्य समझा, आपके पास आई हूं और मेरी अरजको आप, सफल करो, दयाधर्म वटे, इसमैं आपकों बडा ही लाभ है, यद्यपि आप वीतरागी, एक भवावतारी, निर्मोही हो, तथापि धर्म वृद्धि करणा, आपका कार्य है, क्या महावीर स्वामी, सद्दाल पुत्रकों, यों नहीं समझा सकते थे, तथापि उसके मकान पर चला कर गये, और अनेक बातें पूछी, पीछे श्रावक करा, केवल ज्ञानी वीतरागीकों, घर पर जाणेकी, क्या आवश्यकता थी, लेकिन जो जिस तरह पर, समझनेवाला हो, उसको उसी तरहसें दया

धर्मकी प्राप्ति, वीतरागी कराते है, इतनी वीनती सुण, गुरूने चेलेको भेज नगरमैंसें, एक रूईकी पूणी मंगवाई, दशमै विद्याप्रवाद पूर्व्व मैं लिखे मंत्रसें, उस पूणीका सांप बनाकर आज्ञा दी, जैसे दयाधर्मकी वृद्धि होय, ऐसा कर, अब वो साप, भरीसभामै, बेठे हुए राजा ऊपलदेवके पुत्रकों, जाके काट खाया, लोक मारने भगे, अदृश्य हो गया, राजाने विपवैद्य, गारुडी, जोगी, ब्राम्हन, मंत्र वादी चिकित्सकोसे बहुतही चिकित्सा कराई, परन्तु विप विस्तार पाते ही गया कुमर अचेतन मृतकतुल्य हो गया, उस दिन नगरीमैं हाहाकार मचगया, प्रायः प्रजाने, अन्न जल भी, नहीं लिया, मरा जांण, श्मसानको ले चले, लाखो मनुष्य रोते, पीटते, नगरके द्वार पर्यंत पहुंचे, तब गुरुकी आज्ञासें, चेलेनें रथी रोकी, और बोला, तुम इस रथीकों मेरे गुरूके पास, ले चलो, अभी कुमरको जीवित कर देंगें, ये वचन सुनते ही राजा ऊपलदेवनें, कुछ धीरज पाया, और चेलेके पिछाडी हो लिया, जहा, श्री आचार्य्यजी महाराज, विराजमान थे, उहां पहुंचा, आचार्य्यको देखतें ही राजाका दिल, ऐसा दरसाव देणे लगा कि, अवश्य मेरे पुत्रको, ये भगवान जीवित दान देंगे, राजा अपना, मस्तक गुरूके चर्णोमै धरकर, दीनस्वरसें, रोता हुआ बोला, हे प्रभु मेरे वृद्धपनेकी लाज, आपके आधीन है, पुत्रविगर सब जग सूना है, इस तरह बहुत स्तुति करी, और बोला, स्वामी, मेरा कुटुम्ब तो उसराण, आपकी सन्तानसें कभी न होगा, बल्कि, ओसिया पट्टणकी सब प्रजा इस मुनिः भेपसें, कभी वेमुख न होगी, तब सब प्रजा भी, गद् गद् स्वरसे कहने लगी, हे पूज्य कुंवरजीकों जो आप सचेतन कर दोगे तो, सब प्रजा आपकी, सदाके लिए दासत्वपना करेगी, तब गुरू बोले, हे राजेन्द्र, जो तुंम सब लोक, जैन धर्म अङ्गीकार करो तो, पुत्र अभी सचेत हो जाता है, राजा प्रजा तथास्तु, जय २ ध्वनि. करने लगी, गुरूजीनें योग विद्यासें पास किया, तुरत वो पूणिया साप आकर, डंक चूसणे लगा, जहर उतारकर अदृश्य होगया, कुमार आलस मोडके बैठा होगया, और पितासे पूछने लगा, इतने लोक एकत्रित होकर मुझें जंगलमै रथीमें डालकर, क्यों लाये, ये सुनतेही, राजा और प्रजाके, आनन्दके चौधारे छूटपडे, और राजानें कुमरको छातीसें

ल्गाय, बडा आनन्द पाया, और राजा सेठ सामंत गुरुका, महा अतिशय देख, साक्षात् ईश्वर समझ चरणोंमें लगे, और जय २ ध्वनि होणे लगी, राजा बोला, आप, ये राज्य, भण्डार, सर्वस्व लेकर, मुझे कृतार्थ करो, गुरु बोले, हे भूपति, ये तुच्छ सुखदाई, महा दुःखका कारण, राज्यको समझ, हमने हमारे पिताका भी, राज्य त्याग दिया, इस लिये हे राजेन्द्र, स्वर्ग और मुक्तिका, अक्षय सुख देणेवाला, सर्व जीवनकों आनन्द उपजाणेवाला श्रीसर्वज्ञ अर्हत परमेश्वरका कहा भया, विनयमूल धर्मका ग्रहण करो, राजा पूछता है, हे स्वामी, मुझे समझाओ, तब गुरु, सर्व प्रकारकी जीवहिंसा, सर्व प्रकारका झूठ, सर्व प्रकारकी चोरी, सर्व प्रकारका मैथुन, सर्व प्रकारका परिग्रह, सर्व प्रकारका रात्रि भोजन, त्यागणे रूप, जो धर्म है सो, हे राजा साधुओंके, करणे योग्य है, और गृहस्थके, सम्यक्त्व सहित बारह व्रत है, वह तीर्थंकरोंने, फरमाया है, देव अरिहंतके चार निक्षेपे, वंदनीक, पूजनीक है, जिनेश्वर देवकी, हे राजेन्द्र द्रव्यभावसे, पूजन करो, श्रीजिनेश्वरका, चैत्यालय कराओ, जिनेश्वरकी प्रतिमा करवाओ, सतरह भेदसें, अष्ट द्रव्यादिकसें, पूजन भावसे करो जैसे. श्रीराय प्रश्नीसूत्रमें, लिखा है, तैसे, सुगुरु पहले लिखे सो, षट्व्रतोंके पालणेवाले, जिनेश्वर देवका कहा भया, सत्यधर्मका उपदेश, यथार्थ करनेवाले, जिनोंकों वस्त्र पात्र, उतरणे मकान, अन्न, पाणी, औषधी, शुद्धगवेषणीय, देओ, वन्दन, सत्कार, गुण कीर्तन करो, धर्म केवलीकथित, जिसमें पहले तो, बाईस अभक्ष्यका, त्याग करो, नवतत्त्व; षट्द्रव्य, और श्रावक धर्मका आचार विचार सीखो, और आदरण करो, जिनधर्मकी प्रभावना करते हुए, गरीब, अनाथ, दीनहीनका उद्धार करो, रथयात्रा, संघयात्रा, तीर्थंकरोंकी कल्याणकभूमी स्पर्शन रूप, भावभक्तिसे, तीर्थ यात्रा करो, इस तरह, हे राजेन्द्र, व्यवहार सम्यक्त्वकी करणी करते, निश्चय सम्यक्त्वकों, समझो, आत्माही देव, आत्माही गुरु, आत्माही धर्म, इस स्वरूपके ज्ञाता होकर, पांच अणु व्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षाव्रत, एवं सम्यक्त्व युक्त १२ व्रत धारो, अमृत रूप जिनवाणी सुणके, सवालाख राजपूतोंका, अनादि मिथ्यात्वका पड़दा, दूर हुआ, सबोंनें श्रावक

धर्म, अंगीकार किया, सचाय देवीकी सहायतासे, धर्म पाया इस लिये सम्यक्त्व धारणी साधर्मणीकों, उपकारणी जाणके लपसी, नारेल, खाजा, चूरमा, पक्वान्नसें, बली देणा शुरू रक्खा, जगत्तारक वीर प्रभुका मन्दिर कराणा शुरू कराया, सचायदेवीने, प्रकट होकर महाजन विरुद दिया, इस बातकों सुणके भीनमालका राजा, आसलने भी, जैनधर्म, अगीकार करा, और, भीनमालमैं, महावीर प्रभुका मन्दिर, कराणा शुरू करा, दोनों मंदिरोंकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त एक दिन होणेसें, रत्नप्रभ सूरिनें, दो रूप रचकर, ओंसिया और भीन मालके मन्दिर मूर्तिकी, प्रतिष्ठा एक कालमैं, करी, जैन धर्मका आचार विचार सीखके, सब राजपूत, १० वर्षमैं हुशियार हुए, जब दोनों मन्दिर भी चार मंडपका शिखर बद्ध १० वर्षमैं तैय्यार हुआ, प्रतिष्ठाके पीछे साधर्मी वात्सल्य राजानें किया, तब ब्राह्मन जो राजाके कुल भिक्षुक थे, उन्होने भोजनकी वखत सिर फोडी करणी शुरू की, तब राजाने कहा, अगर जैनधर्मकी, श्रद्धा धारण करो, जिन मन्दिरकी सेवा और जतीगुरूकी टहल बन्दगी, धारण करो तो, तुम्हारा मरणे, परणे, लागभाग हम लोक देंगें, अन्यथा नहीं देंगें, तब पूर्वोक्त जातिके ब्राह्मनोंमेंसें, पाच सहस्र पुरुषोंनि कहा, ये बात हमैं मजूर है, परन्तु जिनमन्दिरमैं जो बली चढाये जाती है, वो हमैं देणा होगा, क्यों के आगे, ये मर्यादा थी जो जिनमन्दिरमै बली (नैवेद्यफल) चढाए जाते थे, वो सब मन्दिर ऊपर, कूट पर, धरा जाता था, उसको कऊए आदि जीव भक्षनकर जाते थे, इस वास्ते, कोपमैं कऊएका नाम, संस्कृतमै बलिभुक् कहते है, तब राजाने, अपने पमारोके कुलभिक्षुककों, महावीर प्रभुके मन्दिरमें झाडू देणे, बरतण मलणे, दीपक जलाणे, जललाणे इत्यादि मन्दिरका काम सुपुर्द कर दिया सम्हलाया, मन्दिरका बलिदान खाणेवाला वलिअद् जातका नाम पड़ा, लोकोंनें वलि अद्शब्दको विगाड़ कर, (बलध) कहणे लगे, उपल देव पमारकी सन्तानका श्रेष्ठी गोत्र रत्नप्रभसूरिः नें, स्थापन किया था, वो विक्रम सम्बत् १२०१ मैं चित्तोड मैं, राणेजीकी राणीकी, आंख अच्छी करणेसे, वैद्य पदवी पाई, इस दिनसे, श्रेष्ठि गोत्रका नाम, वैद्य गोत्र प्रसिद्ध हुआ, रत्न प्रभसूरिका,

उपकेशगच्छवजाताथा वह सम्वत् १०८० के वर्ष में दुर्लभ राजाकी सभामें कुँअला विरुद पाया, ये वलीअद् भोजक, अभी भी, वैद्य गोत्र और कुमला गच्छके, सेवक पणेका, काम कर, अपना हक्क लेते है, इस तरह साधर्मी-वात्सल्य में, ओसवाल महाजनोंके संग, भोजन करनेमे भोजक कहलाए, देव अरिहंत, और गुरु जतीकी सेवा करने लगे, तव राजा प्रजाऊंचे शब्दसें, सेवक-कहने लगे, इस तरह ८४ जातके ब्राह्मनों मै सें ४ गूजर गोडछखंडेलवाल ब्राह्मणगोत्र १०, राजा ऊपल देवके महाजन होते सो वखत हुए, वाकी नव गोत्र वालोका हक्क, १७ गोत्र, ओसवालोंके सेवक, भिक्षुकपणेके हक्कदार रहै, राजा ऊपल देवके पिताके भ्राता सालमजी जिन्होंकों, राजा, तातजी यानें (पिताजी) कहके पुकारते थे, इसवास्ते प्रथम गोत्र तातेहड़ १ वाफणा २ कर्णाट ३ वल्हरा ४ मोराक्ष ५ कुल्हट ६ विरहट ७ श्रीमाल ८ श्रेष्ठि गोत्र ये राजा ऊपल देवका ९ सहचिंती गोत्र १० (ये राजा ऊपल देवके प्रधान था उसका) आई चणाग गोत्र ११ भूरि (भटेवरा) गोत्र १२ ये राजाके सेनापतिका, भाद्रगोत्र १३ चीचट गोत्र १४ कुंभट गोत्र १५ डीडू गोत्र १६ कन्नोज गोत्र १७ लघुश्रेष्ठि गोत्र, १८ ये गोत्र राजाजीके भ्राता छोटे आसपाल उसका हुआ, इस गोत्रमें सोनपालजी नामके नामी पुरुष हुए इनके नामसे लघुश्रेष्ठि -गोत्र वाले सव सोनावत वजणें लगे, ऊपल वडे भ्राता जिन्होका श्रेष्ठ गोत्र आसपाल छोटा भ्राता जिसका लघु श्रेष्ठि, ये दोनों, वैद्य, सोनावत, वजते है, सेठिया, और सेठी, गोत्र जो, अव प्रसिद्ध है, वो सव, जिन दत्त सूरजीके प्रतिवोधे हुए है पालीनगरमें, और सुचिंती गोत्र वर्द्धमान सूरिः खरतर गच्छाचार्यके प्रतिवोधकं है, सुचिन्ती और सहचिन्ती दो गोत्र जुदे जुदे है, वाफणा गोत्र और वहुफणा गोत्र अलग २ है वाफणा मैसें ३७ सारवफटी है, इन्होंका गच्छ खरतर है, श्रीश्रीमाल गोत्र श्रीजिनचन्द्र सूरि खरतर गच्छाचार्यनें महत्तीयाण गोत्र मैसें प्रतिवोधके महाजन किए है, श्रीमाल गोत्र और श्रीश्रीमाल गोत्र जुदा नहीं है, एक ही है श्रीमाल जातीको, पावों-मैं सोना पहननेकी मनाई नहीं

है, मुसलमीन बादसाहोने, सदाके लिए, बक्सा हुआ है, इन्हों मै जातीके नख बहुत थे तब तो सगपण भी श्रीमाल २ आपस मै ही करते थे, अब परिवार बहुत कंम होग या, लेकिन गच्छ खरतरमै ही रहै, इसलिए गुरु भक्तिसे लक्ष्मी तो इन्होकी अब भी दासी बन रही है, अब तो ओसवालोंको बेटी देणे लेणे लग गये है, ८४ जातिके व्यापारी गोत्रों मै श्रीमालोंको बादशाहने, उच्चपद दिया था, इस तरह १८ गोत्रोंकी प्रथम थापना भई. फिर सवालाख देस मै, रत्न प्रभ सूरि:ने, सुवड चंडालिया. ये दो गोत्रोंके दस हजार घर प्रति बोधे, दश गोत्र भोजक लोगोनें वाममार्ग छोडा नहीं, प्रच्छन्न पणेवों भी किया करते रहै, और अभी भी करते हैं, इसवास्ते इन्हेंके द्वेषियोंने इस करतूतसें, इन्होंको, शूद्रों मै, दरज कर दिया, अभी विक्रम सम्बत् १९५७ मै, श्रीबीकानेर राजपूताने मै, इन्होंको शूद्र समझ, कर लगाणेका विचार था, आखर ब्राह्मणोंके पुरानोंसे, साबित हो गया कि, भोजक ब्राम्हणोंसे ही बने हुये है, टाड साहब कृत राजपूताना इतिहास देखो, तथा व्यास मीठालालजी कृत टाड प्रत्युत्तर देखो. तथा जाति भास्कर ग्रथ देखो पुराण बणाणेवालोकी ये चतुराई है कि जिसके गोत्रके प्रथम उत्पत्तिका पत्ता नहीं मिलता है तो उन्होको किसी देवताकी सन्तान ठहरा लेणा है, मतलब, सड़ा पूरणेड, इस न्यायसें, इतिहास तिमिर नाशक मै, राजा शिवप्रशाद, सितारे हिन्दनें, इस पुराणोंकी बात पर पूंछडिया राजाका दृष्टान्त भी लिखा है, वो सच्चा है. लेकिन जैन लोक ऐसा इतिहास कभी नहीं लिखते, कारण देवताओंकी सन्तान मनुष्य नही, देवताओं की उत्त्पत्ति भोगसे नहीं है, मनुष्यों की उत्पत्ति भोग वीर्यसे है, जानवरसें जान वर मनुष्योंकी मनुष्योंसे उत्त्पत्ति होती है, तुराईका बीज बोणेसे ककड़ी कैसे पैदा हो सक्ती है, भोजक लोक अपनी उत्त्पत्ति, सूर्य जो आकाशमै प्रकाश करता है, उससै मानते है, पुराणोंपर यकीन रखके, बुद्धिमान अंग्रेज तथा जैन तथा और भी अकलवरोंको विचार करणा चाहिये कि, क्या सूर्य देव ऐसे व्यभिचारी, और अन्याई हैं, सो सती कुन्तीका शील तोड

डाला, और मनुष्य ब्राह्मणोंकी कुंवारी लड़कियोंका, बलात्कार शील तोड़ते फिरता है बाहर सूर्य नारायण गवर्मन्टके राज्यमें ऐसा काम करणेवालेंकों जबरजन्नाके कायदेसे, जरूरही सजा होती, उस वक्त उस कन्याके पिताने सूर्यको श्राप देणे रूप सजा देनी लिखी है, खैर हमको, इतिहास यथार्थ जो भया सो लिखणा है किसीके खंडन से तालुक नहीं, भोजकोंके ६ गोत्र पीछेमें १० जातमें मिले हैं, इसमें २ गोत्र तो गूजर गोड़ ब्राह्मन थे, ४ पुष्करणे ब्राह्मण, ये ६ जात मालवदेशके वडनगर में, श्री जिनदत्त सूरिजी पधारे. तब मरी हुई गऊ, जिन मन्दिरके सामनें, धर दी, उसको दादा साहबने, परकाय प्रवेश विद्यावलसें, उठाकर, रुद्रके स्थान पर जा गिराई, और भी इन ब्राह्मणोने बहुत उपद्रव करणा शुरू करा, तब उहांके क्षेत्राधिष्ठायक वीरोंकों, आज्ञा दी के. तुम इन सब ब्राह्मणोको समझाओ, उन वीरोंने उन सब ब्राह्मणोंकों, उन्मत्त पागल बणा दिये, वो नंगे होकर बुरी चेष्टासें भटकणे लगे, पीछे वडनगरके राजा, तथा प्रजानें, श्री जिनदत्त सूरिः जीसे, विनती करी, तब गुरूने कहा, कि ये लोक सदाके लिए, देव -गुरू की, टहल करते रहें, और मेरे किये हुए, महाजनोंके, भिक्षुक रहें तो, अच्छे हो जाते हैं, सम्बध, और भोजन, आगे जो भोजक है, उन्होके साथ, इन्होंको करणा होगा, राजा प्रजा जमानत करी, तत्काल, वो लोक अच्छे हो गये, इन्होंमें राजाका मुख्य गुरू ब्रह्मसेन, जिसका पुत्र देवव्रत, सो देवेरा भोजक कहलाया, जिसकी सन्तान बीकानेरमें हंसावत, तथा आदि सरिया बजते हैं, इन सोल्ह गोत्रोंका लाग दादा साहबनें समस्त महाजनों पर लगा दिया, पहिली १८ गोत्र पर ही था, महाजन लोक राज्यके कारबारी थे, इससें शिव विष्णुका मन्दिर भी इन्होंके, सुपर्द, करवा दिया, प्रायः भोजक देवीके उपासक है, मारवाडके ओसवालोंके पास दान परणे मरणे लेते है, टाड साहबने राजपूत इतिहासमें इन्होका होना, अन्य ही प्रकारका लिखा है, कइयक इन्होंमें, कवि-हैं, विद्या न्यून है, इस जातिमेंसे जगत सेठजीके पास, कइ यक भोजक विद्वान पंडित गये थे, उस दिनसें, मुरसिदाबादमें, भोजकोंको पाडेजी कहा करते है, इतने कर संक्षेप इतिहास महाजन १८

गोत्रोंका, तथा १६ गोत्र भोजकोंका, दिखलाया, इस बातकों हुए कितने वर्ष हुए, सो प्रमाण लिखते हैं, ओसियां नगरीके नामसें महाजनोंकों ओसवाल संज्ञा भई, राजा ऊपलदेवका कराया हुआ, वीर प्रभूका मन्दिर ओसियामें, आसल राजाका कराया हुआ, भीनमालमें, अभी विद्यमान है, माहेश्वर कल्पद्रुम ग्रंथमें, ओसवालोंके होणेका जमाना इस तरह लिखा है,

सवईयाच्छन्द

श्रीवर्द्धमान जिन पछै वर्ष बावन पद लीधो, श्रीरत्न प्रभुसूरि नाम तास सत् गुरुव्रत दीधो, भीनमालसूं ऊठिया जाय ओसियां वसाणा, क्षत्री हुआ साख अठार उठै ओसवाल कहाणा, एक लाख चौरासी सहस्र घर, राजकुली प्रति बोधिया, रतन प्रभू ओस्या नगर ओसवाल जिण दिन किया।१।, प्रथम साख पमार, सेससी सोद सिंगाला, रण थम्भा राठोड़ वंसच ऊआन वचाला, दइया सोलंखी सो नगरा कछावा धन गोड कहीजें, जादम हाडा जिद लाज मरजादलहीं जें,। खरदरापाट ओपे खरा, लेणा पटाज लाखरा, ।एक दिवस इता महाजन भया सूर बडा वडीसाखरा ॥ २ ॥

इसके पीछे खरतर गच्छाचार्य्योंने प्रायः वहुत गोत्र प्रति बोधे, किंचित् अल्प गोत्र, और २ आचार्य्योंने प्रति बोधे सो सब, इन्हों में, मिलते गये, सुनते हैं, सम्वत् सोलहसे में खरतर गच्छाचार्य्यसे, मोहणोत गोत्र, प्रति बोध गया, बस जाता जन्म गया, और आड़ी टाटी दे गया, वो न्याय इस गोत्रमें हुआ, फिर कोई भी गोत्र राजपूत माहेश्वरीया ब्राम्हनों में से नहीं थापा गया, ये प्रताप सब तत्व दृष्टिसे देखोतो, जिन प्रतिमानिन्दकोंसें हुआ, कालका महात्म इन्होंका आचार विचार देख, राजपूतमाहेश्वरी और ब्राम्हण लोक, जैनधर्मसे, घृणा करणे लग गये, इस वखत जो जैनधर्म चल रहा है. सो सब प्रताप जती आचार्य महा राजोंका है. अब तो वाजे महाजन भी एसे कठिन बनगये हैं सो जिन धर्मकी प्राप्ति कराणे वालोंकी, सन्तानसें, बेमुख होगये हैं, और अपने बडेरोंके वचनोंकों, भूल गये हैं. लायक सन्त लोकोंका, बाप, और बात, एकही है. सबदेयमें लिखा है कि श्रीवर्द्धमान भगवानके निर्वाण पहुचे बाद ५२ वर्ष पीछे, रत्नप्रभ

सूरिःकों आचार्यपद गुरूनें दीया है और ७० वर्ष पीछे वीरप्रभूके निर्वाणके ओसियांमै अठारे गोत्रोकी थापना करी, भोजक लोक सम्वत् वीया वाईसा कहते है सो सच्च है, लेकिन, वीया वाईसा, राजा नंदिवर्द्धनका है,—राजा विक्रमका नहीं, सो हिसाब लिखते है, जब भगवान महावीरने दीक्षा ली तब सवत्सरीदान देकर, प्रथम प्रजाका, ऋण उतारकर भाई राजानन्दिवर्द्धनका सम्वत्सर चलाया, पीछे प्रभू ४२ वर्ष विद्यमान रहै और निर्वाण पाये बाद ७० वर्ष पर १८ गोत्र हुए एव ११२ दस वर्ष बाद आचार विचार सीखते तथा मन्दिर कराणेमैं लगा १२२ वर्षपर प्रतिष्ठा तथा साधर्मी वात्सल्यके भोजन पर, भोजक गोत्रकी थापना भई, ऐसाही प्रमाण कमला गच्छके आचार्यके पुस्तकमै तथा हमारे बडे उपाश्रयके भण्डारके पुस्तको मैं लिखा है, तथा भगवान महावीरको मुक्ति पहुंचे को, इस ग्रंथके लिखते वक्त २४४९ का सम्वत् चल रहा है, याने अश्वपती गोत्रकी प्रथम थापनाकों भए, आज, २३७५ वर्ष बीता है, विक्रम सम्वत् १९७९ तक; अब खरतर तथा और २ आचार्योंके बनाये भये, गोत्रका सक्षेप इतिहास दरसाते है,

प्रथम सुचिन्ती गोत्र

विक्रम सम्वत् १०२६ मै श्रीजैनाचार्य वर्द्धमान सूरिः खरतर विरुद पाणेवाले श्रीजिनेश्वर सूरिःके गुरू, विहार करते, दिल्ली पधारे, उस नगरका राजा सोनी गरा, चौहाण, उसका पुत्र बोहित्थ कुमारकों, वगीचेमै सूतेको, पेणा साप, पी गया, नगरी मै हाहाकार मचगया, रोते पीटते, मरा जाण स्मशान मे गाडनेको लाये, उहा बड वृक्ष नीचे पाचसय साधुओंसे विराजमान, आचार्यने पूछा, ये कोण मरगया लोकोंने सब स्वरूप कहा, राजानें, विनती करी, हे सन्त महापुरुष, आपका दया धर्म सफल होय, किसी तरह, मेरा सुत सचेतन होय तो, मै, और मेरा परिवार, आपके उपकारसें, सदाके लिए आभारी रहेंगें, इस पुत्रकी सन्तान जहा तक सूर्य चन्द्रमा पृथ्वीपर उद्योत करेंगें उहां तक आपकी सन्तानकी चरण सेवा करते रहेंगें, इस वक्त जो दुःख, मेरे तनमै हो रहा है, सो पर-

मेश्वर ही जानता है, इसके दुःखसे मैं भी मर जाऊंगा, तब आचार्य बोले, हे राजेन्द्र, जो तुम सपरिवार जैनधर्म धारण करो और मेरे शिष्य प्रशिष्योंसें, वे मुख धर्मत्यागके तुमारी सन्तान कभी नहीं होवे तब तो पुत्र सचेत हो सक्ता है राजा तथा परिवारके लोकोंनें इस बातको पूर्ण ब्रम्ह परमेश्वरकी साक्षीसें प्रतिज्ञा की गुरूने दृष्टिसें पास किया तत्काल ही कुमर आलस्य मोड़ बैठा हो गया सर्व लोकोंके मनमे परम आनन्द हुआ राजानें गुरू महाराजकों महोच्छव पूर्वक नगरमै पधराये धर्म व्याख्यान सुनकर सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत उच्चरे कुमर जैनधर्मका आचार विचार सीखा गुरू महाराजने इसको सचेत करणेसें सचेती गोत्र स्थापन करा गच्छ खरतर मानते हैं सहचिन्ती गोत्रसे सचेती गोत्र जुदा है।

बरदिया [बरढिया] दरडा।

धारा नगरीका राजा भोज परलोक हुए बाद तंबरोंनें मालवदेशका राज्य ले लिया भोजराजाके पुत्र १२ थे १ निहंगपाल २ तालणपाल ३ तेजपाल ४ तिहुअणपाल ५ अनंगपाल ६ पोतपाल ७ गोपाल ८ लक्ष्मणपाल ९ मदनपाल १० कुमारपाल ११ कीर्तिपाल १२ जयतपाल इत्यादिक ये सब राजकुमार धारा नगरीको छोड़ मथुरा मै आ रहे तबसें माथुर कहलाये कुछ वर्षोंके बीतने बाद गोपाल और लक्ष्मण पाल, के कई गांममे जावसे, सम्वत् ९५४ मे, श्री नेमिचन्द्रसूरिः श्रीवर्द्धमान सूरिःके दादा गुरू उद्योतन सूरिःके गुरू, वहा पधारे, उस वखत लक्ष्मणपालनें, गुरूकी बहुत भक्ति करी, धर्मोपदेश हमेशा सुणा करे, एक दिन, एकान्तमै, गुरूसें अरज करी, हे गुरू न तो मेरे पास, ज्यादह धन है, और न मेरे, कोई शन्तान है, इन दोनों बिना जीवितव्य, संसारमै वृथा है, आप परोपकारी हो, कोई ऐसी कृपाकरो के, मेरी आसा पूर्ण होय, तब गुरूने कहा के;

---

१ इस गोत्रके भाग्यशाली सेठ वृद्धिचन्दजी सिंधीया सरकारके खजानची थे, इन्होंके पुत्र गुलाबचन्दजीनें फल वर्द्धी पार्श्वनाथके मन्दिरके चारों ओर हजारो रुपे लगाकर गढ बणवाया पार्श्व प्रभुकी कृपासे इन्होके पुत्र हीराचन्द्रजी अजमेर नगरमें महा श्रीमन्त धर्मशाली देवगुरुके भक्त रहते हैं.

जो तुम जैनधर्म धारण करो तो, सर्व कामना सफल होयगी, धन पाकर सात क्षेत्रोंकी भक्ति करणा, सुपात्र तथा दीन हीनकों दान देणा व सत्रोंके लिए, तुम्हारी सन्तान मेरे शन्तानोंके धर्म उपासक, वेमुख न होगी तो, जा तेरे मकानके पिछाडी अगणित द्रव्य जमीनमैं, गडा है, उसकों निकालते, जो तुझें मत निकाल ऐसा शब्द कहै, उसको कहणा, मैं, नेमिचन्द्र सूरिःका, श्रावक हूं, इस धनका आधा भाग, सुकृतार्थ लगावेगा, तब तेरे तीन पुत्र होगा इतना सुन, लक्ष्मणपाल अपनी भार्या समेत सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत गृहण करा उसी तरह, वो निधान निकला, शत्रुंजयका संघ निकाला, अगणित द्रव्य धर्म मे लगाते, तीन पुत्र उत्पन्न हुए, १ यशोधर २ नारायण ३ और महीचन्द्र, गुरू श्रीनेमिचन्द्रसूरिने, आशीर्वाद दियाथा, इन पुत्रोसे तुम्हारा कुल बढेगा, योवन अवस्थामें महाजनवंशमै इन्होंका विवाह किया, उसमैसे पहले नारायणकी स्त्रीके गर्भ रहा, पीहरमै जाके जोडा जन्मा जिसमै लडका तो सापकी आकृतीवाला और दूसरी लड़की. इन दोनोंको लेकर सुसरार आई, अब वो सांपकी आकृतिवाला लडका शीतकालमे चूल्हेके पास सोताथा. लोटपोट करता चूल्हेके पास चला गया, भावीके वस उसकी बहननें पाणी गरम करणे पिछली रातकूं अंधेरेमें चूल्हा सिलगा दिया उससें वो नाग आकृति बालक जलकर मरा, शुभ भावसे व्यतर देवता भया अब वो नागदेवके रूपसे आकर अपनी बहनको तकलीफ देणे लगा, तब लक्ष्मणपालने यंत्र, मंत्र. बलिदान, वगैरह कराया, तब प्रत्यक्ष होकर बोला, जबतक मै व्यतर योनिमें रहूंगा तबतक लक्ष्मणपालकी संतानकी लडकियां, कभी सुखी नहीं रहेगी, कुछ न कुछ आपदा होगी, ये बात सुण, बहुत लोगोने विचारा, सच्च है या झूठ, इतनेमें एक कमरके पीडावालेने आकर कहा, जो तूं सच्चा देव है तो, मेरी कम्मर अच्छी करदे, तब देव बोला, लक्ष्मणपालके घरकी दिवालसें तेरे दरदकी जगह स्पर्शकर, अभी पीडा चली जायगी, उसने दिवालसे स्पर्श किया, कम्मर अच्छी हो गई, तब उस देवनें लक्ष्मणपालको वर दिया, जो चिणक पीडावाला तुमारे घरका स्पर्श करेगा सो तीन दिनसे निश्चय पीडा

रहित होगा, वर दिया, उसका अपभ्रंश लोक वरडिया कहणे लगे वो उसकी वहिन भाईके हत्याके निवृत्त्यर्थ मोहसें शुभध्यानसें मर व्यंतर निकायमें देवी भई, भूवाल उसका नाम है, इसकों कुल देवी कर पूजणे लगे, नेमिचन्द्र सूरिः के तीसरे पाटधारी, जिनेश्वर सूरिःकों खरतर विरुद् मिला, मूल गच्छ इन्होंका खरतर है,

कूकड़ चोपड़ा गणधर चोपड़ा चीपड़गांधी वडेर सांड

खरतर गच्छाधिपती, जैनाचार्य, अभयदेव सूरिःजीके शिष्य, वाचनाचार्यपद-स्थित, श्रीजिनवल्लभ सूरिः, ११९६ वर्ष विक्रमके, विचरते २ मदोदर नगरमें पधारे, उहाँका राजा, नाहडराव पडिहार साख इन्दा गुरूकी बहुत भक्ति करी, और विनती करी, हे परमगुरू मेरे पुत्रके पुत्र नही, गुरुने कहा, पुत्र होनेसें संसार वढेगा, साधू संसार वढाणे विना जैनमंत्रके काम विना, निमित्त भाखे नहीं, इसलिए तू, इतना करार करे की, पहले पुत्रकू आपका शिष्य दीक्षित करदूंगा तो, वताकर पुत्ररूप सपदा कर दू, राजाने वडे हर्षसें, ये वात मंतव्य करी, गुरुने कहा, तुम और तुमारी स्त्री, ये मेरा वास चूर्ण, सिरपर लो, दोनोंनें लिया, गुरुने कहा वचन मत पलटना, चार पुत्र होगा, गुरू विहार कर गये, क्रमसें चार पुत्र हुए इधर सम्वत् ११६९ में श्रीअभय देवसूरिः, वादि देवसूरिः अपने धर्म मित्रकों, कह गये, मेरे पट्ट पर, वल्लभकों, स्थापन करणा, देवसूरिःने कहा, वल्लभकी आयू अब थोडी है, लेकिन इसनें वाचनाचार्य्य पद में रहते ५२ गोत्र राजपूत माहेश्वरी ब्राम्हनोंकों, जिन धर्मी महाजन वनाये हैं, इस लिए, महा प्रभावीक है, मै आचार्य्य पद मे स्थापन कर दूगा, श्रीजिन वल्लभ-सूरिःकों स्थापन किया, ६ महीने आचार्य्य पद पालके, देवभद्र सूरिःकों सोम चंदको पट्टधारी वनानेका वचन कथन कर स्वर्गवास हुए, १०८ सिन्द करके सुशोभित, शरीरधारी, श्रीजिनदत्त सूरि नाम देवभद्र सूरिनें सूरि मंत्र दिया, तीन क्रोड ह्रीं कारके जपकी सिद्धि कर, श्रीजिन दत्त सूरिः विचरते २ मन्डोवर नगर पधारे राजानें वहुत ही, उच्छव कर भक्ती दरसाई, गुरुने कहा, हे राजेन्द्र, गुरु महाराजका वचन याद है, आपने

क्या प्रतिज्ञा करी थी, राजाने राणीसे पूंछा, राणी बोली, राजाके पुत्रको श्रीजिन दत्तसूरिः, घर २ भीक्षा मंगायगें, सर्वथा पुत्र नहीं देने दूगी, पुत्र दिया तो, प्राणत्याग दूंगी, तब राजाने लाचार हो, गुरूसे कहा, हम सब, आपहीके हैं, आपका गुण हमारी शन्तान कभी नहीं भूलेगी, गुरु उहाँसे विहार कर गये, कर्मके वसरातको भोजन करते समय, वडे पुत्रके, सांपकी गरल खाने मैं, आगई, कूकड देवके, प्रभात समें वैद्योंनें, चिकित्सा बहुत करी लेकिन् कुछ फायदा नहीं हुआ, तीसरे दिन सर्व शरीर फूट गया, मंत्र, यत्र सब कर चुके, महा दुरगन्ध, महा विदरूप, वदनमैसें, पूय झरणे लगा, मृत्युके मुख पडा, राणी, हाय २ कर रोने लगी, शहर मै, हाहाकार मच गया, तब गुणधरजी कायस्थ, हंसजाति जो उस समय दीवान थे, उन्होंनें राजासें अरज करी, हे महाराज, आपने, महापुरुषोंसें, कपट करा, उसका फल है; आप यदि अपना भला चाहो तो, उन्हीं परम पुरुषके, चरण पकड़ो, राजा उसी समय घोड़े पर सवार हो, सोझत इलाकेसें गुरूको, पीछा लाया, गुरू देख कर बोले, जो तुम सहकुटुम्ब, जैन धर्म धारकर, खरतर गच्छ के श्रावक बनो तो, आपका पुत्र अच्छा हो सक्ता है, राजानें कहा, कि मेरी आल औलाद, लायक वन्द होगी, सो खरतर गुरूका, उपकार, कदापि भूलेगी नहीं, न पराङ्मुख होंगे, गुरूनें कहा, ताजा मक्खन लावो, गणधरजी मुख्य मत्री, तत्काल कूकडी नाम गऊका, नवनीत [मक्खन] ले आए, गुरूने योग साधन विद्यासे, अलक्ष दृष्टि पाससें, आत्मबल विद्युत् प्रक्षेपन नवनीत ऊपर करके, आज्ञा करी, चोपडो, गणधरजी मंत्रीनें, चोपडा, तत्काल पूय श्राव बन्द हुआ, तीन दिवसमै, गंध निवृत्ति हो, स्वर्णवर्ण निज रूप हुआ, ये प्रत्यक्ष उपकार, चमत्कार देखकर, गुरूको, धर्म तत्व पूछा, गुरूनें, न्याय युक्तिद्वारा ३ तत्व देव १ गुरु २ धर्म्म ३ का स्वरूप जिनोक्त कथन करा, नाहडजी पडिहार, राजानें, सह कुटुम्ब, जिनधर्म धारण करा, गुरूनें उस पुत्रका, चोपडा, तथा कूकड गोत्र, स्थापन करा, तथा चोपड पुत्रका चोपड़ गोत्र, हुआ, सांडे पुत्रसें, साड गोत्र हुआ, साड गोत्र दो है कूकड सांड,

इन्होंमें है, सियाल साट दूसरे है, उस समय मिथ्यात्व त्याग, हंसकायस्थ मंत्री गणधरने भी, श्रावक व्रत सहकुटुम्ब धारण करा, उनसे गणधर चोपडा गोत्र स्थापित हुआ, गुणधरमेंसें, गांधीपनेके व्यापार करनेसे गांधी गोत्र स्थापित हुआ, नानूजीके पाच पुस्तान पीछे दीपचन्दजी भये, उन्होका व्याह लग्नादि, ओसवालोंमें, शामिल श्रीजिन कुशल सूरिः गुरूनें सदाधर्म स्थिर रहैगा, इस न्यायसे, ओसवालोंकी पंक्तिमै संमिश्रित करादिया, दीपचन्दजी पीछे परिवारकी बहुत वृद्धि हुई, ११ मी पुस्तान सोनपालजी उन्होंके पौत्र ठाकुरसीजी महाबुद्धि शाली, चातुर, सूर, तब रावचूडेजी राठोड़ने, उन्होंको कोठारका काम सुपुर्द किया, वह कोठारी कहलाये, राव श्री वीकेजीने, बीकानेर मै, हाकिम पद दिया, वह हाकिम कोठारी कहलाये, इन्होंकी शाखा १२ का पता लगा है कूकड १ कोठारी २ हाकम ३ बीपड ४ चोपडा ५ सांड ६ बूबकिया ७ भूपिया ८ जोगिया ९ बडेर १० गणधर चोपडा ११ गाधी १२ गणधरोंका निवास मारवाड पंच पदरेमै, अन्य २ स्थान भी है, मूल गच्छ खरतर, कोठारी संज्ञा अन्य गोत्रमै भी है, दूगड कोठारी, रणधीरोत कोठारी आदि उनसें भाईपां नहीं है,

(धाड़ेवा, पटवा, टाटिया, कोठारी,)

गुजरात देसम् विभंम पाटणनगरमै देढूजी राजा राज्य करता था, डाभी वंशराजपूत चार पाच सहस्र अश्वपति, लेकिन पर द्रव्य धाड़ा कर लूटै, एकदा समय खरतर गच्छ नायक श्रीजिनवल्लभ सूरीश्वरजी उहां पधारे, श्रावक जनने महामहोत्सव पूर्वक नगरमै पधराये, तब राजा देढूजीने, गुरूके ज्ञान क्रिया की महिमा श्रवण कर, दर्शनार्थ आया, गुरूनें धर्मोपदेश दिया, राजा उपदेश श्रवण कर, हर्षित हुआ, निरन्तर गुरुकी सेवा मै आने लगा, यों आते जाते अत्यन्त धर्म की रुचि वृद्धि पाई, इस अवसर मै ग्राम सामन्तका स्वामी ऊहड खींची राजपूत, उसने अपनी पुत्री व्याहनेकों, सीसोदिया राणा रणधीरकों, बहुत राजपूतोंके संग डोला भेजा, नवघोडा, एक हस्ती, पञ्चविंशतिसहस्र नगद मुद्रा, स्वर्ण, रूप्य, मई आभूषण रत्नादिक युक्त, इत्यादि द्रव्यसामग्रीका स्वरूप, देढूजी राजाने, श्रवण कर, गुरू भट्टारक,

श्रीजिनवल्लभसूरिजीके शमीप आकर, विनती करी, हे गुरु मेरी विजय होय ऐसा समय कथन करो, तब गुरूनें, मनमैं श्रवण करके कहा कि मध्यान्ह समय, अभिजित् नक्षत्र मैं, विजय मुहूर्त आताहै उस मैं जो कार्य किया जावै, वह सर्व सफल होता है ऐसा चामुण्डादेवी कहती है, ढेढूजो तथास्तु कह गुरू पद वन्दन कर सैन्याबल संग लेकर उक्त मुहूर्तमै प्रयाण करा, उनखीचीके भेजे राजपूतों सै सबल संग्राम हुआ, ढेढूजीके सौ सुभट मृत्यु प्राप्त हुए डेढसो शस्त्र आघातसें, जर्जरित हुए, खीचियोंके ढायसै सुभट यमलोक प्राप्त हुए, अढाइसो शस्त्रोंद्वारा जर जरित हुए, रण भूमिमैं, ढेढूजीने जय पाई, वदन कँवर कन्या और सर्व द्रव्यहस्ती अश्व आदि लेकर निज नगरमै आए, प्रथम गुरू महाराजके शमीप जाकर, वन्दन, नमन, कर, स्तुति करी, परमपूज्य आपके सत्य वचनानुसार मैंनें जय प्राप्त करी, मुझे जो आप आज्ञा करें वह प्रमाण करूं, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र यह वदन कंवर राणीका जो पुत्र होय वह मेरा श्रावक होय, राजाने यह गुरूके वचनको प्रमाण करा, कालान्तरसें सम्वत् ११५१ वर्षे शालिवाहन शाके १०१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्या तिथौ, बुद्धवासरे, सूर्योदयात् गत घडी १५ पल २५ पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रे, सुसमये, राणी वदन कवर पुत्रमजीजनत, दशोठन, करे पीछै, सोहड नाम स्थापना करी, तत् समये, श्री जिनवल्लभ सूरिः गुरू महाराजके चरणो उपर धरा, गुरूने वास चूर्ण क्षेपन करा, इसकी माता धाडेसे लाई गई, इसलिए गुरूने इसका गोत्र धाडेवाल स्थापन करा, श्री जिनवल्लभ सूरिःजी विहार कर देवलोक हुये, तद-पीछै वल्लभसूरिः के पद ऊपर सम्वत् ११६९ श्री जिनदत्तसूरिः जी हुए-उन्होंने सोहडको, विशेष प्रतिबोध दे श्रावक व्रत धारण कराया, और उपदेश दिया, पतीके मृत्युअनन्तर, मोहा ग्रस्तपने, जो स्त्री अग्नि मै जलकर मरे, उसको लौकिक शती कहते है, उसकी मानता, पितर, कुल देवी, इत्यादिक सेवा, भक्ति न करणा, देव श्री वीतराग, अष्टादश दोषण वर्जित, मुक्तिप्रद की भक्ति, गुरु खरतर गच्छके यति साधू, केवली कथित धर्म अर्थ है, अन्य सब अनर्थ रूप है, ऐसाही सम्यक्त्व युक्त व्रत जानकर, सोहडने

आत्मसाक्षी ग्रहण करा, परम जिनधर्मी हुआ, तदनन्तर जूनागढके नवलखे धूंधल साहकी पूत्री चन्द्र कुंवरसें व्याह किया, उसका नाम सामेरे में सजनादे प्रसिद्ध हुआ, उससें ४ पुत्र उत्पन्न हुए, सारंग १ सगता २ सार्दूल ३ शिवराज ४, इन्होंका परिवार क्रमसे वृद्धि पाया कारणसें शाखा भिन्न २ हुई इति * मूलगच्छ खरतर.

(गोठी गोत्र उत्पात्ति)

मेघा नामका सार्थ वाह जिसके पांच सय वृषभों ऊपर नाना वस्तु किरियाणेका भार वहता है, कई मनुष्य सेवक हैं, स्थान २ आडत है, एक समय इस प्रकार स्वरूप बणा, विक्रम शताब्दी ११९२ में गुजरात देश अणहिलपुर पत्तनमें एक महा द्रव्य पात्र राज्य माननीय यवन है उसके गृह भूमिके मध्य पार्श्व जिनेश्वरकी प्रतिमा है, उस पार्श्वप्रभूका अधिष्टायक, पार्श्व यक्षनें उस यवनको स्वप्न में कहा तेरे गृह भूमिके मध्य में, पार्श्व जिनेन्द्रकी प्रतिमा है, उसको तूं भूमिमध्यसें निकाल कर, मेघा नाम सार्थवाहको देदे, और उस सार्थ वाहसें पांच सय मुद्रा तूनें ले लेना, वह कल्ह प्रभात समय तेरे गृहद्वार सन्मुख वस्तु किरियाणेकी बालध लेकर निकलेगा, उसके मस्तक पर कुंकुम तिलक उपर अक्षत लगे हुए होंगे, इस चिन्हसें पहिचान लेना, यक्षराज हरा अश्वहरा पलाण (काठी) उसपर हरे वस्त्र हरित रंग आप धारण करा हुआ, यवनको दर्शन दिया और कहा, यदि तू मेरा कथन नहीं मंतव्य करेगा तो, तेरे पुत्र कलत्र परिवारको, तथा नगद द्रव्यकों, हस्ती अश्वादि सर्व सम्पत्तिको, कुशल कल्याण नहीं होगा, ऐसा स्वप्नमें स्वरूप देख, यवननिद्रासें जाग्रत हो, अपनी स्त्री बीबीसें स्वप्नका स्वरूप सर्व निवेदन करा, बीबी ऐसा वृत्तान्त श्रवण कर भयभीति हो अपने पतिसें कहने लगी हे प्राणनाथ शीघ्रतया उस बुत्तको भूमिमेंसे निकालो नहीं तो कोई अवश्य हानी होगी, ये कोई जिन्दोंका बादशाह है

---

* प्रथम छपी मुक्तावली में छापा गया इतिहास वह एक जीर्णपत्र पर लिखा दूर करके यह इतिहास जोधपुरसें मेटतावाले ऋषभदासजी बाड़ेवालने ३ प्रमाण दे लिख भेजा इस लिए यह लिखा है.

या खुदाका भेजा प्रेसता है वह दर्शाव देकर तुम्हे कह गया है, तब वह यवननें रात्रिकों उसी समय उठके उक्त स्थानको खोदा, तब वह पार्श्व प्रभूकी मूर्ति प्रगट हुई, तब उस यवनकों पूर्ण विश्वास हो गया के जिसने मुझकों दर्शन देकर जो वार्त्ता कही थी वह वार्त्ता वैसी ही होगी, तब बीबी और यवन अपने बालबच्चों युक्त पार्श्व प्रतिमा सन्मुख ताजीम (विनय) सें हाथ जोड कहने लगा कि हे देव तूं क्रोधितमत होना हम तेरी बदगी करने तेरे बदे है, जो आज्ञा तेरी होगी वही करेंगे, गृहके द्वारा ऊपर जाके उस सार्थ वाहका मार्ग गवेपणा करनेको स्थित हुआ, इधर इस ही प्रकार उस यक्षनें मेघा सार्थ वाहको स्वप्न मै दर्शन देकर कहा अण हिल्पत्तन मै एक यवन तुझकों पार्श्वप्रभूकी प्रतिमा देगा, और पाच सय मुद्रा तुझसें याचेगा, तूं शीघ्र उसको पांच सय मुद्रा देकर पार्श्वप्रभूकी प्रतिमा ले लेना, उसकी पूजा अष्ट विधीसें तू निरन्तर प्रभात करना मध्यान्ह पुष्पादिसें अग रचना संध्याकों आरती धूपोत् क्षेपन की करना, तुझें इहभव, परभव, उभय लोकमै लाभप्रद होगा, ऐसा कह अन्तर ध्यान हुआ, प्रभात समय उठ नित्य करतव्य स्नान तिलकादि कर प्रयाण करा सूर्योदय समय अणहिल पत्तन प्राप्त हुआ, देवकथित चिन्हों द्वारा पहिचान कर यवननें पार्श्व प्रतिमा अर्पण करी पाच सयमुद्रा याचनेसें सार्थ वाहनें यवनको दिये बडे विनयसें पूजा द्रव्यभाव करता स्वव्यापारमै महान् लाभ पार्श्वयक्षकी सहायतासें उपार्जन करता क्रमसें मेघा सार्थ वाह पारकर जो देश गोढवाड और पाली मारवाड के शमीपस्थ देश उहां जाकर प्राप्त हुआ, पार्श्व जिन प्रतिमाका चमत्कार, मनो वाञ्छित पूरक प्रभावसें, यात्राके अर्थ धर्मी जन आने लगे, ज्ञाता अङ्ग, राय प्रश्नी, जीवाभिगम सूत्रोक्त विधीसें सतरह भेदादिक द्रव्य भाव युक्त पूजा करने लगे, क्रमसें सार्थ वाहने स्थल भूमिमै प्रयाण किया जब १२ कोस आया अकस्मात् जिन प्रतिमाका वाहन स्थम्भित होगया पदमात्र चले नहीं, ये स्वरूप देख सार्थ वाह चिन्तातुरपने निद्रा प्राप्त हुआ, तत्काल यक्ष राज आकर स्वप्नमै कहता है कि हे सार्थेश चिन्ता मत कर,

ये प्रतिमा यहांसे, स्थल देशमैं नहीं गमन करेगी, कारण इस देशके वास्तव्य, ग्रामीण, निर्विवेका मरु स्थल्या, अर्थात् निर्विवेकी (विचार शून्य) मनुष्य ग्रामोंके वास्तव्य, प्राय विद्याहीनपनेमै है, वूझ्झ वुजाकडकी आज्ञा मानने- वाले है, जलरहित, कंटकदेश है, इस लिए तूं, यहां पर पार्श्व प्रभूका, भुवन करा, जहां अक्षतके स्वस्तिक पर, नगद मुद्रा तूं देखे, उस स्थल मै अगणित द्रव्य निकलेगा, और जहां हरा नारेल तूं देखे जल भरा, उहां मीठे जलका कूप निकलेगा, जहां गीला गोमय (गोवर) पड़ा तू देखे, उहा खारे जलका कूप निकलेगा. अक्षतके स्वस्तिकपर जहा पुगीफल (सुपारी) देखे उहा पापाण (पत्थर) नाना प्रकारके जैसा चाहियेगा वैसा निकलेगा, शिला वटा, शिल्पशास्त्रका, पूर्णपारंगामी सिरोही नगरमैं रहता है, उसके गल्त कुष्ठ रोग है, वह मिटा दूंगा, और उसको मन्दिर वनानेको कहदूगा, उस्को आमंत्रण करना, इत्यादि कहकर अदृश्य हुआ, सार्थ वाह हर्षित हुआ, उक्त द्रव्यवलसें प्रथम दो कूप कराये तत्पश्चात् सिलावटेको वुलाया, पार्श्व भुवन कई वर्षोंसै चार मंडप, खंभ २ पर, नाटक करती, वाजित्र वजाती, पुतलिया, एवं प्रशंसनीय कोरणीयुक्त, शिखरवद्ध, भुवन निष्पादन करा, कुंकुम पत्रिका भेज २ श्रीसंघको एकत्रित करा, सवालक्ष देशमै विचरते हुए, खरतर गण नायक, श्रीजिनदत्त सूरिःजीको, प्रतिष्ठाके लिए विनती करी, गुरू ऐसा शुभ लग्नमै, चैत्यप्रतिष्ठा कर, पार्श्व प्रभूकूं विराज- मान कर, वासचूर्ण मंत्राभिपेक करा मंगल जय शव्द हुआ, उस समय आकाशमैं देव दुदुंभिका निनाद, करके साढी वारह कोटि सोनइये देवतोंने वर्पा करी और कहा, ये सर्ववर्पित द्रव्य, संघपति, मेघाके लिये दिया गया है, ऐसा चमत्कार, श्रीजिनदत्त सूरीःजीका, प्रत्यक्ष देख, मेघा सार्थ वाह सम्यक्त युक्त वारह व्रत, दादासाहिवके, समक्ष धारण कर, खरतर श्रावक हुआ, मेघा पुत्र गौडी हुआ, इसने भी सम्यक्त युक्त श्रावक व्रत धारण करा, गुजरात, गोढ़वाड़के श्रावकोंने पार्श्व प्रतिमा पूजक समझ गोठी[1] कहना शूरू करा,

---

१ संस्कृतमें, महाधनवत, नगरमें मुख्य, राजा प्रजाका हितचिंतक, वुद्धिवानको गोष्ठी कहते हैं,

गुजरात देशमें देव पुजारीकों वर्तमानमें गोठी कहा करते हैं, गोडीजी समाधि मरणकर मरयक्ष हुआ, अवधि ज्ञानसें पूर्वजन्म देख उस पार्श्व प्रतिमाकी महिमा विस्तृत करके पृथ्वीतलमें रखकर मनुष्योंको स्वप्न देकर, मूर्तिको प्रकटाने लगा, बारह वर्षोसें उसके नाममें, गवडी पार्श्वनाथ, नाम विस्तार पाया, आखरी विटूरे ग्राम प्रगटे, तदूपीछे दर्शन अद्यावधि मूर्तिने नहि दिया, गोडीके सन्तान, गोठीनामसें प्रसिद्ध हुए, मूल गच्छ खरतर,

(अथ खीमसरा गोत्रकी उत्पत्ति)

मरुधर देश में वालेचा चौहाण राजपूत खीमजी नामका उसनें प्रथम ग्रामका नाम परा वर्त्तन कर, खीमसर नाम प्रसिद्ध करा, एक दिवस इन्होंके शत्रु राजपूत भाटी इन्होंकी गऊ ऊंट प्रमुख द्रव्य लेकर पलायन हुए (भगे) खीमजी राज पूतोंके संग उस धनको लाने निकले, शत्रु प्रबल दलने इन्होंके, बलको, छिन्न भिन्न कर डाला, चिन्ता ग्रस्त हो, पीछे पुनः बल लेने चले, इतने में खरतर गच्छाचार्य्य जिनेश्वर सूरिःके शिष्य साधुओं सहित सन्मुख मिले, प्रतापी गुरुत्व पन देख विनती करी, हे पूज्य आपपर दुःख भञ्जन हो, पर द्रव्य हरण कर ले जा रहे हैं, कुछ प्रतीकार करो, गुरुनें कहा, यदि तुम निरपराधी जीवोंके हननेका, मद्य, मास, और रात्रि भोजनका त्याग करो तो, गुरुदत्त प्रतीकार है, स्वार्थ सिध्यर्थ खीमजी सहित सर्व राजपूतोंने, ४ नियम धारण करे, गुरुने शत्रुवशी करन, अमोघ विधि नमस्कार मंत्रके, ध्यानकी कथना करी खीमजी स्मरन करने लगा उस मंत्रके अमोघ प्रभावसें शत्रुओंके मनोगत पर्यायपलटे सन्मुख आकर सर्व द्रव्य देकर क्षमा याची, ये स्वरूप देख खीमजी आदि राजपूत साश्चर्य हो, जैनधर्म धारण करा, इन्होके तीन पुरुखानोंका व्याह सम्बन्ध राजपूतों में होता रहा, सगे राजपूत उपहास्य, व्याह आदिमें करते रहे, शस्त्र क्यों धारण करा है, तकड़ी (तराजू) लो, ये प्रत्युत्तर यथार्थ देते, अपराधियोंको दण्ड देते, इन्होंके मन में व्याहादिकों में, मद्यपान, मांस भक्षणादि देखकर, खीमजी, ऐसी चिन्ता निवृत्त्यर्थ उपाय विचारते थे, इतने में जंगम सुर तरु दादा श्रीजिन दत्तसूरि खीम-

सर पधारे, भीमजी वन्दन करनार्थ, सपरिवार युक्त गये, गुरूने धर्मोपदेश दिया, अवसर पाकर निज दुःख कथन करा, दादा साहिबनें सभा समक्ष निरवद्य भाषण करा, साधर्मी सगपण समो, सगपन अवरन कोय, भक्ति करो साधर्मकी, समकित निरमल होय ? तत्र ओसवाल श्रावक इन्होंके पुत्र परिवारको अपनी जाति मै मिलाये, इन्होंने व्यापार प्रारम्भ किया, खीमसर मैं होनेसें खीमसरा जातिका, नाम प्रसिद्ध हुआ, भीमजीदादा गुरुदेवके शमीप जाकर, अपने सपरिवार (कुटुम्ब) सहित व्रत नियम कर, नव तत्वके ज्ञाता हुए मूलगच्छ खरतर ।

(समंदारिया गोत्र)

पारकर देश पद्मावती नगरके शमीपस्थ ग्राममै सोढाराजपूत, समदसी, जिस्के ८ पुत्र थे, देवसी १ रायसी २ खेतसी ३ धन्नो ४ तेजमाल ५ हरि ६ भोमो ७ करण ८ लेकिन उनके पास द्रव्य नहीं, कृपाण कर्मसें वृत्ति करे, धन्ना पोर वालसे ऋण लेवे, धान्यकी निष्पत्ति होनेसें, वृद्धि सहित द्रव्य दे देवे, कान्तार (काल गिरनेसें समदसीको अत्यन्त कष्ट आपदा भोगनी हो, एक समय समंदसीको विहार करते मुनिपती श्रीजिन वल्लभ सूरिः मार्ग मै मिले, भव्य परणति होनेसे, वन्दना करी, गुरूने धर्म लाभ दिया, समंदसीने पूछा, हे मुनिवर, मेरा दु ख कव निवर्त्तन होगा, गुरूने कहा, प्राणी मात्र शुभ कृत्यसें सुख और पाप कृत्यसे दुःख भोगता है, यदि तूं सुखाभिलाषी है तो धर्म कर वह अहिंसा मूल धर्म है अहिंसाका स्वरूप निवेदन करा, और नित्य प्रति उभय काल एकान्त स्थलमै बैठकर सामायक सम भावसें करना, शत्रु ऊपर शत्रुता नहीं, मित्र ऊपर मित्र भाव नहीं राग द्वेषकों त्याग समाधिमै लीन मन करनेसे आत्म गुणसामायक उदय होता है, इस प्रकार धर्मके रहस्यको श्रवण कर, समदसी, गृहस्थ धर्मानुकूल दोनो व्रत गुरूसें ग्रहण करे, उभय काल सामायक करता है प्राणिमात्रकी दया करता है, गुरू विहार कर गये, ये स्वरूप देख साधर्मी जानकर, धन्ना पोरवाल, द्रव्यसें पूर्ण सहायता देने लगा, और ८ पुत्रोंको विद्याभ्यास कराने लगा, भोजन वस्त्रसें न्यूनता नहीं रक्खी, तत्र समदसी विचारने लगा अहो धर्मका महत्व-

पना निरुद्यम पनसें भी, भोजन छादन प्राप्त होने लगा, विक्रम सम्वत् ११७९ में श्रीजिन दत्त सूरिनें पद्मावती नगरको चरण रजसे, पावन करा, समदृसी धन्ना पोर वालके संग, गुरूकी वन्दना करने गया, गुरूनें धर्मोप-देश दिया, तदन्तर समंदृसीनें गुरूसें विनती करी, हे पूज्य, गुरू दत्त मैं व्रतमें इस भव में सुखी हुआ हूं, पर भव अवश्य सुखा कर होगा, ये आठ पुत्र आपके है, गुरूनें वासचूर्ण क्षेपन करा खरतर श्रावक बनाये, धर्मका रहस्य समझाया, तदन्तरधन्ना पोरवालनें, इन्होकों, भागीदार बनाके, गुजरातमें व्यापार कराया, समुद्रके मार्ग गमन कर, मोक्तिक, विद्रुम, अम्बर, आदि व्यापारमें, आठो भ्रातानें, कोटान मुद्रा अर्जन करी, गुरू श्रीजिन दत्त सूरिःकी कृपासें, ओसवाल जातिमें, मिले, संमदर्सीके शन्तान, समुद्रके व्यापारी होनेंसे, लोक समंदरिया वोहरा कहने लगे, मूल गच्छ खरतर,

(झांवक झांमड झंवक)

राठोड वंशी रावचूंडेजीके वेटे पोते १४ जिन्होंने १४ राज्य अलग २ स्थापन करा जिसमेंसें मालव देशमैं रत्न ललाम (रतलाम) नग्रके आसपास २९ । ३० कोशके दूरीपर जो अव झवूआ नगर वसता है इस नगरीके राजा झंवदेक ४ पुत्र सुखसें राज्य करतेथे. सम्वत् १५७५ मे श्रीजिन-भद्र सूरिः खरतर गच्छी विचरते २ उहां पधारे तव राजाने वडे महोत्सवसें नगर मे पधराये क्यों के रावसीहाजी आसथानजीने श्रीजिनदत्त सूरिःजीकी सेवा करी तव गुरू वोले हे राजेन्द्र क्या इच्छा है आसथानजी अरज करने लगे गुरू राज्य भ्रष्ट हो गया सो किसी तरह राज्य मिले ऐसी कृपा करो तव गुरूनें कहा जो तुम्हारी शन्तान मेरे शन्तानोंको सदाके लिए गुरू मानते रहै तो मैं आगे होनेवाली वातका निमित्त भाषण करता हूं आसथानजी वोले जहांतक पृथ्वी और ध्रू अचल रहैगा उहांतक हम राठोडोंके गुरू खर-तर गच्छ रहैंगे और कभी विमुख नहीं होंगे ये उपकार कभी नहीं भूलेंगे सूर्यकी साक्षी परमेश्वर साक्षी है इत्यादि अनेक वचन प्रतिज्ञा अन्तःकरणसें करी तव गुरूनें शासन देवीकी आराधना करी और कहा तुम्हारे कुल में चूंडा नाम पुत्र होगा उसके १४

शन्तान राज्यपती राजाधिराज पृथ्वीपती होयगे और आजसें तुम्हारी कला और तेज प्रताप दिन २ बढ़ते रहेगा, तबसें राठौड, राज्य, धन, परिवारसें दिन २ बढ़तेही गये, ख्यात राठोडों में ऐसा लिखा है, (दोहा) गुरू खरतर प्रोहित सिवड, रोहडियो बारट्ट । कुलको मंगत दे दड़ो, राठोड़ां कुल भट्ट ॥ १ ॥ इस वास्ते अंबदे अपने कुलक्रमके उपकारी गुरूकी भक्ति मैं तत्पर हुआ, इसवक्त दिल्लीके बादशाह यवनने अंबदे पर हुक्म भेजा के, तुम बडे शूर वीर मच्छराल हो, सो घाटेका मालिक, भींया टाटिया भील, न मेरा हुक्म मानता है, और गुजरात देश मैं, चोरी कराता है राहगीरोको लूटता है. बंध बाध ले जाता है इसको पकड़के लावोगे तो, तुम्हारी खातिरी दरबार में होगी, कुरब बढ़ाकर, पट्टा दिया जायगा, राजा उदास हो, गुरूके शमीप गया, चरण कमल वन्दन कर कहने लगा हे गुरु आप गुरुओंके आशीर्वादसें, ये राज्य पाया, आपके बडे गुरु लोकोंने हमारे बडेरोंके, कईयेक बेर कष्ट आपदा दूर किया है अबकी लाज मर जाद जो गुरू रख दो तो वृद्ध पण सफल हो जाय, और आपके सेवकोंकी अखियात कीर्त्ति राज्य रह जाय, तब आचार्य्य बोले, हे राजेन्द्र जो तुम हिंसा धर्म त्यागके अहिंसा रूप अणुव्रत सम्यक्त्व युक्त जैनधर्म धारोतो सब हो जावे एक पुत्रकों राज्य देणा बाकी महाजन बनो तब गुरूके बचन सुण तहत्त किया तब गुरूनें कहा कल प्रयत्न कर दूगा काला भेरूं मंडोवराकों आराधन करा उसके वचन लेकर प्रभात समय विजय पताका जबवणा कर राजाको दिया राजाने विचारा जो मैं भुजापर बांधूगा तो न मालुम युद्धमें खुल पडे इस लिए उसने अपने बडे पुत्रकी जांघ मैं चीरकर जब डालकर टाके लगा दिये और गुरूका आशीर्वाद लेकर चढ़ा और उन दोनों भाइयोंको पकडके बादशाहके सुपुर्द किया बादशाहने वह सब भीलोंका इलाका झबुआ नगरके तावे दिया सो अभी विद्यमान है राजाने अपने बडे पुत्रको राज्य तिलक

---

१ जयचद साथे यति हाड गाले हे मालं, सेतरामरी सरवग ईधरे पाछीघाले रायपालरायनें दीनपति प्रह्वो देखायो, कन ऊपर कर कृपा असरादल अलग उडायो, सूरनें त्रियामेली सरस किया झमावड २ कजा, खरतरे गच्छ हुआ इसाकदेनविर चोकमधजा ।

दिया और कहा हे पुत्र ये राज्य तुम्हारा नहीं समझणा सदा मदके लिए खरतर गुरूसे कभी ऋण मुक्त नहीं हो सकोगे, अभी भी वो राजा लोक उसी मुजब पिताके वचन निर्वाह करते हैं, राजा तीन पुत्रोंके परिवार सहित जैन महाजन हुआ, जिन्होंके ये तीन गोत्र गुरूने, स्थापन करे, श्रावक १ आमड़ २ अंवक ३ ये तीनों अनुआ नगर मैं हुए,

(वांठिया, लालाणी, ब्रम्हेचा, हरखावत, साह मह्लावत, गोत्र)

विक्रम सम्वत् ११६७ मै पमार राजपूत लालसिंहजी रणत भवरके गढके राजाको श्रीजिनवल्लभ सूरिःने इस प्रकार उपदेश दिया. लालसिंहजीके पुत्र ब्रह्मदेवके जलंधरका महा भयंकर रोग उत्पन्न हुआ, उस वखत लालसिहजीने, गुरूसें विनती करी हैं गुरू, ऐसी कोई चिकित्सा करो, जिससें मेरा पुत्र आरोग्य हो जाय, तब वल्लभसूरिःने कहा, जो तुम, जैन धर्म धारण करो और मेरे श्रावक बनो तो, पुत्र अच्छा हो सकता है, तब लालसिहजीने कबूल करा तब गुरूने, चामुण्डा देवीसें उसको आराम करवाया, तब लालसिंहजीनें, सात पुत्रों समेत जैनधर्म धारण करा, उसका वडा पुत्र वडा वठयोद्धार था, उसकी शन्तान वठ कहलाए, ब्रह्मदेवके ब्रह्मेचा कहलाये, लालसिंहजीके छोटे पुत्रके लालाणी, साहकी किताब उदयसिंह पुत्रकों भरु अच्छके नवाबनें, इनायत की, वह साह कहलाये मह्ले पुत्रकी शन्तान मह्लावत कहलाये, हरख चन्दकी शन्तान हरखावत कहलाये, वाठिये चिमनसिंह सम्वत् १५०० से मै हुमायू बादशाहकी फोजमै देण लेण करणे लगे, गुजरातके हमलेंमै, सोनेके वरतन फोजके लोकोंने, पीतलके भरोसे वेचा, इससें चिमनसिंह वाठियेके पास वे गिनतीका धन हो गया, इससे बहुत जगह व्यापार हो गया, चिमन सिंहने क्रोडो रुपये लगा कर बहुत जिन मन्दिरोंका उद्धार कराया, सत्रुजय तीर्थकी यात्रा जाते गाम २ प्रति आदमी प्रति, एक २ अकब्बरी मोहर, साधर्मियोंको वाटी, पहले वठ कहलातेथे

---

१ मेडता नगरमें वादसाह खाजेकी दरगाह जाते आया द्रव्यकी आवश्यक्ता होनेसें हरखावतकों बुला ५२ सिक्केके ६ लक्ष रुपया मागे चिन्ताग्रस्त आनदघनजी मुनिः पास गया मुनि ने योगसिद्धिसे ५२ सिक्के पूर्ण करे वादसाहने हरखावतको साह पद दिया।

मोहरें वाटणेसें वांठिया २ कहलाये इन्होंका परिवार जादह बीकानेर इलाके में वसते हैं मूलगच्छ खरतर,

चोर बेडिया भटनेरा चोधरी साव सुखा, गोलछा, पारख, बुचा, गुलगुलिया, गूगलिया गदहिया राम पुरिया साख ९०

पूर्वदेश, नगर चंदेरी मै, खर हत्थ सिंह राठोड़ राजा राज्य करता था जिस्के ४ पुत्र थे, अम्बदेव, नींवदेव २ भेंसा ३ आसपाल ४ सम्वत् विक्रम ११९२ मै मं, श्रीजिन दत्तसूरिः खरतर गच्छा चार्य्य, युग प्रधान, चदेरी परगने मे पधारे, उस वखत, राठ लोकोंकी फोज, संग में लिये हुए यवन लोक कावली, मुल्कको, लूटणा शुरू करा, वहुत अगणित द्रव्य लेकर जाने लगे, तव राजा खरहत्थकों, ये खवर हुई, तव दुष्टोंको सजा देणेके लिए, राजा, ४ पुत्रोंकों संग लेकर सेन्याके संग युद्ध करने चला, युद्ध मै सव धन राजाके सुभटोंने यवनोंसे छीन लिया, मगर युद्ध मै राजाके पुत्र घायल हो गये, राजा उन्होंको पालखी मै डालके पीछाविरा, शस्त्र वैद्योंने जवाव दे दिया कि, ये पुत्र किसी तरह नहीं वच सकते, राजा सुणतेही मूर्छा खाकर नीचे गिरा, तव लोकोंने, टंढा पाणी, टंढी हवा, करके, सचेत करा, विलापात करणे लगा बेटे अचेत पडे हैं इतने मै मुनिगणसें सेव्यमान श्रीजिन दत्तसूरिः विहार करते चले आये लोकोंने राजासें अरज करी हे पृथ्वीपती शान्त दांत जितेंद्री अनेक देवता हैं हुक्म मे जिनोंके ९२ वीर ६४ योगिनीयोंको वस करता, पांच पीरोंको तावेदार वनानेवाले, विजलीको पात्रके नीचे थामणेवाले, जंगम सुरतरु, आपके भाग्योदयसें वो पधार रहे हैं, राजा ये सुणतेही, सामने जाके चरणों मै गिरपडा और रोणे लगा, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र क्या दुःख है, तव चारों पुत्र मृतकवत् पालखी मे जो पडे थे. सुभटोंने लाकर हाजिर करे, गुरूने कहा जो तुम जैनधर्मी वनो, मेरी आज्ञा मानो तों, चारों अभी अक्षत अंग हो जाते हैं, राजा कहता है, हे परम गुरूजी, जो मेरी शन्तान और मै आपसे और आपकी शन्तानोंसे, वे मुख हो कभी सुख नही पावेंगें आपकी आज्ञा खरहत्थ की सव शन्तानको मंतव्य है इत्यादि जव प्रतिज्ञा कर चुका तव गुरूने जो गणियोंको याद फरमाया

गुरुकी आज्ञासें अमृत छिड़का तत्काल अक्षत अग चारों वीर योद्धार खड़े हुए गुरूके चरणकी पूजा करी सब राजपूत अचरजके भरे जैनधर्म अंगीकार करा उन्होंके न्यारे २ गोत्र स्थापन करे उन्होंके नाम समुच्चय लिखेंगे राजा खरहत्थके बडे पुत्र अम्बदेवनें चोरोंको पकडा वेड़ियें डाली सो चोर वेडियें अथवा चोरोंसें जाय भिड़े इस वास्ते चोर भिड़िये कह लाये लोक चोरड़िये कहा करते हे चोर वेडियेंमेंसे वहोत साखे निकली १ तेजाणी २ धन्नाणी ३ पोपाणी ४ मोल्लाणी ५ गल्लाणी ६ देवसयाणी ७ नाणी ८ श्रवणी ९ सद्दाणी १० ककड ११ मकड १२ भक्कड १३ लुटंकण १४ संमारा १५ कोवेरा १६ भट्टारकिया १७ पीतलिया १८ सोनी १९ फलेढिया २० रामपुरिया २१ सीपाणी, दूसरे नींव देवकी शन्तान वाले, भटनेरा चौधरी, कह लाए, इन्होने भटनेरके लोकोंकी, चौधरायत, भटनेरके राजाके कहणेसें करी, तबसे भटनेरा चौधरी कहलाये, तीसरे भेंसा शाहके ५ स्त्रिया थी इन्होने अपना रहना, माल्वदेश, माडवगढ़ मे करा था इन्होके ५ स्त्रियोंसे ५ पुत्र चौथा पुत्र कुंवरजी इन्होकी शन्तानवाले सांवण सूका कहलाए सो इस तरह कुंवरजी वहुत ज्योतिप निमित्त शकुन शास्त्र पढे थे जो वात कहते सो प्रायः मिलही जाती माडव गढसें चित्तोडके राणोजीनें कुवरजीको बुलाये, परिक्षा करणेकों पूछा, कहो कुमर, सावण भादवा कैसै होगा, तब कुवरजी बोले सावण सूका, और भादवा हरा होगा, राणेजीने वहा ही रक्खा अन्तको जैसा कहा, वैसा ही हुआ, तब राणेजीनें कहा, सच्च तुम्हारा कहणा, सावण सूका गया, तबसें लोक, सावण सूका २ कहने लगे, इन्होंके वश मे गुलराजजी गुडके गुल गुले वना २ कर छोकरोको खिलाया करते, इसवास्ते छोकरोंने गुल गुलसेठ नामधरा कुवरजीके वंशवाले, जैसल्मेरसे गूगलका व्यापार पालीनग्र मै करते, इससें लोक गूगलिया कहने लगे, दूसरे वेटे २ गेलोजी इन्होंके पुत्र वछराजजीकों मांडव गढ़के लोक गेल वछा कहते २ लोकोंमें गोल्छा कहलाने लगे, तीसरे वेटे वुच्चा साह इनकी शन्तान वुच्चा कहलाये ४ वेटा पासूजी आहड नगर मै राजा चन्द्रसेनने इन्होंको सरकारी जवाराहत खरीदने पर जवरी कायम

किया एकदिन एक परदेशी श्रीमाल झंवरी राजाके पास हीरा बेचनेको लाया राजाको दिखलाया राजानें शहरके सब झंवरियोकों दिखलाया झंवरियोंने उस हीरेकी बडी तारीफ करी, जिसके पीछे राजानें अपणे झंवरी पासूजीको हीरा दिखलाया पासूजी बोले यद्यपि हीरा बडा कीमती है परन्तु इसमें एक ऐब है, तब राजाने पूछा वह कौनसी पासूजी बोले, जिसके घर में यह हीरा रहता है उसकी स्त्री मर जाती है, तब राजानें श्रीमाल झंवरीकों बुला कर पूछा, हमारे झंवरी पासूजी इस हीरे मे ऐसी एब बतलाते हैं, उसने अपना कान पकडा, और कहने लगा-मैंनें हजारो नांमी झवरी देखे है, परन्तु पासूजीकी बड़ाई करणेकी जुबानको हिम्मत नहीं है, सच है, मैंने दो ब्याह किए दोनों मरगई, तब इस हीरेको एब दार समझ बेचणे आया हू, पीछे तीसरा ब्याह करूंगा, तब राजानें, सत्य पारख जांणके पारख पदवी, पासूजीकों, प्रदान करी, पासूजीकों लख रुपया सालियाना देणा, उस दिनसें राजानें, कबूल करा, पासूजी उस हीरेकी लक्ष रुपया कीमत देकर श्रीऋषभ देव भगवानके मस्तक पर लगानेको तिलक बणाकर चढा दिया, इनकी शन्तानवाले पारख कह लाए, पांचमा पुत्र सेनहत्थ लाडका नाम (गद्दासा) था, उसकी शन्तान, गदहिया कहलाई, खरहत्थजीके चौथे बेटे आसपालजी, इन्होंके आसाणी तथा ओस्तवाल दो लडकोंसें गोत्र हुए।

(भैंसा शाहने गुजरातियोंकी लङ्ग खुलाई)

भैंसा साहके पास, खरहत्थ राजाने, जो यवनोंसें, धन बे गिणतीका छीना था, वो ज्यादह, इन्होंकेही पास रहा, इन्होकी माता लक्ष्मीबाई, सत्रुंजयकी यात्राकों बडे महोत्सवसें चली, जगह २ रथ महोत्सव, संघको भोजन, धर्मशाला, जीर्णोद्धार, याचकोंकों दान देते चली, पाटणनग्र पोंहचते धन पासमैं थोडा रहा, तब अपने गुमास्तोंको भेज वहाके बडे व्यापारी नामी चारोंकों बुलाया, उसमें गर्दभसाह मुख्य था, तब उनोंसे लक्ष्मीबाईने कहा, हमै क्रोडसोनइये चाहिए है, सो हमारी हुण्डी मांडवगढकी लेकरके दो, तब व्यापारी बोले, तुम कौन हो, क्या जाति, किस जगह रहते हो, हम पिछानते नहीं, तब लक्ष्मीबाईने कहा, मेरा पुत्र कहीं छिपा नहीं है, भैंसेकी माता

हू , ऐसा सुणकर गद्धासाह हसकर बोला, भैसा तो हमारे पखाल पाणीकी लाता है, ऐसी हसीकर चले गये, परन्तु देणा कबूल नहीं करा, तब मातानें सवार भैसेसाहके पास भेजे, और सब समाचार लिख भेजे, तब भैसासाह अगणित धन लेकर, पाटण पहुचा, और गुमास्तोंको भेज, गुजरात देसमें, जगह २ तेल खरीद करवा लिया, और पाटणमें, उन व्यापारियोंसें, तेल मुद्दतपर, लेणेका वादा किया, लक्ष मोहरे देदी, अब पाटणके व्यापारीने गामोंमें गुमास्ते भेजे, तेल खरीदणे, लेकिन कहीं तेल मिला नहीं, आखिर को तेल देणेका वादा, आ पहुँचा, अब पाटणके सब व्यापारी, इकट्ठे होकर लक्ष्मीबाईके, चरणोंमें आ गिरे, और कहणे लगे, हे माता, हमारी लज्जा रक्खो, तब भैसा साह बोला, राजसभामें चलकर तुम सब लोग, लंग खोल दो, और आइन्दे कभी दुलगी धोती नहीं बांधो तो, तेल लेणेकी माफी दूगा, उन्होंने वैसाही करा, तबसें गुजरातवाले दो लगा नहीं रखते है बाकी गामवालोंसें, तेल लेलेकर जमीनपर गिराणा शुरू कराया, तेलकी नदी ज्यों प्रवाह चलाया, आखिर गुजरातके व्यापारियोंनें हाथ जोड, माफी मांगी, तब निशाणीके लिए सबोंकी लङ्ग खुलादी, और भैसेको पाडा कहणा कबूल कराया भैसेसाहके कहणेसे अपणे नामका सिक्कासे लहत्थ (गद्दासाह) ने छमासे सोनेका गदियाणा बनाकर दीन हीन कगालोंको बांटा, तब पाटणके राजाने भैसासाहकों बुलाकर मान प्रतिष्ठा बटाकर रूपारेल विरुद दिया, याने रूपारेल शकुनचिड़ी प्रसन्न होकर, जब शकुन देती है तो, नवनिद्ध सिद्ध कर देती है, सम्वत् १६२७ मै सत्रुजय पर श्रीजिन चन्द्रसूरिःखरतराचार्यके उपदेशसे, १८ गोत्र और भाई होकर, गछ खरतरसे प्रतिबोध पाये, जिनलरहत्थ राटोडकी साखा, इतनी फैली, सगे भाइयोंका कुछ क्षात तो पहिले लिखा है, बाकी कानफरेसकी रिपोर्टमें और भी गोत्र गोलछा पारखोंके सगे भाई लिखे है सावसुखा १ गोलछा २ पारख ३ पारखोसे आसाणी ४ पैतीसा ५ चोरवेडिया ६ बुचा ७ चम्म ८ नावरिया ९ गद्दहिया १० फाकरिया ११ कुंभटिया १२ सियाल १३ सचोपा १४ साहिल १५ घटेलिया १६ काकडा १७ सीयड १८ सखवालेचा १९ कुरकचिपा २०

साव सुखोंसे गुल्गुलिया २१ गूगलिया २२ भटनेरा २३ चौधरी २४ चोरडियोंमेंसे २४ फेर निकले ये सब गोत्र राठोड़ खरहत्थके ४८ गोत्र सगे भाई गच्छमूल खरतर ५० मां ओस्तवाल पारखोंसे ये सब जैन कानफरें-सकी रिपोर्टसें मिलाके श्रीजीके कारखानसे मिलाके लिखे है १८ तीर्थ भाई कांकरिया १ सेल्होत २ भटाकिया ३ बूबकिया ४ खूतड़ा ५ नारेलिया ६ सिन्दूरिया ७ मूंधड़ा ८ नीवाणिया ९ बावेल १० काकड़ा ११ फोकटिया १२ इत्यादि इन सबोंका मूलगच्छ खरतर है।

(भणसाली २ चंडालिया भूरा वद्धाणी)

लोद्रवपुर पट्टण जो कि जेसलमेरसें ५ कोस है उहांका राजा यदुवंशी धींराजी, भाटी उनके पुत्र सगर, सगरके श्रीधर, राजधर दो पुत्र थे सगर युवराज पदमै था सम्वत् ११९६ युगप्रधान श्रीजिन दत्तसूरिःलोद्रव पत्तन पास विक्रमपुर पत्तनमे थे सगर युगराजकी माताकों ब्रह्म राक्षस लगा हुआ था, सो अगम बात कहदेती, वेद पढ़ती, सन्ध्या तर्पण करती, पवित्रता मै मग्न कई दिनो भोजन नहीं करती, और जब खाणे बेठती तो मण अंदाजके खा जाती तब राजाने अनेक मंत्रवादियोंको बुलाया मगर वो मंत्र मंत्रवादीका विगर पढ़े राणी आप पढ़ देती, आखिर राजाने जिनदत्तसूरिः जीकी प्रशंसा सुनी तब राजा आप सन्मुख गया, और लोद्रवपुर मै गुरूकों लाया गुरूकों देखते ही ब्रह्म राक्षस बोला, हे प्रभू आपके सन्मुख अब मै लाचार हू, कारण आपकी योग विद्याको मै नही पहुचता आपके सब देवता दास है, गुरूने कहा, आज पीछे धीराके कुटुम्बको कभी संताणा मत, तब ब्रह्म राक्षस बोला है गुरू इस राजाका मैं कथा व्यास था, एक दिन ऐसी हुई के इस राजानें देवीकी स्तुति करी, और मैने विष्णु सतो गुणी रामचन्द्रकी प्रशसा करी, राजाने मानी नही, तब मैने कहा हे राजा मदिरा मांस चढ़ाणा, जगदम्बा नाम धराणेवाली, अपने पुत्रवत् भैसे बकरेकों मारके भोग लगाणेवाली, जगतकी माता

---

१ धींराजी ओसवाल हो गये इस लिये भाटी राजाके कुर्सी नामेमें इनोका नाम नहीं लिखा गया है।

कैसे हो सकती है, इतना सुणतेही राजानें क्रोधातुर होकर मुझे मरवा डाला, मै दयाके परणामसें, मरकर, व्यन्तर निकायमें व्रम्ह राक्षस हुआ, पूर्व भवके वैरसे मै, इसके कुलका नास कर डालता, लेकिन आप समर्थ योगी हो, ऐसा कह कर राजा धीरकों कहणे लगा, अरे दुष्ट तूं, देवीकों, जीवोंको मारकर मदिरा मास चढाता, और खाता हुआ नरक जायगा, अगर स्वर्गमोक्षकी चाह रखता है तो, श्री जिन दत्त सूरिः धर्मकी जहाज है, इन्होंका कहा धर्म धारण कर, सो तेरे कुटुम्बका दोनों भव कल्याण होगा, ऐसा कह कर, राजाके गढका मूल दर्वाजा उत्तर था, सो पूर्वमें स्थापन कर, गुरुसे सम्यक्त ग्रहण कर, ब्रह्मराक्षसनें राणीका अङ्ग छोड दिया, अपनी निकायमें चला गया, ऐसा चमत्कार देख राजाने अपने सहकुटुम्ब जैन धर्म अङ्गीकार करा, भंडसालमें वासक्षेप किया इस वास्ते भणसाली गोत्र, गुरूने स्थापन करा, बद्धाजी भणसालीकी शन्तान बद्धाणी कहलाये, थेरूशाह नामका भणसाली विक्रम सम्वत् सोलसयमें हुआ, वो लोद्रवपुरमें घीका रुजगार करता था, उसवक्त रूपसियां गामकी स्त्रियें इसको नित्य घी लाकर वेचा करती थी, एक दिन पिछली रातको, वहुतसी स्त्रियां घीके घडे ले, गांमसें निकली, इन्होंमें एक स्त्री, अराई (इढांणी) भूलगई, रस्तेमें उसनें एक हरीवेलकों मरोडके, अराई वणाली, लोद्रवपुर पहुची, इसके घडेका घी तोलते २ अन्त नहिं आया, तव थिरूने विचारा, १९ सेरका घडा, इसमें २० सेर घी तो निकल चुका, और फिर भी इसमें घी इतनाही भरा है, अग्रिम बुद्धि वाणिया इस न्यायसें वो अराई, उसने नीचेसें निकाल कर, दुकानके अन्दर फेकदी सबोका घी लेके, अराई वालीकों, दूणे दाम दिये, तव वो विचारणे लगी, आज थिरू भूल गया है, तव पीछै वोली अराई तो दे घड़ा कैसे ले जाऊं, इसने कोडा ला, जो जेसलमेरमें वणता है वो निकालके उसकों दे दिया, तव वो स्त्री वहुतही खुशी होगई आजमें तो रूपारेल लेके आइथी, वो सव चली गई अवथिरू साहनें जो अपने पास द्रव्य था, उसके नीचे, वो अराई धरी, जितना द्रव्य निकाले, उतनाही अन्दर, तव, श्री जिनसिंहसूरि: आचार्यसें ये सव वात कही गुरूनें कहा सुकृतार्थ संच, तव

थिरूनें धीर राजाका कराया हुआ सहस्र फणा पार्श्वनाथके मन्दिरका जिर्णोद्धार कराया, ज्ञान भण्डार कराया, इस तरह क्रोड़ों रुपये लगाये, नवरत्नोंके जिन बिंब भरवाये संघ भक्ति बहुत करी सम्वत् सोलासयबयासीमै सत्रुंजयका संघ निकाला श्री जिनराजसूरिः प्रमुख कई आचार्य संगमै थे, समय सुन्दर उपाध्यायनें इन्होकेही संघमैं सत्रुंजय रास बणाया था, इस वंशवाले जेसलमेरमैं सुल्तान चन्दजी कच्छावा वडे अकलके पूरे सायर पुरुष होगये हैं, उहा भणसाली कछावा बजते है, जोधपुरमै भणसाली सब जातके चौधरी हैं, बादसाह अकब्बरने थेरूसाहकों दिल्ली बुलाकर वडा कुरब बढाया, थेरूसाहने, नव हाथी, पाचसय घोडे नजर किए, तब बादसाहनें, रायजादा की पदवी प्रदान करी, इन्होंकी शन्तानके राय भणसाली कहलाये, आगरेमै वडा जिनमन्दिर थिरू साहने कराया, सो अब भी विद्यमान है जोधपुरके भणसाली, नौ वर्षतक अपणे पुत्रोकी, चोटी नहीं रखते हैं, दादा गुरूके दीक्षित चेले बणा देते है, बोरी दासोत भणसाली व्याह भोजकोसे कराते हैं, ब्राह्मणोंकों, हीजडोकों, व्याहमै नहीं बुलाते है

(भणसाली सोलंखी २)

आभूगढका सोलंखी राजा आभड़दे, (वह आभोर नाम कहाता है) इसके पुत्र जीता नही अनेक देवी देवता मनाये, लेकिन पुत्र नहीं जीता तब सम्वत् ११६८ मैं श्रीजिन वल्लभसूरिः महाराज, विचरते २ पधारे, तब राजानें, गुरूसें विनती करी, हे गुरू महाराज, मेरे जो शन्तान होता है, वो मर जाता है, कोई यत्न करणा चाहिये, गुरूनें कहा, जो तुम जैनधर्म धारण करो तो, मृतवत्सा दोष मिट जाता है, तब राजा राणी दोनेंाने कबूल करा गुरूमहाराजनें कहा, तेरे सातराणियोंके, अब सात पुत्र होंयगें, सो जीते रहैगे, राजा राणी दोनेंाने उसी दिनसें गुरूसें, भंडसाल मै वासक्षेप लिया, इस लिए भणसाली गोत्र थापन करा, सातोंके सात पुत्र हुआ, इन्होंकी आभूसाख प्रसिद्ध भई, इन भणसालियोंनें, जब अंबड़नामका अणहिल पत्तनका, और गच्छका श्रावक मुल्तान सिंधदेशके नगरमैं जवाहरात खरीदने गया था, उस वक्त श्रीजिन दत्तसूरिः उहां पधारे, तब राजादीवान सेठ, सामंत,

सब लोक, सन्मुख आकर, वाजे गाजे वडी धूमसें, नगर मै लाये, क्योंकि यहा गुरू महाराजनें, दीवानके लडकेकों, सांप काटे मृतकतुल्यको जिलाया था, इस लिए राजा प्रजा सब गुरू महाराजके, सेवक थे, उस वक्त ये महिमा वो गुजराती अम्बड़ देख कर, गच्छके द्वेपसें, ईर्प्या अग्निसें दग्ध होगया, तब गुरूकों कहणे लगा, आपका चमत्कार और त्याग वैराग्य जब मै सफल जाणूंगा, इस तरहके उच्छवसें, जो आप अणहिल पाटण मै पधारे तो, तब गुरूनें उसके वचनसें इर्प्या जाणके, जबाब दिया, हम पट्टण मै इस तरहके उच्छवसें आवेंगे, उस वखत, तूं कर्मगतिसे निर्धन होकर, तेल लूंण वेचता, हमारे सन्मुख आवेगा, पीछै, कई अरसेके गुरू उहा पधारे उस समय पाटण मै, श्रीजिन दत्तसूरिःके, तीनसय श्रावग वसते थे, वडी धूम धाम उच्छवसें सामेला हुआ, अकस्मात् दलिद्र रूप, चींथड़, तेललूंण वेचणे, गामों मै, जाता था, धन सब जाता रहा, ऐसा अम्बड सामने मिला, गुरूनै, पहिचान कर कहा, हे अम्बड, मुलतान मिले थे, पहिचानते हो, लज्जित होके, गुरूके चरणो मै गिरा और मन मैं द्वेप लाया के, इन्होंके कहनेसे मैं निर्धन हो गया, मतना इन्होंकी महिमा, यहा वडे, तब कपटसें जिन दत्त सूरिःका, श्रावक वणगया, गुरूका धर्म व्याख्यान सुणा करे, एक वक्त गुरू महाराजके, तेलेका पारणा था, इसनें भक्तिसें, साधुओंको, वहरनें वुलाये, तब मिश्रीका जल जहर मिला हुआ, वहिरा कर वोला, ये जल गुरू महाराजके योग्य, निर्दोप है, मैंनें पारणेके वास्ते मेरे वणाया था, साधुओंनें गुरू महाराजको दिया, गुरूने पारणेमै पी लिया, पीछै मालूम हुआ के, इसमै विप है उसवक्त मणसाली श्रावक आभूसाखवाला, पच्चखाण करणे आया तब गुरूने कहा मुझें जहर होगया ह इतना सुनतेही वो श्रावक अपनी ऊठनी (सांड) वहुत शीघ्र गामनी पर सवार होकर भूखाप्यासा निकला विपापहारिणी मुद्रिका लेकर पीछा आया, आचार्य महाराजके वमन पर वमन और वे होसी, वदन काला, और हाथोंमें ऍटण, चलणे लग रहा है, हजारों मनुष्य इकट्ठे हुए, १ पहर मै पीछा आकर, उसको प्रासुकजल मै, डाल कर, साधुओंने दिया, तत्काल, सर्व उपद्रव, शान्त हो गये, ये वात फैलते २

राजाके पास पहुंची, तत्काल, अम्बड़कों बुलवाकर राजानें, कबूल करवा लिया, राजानें प्राण लेणे की सजा में, चौरंगा करणेका हुक्म दिया, तब जिन दत्तसूरि:ने साधुओंकों, राजसभा में भेजकर, ये हुक्म बन्द करवाया, राजानें देसोटा दिया, जहां २ जावें, उहां हत्यारा कहके कोई इसकों बतलावें नहीं आखिर गुरू पर द्वेष भाव रखता २ अधम मरके व्यन्तर हुआ, अब वैरानसंबंधसें, गुरूका छल देखने लगा, अकस्मात् गुरूका, ओघा आसणसें दूर हटा, तत्काल वो व्यन्तर लेके, उत्पात करता गुरूकों उन्मत्त बणा दिया, गुरू अपने होस में होय तो, अन्य देव भी याद करते ही हाजिर होंय, उस वक्त वीर और जोगणियां सब उत्तर दिशा में कोई व्यन्तरोंके परस्पर युद्ध होता था उहां चले गये थे, भवितव्यता जब आती है तब सुभूम चक्रवर्त्ती तथा भगवान वीरके अनेक देव सेवा करते भी कई मरणान्त कष्ट भोगणा पडा था और उसवक्त उस दुष्ट व्यन्तरनें पूरा छल पाया तभी ये कार्य किया उस समय सब खरत्तर संघनें बलिदान मंत्रादिक किया, तब व्यन्तर प्रत्यक्ष हो बोला, जो उस समय जहरका प्रतिकार करनेंवाला भणसाली अपने सब गोत्रको, मेरे बलि करे तो, मैं ओघा देके, श्री जिन दत्तसूरि:कों, निज सत्तामें, कर देता हूं, इतना सुणनें ही भणसाली गुरुभक्तिसें गोत्रका, उतारा कराया, व्यन्तरनें ओघादेके जिन दत्तसूरि:कों, छोड़ दिया, भणसालीके सब कुटुम्बको, मारणे निमित्त, जो व्यन्तर उद्यत होना था, तत्काल श्री जिन दत्तसूरि:नें, उस व्यन्तरकों योग विद्यासें, स्थम्भन कर दिया, सब भणसालीके बचोंपर ओघा फरते ही, सब सावधान हो गये, ऐसा अचरज देख, राजाप्रजानें, धन्य २ भणसाली तुम्हारी गुरूभक्ति, जो तुमनें, सारा कुटुम्ब, गुरूके निमित्त, अर्पण करा तुम खर (करडा) हो, तबसे सोलंखी भणसाली खरा भणसाली कहलाये, इन्होंका परिवार बडी मारवाड़ गुजरात में बसता है राय भणसालीसें चंडालिया नाम प्रगट हुआ, कछवा हुआ, भूरेजीकी शन्तान भणसाली, भूरा कहलाये, कई पूगलसें उठे वह भणसाली पूगलिया कहलाते हैं, मूल गच्छ इन्होंका खरतर है।

(लूंकड़ गोत्र)

खेता नामका महेश्वरी वाहेती जिसके दो पुत्र लाला, १ भीमा २ ये दोनों नवाब लोदी रुस्तम खाके खजानेका काम करते थे, जिसमै इन्होंने क्रोडोंका माल, अपने महेश्वरी ब्राह्मणोंकों, वाटदिया, सम्वत् १९८८ विक्रमके किसीनें चुगली खाई, नवावनें, अहमदावाद मै, इन दोनोंकों कैद करदिया, एक दिन, पहरे दारोंकी नजर वचाकर ये दोनों भगे, सो गोढ़ वाड इलाके मै, आये, पिछाडी इन्होंको पकडनेको, घोड़े चढ़े, तब तपागच्छके जतीनें इन्होंसे करार किया, हम तुम्है छिपायलें, मगर जैनी श्रावक होना पडेगा, इन्होंने कबूल कर, सिपाही लोक ढूंढके चले गये इन्होंने प्राण वचणेसें, जैन धर्म अंगीकार करा, वाद, जोधपुर, फलोदी, गामोंमै, आनेसें, लुकणेसें लूंकड कहलाये, मूल गच्छ तपा)

(आयरिया लूणावत गोत्र)

सिंधु देशमै एक हजार गामके भाटी राजपूत राजा अभयसिंह राज्य करता था, सम्वत् ११९८ मै श्रीजिनदत्त सूरिः विचरते २ वनमै उतरे थे, राजा अभयसिंह सिकारकों निकला, उस समय जिनदत्त सूरिः का, एक साधू, गोचरीके वास्ते सामने आया, उसकों देखते ही, राजा बोला, मुण्ड अमंगल है, ऐसे राजाके वचन सुन एक क्षत्रीनें गोली मारी, वह गोली साधूके लगकर गुलावका फूल होकर गिरपडी, राजा घोडेसे उतरकर साधूके चरणोंमै गिरपडा, साधूसें माफी मागी, तब वो साधू समतासे बोला, हे राजेन्द्र, हमारे गुरू आचार्य वनमैं उतरे है, ये सर्व महिमा उनोंकी है, तूं उनोंका दर्शन कर, तब राजा वनमै गया, गुरूकों नमस्कार करा, तब गुरूनें धर्मलाभ कहा, और राजाको धर्मोपदेश देते कहने लगे, हे राजा, जीवोंकों मारणा है इसका फल दुर्गति है, जिसमै भी, क्षत्रीयोको चाहिये कि, निरापराधी जीवोंकों कभी हणे नहीं, षट्दर्शनको, बेकारण सन्ताना ये राजपूतोंका धर्म नहीं, जैसा इस समय आप करके आये हो, जैन संघकी रक्षा करणेवाली साशनदेवीनें, उस मुनिः की रक्षा करी, और गोलीका फूल कर दिखलाया, ये वचन सुनते ही राजा, आश्चर्य मै रहा, इन महापुरुषकोंमें

कर आया हूं, इस बातकी खबर यहां बैठेही होगई, ये कोई महापुरुष है, गुरू बोले हे राजा सासनदेवी मुझकों कहगई, इतनेमै सींधू नदीका तोफान उठा सो पाणीका पूर ऐसा आता दीखरहा है कि मानो पृथ्वीकों जल जलाकार कर सर्व वहा कर ले जायगा :राजा बोला, हे गुरू आप शीघ्र रक्षा करो मेरी सर्व प्रजा हजार ग्रामके लाखों की वस्ती की, भवितव्यता आगई, गुरूने कहा, हे राजा तुम्हारे सब भाटी राजपूत, जो कि हजार गावोमे बसते हैं, मेरे श्रावक हो जावें तो, सबोंकी रक्षा-हो सकती है, राजाने कहा हे परम गुरू, सब महाजन होकर, आपके दास रहेंगें, मगर शीघ्र २ राजा तो घबडाकर उस दरियावके वेगकों नहीं देखणेकी सामर्थ्यसें, गिरके बोलता है, हे गुरू मुनिः पर मेरे राजपूतनें, बेकारण गोली मारी, माफ २ रक्ष २ करता है तब गुरू बोले, आयरह्या, हे राजा, आय रह्या, उठके देख राजा उठके देखता है, तो, दरियाव, पीछा जा रहा है, तब राजाने उसी समय, बडी धूमसें, वाजा गाजा और अपनी प्रजासहित गुरूकों, सहर मैं पधराया, और दश हजार भाटी राजपूतोंके संग, जैनी हुआ, गुरूनें आयरिया, गोत्र थापन किया इस राजाके सतरमी पीढी लूणासाह हुआ, इसकी सन्तान लूणावत कहलाये लूणा जेसलमेर परगणे मै आया, मरुधर मैं काल पडा देख जगह २ सत्रु-कार, देणा शुरू करवाया, पछि सत्रुंजयका संघ निकाला, कोलू गाममै, का-बेली खोडियार, हरखूकों, लुणावत पूजणे लगे, ये लोग बहुत वरसों तक, वहलवे गांममैं वसते रहै पीछै जेसलमेर मैं, इस तरह आयरिया लूणावतोंका वंस विस्तार हुआ, मारवाडमैं फैल गया मूल गच्छ खरतर है,

(बहुफणा, बापणा,)

धारा नगरीका राजा पृथ्वीधर पमार राजपूत इसकी सोलमी पीढी मै जोवन और सच्चू इस नामके दो नर रत्न उत्पन्न हुए, किसी कारण इस, धारा नगरको छोड जालोर गढ़कों फतह कर, अपना राज्य कर सुखसें रहने लगे, तब आगेके जो जालोरगढ़के राजा थे, उन्होंने कन्नोजके राठोडोंकी, सहायता लेकर, जालोरगढ़ पर चढ़ाई की, बडा घोरयुद्ध हुआ, एक भी हारे नहीं, तब इन दो भाइयोंनें, अपने दिलजमीके आदमी मुल्कों

मै भेजे, तब गुजरात मैं, श्रीजिनवल्लभ सूरिःको, चमत्कारी पुरुष जानके, सब हकीकत कह सुनाई, तब गुरूने कहा, जावो तुम तुम्हारे राजासे पूछो, जो अगर जैनधर्म अंगीकार करके महाजन वणोतो, हम शत्रुजय करादेते है, तब वो, सुभट, शीघ्र गतिसे जाकर, राजाकों खबर दी, राजा दोनों भाइयोंनें, नम्रता पूर्वक, पत्र लिखा, वह पुरुष पत्र लेकर, उहां पहुंचा- तब श्रीजिन वल्लभसूरिःनें, वहुफणा, पार्श्वनाथ, शत्रुजय कर मंत्र दिया, और सब विधि बतलाई, वह पुरुषनें जोवन सच्चू राजाकों विधी पूर्वक, मंत्र दिया, वह एकाग्र मनसे साढे बारह हजार जप करके, कही विधीसे, घोड़े असवार होकर सब सेन्या मैं जा खड़े रहै, इन्होंको आया देख शत्रुलोक मार २ करते दौडे इन्होंने सबके शस्त्र छीन लिये, सबोंको जीत लिये तब सबने हाथ जोड़ माफी मांगी, ये तारीफ सुण, जयचन्द राठौडनें इन दोनोंको, सत्कार सन्मानसें बुलाया, सब हकीकत पूछी, इन्होंने गुरू महाराजकी सिद्धी बतलाई, तब राजानें अपने सामन्त वणाकर, मुल्क पट्टा इनायत कर, अपने देश जानेकी आज्ञा दी, पीछै आते गुरूकी तलाश करते, खबर पाई क, श्रीजिन वल्लभ सूरिःजी, स्वर्गवास हो गये, और श्रीजिन दत्तसूरिःभी, वडे जागती जोत उन्होंके पट्ट प्रभाकर है, तब दोनों भाई, जिन दत्तसूरिःजीके, चरणों मै गिरे, और बोले आज हमारो बापना, हमारी रक्षा अब कोण करेगा, गुरूनें कहा, तुम जिनधर्म अंगीकार करो तो, गुरू स्वर्गवासी सदा तुह्मारी सहायता करेंगे, इन्होंने श्रीजिन दत्तसूरिःजीसें जिनधर्मका तत्व समझके, श्रीजिनधर्मका सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत लिया, गुरूने वहुफणापार्श्वनाथके मंत्रसें सिद्धी पाई इसवास्ते वहुफणा गोत्र उन्होंने कहा बापना इसवास्ते दूसरा इस गोत्रका नाम बापना भी प्रसिद्ध हुआ रत्न प्रभसूरिःने जो अठारह गोत्रोंमै बाफणा गोत्र वणाया था, वह अलग है, लेकिन वह भी पमार वंशी थे, इसवास्ते वेभी चैत्यवासी अपणे गच्छको जाणकर, श्रीजिन दत्तसूरिःजीके श्रावक हो गये जोवन सच्चूके २७ पुत्र हुए, उन मैसें सावतजी नामके जोवन राजाके पुत्र राजा अजय पालके

पोते, पृथ्वी राजके सेनापती हुए, इन्होंके मुसलमीनोंकी सेन्यासें, ६ वखत संग्राम हुआ ६ वखतही काबुलके वादशाहकों पकड्के चूड़िया, लंहगा ओढणा, पहराके, वजार मैं घुमाया, ऐसे महायोद्धाकों देख, पृथ्वी राजजीनें, युद्ध मै नाहटा इस नांमसें ही, पुकारणे लगे, लोक सब नाहटा २ कहणे लगे, इस तरह फतह पुरके नबाबनें, रायजादा पदवी एक पुत्रकों दी, वो रायजादा गोत्र हुआ, इस तरह, ३७ गोत्र बहुफणोंसे निकले १ वापना २ नाहटा ३ रायजादा ४ घुल्ल घोरवाड ६ हुंडिया ७ जांगडा ८ सोमलिया ९ वाहंतिया १० वसाह ११ मीठड्या १२ वाघमार १३ आभू १४ धत्तूरिया १५ मगदिया १६ पटवा १७ नानगाणी १८ कोटा १९ खोखा २० सोनी २१ मरोटिया २२ समूलिया २३ धाधल २४ दसोरा २५ भूआता २६ कल्रोही २७ साहला २८ तोसालिया २९ मूंगरवाल ३० मकलवाल ३१ संभूआता ३२ कोटेचा ३३ नाहउसरा ३४ महाजनिया ३५ डूंगरेचा ३६ कुबेरिया ३७ कूचेरिया [1] ये अनेक कारणोसें शाखा फटी है, मूल गच्छ सबोंका खरतर है, गुरूका वरदान था, तुम धन परवारसे बधोगे।

(रतन पुरा कटारिया जलवाणी)

विक्रम सम्वत् १०२१ सोनगरा चौहाण, राजपूत रतन सिंहनें रतनपुर नगर बसाया, जिसके पांचमी गद्दी सं. ११८१ मैं अक्षतीजकों, धन पाल राजा तखत बैठा, एक दिन शिकार करने राजा जंगल मै गया, घोडा उलटा सिखलाया हुआ था, थांमणेकों ज्यो ज्यों राजाने लगाम खेंची, त्यों त्यो घोडा चोफाले होता रहा, तब राजानें लगाम ढीली करी, तब घोडा ठहर गया शिकार हाथ नहीं लगणेसें पीछा फिरा, रास्तेमें एक तलाव नजर आया, उहा दरखतकी छांहमै घोडेकों बाधके आप सो रहा, इतने मै एक सर्प निकलके,

---

[1] १ पटवा वादरमल २ जोरावरमल ३ मगनीराम ४ वगैरह वड़े दानेश्वरी श्रीमन्त ५ भाई भये सत्रुंजयका सघ निकाला १८ लाख रुपया खरचवाकी सात क्षैत्रोंमें क्रोडों रुपये इन्होंने लगाये इन्होकी सन्तान उदयपुर जेसलमेर कोटा रतलाम वगैरह शहरोंमें वसते हैं हर्ष सूरि का सूरतमैं महेंद्र सूरिःका मडोवर मैं जिन्होंने पाट महोत्सव करा इन्होकी उदारता लिखणेकी कलममें ताकत नहीं इस जमानेमें ऐसे दाता दुर्लभ होगये ऐसे २ काम करे।

राजाकों काट खाया, राजा थोड़ी देरसें बेहोश होगया, आयुके प्रबल योगसें, श्रीजिन दत्त सूरि:आचार्य उस रस्तेसें विहार करते चले आए-राज लक्षण अङ्गमै देख, तत्काल ओत्रेसें पास करा, राजा निर्विष हो कर तत्काल वैठा हुआ, आगे गुरूकों देख, चरणोंमै गिर पड़ा, गुरूनें धर्म लाभ दिया, राजानें बड़ी धूमसें गुरूको अपने नगर मै, पधराये, राजा, अपने प्राण देणेके वदलेमें, गुरूकों राज्यभेट करणे लगा, तब गुरूनें कहा, हे राजेन्द्र हमनें यावज्जीव धन कंचनका त्याग किया है, हम राज्यका क्या करें राजानें कहा आपका वदला कैसै उतरे, गुरूनें कहा, तुम जैनधर्म ग्रहण करके, हमारे श्रावक वणो, हमारा वदला उतर जायगा, तब गुरूको चौमासे रखा, और धर्मका स्वरूप समझकर, वड़े हर्षसे सम्यक्त युक्त बारह व्रत ग्रहण करे, रतनसिहका रतनपुरा गोत्र गुरूनें थापन करा, इन्होंके वंश मै झाझणसिंह वड़ा प्रतापी नर उत्पन्न हुआ, जिसकों दिल्लीके वादशाहनें अपना मन्त्री वनाया, झांझणसिंहनें प्रजाको वहुत सुख दिया, इसवास्ते सव हिन्द मै उसके नेक नामीका सितारा चमकने लगा, एक समय वादशाहके हुक्मसें सत्रुंजयका संघ निकाला, उहां पट्टणीसाह अवीर चन्दने आरती उतारणेकी, वोली करी, झांझण सिंहने वाणवें लाख रुपये मालव देशके इजारे की आमदानी देकर प्रभूकी आरती उतारी, इन्होंके दूसरे भाई पेथड़साहनें, सत्रुंजय गिरनार पर ध्वजा चढ़ाई, रस्ते मै धर्म पुन्य करते पीछा आके, सुल्तानसें, सलाम करी, एक दिन किसी चुगलनें, वादशाहसें चुगली कर दी, करोडों रुपये सरकारी खजानेके पुन्यार्थ मैं लगाने सावित कर दिये, वादशाहने गुस्सेमैं आकर, झाझण सिंहको पकड़नेको योद्धोकों भेजे, तव झांझण कटारी लेकर खड़ा हो गया, योद्धे भगे, वादशाहसें अरज करी तव वादशाह आप ही आकर वोले, अरे कटारिया, सच्च कह कि, सरकारी क्रोड़ों रुपये तेंने खाये, झाझण वोला, एक पैसा भी वेहकका मुझे खाणा हराम है, हां अलवत, हजूरके मालसें, खुदाकी वंदगी और खैरायत, जरूर करी गई, अव जिसका पुन्य है, धर्म दलाली, मुझकों मिलेगी, हजूरका नाम जुग जाहिर था,

उसकों गुलामनें, खुदातक पहुंचा दिया, ये बात सुण कर बादशाह खुश हो गया, और सातों गुने माफ कर दिये, दरबार मै, कटारी रखणेका हुक्म दिया, और फरमाया हे नेक नाम, जो कुछ नाम, और जो कुछ तेरेसें सखावत, करी जाय सो कर, इस तरहसे, कटारिया साख भई, बाद कई पीढ़ी इन्हों की शन्तान, मांड़वगढ़ मै जावसी, किसी कसूर वश मुसलमानोंने कटारियोंके सब गोत्रवालोंको, मांडवगढ़ मै कैद किया, २२ हजार रुपये दण्ड किया, तब खरतर भट्टारक गच्छके ज़ती जगरूपजीनें, मुसल्मानोंको चमत्कार दिखलाकर, दण्ड नहीं लगणे दिया, एक रतनपुरा बलाई (ढेढ़) लोकोंकों रुपये देता लेता वह बलाई कहलाये, इस तरहसे रतनपुरा मै २४ जात चौहाणोंकी महाजन भये, हाड़ा १ देवड़ा २ सोनगरा ३ मालडीचा ४ कुंदणेचा ५ बेडा ६ वालोत ७ चीवा, ८ कांच ९ खीची १० विहल ११ सेभटा १२ मेलवाल १३ वालीचा १४ माल्हण १५ पावेचा १६ कांवलेचा १७ रापड़िया १८ दुदणेच १९ नाहरा २० ईबरा २१ राकसिया २२ वाघेटा २३ सांचोरा २४ इन २४ जातमेंसे १० साखमहाजन प्रसिद्ध हुए रतनपुरोंसे, रतनपुरा १ कटारिया २ कोटेवा ३ नराणगोता ४ सापद्राह ५ भलाणिया ६ साभरिया ७ रामसेन्या ८ बलाई ९ वोहरा १० इन सवोंका मूल गच्छ खरतर है।

डागा मालू भामू पारख छोरिया।

रतनपुरके राजाके दिवान माल्हदेजी राठी तथा भामूजी खजानचीं जातके राठी तथा राठी वल्लासाह ये राजाकी फोजके मोदी थे जिस समय राजा रतनसिंहकों जिन दत्तसूरिःजीने सांप काटे हुएकों बचाया, तब चमत्कारी महापुरुष जाण माल्हदेजीके बडे पुत्रकों, अर्द्धांगकी बिमारी बहुत सख्त होगई थी, सो किसी विधसें इलाज नहीं हुआ, तब श्रीजिनदत्त सूरिजीसें कही, महाराज बोले रतनपुरके जात राठी महेश्वरी जैनधर्म अंगीकार करें तो, में तेरे पुत्रकों, बचानेका उद्योग करूं, सब राठी रतनपुराके, बासिन्दोंने ये बात कबूल की, कारण एक तो माल्हदेजी दिवान सबके भरण पोषण करनेवाले, व दुसरे ऐसे चमत्कारोंकी

महिमा, दुसरा ऐसा सन्सारमें कोण होगा, जिसमें आपदा नहीं आती है, तब अपने कुटुम्बके रक्षाकारण जाणके, सब राठी मिलके, पालखीमै डालके पुत्रकों लाये, सबोंने कहा, आपकी शन्तानके हमारी शन्तान सदाके वास्ते, आभारी रहेगें, किसी तरहसे ये कुलदीपक, रूपदे, अच्छा हो जाय, गुरूने योगणियोंको बुलाया, और कहा, इसको तुम सावधान करो, जोगणियोंने कहा हमारी आज्ञा कारणियां, बींझेविणजारेकी सात लडकियां अग्निमै जलकर मरी, इसका कारण रूपदे है बीझेविणजारेको महसूल की, चोरीमैं, रूपदेने पकडके, कैद किया, और सब माल, असबाब, जब्त कर लिया, तब सातों इसकी कंवारी कन्यायें, क्रोधसें, अग्निमै जलकर, भस्म होगई, सो शुभ परणामके वश, चाण्डाल जातिकी, सातोंई कन्या, व्यन्तर हुई है, हम उन्होको, अभी लाती है, ऐसा कह उन्होको लाई तब उन्होने कहा, हे परम गुरू, हमारा पिता कैदमै है, उसको छोड़ दे और माल पीछा दे दे तो, आपकी कृपासें, ये अच्छा हो जायगा, गुरूने, बीझेंकी बेड़ी तोड़ाई, माल सब दिलाया, तत्काल उसका अङ्ग, अच्छा होगया, तब जोगणिया, और बींझ बाइयोंने कहा, अरे राठीयों जबतक तुम जिन दत्तसूरिःके आज्ञाकारी बणे रहोगे, और खरतर गच्छका उपकार नहीं भूलोगे, उहांतक अर्द्धांगकी बीमारी तुम्हारे कुलमैं नहीं होगी, ऐसा कह, गुरूकी आज्ञा ले, अलोप भई, ये चमत्कार देख, सब रतनपुरके महेश्वरियोंने, जिनदत्तसूरिःजीका, वासक्षेप ले जिनधर्मी हुए, डागा, गोत्रमहेश्वरीयोंसे मूंधडामहेश्वरियोंसे, मूंधडाश्रावक गोत्र स्थापन किया, भामूजीका पारख, अबींध कांन नहीं विंधावे, ये राठी महेश्वरियेंसे गोत्र थापा, भोरा गोत्र, राठियोसें, छोरिया, गोत्र राठियोंसे, सेलोत राठी महेश्वरियोंसे, रीहड राठी महेश्वरी, इस तरह ९२ गोत्र रतन पुरमें, महेश्वरीयोंसे, जिन दत्तसूरिजीने स्थापन करा, अनेक जातिनाम महेश्वरियोंमेंयावोही रक्खा ।

(रांका सेठी सेठिया कालावोक बांका गोरादक०)

वल्लभी (वला) सोरठ देशमें, गोड राजपूत, काकू और पाताक, नामके दो भाई, बहुत द्रव्यसें, तग रहते थे, नगरके दरवज्जेके बाहर तेललूंण वेन-

नेका व्यापार करने लगे, पेट गुजरान भी मुशकिलमें हुआ करे, एक दिन नेमचन्द्रसूरिः आचार्य, वल्लभी नगरमें पधारे, उससमय ये दोनों भाई, नित्य व्याख्यान सुननेकों, जाने लगे, गुरूसें पूछणे लगे, हे स्वामी, हमभी कभी सुखी होंगे, गुरूनें कहा, जो तुम जिनधर्म सम्यक्त्व गृहण करो तो, सत्र बताता हूं उन्होंनें ग्रहण करा, गुरूनें कहा, तुम्हारा भाग्य वल्लभी में राज्यसें खुलेगा, बहुत धनवान हो जाओगे, वृद्ध अवस्थामें, तुमकों राजा धन छीनके निकाल देगा, आखिर यवनोंकी फौज लाकर तुम वल्लभी नगरीका विद्धंश कराओगे, और तुम्हारी शन्तान पारकर देशमें पांचमी पीढी, विस्तार पावेगी, ये दोनों भाई नेमचन्द्रसूरिः सें, सम्यक्त्वी भये, सगपण राजपूतोंमें था, आखिर ये राजाके मानवंत हुए, वल्लभीका नाशभी इन्होंसे ही हुआ, तद्पीछे ये वल्लभी छोड़ पारकर देश, पाली नग्रपास गांम में आ वसे, फिर इन्होंकी शन्तान, खेती कर्म करणे लगी आखरको पांचमी पीढी में इन्होंके, रांका, और बांका नामके दो लडके, उत्पन्न हुए वे खेती करते थे, इधर श्री नेमिचन्द्र सूरिःके छठे पाटधारी, श्री जिनवल्लभ सूरिः, विहार करते, उस रस्ते चले आये, इन दोनोंने, वन्दना कर, आहार पाणी वहराया, गुरू बोले तुमकों एक महिनेके अन्दर, सांपका डर होगा, इस लिए तुम महापाप कारी ये कृषाण कर्मका, त्याग करो, ऐसा कह गुरू विहार करगये, ये दोनों, इस बातकी परिक्षा करणेको, करी भई खेतकी रक्षा करते रहे एक दिन साझको, खेतसे पीछे आते थे, रस्तेमें, सांप पडा था, पूंछ पर पावटिका, सापने फुंकार किया, तब ये भगे, उस सांपने इन्होंका पीछा किया, तब ये दोनों एक तलावमें, कूदपडे, तिरके पार निकले, दिलमै डरते २ एक चामुण्डा देवीके मन्दिरमै घुसकर, दरवजा बन्धकर सोगये, प्रभात समय, सांपको देखणे, मन्दिरकी छतपर चढे, देखते है सांप मन्दिरके आसपास घूम रहा है, तब इन्होंने, मरणान्त कष्ट जाण, गुरूका वचन याद करा, तब चामुण्डा देवीकी स्तुति करणे लगे, तब देवी मूर्तिके मुख बोली, अरे मूर्खो, जो तुम उसी दिन खेती करणेका त्याग करदेते तो, तुमको, ये डर नहीं होता, गुरूका वचन नहीं माना, जिसकी ये, तुम्हें सजा मिली है, ये श्रीजिनवल्लभसूरिः युग

प्रधाननें मुझकों सम्यक्त्व ग्रहण कराया, और मदिरा मांसकी बलि छुडाई, तुम उनोंके, श्रावक होजाओ, तुम सब तरह सुखी होजाओगे, आज पीछै, व्यापार करणा, गुरू महाराजका श्रावक हुए बाद, तुमको स्वर्ण सिद्धि मिलेगी, जाओ अब सांप नहीं है, ये दोनों, उहासे निकल कर, घर पर आए, उन्होंने खेतीका अनाज वेच दुकान करी, व्यापार चलणे लगा, इधर श्रीजिनवल्लभसूरिः परलोक पहुंचे, उन्होंके पाट श्रीजिन दत्त सूरिःविराजे, स. ११८९ इधर विहार करते पधारे, ये दोनों भाई गुरू महाराजके शिष्य जांण, सेवा करते व्याख्यान सुणकर सम्यक्त्व युक्त, बारह व्रत गृहण करा, गुरूने, आशीर्वाद दिया, तुम्हारा कुल बढ़ेगा, इन्होंने कहा, हम खरतर गच्छसें, कभी वे मुख नहीं हेंगे, गुरूने विहार करा उन्होंकी पैठ प्रतीति पालानगर मैं खूब बढ़ी, इधर १ जोगी रस कूंपी भरकर, पाली आया, इन्होंनें भक्ति करी, तब बोला, बच्चा हम हिगलाज जाते है, इस तूंबीको तुम्हारे झूंपड़े मैं, लटका जाता हूं, आऊंगा, तब ले लूंगा, लटका गया एक दिन तवा, तपामया, उस पर, वो रस की बूंदगिरी, तवा सोनेका हो गया, बस इन्होंने, उसकों उतार, असंख्य द्रव्य, बणा लिया, बडे दानेश्वरी, सात क्षेत्रों मैं, बहुत द्रव्य लगाया, पल्लीवाल ब्राह्मणोंकों, गुमास्ते रखकर, जगह २, व्यापार कराया, इस करके पल्लीवाल ब्राह्मण, सब, धनपती हो गये, एक दिन सिद्धपुरपट्टणके राजाकों, लडाई मैं, ९६ लाख सोनइये चाहिये थे, किसी साहूकारनें नहीं दिया, तब सिद्ध राजनें, इनकों बुलाया, इनोंनें सब दिया, तब सिद्ध राजनें श्रेष्ठ पदका स्वर्ण पट्ट मस्तक पर, रखने की आज्ञा दी, जिस मैं लिखा हुआ कुबेर नगर सेठ रांका, और बांकेकों कहा, आवो छोटा सेठिया, उस दिनसे, राकोंसे सेठि, और बांकेंसे सेठिया, इन्होंकी सन्तान काला, गोरा, दक, बोंक, राका, बांका, एव ८ शाखा प्रगट हुई, रत्नप्रभुसूरिःनें, जो श्रेष्ठि गोत्र, थापन किया, सो वैद वजते हैं, इन सबोंका मूल गच्छ खरतर है, ।

(राखेचा, पूगलिया, गोत्र)

जेसलमेरका राजा भाटी जेतसी उसका पुत्र केलणदे, उसके गलित

कुष्ठ की बिमारी, उत्पन्न हुई, उसकी वय नौ वर्षकी थी, राजानें बहुत देवी देव मनाये, मगर आराम नहीं हुआ, तब राजा अपणे कुलदेवीको बलि बाकल दे, स्तुति करी, तब किसीके अंग मे बोली, हे राजा, जो तूं पुत्र अच्छा कराया चाहै तो, सिन्धु देश मै, परोपकारी, युग प्रधान श्रीजिन दत्तसूरिःके चरण शरण जा. राजानें सिन्धु देश मै जाकर, गुरूजीसें सब अरज करी, और बोला, आप कृपा कर, लोद्रव पट्टण पधारो, सब नगर आपके दर्शनकी, राखेचाह, गुरूनें कहा, जो तुम, जैनधर्म धारकर खरतर गच्छके, श्रावक बणो तो, मे चलता हूं, जेतसी रावल बोला अहो भाग्य आपकी सेवा, और अहिंसा रूप जिन धर्म की, प्राप्ति, पुत्र मेरा निरोग होय, इससें मै जांणता हूं, मेरे पूर्व पुन्य उदय हुए, तब गुरू, लोद्रव पुर पधारे, तीन दिन दृष्टि पास किया सोवन वर्ण काया हो गई, अब राव जेतसीनें सह कुटुम्ब जैनधर्म धारण करा मकड़ पुत्रकों राज्य तिलक दिया, गुरूका—त्याग वैराग्यका, हमेशाका उपदेश सुण, केल्हण कुमार, दीक्षा लेणेको तैयार हुआ तब गुरूनें समझाया, है बच्छ, तूं बालक नादान है, संजम खांडेकी धार है, पिता तेरा वृद्ध है, तूं अरिहंत देवकी पूजा द्रव्य भावसें कर, महा व्रती, अणु व्रती तथा सम्यक्तियोंकी मन शुद्ध भावसें द्रव्यादिक अनेक प्रकारसें भक्ति कर, बारह व्रत पाल, श्रावक धर्म पालणे वालाभी, एक भवसें, मुक्ति जाता है, सात क्षेत्रों मैं, द्रव्य लगा, केल्हण कुमार बोला, मेरे दीक्षा की करी हुई प्रतिज्ञा भंग होती है, तब गुरू बोले, तेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करणे की सदा मदके लिए, तजवीज, बताता हूं, तूं मेरे सन्मुख मस्तक मुण्डन करा, और मै वास देता हूं, गुरूने सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत उच्चराया, और कहा, तेरे कुलका बालक नव वर्षका, जब होय, तब इसी तरह पट मुण्डन करा, मेरे शन्तानोंका वास चूर्ण लेगा तो, तुह्मारे कुलकी वृद्धि होगी लक्ष्मी राज्य लीला करते रहोगे, दर्शन की राखेचाह, दीक्षाकी राखेचाह, इस वास्ते गुरूनें राखे चाह गोत्रका नाम, थापन करा, सं. ११८७ मूल गच्छ खरतर वृद्ध थाल आरथाल खरतर भट्टारक गच्छका राखेचाह सदा करते है धेत तथा व्याह मै, पूगलसे उठके दूसरी जगह वसे सो पूगलिया राखेचाह वजते हैं।

(लूणिया गोत्र)

सिन्धु देश मुल्तान नगरमैं मूंधडा महेश्वरी धींगडमल (हाथी साह) राजाका दीवान था, राज्यका वन्दोवस्त न्यायसे करता था, इससें प्रजा हाथी साहको, प्राणकी तरह मानने लगी, इसका पुत्र लूणा, वडा चतुर, राजाका मान्य, योवन अवस्थामैं, शादी करी, एक दिन लूणा स्त्रीके संग, पलंग पर सोता था, उस वक्त, सापने उसको काट खाया, और नींदसैं चमक उठा, ये वातकी खवर होतेही मंत्रवादी, वहुत जहर उतारणे वाले, वैद्योंकी, चिकित्सा करवाई, मगर लूणा मृतक वत् होगया, उसवक्त जिनदत्तसूरिःमुल्तानमें थे, महिमा सुण, हाथीसाह रोता हुआ, चरणोंमैं जा गिरा, सव हकीकत कही, गुरूनें कहा, जो तुम जैनधर्मी, हमारे श्रावक हो जाओ तो, पुत्र सचेतन होता है, हाथीसाहने सह कुटुम्व, कवूल करा, गुरू चौतरफ पड्दे लगवाकर, पिलंगपर ज्यों स्त्री भरतार सोते थे, त्यों सुलाकर, गुरूनें अलक्ष आकर्षण करा, वो सांप आया, और मनुष्य भाषा वोलणे लगा, हे गुरू, मेरे इसके पूर्वजन्मका वैर है, इसने जन्मेजय राजाके यज्ञमें, व्राह्मणपणेमैं वेदका मंत्र पढके, मेरेको, होम डाला, यज्ञस्तंभके नीचे शांतिनाथ तीर्थंकरकी मूर्ति, इन व्राह्मणोंने, शान्तिके निमित्त जव गाडी, याने, कोई दयाधर्मी देवता, यज्ञमैं विगाडन कर देवे, उस मूर्तिको, मैंने गाडते देखी, उस प्रतिमाके देखणेसे, मैंने विचारा, ये मुद्रा मैंने पहिले देखी थी, इस करके मुझको मूर्छा आगई, तव जाती स्मरण ज्ञान मुझको उत्पन्न हुआ, मैंने पूर्वजन्म देखा, पूर्वभवमैंमें जैनधर्मका साधू था, तपस्याके पारणे, भिक्षाको गया, वालकोंने, मुझे चिडाया मे क्रोध करके मरा, सो सांप हुआ, मैंने मनसे सम्यक्त्वयुक्त श्रावक व्रत ग्रहण कर लिया, उस वक्त व्राह्मणोके, कहणेसे राजा परिक्षितकी सन्तान, राजा जन्मेजयने, सापोको पकडवाकर, मंगाया, और व्राह्मणोंने वेदका मंत्र पढकर, मुझे हवन करा, उस मरतेवक्त मुझे क्रोध हुआ उहांसे, मरके, मैं नाग कुमार देवता हुआ, ये शिवभूति व्राह्मण गल्त कोढसें मरके, ८४ हजारके आऊखेमें, नारकीया हुआ, उहासे निकल, वानर हुआ, उहां वनमें, जैनसाधु देशना देते थे, उन्होंने कहा

यज्ञमें पशुहवन करणा इसका फल हिंसा, हिंसाका फल नरक ऐसा वानर सुणकर, जाती स्मरण ज्ञान पाया, उहां मगल भावसें मरकर, हार्थीसाहका पुत्र हुआ, मैंने इसकों ज्ञानमें देखा, तब पूर्व बैरसें मारणेकों, सापके रूपसें, डक मारा, तब गुरु बोले, हे देव, किये कर्म छूटते नहीं, तेरा बदला तैंने लेलिया, अब ये हमारा श्रावक है इसका जहर उतार दे, तत्काल नागदेवने, उक्का जहर उतार डाला, और सब लोकोंसें, देवता कहणे लगा, अहो लोकों श्रीजिनदत्तसूरिः तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब, सामाचारीके उपदेशक, पंचमहाव्रत पालक एका भवावतारी तारण तरण गणधर है लूणासावधान हो, सम्यक्त्वयुक्त व्रत पच्चखांण करा, गुरूने लूणिया गोत्र थापन करा, स. ११९२ मूलगच्छ खरतर],

[डांसी सोनीगरा गोत्र]

सम्वत् ११९७ में में विक्रमपुर जो कि भाटीपेमें है उहांके ठाकुर सोनीगरा राजपूत, हीरसेन, इन्होंने क्षेत्रपालकी मानता करी, मेरे पुत्र होगा तो तुम्हारे निमित्त सवालक्ष मोहरें लगाऊंगा, दैव वश, राणीके पुत्र हुआ, खेतलनाम दिया, अनुक्रमसें सात आठ वर्षका वह बालक हुआ, ठाकुर जात देणेकी चिन्तामें, मगर सवालक्ष मोहरांकी जोड़ बणे नहीं, तव क्षेत्रपाल उपद्रव करने लगा कहीं अंगार लगा देवे, कभी राजा राणीका शिर आपसमें लड़ा देवे, कभी गहणा छिपा देवे, कभी राणीकों छिपा देवे, कभी राजाके संधि २ में दर्द कर देवे, खेतल कुमार उन्मत्त हो गया, आठ २ दिन भोजन नहीं करे, विगर पढ़ा शास्त्र पंडितोंसे संवाद करे, हजार मनुष्योंसे नहीं उठणेका पदार्थ उठा लेवे इस वक्त श्री जिनदत्त सूरिः विक्रमपुर पधारे, ठाकुरनें महिमा सुण बड़े महोत्सवसें गुरूको नग्रमें पधराये, खेतलकुमार गुरूकों देखते ही बोल उठा हे परमगुरू, इस ठाकुरनें, मेरी बोलवा करके, पजा नहीं करी, इससें ये दोषी है, गुरूनें कहा हे ठाकुर, जो तुम सहकुटुम्ब, जैन धर्म धारण करो, तो में संकट काट देता हूं, क्षेतल कुमार पृथ्वीसें कूद २ कर ९० हाथ ऊंचे छत्तपर जा बैठता है, फेर कूदकर डमरू त्रिसूल लेकर घुंघरू पांवमें बांध, गुरूके सन्मुख नाचता है, ये चमत्कार देख बहुत लोक

जमाहुए. ठाकुरनें श्रावक होना मंजूर करा, तत्काल क्षेतल कुमार सावधान होगया, लेत्रपाल निजरूपमें, गुरुके चरण पकड़ बोला, हे गुरू हे सर्व देवताओंके स्वामी, आपकी आज्ञा लोपसो, इस भव परभव दुखी हो, आपके जब श्रावक यह लोक हुए तो, मेरी क्या, बल्के चारों निकाय के देवताओंको ताकद नहीं. सो इन्होंको बुराई कर सके, ठाकुर सह कुटुम्ब जैनी महाजन हुआ, गुरुनें गोत्रका नाम दोसी रखा, लोक डोसी कहने लगे, बाकी राजपूत श्रावक हुए, उन्होंकी शाखा सोनीगरा, बजणे लगी, इन्होंके प्रधान मोहन सिहजीके पुत्र, पीथड़जी श्रावक भए उन्होसे पीथलिया गोत्र प्रसिद्ध हुआ. पीथडजी पमारथे, मूल गच्छ खरतर ।

[सांखला भूराणा गोत्र सियाल सांड सालेचा पूनम्यां]

विक्रम सं. ११७५ में, सिद्ध राज जयसिंह, सिद्धपुर पाटणका राजा, उसके पलेंगका पहरदार, जगदेव जिसको राजा, एक वर्षका एक लक्ष मोहरां देता था, जगदेवजीके सात पुत्र थे, सूरजी, संखजी, मालजी, सामदेव, गजदेव, भरड़ इस तरह सुखसे पाटणमें रहते थे, जगदेवजी बडे शूरवीर थे अर्द्ध रात्री, कालि चवदशको, पहरा दे रहे थे, उस वक्त, बनमें, बड़ा दूर किलकिलाट अट्टहास्सी, सुणके, सिद्धराजने जगदेवजीको कहा, ये शब्द कहां हो रहा है निश्चय करके आवो, जगदेवजी, जो हुक्म कहकर, वहांसे निकले, आगे देखते हैं तो, कालिका वगैरह, बडे २ बैताल, व ६४ जोगणियां, इकट्ठे होकर, नाचते और गाते हैं, जगदेवने पूछा, अरे तुम कौन हो, और क्यों किलकारी करते हो, जोगणियां बोली, सिद्धराजनें हमारा बलिदान बकेर भैंसे वगेका बन्द कर दिया, सो अब एक महिनेंमें मरेगा, जगदेवने पूछा कैसे मरेगा, जोगणियां बोली, इस देशमें, महम्मद गजनवीकी सेन्या आवेगी उसमें लाखों मनुष्य मरेंगे, हमारे खप्पर रक्तसें, भरेंगे, उस युद्धमें, हम जोगणियां, तथा क्षेत्रपाल वीर मिलके दुस्मनोंके हाथ, सिद्धराजको मरवाकर, बलिदान लेंगे, तब जगदेव बोला, किस प्रकार सिद्धराज बचे, जोगणियां बोली, ३२ लक्षण पुरुषका जो, अगर बलिदान देतो, शत्रुओंकी फौज में, हम सहायता नहीं देंगे, तब जगदेव बोला, मेरा शिर

काटके, तुम्हारे सामने धरता हूं, तुम प्रसन्न होकर, सिद्धराजको अर्म्य समर होय, ऐसा करो, तुम उसपर सुनिजर रक्खो, जोगणियां उसका सत्व सत्य उत्तमणको वास्ते, तूं बत्तीश लक्षणवन्त, शूरवीर है, तेरे मस्तकके बलिदानमें हम, सब सन्तुष्ट हो जावेंगे, तब जगदेव अपणे खड्गसे अपना मस्तक काटने उद्यमवंत हुआ, ऐसा सत्व देख जोगणियें जय २ शब्द कर हाथ पकड लिया और कहा हे सत्वशिरोमणि-तूं जयवंतरहु, अभी सिद्धराज जयसिंह बहुत वर्ष जीवेगा, म्लेच्छ सेन्या यहां आवेगी, उनको जयकारणी शत्रुदल भंजणी असीस दिया देकर विदा करा, जगदेव सिद्धराजको सर्व वृत्तान्त कहा, अपना मस्तक काटने आदिका मुख्य वृत्तान्त नहीं कहा, सिद्धराज प्रसन्न हो जगदेवकी महान् प्रशंसा करी राजा युद्धकी सर्व सामग्री तइयार करी, मलधारहेम सूरिः (मलधार विरुद अभयदेव सूरिःकों, मिला था) आल्हा-रायजीके वंशजी पाल्हणपुर प्रशोत्तरमें लिखा है, उस नगरमें आये, जगदेवजी ७ पुत्रयुक्त उनके शमीप जाते आते थे, राजाकी शेन्यामें जगदेवजीके पुत्र सूरजी शेन्यापति थे, एक महीने पीछे कावलके यवनोंका लश्कर आया, युद्ध होने लगा, सूरजी हेमसूरिःसे वीनती करी हे गुरु, युद्धमें जय हो ऐसी कृपा करो, गुरुने कहा सावद्यकृत्यमें सहमति देना हमारा आचार नहीं, यदि तुम श्रावक हो जाओ तो प्रयत्न कर देता हूं, तब ७ पुत्रोंने मंतव्य करा, गुरुने विजयपताका यंत्र दिया, सूरजी भुजापर बांध सन्यामें गये, तत्काल यवन दल भाग गया, सिद्धराजने कहा साबास सूरराणा, वह सूराणा कहलाये, सांवलजीके सांवले कहलाये, (सांवले राजपूत ओसवाल हुए, वे भी जातिनांमसे सांखला कहाते हैं) सांवलजी युद्धमें भग गये, उनके सर्व शंतानवाले सियाल बजने लगे, जो सावलजीके पुत्र बड़े मजबूत बदनमें हृष्ट पुष्ट थे, सिद्धराज जयसिंह उसको संड मुसंड कहते थे, एक दिन एक चारणने सभामें हसी करी, कि बाप तो सियाल, और बेटा सांड कैसे, । तब सिद्ध-राजने कहा, " हे सांढ हमारा सूरमका सांड है, उससे तूं लडे तो, दुनियामें, सच्चा सांढ कहावै, । वह उसी वक्त खड़ा हुआ, जब राजाके मस्त सांडकों, छोडा, उसी वक्त पकड सींग धक्का लगा कर दिया चित्तमें

रखता धीरेसे, जमीन पर सुला दिया, । राजा प्रजा जय २ शब्द करके कहने लगे कि, सच्चा सांड तूं है; मेरी दी हुई पदवीको तेंने सफल कर बताई; उस दिनसे साड गोत्र हुआ । दूसरा बेटा, सांवलजीका सुरखा हुआ, जिसके सुखाणी कहलाये, तीसरा साल्हे, जिसके सालेचा कहलाये । चौथा पूनमदेव, जिसका पुनमिया, कहलाया, । इस तरह, जगदेवजीके तीनों बेटोंसे इतनी शाखा फैल कर, महाजन हुए । उस जमानेमें तीन आचार्य हेमसूरी नामके विद्यमान थे,— मलधार हेमसूरिः पूर्ण तल्लगच्छी हेमचन्द्रसूरिः । तीसरे हेमसूरीके गच्छका पता नहीं है, मगर आत्मारामजी संवेगी लिखते हैं राजा कुमार पालकों, तीनोंने प्रतिबोध दिया था, तीनोंको राजा धर्मदाता गुरू मानता था ।, मलधार खरतरकी शाखा है, बाकी पूर्ण तल्ल गच्छ विच्छेद भया ।, इन सूराणोंकी माता सुसाणी और लेसल, कहाती है, । पीछे अन्यमतका सवन् विक्रम सोलहसौ मै इस वंशमें प्रचार हुआ । मूल गुरु मलधार गछ इस वख्त सूराणे देवी मोर खाणकी पूजते हैं ।

आयरिया गोत्र ।

सिंध देशमें अग्ररोहा नगर का राजा गोपाल सिंह भाटी राजपूत उसका परिवार पनेरेसे घरका विक्रम सं. १२१४ मैं मुसल्मानोंकी फौजने लड़ाई मैं राजाको कैद करलिया उस समय, खोडिया क्षेत्रपाल सेवित चरणकमल, श्री मणिधारी जिनचन्द्र सूरिःगुरू, अग्ररोहा नगर पधारे, उस समय उनका प्रधान धुरसामल, अग्रवाल प्रछन्नपणे मैं, आकर रातको गुरूसे विनती करी, हे गुरू, जो हमारा राजा कैदसें छूट जाय तो, आपका उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे, गुरूनें कहा, जो राजा हमारा श्रावक बणे तो, हम उपाय कर सक्ते है, धुरसामलनें, कबूल किया, गुरूनें कहा, तुम आजही देखो, क्या स्वरूप बणता है, अकस्मात् पनेरेसें राजपूतोंकी बेडी, टूटपडी मुसलमीनोंको खबर हुई, फिर डाली फेर टूट गई, ऐसे सात वेर जब हुआ, तब मुसल्मीन समसेरखां, आश्चर्य मैं आकर, पूछने लगा, ये गोसलसिंह क्या चमत्कार है, गोसल भाटी बोला, में नहीं जाणता, ये क्या बात है, समसेरखां, मनमें सोचने लगा, इस राजाके पीछे, किसी

महा दुःखकी, सहायना है, राजाकों सपरिवारसें, छोड़कर, बोला, हांमी हिसार तुम खरचके वास्ते लेलो, और मेरे उमराव बनो, गोमलने कहा, देखा जायगा, सहरमें आकर दीवान के वर आया, तब दीवाननें सब बात कही, और गुरुके पास ले गया, और धर्म सुणने लगा, गुरुसें राजा कहने लगा, किसी तरह पीछा राज्य मिल जाय, गुरूनें कहा जैनधर्म धारण करो, राजा सपरिवार जैनी हुआ, गनकों समसेर खांको, क्षेत्रपालनें, दरसात दिया, धाता तुम राज्यपीछा गोमलकों दे दो, नहीं तो तुम्हारे हक्क में, अच्छा नहीं होगा, सुबहकों समसेरखांने, भोर डरके, राजाकों पीछा राज्य दिया, और आप उहांसे अपनी फौज ले चल धरा, गुरूने, आवरथा गोत्रका नाम धरा, उसकों लोक आवरिया कहणे लगे, मूल गच्छ खरतर।

[दूगड़ सेखाणी कोठारी गोत्र, तथा सुघड़]

पाली नगर में खींची राजपूत, राजाका दीवान था, किसी दुस्मननें राजासें चुगली खाई, तब राजाके डरसें भगा, सो जंगलखाड़में जानेसे उसकी इग्यारमी पीढीमें, सूरदेव बड़ा शूर वीर पैदा हुआ, उसके दो पुत्र दूगड और सुघड, ये दोनों भाई मेवाड़में जाके आघाट गामके ठाकुर होगये, उस गामके, चौतरफ भील मीणे चोरी धाड़ा मारते, प्रजाकों दुख देते, उन्होंको दूगड़ने कैद किये, ये तारीफ सुणकर, चित्तोड़के राणाने, इन दोनों भाइयोंको बुलाकर, कुरब बढाया, राव राजा की पदवी दी उस आघाट गामके बाहिर, एक नारसिंह वीरका पुराणा मंडप था, उस गामके लोकोंने, उस मकान को ढाहाय डाला, तत्काल नारसिंह वीर, गामके लो-कोंको बडी, तकलीफ देणे लगा, पणिहारियोंके घडे फोड़ डाले, मनुष्योंके हाथसे खाने पीने की चीजें जमीनमें गिरवा देवे, इत्यादिक पत्थरोंकी बरसात रत्तो वृष्टि नानाप्रकार के उत्पात देखाणे लगा, इन रावराजाओंने, जंत्र मंत्र, बलि बाकुल बहुत करवाये, लेकिन उत्पात बन्द होवे नहीं, इस वक्त श्री दादा साहबके पट्ट प्रभाकर मणिधारी श्री जिन चन्द्र सूरिः उहां पधारे, सं. १२१७ में, इन्होंके सन्मुख, दोनों भाईयोंने विनय पूर्वक गामके कष्टका स्वरूप कहा, तब गुरु बोले, जो तुम जैनी श्रावक हो जाओ तो, बन्दोबस्त

हो जायगा, दोनों भाई श्रावक होगये, तब गुरूनें धरणेन्द्र पद्मावती की, आराधना करणेकों उपसर्ग हरस्तोत्र का स्मरण किया, पद्मावतीनें नारसिंहको पकड़के, गुरूके, चरणोंमें लगाया, गुरूनें कहा, आज पीछे उपद्रव नहीं करना ये मेरे श्रावक है, नारसिंह वीरनें, कबूल करा गुरूनें दूगट सुगटकों कहा, नागदेव तुह्मारे वंशके, सहायक होंयगें, ये चमत्कार देखसी सो दिया, वैरी शाल श्रावक हुआ, वह सीसोदिया गोत्र, प्रसिद्ध हुआ, इन दोनोंका वंश, धन और जनसें, दादा गुरू देवकी भक्ति करणेंसें, दिनपर दिन वड़की शाखा ज्यों, विस्तार पाया, मूल गच्छखरतर, अभीभी दूगडगोत्री, नागकुमारकी पंचमी, कई २ पूजते हैं, दादा गुरू देवकूं सब दूगड मान्ते है, सेखाजीकी ओलाद सेखाणी वजते है, कोठारका काम करणेंसें कोठारी भी दूगड वजते हैं, मूल गच्छ खरतर है,

(मोहीवाल आलावत, पालावत, गांगा, दूधेड़िया शाखा १६)

मोही नगरमैं पमार राजा नारायण सिंह राज्य करता है, चौहाणोंने घेरादिया, नारायण गढका वन्दोवस्त कर, चौहाणोसे युद्ध करने लगा, लेकिन् चौहाणोंके पास बहुत धन और लाखोंकी फौज थी, नारायण चिन्तामैं चूर्ण हुआ, तब गंगपुत्रनें पितासें अरज करी, कि, हे पिताजी, श्री जिन दत्त सूरिःके पाटधारी, श्री जिन चन्द्र सूरिःका मैनें मेवाड़ देशमें, दर्शन किया, था, सो वडे चमत्कारी महापुरुष है, राजानें कहा, हे पुत्र उन्होंके पास पहुंचणा मुशकिल है, गगने कहा, में हरसूरत, पहुंच जाऊगा, दूसरे दिन, ब्राह्मण जोतषीका, स्वांग वणाकर, चौहाणोंकी फौजमें गया, और फौजी लोकों को, तिथिवार बताता २ फौजमें से निकल गया, अजमेर परगणेमें गुरूका वन्दन करा, गुरूकों एकान्तमें, सब वार्ता कही, गुरूनें कहा, तुह्मारा पिता सहकुटुम्ब हमारा श्रावक जैनी हो जाय तो, मैं सब वंदोवस्त कर देता हूं, गंगराज कुमारनें, ये बात कबूल करी, तब श्री गुरू महाराजनें जया विजया देवीकी, आराधनारूप, पार्श्व मत्र स्मरण किया, देवीनें एक तुरग लाकर दिया, गुरूसें अदृश्यता पणेमें, मालूम करा, इस अश्वका चढणे वाला, अजयी हो जायगा, गुरूनें, गंगसे कहा, तुम इस घोडेपर सवार हो, देखते

रहो, असंख्या दल तुह्मारे पीछै आजायगा, शत्रु सब भग जांयगे, हमारे कहे हुए वचन चूकणा मत, तुह्मारे मनोरथ सदा सिद्ध होंगे, गंगने चौहाणोंको घेर-लिया चौहाणोंकी फौज भगी, गढ़के अन्दरसें राजा नारायण सिंह देख रहाथा, अजत्री चमत्कार देखा, हैरतमें रहा, इतने मै राजकुमार गंगसिंहने, आके मुजरा किया, और सब हाल कहा, अब राजा अपने सब पुत्रोंकों संग ले, विजय डंका बजाता, श्रीगुरू महाराजके पग मंडे, मोही नगरमें करवाये, जब धर्मोपदेश सुणा तो, राजा रोम २ सें फूलणे लगा, और जैनधर्मी महाजन हुआ, उन सब बेटोंके गोत्र हुए, बडे राजाके पुत्र मोही नगरसें, मोहीवाल कहलाये १ आलावत २ पालावत ३ दूधेड़िया ४ गोय ५ थरावत ६ खुड़धा ७ टोडरमल ८ भाटिया ९ बांभी १० गिड़िया ११ गोढ़ वाडा १२ पटवा १३ वीरीवत १४ गांग १५ गोध १६ मूल गच्छ खरतर

बोथरा, फोफलिया, दसाणी, बच्छावत, साह, मुकीम, जेणावत, डूंगराणी, साखा ९

श्रीजालोर महा गढके धणी देवडा वंशी चौहाण, महाराजा सामन्तसीजी उन्होंके, दो राणियां थी, जिनसें सगर १ वीरम दै २ और कान्हड ३ ऐसे तीन लडके, और उमा नामकी एक लडकी हुई सामन्तसीजीके पाटपर, वीरमदेव बैठा, तब बडा पुत्र सगर आकर आबू पहाड देवलवाडेका राजा हुआ, कारण सगरकी माता देवलवाडेके राजा भीमसिंहकी लडकी थी, वो दूसरी राणीकी अणवणतसें, सगरको लेकर, अपने बापके पास जारही, भीमके पुत्र नहीं था, इस वास्ते दोहीतेकों राज्य देगया, एक सो चालीस गांम सगरके तालूके थे, उसका तेज चारों दिसामें फैल गया, बडा बहादुर दानेश्वरी पणेसें, नेकनामी पैदा की, उस वक्त चितोड़के राणा रतनसीपर, मालव देशको मालिक मुहम्मद बादशाह की, फौज चढ़ आई, राणा रतनसीनें, सगरकों बहादुर जाण, अपनी मदतको बुलाया, सगरके मुहम्मदसें युद्ध

१ दोहा, गिरि अढार आबूधणी, गढ़ जालोर दुरंग, तिहांसामन्तसी देवड़ो अमलीमाण अभंग १ २ उमा पिंगल राजाकों व्याही थी

हुआ, मुहम्मद भाग गया, राणे रतनसिंहनें, सगर राणा वीर सामन्त, ऐसा पद दिया, सगरनें मालव देश तावे कर लिया, कुछ मुद्दतके वाद गुजरातका मालिक, वह लीमजात अहमद वादशाहनें, राणा सगरकों, कहला भेजा कि मेरी सलामी, और नौकरी मन्जूर कर, नहीं तो माल्वा छीन लूंगा, सगरनें करडा जवाव देदिया, अव इन्होंके युद्ध हुआ, अहमद भग गया, गुजरात सगरनें अपने आधीन कर लिया, कुछ मुद्दत पीछे दिल्लीका वादशाह गौरी-साह, और राणा रतनसींके आपसमें तनाजा हुआ, गौरीशाहकी फौज चित्तोड पर आई, उस समय राणेजीनें सगरकों वुलाया, सगरनें आपसमें मेल करा दिया, वादशाह से २२ लाख रुपये दण्डके लेकर, माल्वा गुजरात सगरनें वादशाहको पीछे दे दिये, उस वक्त राणेजीनें सगरकी वुद्धि मानी, और सखावत देख सगरकों मंत्रीश्वरपद दिया, सगर पीछा देवल वाडेमें रहनें लगा, इसका चरित्र वहुत है, ग्रन्थ वढणेके सवव नहीं लिखते हैं धर्म इन्होंका शैवमत था, सगरके पुत्र वोहित्थ देवल वाडेका राजा हुआ, वड़ा शूर वीर अकलवर था, सम्वत् इग्यारह सताणवेमें श्रीजिनदत्तसूरिः देवल वाडेमें पधारे, गुरूके पास राजा वोहित्थ आया, गुरूने धर्मोपदेश दिया, राजा वोहित्थ पूछने लगा, हे गुरू मुसल्मानोंनें, वडा जुल्म उठा रक्खा है, और ये वड़े जुल्मी हैं, सो हमारे राज्यकी क्या दशा होगी, गुरूनें कहा, जो तुम हमारे श्रावक वनो तो, सव वृत्तान्त कह देता हूं, वोहित्थ राजा वोला, गुरूमहा-राज श्रावक होनेसे, व्यापार करणा होगा, शस्त्र डाल देणे होंगे, राजापणा चला जायगा, गुरूनें कहा, हे राजा, तुमको संसारके स्वरूपका, ज्ञान नहीं, हाथीका कान, पींपलका पान, जैसा चञ्चल एसी राजलक्ष्मी चञ्चल है, चक्रवर्त्तिके पुत्रके पास कर्म वस ५ घोड़े नहीं मिलते हैं, इतने राजपूत वसते हैं, क्रोड़ो, उसमें राजा कितने है, वह विचारो, और मैं तुम्हारे सन्तानोंकों सदाके वास्ते, लक्ष्मी पुत्र वना देता हूं, इतना सुनते ही, वोहित्थ राजानें तत्वकों समझ, जैन धर्मको ग्रहण करा, वोहित्थ राजाकी राणी, वहु रंगदे, जिसके ८ पुत्र थे, वडा श्रीकर्ण १ जेसा २ जयमह्ल ३ नान्हां ४ भीम-सिंह ५ पद्मसिंह ६ सोमजी ७ पुण्यपाल ८ इस तरह सातों पुत्रों समेत,

१२ व्रत सम्यक्त्व युक्त ग्रहण करा, पद्मा वेटी थी, तव दादा श्री जिनदत्त सूरिःने आशीर्वाद दिया, हे राजा बोहित्थ जहांतक तेरा वंश मेरी आज्ञाके मुताविक चलेगा, खरतर गच्छकी भक्ति रक्खेगा, उहांतक राज्यकार्यमें तेरी शन्तानका मानप्रतिष्ठावन्त, एक न एक, सदाके लिए रहेगा, ठाठका मालिक तेरा वंश, पाटका मालक राजा रहेगा धर्मसे वेमुख नहीं होंयगें उहातक, लेकिन हे राजा तुम पर भवकी नींव लगावो, तुम्हारी आयु थोड़ी है, तव वोहित्थजीका वडा बेटा जिसनें जैन धर्म नहीं धारा, उसकों राज्य पदवीका युवराज वणाया, इस वक्त चित्तोड़के किल्लेपर, दिल्लीके वादशाहकी फौज आई, राणा रायमल वोहित्थ राजाको अपनी सहायतापर बुलाया, बोहित्थ राजाने दादा साहिवके वचन याद किये, गुरूनें कहा, आयु थोड़ी है, सोमोंका आय वना है, तव सातों पुत्रोंकों, द्रव्य दे देकर, मारवाड, गुजरात, कच्छ देशकों जाणेका हुक्म दिया, और आप श्री कर्णकों देवल वाड़ेका राज्य-तिलक देकर, युद्धमें चढ़ गये, उहां चारों आहारका त्याग कर, वादशाहसें युद्ध किया, वादशाहकों भगा दिया, मगर आप ११ से सोनहरी बंधसे, युद्धमें अरिहन्तदेव और परम गुरू जिन दत्तसूरिःजीका, ध्यान करते, मरके व्यन्तरनिकायमे, वावन वीरोंमें हनुमन्त वीर हुए, जिन्होंकी शक्ति पूनरा सर गांममें प्रगट है, और जिन दत्तसूरिःजीकी सेवामें, हाजिर रहने लगा, इन सात पुत्रोंकी शन्तान वोहित्थरा, वड़की शाखा ज्यों धन और जनसे विस्तार पाये, अव राजा श्री कर्णके ४ पुत्र उत्पन्न हुए, समधर १ वीरदास २ हरीदास ३ और उद्धरण ४ श्रीकर्ण सूरवीर इसनें युद्ध वलसें मछेन्द्र गढ़का राज्य लेलिया, एक समय वादशाहका खजाना जा रहा था, तव पिताका वैर याद कर, खजाना लूट लिया वादशाहकों, खवर हुई, तव फौज भेजी, उस लड़ाईमें राणा श्रीकर्ण काम आया, वादशाही फौजनें मछेन्द्र गढ़ कवजे किया, उस समय राणे श्रीकर्णकी राणी, रतनादे, कुछ रत्न संग ले, चार पुत्रोको संग लेकर, अपने पीहर खेडीपुर जा रही, और अपने पुत्रोंको, कला अभ्यास कराते, २ पण्डित वणालिये, एक दिन रातको सोते हुए,

चारोंकों, पद्मावती देवीनें, स्वप्न दिया, कल यहां खरतर गच्छ नायक, श्री जिनेश्वर सूरिः आचार्य, आंयगे, उन्होंके पास तुम जैन धर्म अंगीकार करोगे तो, तुम पीछै राज्याधिकारी वन जाओगे, प्रभात समय, वोहि वात वणी, ये चारो श्रावक हो गये व्यापार करणे लगे, अगणित धन पैदा करा, अपने गोत्री वोहित्थरोको संगले, सत्रुंजयका संघ निकाला, रस्तेमें गाम २ में जणे प्रति एकेक मोहर, चांदीका थाल सोपारियोंसे भरकर देते चले, तवसे फोफलिया कहलाये, समधरका पुत्र, तेजपाल उसने गुजरात देशका ठेका लिया, तीन लाख रुपये लगाकर श्री जिन कुशल सूरिःजीका, पाट महोत्सव किया, सत्रुंजयका संघ निकाला, खरतर वसीमें २७ अंगुलके विवकी प्रतिष्ठा कुशल सूरिसें करवाई, पिताकी तरह मोहर थाली ९ सेरका लड्डू वाटते,, सात क्षेत्रोंमें वहुत द्रव्य लगाया, पाटणमें जिन मन्दिर धर्म शालायें, करवाई, तेजपालका वील्हा, वील्हाके २ पुत्र, कडवा १ और धरण २. कडवा बडा दातार, पिताकी तरह संघ जीर्णोद्धार, लाणें वाटी, एक दिन कडवा, चित्तोड़ गया, राणेजीनें सन्मान किया, अकस्मात् मांडव गढका वादशाह मुसल्मान चित्तोड़पर चढ आया, तव राणेजीकी प्रार्थनासे, वादशाह सें मेल करा दिया, तव राणेजीनें, वहुतसा, धन, घोडा, सिरोपाव देकर, मंत्री वनाया, कुछदिन पीछै फिर गुजरात पाटण गये, राजानें पीछी पाटण देदी, गुजरातकी, जीवहिंसा, वन्द करदी, खरतर गच्छाचार्य श्री जिनराजसूरिःका, सवा लाख रुपये लगा कर, पाट महोत्सव करा, सं. १४३२ सत्रुंजयका संघ निकाला, सात क्षेत्रोमे क्रोडों रुपये लगाये, कडवे-जीके तीन पीढीका नाम मिला नहीं, चोथी पीढी जेसलजी हुए, उन्होंके वछराजजी, देवराज, हसराज, तीन पुत्र हुए, वछराजजी अपने भाईयोंको संगले, मंडोवरके राव रिडमलजी, राठौड़के, मंत्री वण गये, राव रिड़मलजीको चित्तोड़के राणे कुम्भकर्णने धोखेसे मारडाला, मंत्री वछराज जोधेजीको हिकमतसें, मंडोवर ले आया, जोधजीके मंत्री वछराज रहै, जोधेजीके नवरं-गदे राणी साखलोंकी वेटीसे दो पुत्र पैदा हुए, वीका और वीदा किसी कारण

वस १४ प्रधान नामी पुरुषोंके संग वीकाजी योध पुरसें रवाना हुए १५४१ में राजतिलक राती घाटी पर विराजकर किल्ला डाला १५४५ में वीकानेर वसाया, मंत्री वछराजने, अपने नामसें, वछासर गांम वसाया, वछराजने, सत्रुंजय गिरनार तीर्थोकी यात्रा करी, इनके करमसी, वरसिंह रत्ता, और नरसिंह तीन पुत्र हुए, देवराजके दस्सू, तेजा, भूणा, तीन पुत्र हुए, वछराज जीसें, वछावत कहलाये दस्सूजीके, दस्साणी इसतरह पुत्रोंके नामसें वोथरा गोत्रकी कई शाखा निकली, वीकाजीके पुत्रराव लूणकरणजीनें करमसी को मंत्री वणाया, मुहते करमसीनें, करमसी सरगांम वसाया, वहुत श्री संघकों इकट्ठा करके, खरतर गच्छाचार्य श्री जिनहंस सूरिःका पाट महोत्सव करा, सं. । १५७० में वीकानेरमें नेमनाथ स्वामीका सिखरवद्ध मन्दिर करवाया, जो भांडासाह के मन्दिरके पास विद्यमान है। सत्रुंजयका संघ निकाला, एक एक मोहर, एक एक थाल, पांचसेरका लड्डू घर २ प्रति, गांम २ में साधर्मियोंको देता, वीकानेर आया, रावलूणकरणजीके पाट, राव जैतसी जी, उन्होंनें करमसीके, छोटे भाई वरसिंह कों, अपना मंत्री वनाया, वह नारनोल्के, लोदी हाजी खानके साथ, युद्ध कर, काम आया, वरसिंहके, मेघराज, नागराज, अमरसी, भोजराज, डूंगरसी (डूंगराणी) कहलाये, और हरिराज, ऐसे छह पुत्र हुए, मंत्री नागराज को, चंपा नेरके वादशाह मुंदफरकी नोकरीमें रहणा पड़ा, उसनें वादशाहके हुक्मसें, संघ निकाला, तीर्थोंपर, गुजरातियोंकी गड़वड़ देख, भण्डारकी कूंची, कवजे करी, रस्तेमें, एक रुपया, एक थाल पांचसेरका लड्डू, साधर्मियोंकों देता, वीकानेर आया, १५८२ मे वड़ा काल पड़ा, तव तीन लाख रुपयोंका, अनाज, कंगालोंको, वांटा, एकदिन मोहता नागराजके, सिंधदेश देराउर नगरमें, दादा श्री जिनकुशलसूरिःजीके दर्शनकी, अभिलाषा हुई, संघ निकालणा विचारा, फिर चिन्ता हुई के, सिंधके रस्तेमें, जल मि-

---

१ काका कंधलजी २ रूपाजी ३ मांडणजी ४ मंडलाजी ५ नाथूजी ६ भाई जोगायत्तजी ७ वीदाजी ८ सासला नापाजी ९ पडिहार वेलाजी १० वेदलाला लाखणसी ११ कोठारी महाजन चौंथमल १२ वछावत वरसिंह १३ प्रोहित विक्रम १४ माहेश्वरी राठीसाहसालाजी.

लणा मुशकिल है, इस चिन्तामें निद्रा आगई, तब स्वप्नमें, दादा गुरूनें, दर्शन दिया, और फरमाया के, हमारा थुंम कराणा गाम गडालेमें, (नालेमें), फागुण वदि अमावस सोमवार कों, वडका दरख्त फटके, सवापहर दिन चढे, देरासरके निज चरण यहां प्रगटेंगें, सत्य स्वरूप जाणिना, प्रभात समय, मुल्कोंमें कागद भेजादिया, बहुत संघ इकट्ठा हुआ, स. १५८२ में, उस मुजब चरण प्रगटे, सब सघपर, आकाशसें, केशरकी वर्षा हुई, नागराजने थुंम कराकर, चरण थापन करे राव बीकेजीके संग, मंडोवरसें, भैरू की मूर्ती आई थी, वह कौड़म देसरपर थापन करी थी, भैरूनें स्वप्नमैं, राव जैतसीजीकों, कहा शहरकी प्रजा, मेरी यात्रा करणे आवे, सो मेरे गुरू, दादासाहिबकी हाजरी मेला किया करे, कारण ५२ बीरोंके मालक दादा गुरुदेव है, राव जैतसीजीनें, भादवा सुदी १२ कों, वैसाही मेला भरवा दिया, अभी यात्रा हुआ करती है, नागराजमंत्रीनें, नगासर गांम बसाया, राव जैतसीजीके, पाट, राव कल्याणसीजी, विराजे, इन्होंनें नागराजके पुत्र, संग्रामसिंहको, अपना मंत्री बनाया, श्री जिनमाणिक्य सूरिःकों संग ले, सत्रुंजयादि तीर्थोंका संघ निकाला, एकएक रुपया, एक थाल लड्डूकी लाणी बाटते केशरिया नाथके दर्शन कर, चित्तोड आये, राणा उदयसिंहजीनें, बडा सन्मान दिया, बीकानेर नरेश बडे प्रशन्न हुए, संग्राम सिंहके करमचन्द पुत्र हुए, सो बडे बुद्धिमान, शूरवीर, दातार उत्पन्न हुए, ये महाराजा रायसिंहजीके मंत्री हुए, इन्होंके वर्त्तमानमें त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारी, श्री जिनचन्द्र सूरिःजीकी, आणेकी वधाई करमचन्दको, मल्ल कवीनें दी, तब सवाक्रोड़का सिरो पांव, वधाई मै, कर्मचन्द मुंहतेनें दियां, बडे महोत्सवसें बीकानेरमें सामेला किया श्री संघका कराया हुआ उपासरा, श्री चिन्तामणि स्वामीके मन्दिरके पासमें जोया, सो घरबारी महात्माओंने, अपने घर

---

१ नवहाथी दिया नरेश सो तो मदसें मतवाले, नवें गांम वगसीस लोकनित आवे हाले । एराकीसौ पाच सो तो जगसगलो जाणे । सवाक्रोड़को दान मल्ल कवि सच वखाणे १ कोई राव न राणा करसके, संग्राम नंदनतें किया, युग प्रधानके नाममें, करमचन्द इतना दिया, ॥ २ ॥

वणा लिये, तब मंत्रीनें, अपने बाडोंकी बुड शाल, माणक चौक (रांबडी) में थी, उहां आचार्यकों, चौमासे रक्खा, चौरासी गच्छके सब श्रावक, यहां आते थे, और धर्म ध्यान होता था, संसार त्यागके बहुत लोग साधु होगये, अनेक बाइयोंनें, साधवीपणा लिया, उनके धर्म ध्यानके लिए, अपनी गऊशाला दी, जो कि अब बडा उपासरा, व छोटा उपासराके नाममें, प्रसिद्ध है, सं । १६२९ का चतुर्मास संघके आग्रहसें, बीकानेरमें करा, प्रतिमा निंदक मतको फैलतेकों उपदेशद्वारा परास्त करते गुजरातके तरफ विहार किया, कुछ दिनों बाद श्रीबीकानेरसे व्यापारी बन कर्मचन्द लाहोर नगरमें बादशाह अकब्बरशाहके पास गया एक दिन बादशाहने करमचन्दसे पूँछा की करमचन्द धर्म सबसें बडा कौन है करमचन्द बादशाहका आशय समझ गया क्यांके बुद्धिका सागर परम जैनतत्वका जाणकार सम्यक्त्वी था तब बोला (दोहा) बडाधर्म महमदका, तातें शिव कछु न्यून, एकण राजा बाहिरो, सबसें जैन जबून, ।१। बादशाह अकब्बर, इस दोहेके अर्थको खूब समझ गया के, करमचन्द बडा सायर, जैनधर्मका एक नररत्न हैं, तब पूच्छा अय करमचन्द तुम किस अवलियाके, मुरीद हो, करमचन्द बोला, हजूर सिलामत श्रीजिनचन्द्रसूरिःका, बादशाहको जैनधर्म सुणनेकी और ऐसे पुरुषके दर्शनकी चाह भई, तब अपने उमरावोंके संग, विनती फुरमाण खास कलम लिख भेजी, गुरू विचरते २, लाहोर पधारे, बडे हगामसे बादशाहने सन्मुख आकर कदम पोशी करी, गुरूनें धर्मोपदेश करा, उस दिनसें बादशाहको, धर्म रुचि उत्पन्न हुई, हमेश व्याख्यान सुणते २ मदिरामांस, तथा कन्द मूल्का, यावज्जीव त्याग करा हिंसाका त्याग अमलदारीमें करवाया, यावज्जीव मत्रपाणीका त्याग कर, एक गंगाजल बरताव करणेको बाकी रक्खा, परस्त्रीका यावज्जीव त्याग करा, जैनधर्मकों सब धर्मोसें श्रेष्ठ समझणे लगा, ऐसी सम्यक्त्वकी श्रद्धा, प्रगट हुई, । तब बादशाहने गुरू अपना मान कर चँवर छत्रादि आपके सब राजचिह्न नजर किये, गुरूने कहा, त्यागियोंको ये उपाधि नहीं चाहिये, बाद० आपका त्याग सदा कायम है, आपने फरमाया मूर्छा है सो परिग्रह है, आप मूर्छा रहित हैं, क्योंके देव तत्वका

स्वरूप आप दरसाते, तीर्थंकर परमात्माके आठ प्रातिहार्य, चौतीश अतिशय बतलाये, जैसे वे, देवताके समवशरण सोनेके कमलोंपर चलणे आदि, विभूति रहते, तीर्थंकर जैसे वीतराग है, तैसे मैं मेरी भक्तिसे, इस राज्य चिन्होंसें, उपासना कर, जन्म सफल मानूंगा, आप तो दुनियासे तारके हो, लेकिन बादशाह राजादिक सेठ सामन्तोंके गुरू, परम चमत्कारी प्रभावीकपणेसें, आपकों जिन पद है, (ठाणासूत्रमें ९ जिन फरमाया है) आप धर्मकी जहाज हो सदा मदके लिए, आपके शन्तानोके साथ, मेरी भक्तिका निशाण कायम रहै, तब करमचन्दनें अरज करी, हे पूज्य, राजाभियोग है, जिसपर भी जैन धर्म की दुनिया मे आडम्बर महिमा दीखेगी तब श्री संघ इस बातसें, आनन्द मानेंगे, तब गुरूनें मौन करा, बादशाह इन्होंके शिष्य श्री जिनसिंह सूरि.को, तखत बिठलाकर राज्य चिन्ह सग कर दिये, और मुल्कों मे बन्दा वणीका फुरमाण लिखा दिया, माही मुरातब दिया, ये अकबरका मुरातब बीकानेरके बडे उपासरेमें, करम चन्दनें भेजा दिया, श्री गुरू महाराजके साधु लब्धिवतने काजी की टोपी आकाशमें ठहरी हुई को, ओघेसें उतारी, तीन बकरी बताई, अमावस की पूनम कर दिखलाई, इत्यादि चमत्कार दिखलाकर, सब तीर्थोंकी रक्षा के लिये जगह २ बादशाहनें अपने सूबेदार जागीर दारोंपर हुक्मनामा भेजा दिया और हिन्दमें अमारी उद्घोषणा छ महिना एक वर्षके वास्ते जाहिर करा चैत भादवा आसोज चौदस आठम अमावस पूनम हुमायूंका जन्म दिन मरणेका दिन अपना जन्म दिन राज्यका दिन इत्यादि मिला करके तथा हुमायूं बादशाहने बलात्कार आर्य लोकोंकों मुसलमान वणाना सुरू कराथा वह अकब्बर के दिलसे गुरूनें मिटादिया बादशाह हुमायूने सब भेष धारियोकों बलात्कार गृहस्थी बनानेकी आज्ञा दीथी इसमें स्वामी, सन्यासी, वैरागी, जती लोग, बहुतसे घरबारी बन गये थे, आत्मार्थी त्यागी लोकोंने बहुतोंने प्राणत्याग दिया था, बहुत त्यागी रहनेवालोंने शिर पर वस्त्र बाध लंगोटबद्ध महात्मा होगये थे, इत्यादिक जुल्म करमचन्दके कहणे मुजब, श्री जिनचन्द्र सूरिःजीनें बादशाहको उपदेश दे देकर, बन्द करवादिये, सब मतोंके अवलियोंसें, सत्संग करणा, अच्छा समझ,

उन्होंकी संगत करणे लगा, आज्ञा दी के, कोई धर्मवाला होय, उस पर बलात्कार, कोई अत्याचार हिमायतीवाला, नहीं कर सकेगा, सच्च है, ऐसे मंत्री और ऐसे गुरू महाराजकी शिक्षा जबसे अमल दरबलमे लाया बस इसही बातोंसे अकब्बर बादशाहकी नेक नामी सदाके लिए हिन्दमें स्थिर हुई प्रजाके सुखकारी नियम जो जो गुरुने बादशाहसे करवाये सो लिखे तो एक बडासा ग्रंथ बण जावे, इतना है, इस सब बातोका मूल कारण बच्छावत बोथरा करमचन्द था, इसवास्ते इन्होका इतिहास विस्तारसे लिखा है, ये जमाना भस्म रासीग्रह भगवान वीरके, जन्मराशी पर, जो निर्वाण समय आया था वह उतरनेका था, उक्त महाराजानें जैनधर्मका उदय-पूजा सत्कार प्रगट करा, तबसें, दो फिरका साधुओंमें होगया एकतो सिद्धपुत्र ,क्षुल्लक जती धर्मोपदेशी पंडित; तथा श्रीजिन चन्द्र सूरिःके खरतर गच्छके सब पंचमहाव्रती जैनसाधु इसके बाद तपागच्छ नायक श्री-हीर विजय सूरिः दिल्ली पधार तब भानुचद्रजी सिद्ध चन्द्रजी यति प्रमुखनें कलाकौशलतासे बादसाहको प्रसन्न करके ई कार्य उपगारके कराये, सूर्य सहस्रनाम कल्पनकर बादसाहको नित्य सुनाने आदि इसलिये केइफरमान भी लिखाये पांच पहाडोके हिफाजतका फुरमाण हीर विजयसूरिः जीकों लिखवा दिया जिनचन्द्र सूरिःनें तपागच्छी सिद्धिचद्रयतीको बादसाह अकबरके पुत्र साहसलेमनें दुराचारके कारण कैदकर दियाथा तब आप बादसाहकों समझा कर कैदसे छुडाया, ऐसे उपगारी हुये, खरतर गच्छकी गुर्वावलीमें समय सुन्दरजीने लिखा है, फिर विजय दानसूरिःके शिष्य धर्म सागरजीने स्वकल्पित ग्रंथमें खरतर गच्छपर केइ असत्य आक्षेप लिखे, तब जिन चद्र-सूरिः पाटण पधार उस समयके, विद्यमान उपाध्याय वावकादि अन्य २ गच्छ वालोंको एकत्रित कर उहा रहे धर्म सागरजीको बुलाया लेकिन मृपा-वादी होनेसे सभा समक्ष नहीं आये केई दिन सभारही, आखर असत्यवादी समझ खरतर गच्छको विजयपत्र सर्व विद्वान् साधु मंडलीने लिखा, ताम्र-पत्र पाटण वाडी पार्श्वनाथजीके मंदिर ज्ञानभण्डारमें रखा, ये सर्व वृत्तांत समाचारी शतकमें लिखा है, प्रथम चलाकर खरतरगच्छ वालोनें कभीभी

विपवादरूप शब्द नहीं लिखा जब तपोंनें आक्षेप करा तब उत्तर देना वाजबी समज कर दिया, हीर विजय सूरिः भी, त्यागी, वैरागी, आत्मार्थी, जैनधर्मके उद्योत् कारी, प्रगट, हुए, उन्होंका ज्यादह, विहार, गुजरात, गोड़वाड़में रहा, ये दोनों आचार्य चन्द्र सूर्यसम उदय, २ पूजा सत्कार के, कारणे वाले, प्रगट, हुए, इन्होंकाभी दो फिरका चलता रहा, आपसमें बड़ा संप रहा, खरतर तपोंके, बादशाहके माननीय होनेमें, जती लोकोंका चमत्कार देख २ के, सिद्ध पुत्र जतीयोंको, राजाओंक गाम जागीर मन्दिर उपासरेके हिफाजत करणें, शिष्योंको विद्या पढाणेको, दे गये, सो अभीभी विद्यमान है. बच्छा-वत कर्मचन्दनें बीकानेरमें मुत्ताईश गवाड, गांम मारणि, धोत, लाहण, वगैरह जातीके कायदे बांधे, मुसल्मान समसेरखांनें, जब सिरोही इलाका लूटा, उस लूटमेंसें, १०५० जिन प्रतिमा सर्व धातुकी मिली, सो कर्मच-न्दने बीकानेरमें चिन्तामणिजीके मन्दिरमें, धरवाई, सो अभी भी बड़े कष्ट उपद्रवादि दूर करणेको, बाहिर निकाली जाती हैं, पर्यूषण पर्वमें ८ दिन, कसाई, भड़भूंजे आदिकारुओंके, आरम्भ बन्द करके, लाग बांध दिया, सो अभीभी जाहिरी है, सांल्सय ३५ का काल पड़ा, उसमें करमचन्द बच्छा-वतनें, कंगालोंको, तथा जैनी भाइयोंको, गरीब जाणके, साल भरका गुज-रान दिया था, महात्मा लोगोंने, जिन चन्द्रसूरिः की, अवज्ञा करी थी, महाजनोंकी वंसावली पास रहणेसे, मस्त हो रहे थे, भवितव्यताके वस, ये काम बुरा हुआ, करमचन्दनें सोचा, जब लोक ,यहां बड़ोंका बन दे रहेंगे तो, जैन धर्मके आदि कारण जती साधुओंका, बहुमान लोक नहीं करेंगे, ऐसा विचार कर, बीकानेरमें, गृहस्थी महात्माओंको, इकट्ठे करके, वंशा-वलीकी वहियें मांगके कूए में गिरादी, उन महात्मा गृहस्थियोंका, रकीना, औसर व्याहोंमें लागवाड़ी वगैरह का, बांध दिया, वह भी मजूरी करे तो, जो जो वंशावली, भण्डारोंमें, तथा श्री पूज्यजी महाराजके, पुस्तकालयमें, तथा दूसरी महात्माओंके पास रहगई, सो हाजर है, परन्तु किसी वंश वालेके नाम, ओस वालोंके महात्मा लोकोंके पास सें न मालूम, किस तरह पर, भाट लोकोंके पास दस ५ पीढीके

हाथ लगणेसें, भाटोंने ओसवालोंपर सिक्का जमाणा प्रारम्भ करा है, और अश्वपत लोक जैन धर्म धरानेवाले जती लोकोंसे, हरवातपर मुंह मचकोड़ते हैं, और भाटोंके लिए कड़ा कंठी मोती दुशाले देकर, इनायतीकी खूबी दिखाते हैं, जती महात्मा तो कुपात्र ठहरगये, मांस, मदिरा खाणेपीणेवाले भाट लोकोंका दान, सुपात्रों में, दरज हुआ, वाहरे पंचम आराकलियुग, तेरे विना, ये दशा कोन बनाता, अश्वपती महाजनोंकी वंशावली जती महात्मा विना अन्यके पास होय सो, विल्कुल गलत झूठी है, अश्वपत लोकोंको, इस बातका निर्धार करना चाहिए, आखिरकों, बादशाहनें, करम चन्दकों, हमेशा अपणेपास रखणा शुरू करा, तब किसी कारणसें, राजा रायसिंहजी; गुस्से होगये, सूरसिंहजी जब गद्दी नशीन हो, दिल्ली पधारे, तब करमचन्दके पुत्र पोतादिक परिवार वालोंको, विश्वास दे बीकानेर लाये इन्होके पास, सातसय योद्धा राजपूत थे, एका एक सूरसिंहजीनें इन्होंको मारणे को, सेन्या भेजी, तब उन्होंके पुत्र भागचन्द लक्ष्मीचन्दनें अपणे हाथसे, सब परिवारकों, कतलकर, सातसय राजपूतों संग, केशरिया वागे पहन, युद्ध करके काम आये, इन्होंका चाकर रगतिया झूझार हुआ सो, भोजक लोकरगतिया वीरकर के पूजते हैं, एक बहु गर्भवंती, किसनगढ़, अपणे पीहर चली गई थी उससें जो पुत्र हुआ, उनकी सन्तान, किशनगढ़ उदयपुर वगैरहोंमें वसते हैं, वाकी-बछावत मारवाड़ वगैरह बीकानेरके इलाकोंमें, वसते है, पीछे सूरसिंहजीनें उन्होंकी जड़ निकालनेसें, माणक चौकका नाम, रांघडी रक्खा, कई दिनोंबाद कोई बादशाही काम पड़ा, तब राजा इन्होंका स्याम धर्मीपणा विचारके, बहुत पछताये, आखिरकों, एक पुत्र खेमराजकों, बुलाकर, खींयासर गाम उसके नामसें वसाया, अट्ठारह हजार वीघा जमीन देकर, बड़े कारखानेमें, वच्छावतोंका हाजर रहणा हमेसके लिये कायम रक्खा, ये जमीन रिणी गांमके तालुकेमे है, वोथरोंकी मूलशाखा ९ प्रतिशाखे अनेक हैं, मूल गुरू गच्छ खरतर, वोथरा १ फोफलिया २ बछावत ३ दसाणी ४ डूंगराणी ५ मुकीम ६ शाह ७ रत्ताणी ८ जैनावत, ९ (दोहा) बड़साखा ज्यों विस्तरो, वोहित्थ राणा वंश, दिन २ प्रति चढ़तोकला जनधन कीर्ति प्रशंस, ॥ १ ॥

(गेहलड़ा गोत्र)

विक्रम सं १५९२ खीचीगहलोत राजपूत, गिरधर सिंहके पास पिता वहुत धन छोडगया था, लेकिन ऐश आरामदातारी चारण भाटड़ू मलोकोंको करता, सब धन उडादिया, आखिर बहुत तंग हो गया, स्यामी, जोगी, फकड़ोंके पासकीमियागिरी, ढूंढ़ता फिरता है, एक दिन, खरतर गच्छाचार्य, श्री जिन हंस सूरिः को, बहुत साधुओंके बीच, खजवाणा गाममें विराजमान देख, भक्तिसें वन्दन कर बैठ गया, अवसर पाकर अपनी सब व्यवस्था कहके बोला, हे दीन दयाल, धन विना जगतमें गृहस्थीकों जीनेसें मरणा अच्छा है, गुरूनें कहा सत्य है (दोहा) चढ़ उत्तंग फिर भुय पतन, सो उत्तंग नहीं कूप, जो सुखमें फिर दुखवसे, सो सुखही दुख-रूप ॥ १ ॥ इसवास्ते सुपात्रं विवेकीके पास धन होता है तो, 'वह उस धनसें स्वर्ग मोक्षकी नींव डालता है, और जो बुद्धि हीन, धन पाकर, सुकृत नहिं संचते बंबूलके वृक्षरूप कुपात्रोंको दान देते है, वो, इस जन्म, व पर-जन्ममें, दुखी होते हैं जिन मन्दिर कराणा १ जिनराजकी मूर्तियें भरवा कर अंजन शलाका कराणी, चैत्य प्रतिष्ठा कराणी, २ केवली कथित सिद्धान्त लिखाणा, पाठशाला स्थापन कराणा, विद्यार्थियोंको सब तरहसें सहायता देणी, दीन हीनका उद्धार करणा, ऐसे सुकृतके अनेक भेद है, तब गिर-धर बोला, महाराज अब जो मेरे पास धन हो जाय तो, ये सब काम करूं, गुरूनें कहा, जो तुं जिनधर्मी श्रावक हो जावे तो, धन फिर हो जाता है, इसने गुरूसें जिनधर्म अङ्गीकार करा, तब जिन हंस सूरिःने, वास चूर्ण मंत्र कर दिया कि, आज रात्रिको कुम्भारके ईटके पजावेपर, ये डाल देणा, भाग्य योगसें बाहिर ९ हजार इटोंका छोटा पजावा दिखाई दिया, वास चूर्ण उसमें डालदिया, वह सोनेकी होगई, चांदकी चांदनीमे, रातोरात, घरपर उठा लाया, ईंटोके मालिककों, दुगणा मोल देकर, खुश कर दिया, गिरधरसाहके पुत्र, गेलाजी, भोला था, अब तो इन्होंके राजकाज लगगया, धर्ममें बहुत द्रव्य लगाया, वाद गेला साहकों शहरके लोकोंने कहा, चिणेका दाणा तो, सबोंके घोड़े खाते है, आपके घोडोंको तो, मोहर खिलाणी चाहिये, तब

बोला साहनें, मोहरोंसे तोबरे भरके चढ़ा दिये, तबसें लोक गेलडा २, कहन लगे, इन्होंके सातमें पीढी एक पुरुषकों, राठोडोनें किसी अपराधमें पकड़ कर, सब धन छीन लिया, तब वह दुखी हुआ, उसकों नागोरमें, ज्योतिष निमित्तसें, एक जतीनें, मुहुर्त बतलाया, इस वक्त तूं पूर्व देशमें चला जा, राजा सम्राट हो जायगा, ये निकला, सात कोस पर जाके, दरखत की छाह में सो गया, नींद आगई, सूर्य की धूप मुंह पर आई, तब एक सांप निकल के, छांह करके सूर्यके तरफ रहा, इतनेमें ये जागा, सांपको देख कर घबराया, फिर पीछा आया, जतीजीनें देख कर कहा, अरे पीछा क्यों आया, तब वह बोला ये स्वरूप वणा, जतीजीनें कहा, अरे तूं छत्रपती होता था, वह शकुन सांपनें दिखाया था, अभी खेह भरा चलाजा, राजा तो नहीं होगा, तो भी राजा महाराजा बादशाहोंका श्रीमन्त माननीय हो जायगा, ये चलता २, तीन महीनेसें मुरसिदाबाद पहुंचा, क्रम २ व्यापारसें, बढ़ते २ जहाजोंमें माल भेजने लगा, आखिरको खाली नाव पीछी आती, तोफानमें आई, तब नावड़ियोने भरतीमें पत्थर डाला, वह सब पन्नारत्न था उस दिनसें, असंक्षा द्रव्यपती होगया, इन्होंके पुत्र खुशाल रायजीको दिल्लीके बादशाह ओरंगजेबनें, जगत्सेठकी पदवी वखसी, उस पीछे खरतर गच्छाचार्य श्री जिन चन्द्र सूरिःकों सं० १ १७२२ में मुरसिदाबाद विनतीसें बुलाये, महाराजनें उपदेश दिया, समेत शिखर पहाड़की यात्रा जाते रस्तेमें, प्रजाकों चोरोंका भय, रस्ता मिले नहीं इस लिए संघको दर्शन सुलभ होना चाहियें, तब सेठ साहबनें, झाड़ी जंगमें साफ रस्ता ६ कोस पर चोकी पहरो, विठलाये, ऊपरवीसों भगवानके जहां चरण नहीं थे उहां पधराये, और नातभाईजी आवै, उसकों श्रीमन्त वणा देना, बडी भक्ति अनेक जिन मन्दिर, घर देरासर, कसौटीके पत्थरसें बनाकर नवरत्नोंके बिंब स्थापन किये, ये मन्दिर हमने विक्रम सं० १९२२ कीं सालमें, आंखोंसे देखा था, उनकी बदौलत, मुर्शिदाबाद, महमापुर, महाजन टोली अजीमगञ्ज, बालूचर, बगैरह गंजोंमें एक हजार लक्षाधिपति महाजनोंको बना कर बसाया। बीकानेरके गावोंके, वासिन्दे, जो जो, गरीब महा-

जन जगत सेठजीके पास पहुंचा, उसे निश्चयही श्रीमन्त बना दिया। अंग्रेज सरकारको जगत सेठ साहबकी बदौलत बादशाही इज्जत रखनी हुई। नागपुरके मरेठे राजाको अर्बोंकी जवाहिरात, जगतसेठजीने, बख्शी। बनारसमें राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द, जो अंग्रेज सरकारके माननीय हो गये, इन्हींके वंशके थे जिनने कई इतिहास बनाये हैं,। मूल गुरु गच्छ खरतर गेलड़ा गोत्र कुबेरा गामके चारोतरफ वहुत वसते हैं।

लोढागोत्र २

लोढागोत्र दो है। एक लोढा तो चौहाणोंसे उत्पन्न हुए है, पृथ्वीराज चौहाणका सूबेदार लाखण सिंह देवड़ाचोहाणके पुत्र नहीं था, तब रविप्रभसूरिजीरुद्र पल्ली खरतरसे निकली शाखावालोंसे, लाखण सिंहने, पुत्रके वास्ते दुख निवेदन करा। तब गुरुजीने कहा कि जो तूं जैनधर्मी हमारा श्रावक बनै तो तेरे पुत्र हो लेकिन कपटसे जैनधर्म ग्रहण करा जिससे पुत्र हुआ वह लोटे जैसा था, तब राजा पृथ्वी राजने कहा, अरे मूर्ख ये तेरे कपटका फल है, तब लाखणसी, गुरू कों ढूंढता २ बड नगरमें गया, अपणा कपट कहा, गुरू बड वृक्षके नीचे उतरे थे, उस बड़में रही जो देवी, वह बड लाई, बोलीके, निशल्य होकर, जैन धर्म कबूलकर, पुत्रके हाथ पैर सब गुरूके आशीर्वादसें हो जायगे, तब इसनें ऐसाही करा सम्यक्त्व युक्त बारह ब्रत लिये, गुरूने उस लडके पर वास क्षेप करा सब अंगोपाङ्ग प्रगट हुए. उसका लोढा वंश थापन करा, इन लोटोकी चार शाखा है, टोडर मल्लोत १ छजमल्लोत २ रतनपालोत ३ भाव सिंघोत ४ टोडर मल्ल छजमल्लको दिल्लीमें बादशाहने साहकी पदवी दीथी, राजा टोडर मोजी शौखीनथा. सो टोडरमलजीको स्त्रियें व्याहमे गीत गाने लगी, माता बडलाई पूजते है, लोढोंका, जोधपुरमें, रावकी पदवी है, पुत्र हुए पीछे इन लोढोकी स्त्री, बडलाई पूजेविगर वाहर नहीं निकलती, व्याहमें कुम्मारका चाक नहीं पूजते, कालोंमेंस वकरी नहीं रखते, अडूला भी पूत्रोंके माताका रखते है मूल गच्छ रुद्र पल्ली खरतर, वोगच्छ विच्छेद हुआ वादसम्वत् सतरहसेंमें केइयोने तपागच्छ कबूल करा बाकी खरतरमै है

(लोढा दूसरे)

लोढामहेश्वरी चात्रा विक्रम सम्वत् हजारकी सालमें गुरुमहाराज श्रीवर्द्धमानसूरिका उपदेश सुणकर जैनधर्मका, श्रावक हुआ, ये फकत्त दशहरा पूजते है, पाटीकी पूजा करते हैं इन लोढोंका अभी भी गच्छ खरतर है, मेडता जिलेमे इन्होंके घर है, और सोझत इलाकेमैं है

(बोरड़ गोत्र)

आंबागढ़में पमारराजपूत राव बोरड राज्य करता है, सं. ११७५ में खरतर गच्छाचार्य, श्रीजिनदत्तसूरि:जी, उस नगरमें पधारे राजा शिवजीका भक्त था, सो जोगी सन्यासी जितने आवे, उनसें राजा ऐसीही विनती करे के, मुझको, स्वामी शिवजीके प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये, लेकिन कोईभी करा नहीं सक्का, एक दिन राजा श्रीजिनदत्तसूरिजीकी महिमा सुणके, गुरूके पास आया और वन्दनकर, यह विनती करीके हे गुरू मुझे शिवजीके प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये, तब गुरू कहणे लगे, अगर जो तूं शिवजीका कहा वचन माने तो, प्रत्यक्ष शिवजीसें मिलादूं, राजानें प्रशन्न होय, यह बात मानी, तब जहा शिवजीका लिङ्ग था, उहा गुरू पधारे और राव बोरड़कों कहा, हे राजा अब तू एकाग्र दृष्टि शिवजीके लिङ्ग पररख, राजानें समाधि लगाय एकाग्र दृष्टि धरी, इतनेमे लिङ्गमेसे प्रथम धुंआ निकलना शुरू हुआ, बाद शिवजी भस्मी लगाये, नादियेपर सवार, अर्धांगा पारवतीकों लिये, त्रिशूल हाथमें लिए हुए, मूर्तिके अन्दरसें, निकले, और राजा बोरडको दर्शन दिया, और माग २ ऐसा वचन मुखसें कहने लगे तब रावराजा बोरड़ने, हाथ जोड विनती करी, हे नाथ, अन, धन, जन सब आपकी कृपासें हाजिर है, लेकिन जन्म मरणसें छूटूं ऐसा जो परमपद है वो मुक्ति मेरेकों प्रदान करो, वेर २ यही विनती है, तब शिवजी, हड़ २ हंसने लगे, और बोले, हे राजा, मेनें आपनेंही मुक्ति नहीं पाई, (दोहा) जाहीतें कछु पाइये, कीजेताकी आस। रीते सरवर पे गये कैसें बुझे पियास ॥ १ ॥ हे राजा सांसारिक कार्य जो कोई मेरेसें होने लायक होय सो मै, पूरा कर सक्ताहूं, भाग्यसे उपरान्त, देवता भी देणेमें समर्थ नही, और मुक्तिका

अर्थ, हे राजा कर्मोंका छूटणा वह तो मोहके क्षय करणेसें कर्म जीवसें छूटता हैं, अगर ऐसी जो तेरी मुक्ति पानेकी इच्छा हैं तो, तेरी पीठपर खड़े आत्मार्थी जितेन्द्री परम गुरूके वचनानुसार चल, क्रमसें जरूर मुक्त हो जायगा, ऐसा कह शिवजी एक कोटि रत्न दिखलाकर, अन्तर ध्यान हुए, तब राजानें चकित होकर, गुरूसें मुक्तिका स्वरूप पूछणे लगा, तब गुरूनें, नव तत्वका उपदेश दिया, राजानें अपने सह कुटुम्ब जैनधर्म धारण करा, इन्होंसे बोरड़ गोत्र प्रसिद्ध हुआ, मूल गच्छ खरतर,

(नाहर गोत्र)

पहले नागोरके पास, मुंधाड नगर मूंधडा महेश्वरियोंनें बसाया, उस जगह मुंधड देवीका मन्दिर हैं। उस देवीके, मूंधडे महेश्वरी शैवमती, सर्व भक्त बसते है, उन्हीमेंसे भीमका पुत्र देपाल, प्रल्हाद, कूप नगरके राजाका, प्रधान हुआ, और वह धनसे श्रीमंत बनगया, उस देपालके, एक अत्यन्त प्रिय पुत्र था, जिससे उसका नाम आसधीर रक्खा, । उस नगरमें, श्रीलघुशान्ति स्तोत्रके कर्ता मान देवसूरिः आचार्य आये, । सूंडाजी नामका उनका शिष्य गोचरी गया, मगर शैवमती लोगोंनें, जैनधर्मसे द्वेष रखनेके कारण, आहार पानी नहीं दिया, तब सूंडानें गुरूसें सब वृत्तान्त कहा, तब गुरू विहार करने लगे, इस समय शासन देवी आकर बोली, हे गुरू यहां धर्मका लाभ होगा, आप यहां एक दिन जप तप सावो, । तब गुरू शिष्य तेला कर बैठ गये, । इतनेमें शासन देवतानें, देपालके पुत्र आसधीरको वहासे प्रच्छन्न पणे उठाकर, लेगई, । जब माताने बालकको नहीं देखा तब सर्वत्र खबर करी, मगर पता नहीं चला, । देपाल पुत्र प्रेमसे विमूढ होगया, । शिष्य जगल गया था, उसको देपाल बहुत मनुष्योंके साथ रोता पीटता रास्तेमें मिला, उसे रंजमें देखकर, चेलेनें पूछा, तब सब हाल भृत्योंनें, कह सुनाया, । चेला बोला, मेरे गुरूके पास जावो, वह अतिशय चमत्कारी हैं निश्चय तेरा पुत्र बतला देंगे, । सच है गरज दुनियामें, अजब वस्तु है, (दोहा) गरज २ सब कोई करे, गरज होत घनघोर । बिना गरज बोले नहीं, जंगलहूको मोर, । १ मतलबरी मनु-

हार, नेतजिमावे चूरमो, बिन मतलब कोई यार, राबन पावे राजिया, । १ ।
यह वचन सुनते ही, सूंडाजीके चरणोंमें गिरा, देपाल बड़ा दुखी होकर कहने लगा, हे गुरू परमात्मा पुत्रके बिना मेरा, और स्त्रीका, प्राण निकल जायगा, इसवास्ते आप कृपाकरके, वडे गुरू महाराजके पास ले चलो, तब सूंडाजी संग लेकर गुरूके पास आए, गुरूसें देपाल मंत्रीने, वडे दीनश्वरसें निवेदन करा तब गुरू बोले, जो तूं, वृहद्गच्छका जैनी श्रावक बने तो, पुत्र मिला देता हूं, देपालने कहा इसी समय, गुरूनें कहा, पुत्र मिले पीछै तब गुरूनें कहा जातूं, दक्षिण दिशाके उद्यानमे, तेरा पुत्र सुखसें, बैठा है, देपाल और शिष्य व बहुत लोग, उसके संग गये, आगे शासन देवी सिंहणीके रूपसे, उस लड़केको स्तनपान करा रही है, देखते ही, देपाल डरता हुआ, पीछै आकर गुरूसे अरज करी, तब गुरूनें कहा, तूं निशंक चला जा, उस नाहरीकों कहना श्रीमान देवसूरिःका, मै श्रावक हू, मेरा पुत्र पीछादे, इतना कहते ही, तुझें पुत्र दे देगी, इतना सुण, साहसकर गया, तब नाहरणी गोदमें पुत्रको लेकर बैठी है, देपाल हिम्मत वचन गुरूसें, नाहरणी पास जाके, गुरूके वचन कह सुनाये, तब नाहरणीनें, देपालको पुत्र पीछा दिया, और आकाशमें जय २ ध्वनि होने लगी, बहुत हर्षके साथ अपना वडा भाग्योदय मानता, सपरिवार, गुरूके पास जाकर, जैनधर्मी भया, गुरूने उस आसधीरका, नाहर गोत्र स्थापित करा मानदेव सूरि कोटिक गच्छ चन्द्र कुल वज्रशाखाके आचार्य थे, इन्होंके शन्तान जिनेश्वर सूरिको खरतर विरुद मिला, मूलगच्छ खरतर देवी इन्होंकी शासन देवी व्याघ्री है, बीकानेरादिक मारवाडके नाहर अभी भी खरतर गच्छमें है ।

(छाजेहड़ गोत्र)

राठौड़ राजपूत धांधल रामदेव १ पुत्र काजल, संवत विक्रम १२१५ में श्रीजिनचन्द्र सूरिः मणिधारी खरतर गच्छा चार्य, सवीयाण गढ़में पधारे.

१ विद्यमान समयमे सताब चन्दजी नाहरके पुत्र मुरसिदा बादमें बडे श्रीमन्त दातार, अंग्रेज सरकारके माननीय, बुद्धिवन्त, मुन्नीलाल पूरणचन्द वगैरह जयवन्त हैं, ।

तब काजलनें, गुरूसें विनती करी के, गुरू महाराज दुनियामें लोग रसायण सिद्धि सोना वगैरह होती बतलाते हैं, यह बात सच्च है या झूंट, गुरूनें कहा, हम त्यागी लोकोंको, धर्म कियाकों वर्जके और नाटक चेटक करना योग नहीं, तब काजल बोला, जिस तरह धर्मकी वृद्धि होय, और मैं इस विद्याकों एकबार अपनी आखोंसे देखलूं, ऐसी कृपा करो, आपके गुरू श्रीजिन दत्तसूरिःजी तो, ऐसे चमत्कारी होगये, इतना चमत्कार तो, आप ही बतलावो, तब गुरू बोले, जो तूं जैन धर्म अंगीकार कर, हमारा श्रावक बणे तो, ये काम भी हो सक्ता है, तब काजल अपने पितासें, पूछणे गया, तब रामदेव बोला, हे पुत्र, राठौड़ जात, खरतरगच्छके, चेले है, तूं अहो भाग्य समझ सो गुरू तुझे जैनधर्म धराते है,तब आकर बोला,लो गुरूमहाराज जैनधर्म करो, गुरूनें नवतत्व सिखाकर, श्रावक बनाया पीछै दीपमालिकाकी रात्रिकों, श्रीलक्ष्मी महाविद्यासे, मंत्र कर, काजलकों, वास चूर्ण दिया, और बोले, जा इतना वास चूर्ण जिसपर डालेगा, वो सोना होजायगा, लेकिन आजही रातकों, प्रह उगतेमें, लक्ष्मी देवीका विसर्जन कर दूंगा, फिर नहीं होगा, काजलकों तो, यह चमत्कार ही देखणा था, उपाश्रयसें निकलकर, मन्दिर श्रीजिनराजके छाजेपर, कुछ वास चूर्ण डाल दिया, कुछ देवीके मन्दिरके छाजोंपर कुछ अपने घरके छाजोंपर डालकर घरमें जाके सो रहा, मूंअन्धारे उठके, श्रीजिनमन्दिरमें जाके, दर्शनकर, बाहर निकला, इतनेहीमें, बहुतसे लोक, रस्ते निकलते, बोले, अरे यह सोनेके छाजे, मन्दिरके किसनें चढाये, काजल देख २, बहुत प्रसन्न हुआ, इतनेमें बहुतसें लोक आकर, कहने लगे, रामदेव काजल राठौडके घरके, तथा देवीके मन्दिरके, जैनमन्दिरके, तीनों छाजे सोनेके है, तब काजल बोला, अरे लोकों, ये महिमा सब, खरतर गुरूमहाराजकी है, उस दिनसें, काजलोत छाजेहड़ कहलाये, मूल गच्छ खरतर, ।

(सिंघवी गोत्र)

नगर सिरोही गोढवाडमें, निनवाणा ब्राह्मन बोहरा, सोनपालके पुत्रको, साप काट खाया, खरतराचार्य श्रीजिनवल्लभसूरिःनें सं. ११६४ में जहर

उतारा, सोनपालजीनें जैनधर्म धारण करा, पीछै सत्रुजयका संघ निकाला, जिससें सघवी कहलाये, पीछै केइयक संघवी गोत्रवालोंनें संवत् विक्रम अठारहसेमें, तपागच्छकी सामाचारी करने लगे, तबसें केइयक खरतर गच्छमें है, केइयोका तपागच्छ है, शाखा ४ नवलखा १ फरसला २ ननवाणा ३ पल्लीवाल ४।

(सालेचा वोहरा)

सालमसिंहजी दइया राजपूतकों श्रीमणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरिःनें प्रतिबोध देकर जैनी महाजन किया सं. १२१७ की सालमें सियाल कोटमें बोहरगत करणेसें बोहरा कहलाये, मूलगच्छ खरतर।

(भण्डारी गोत्र)

गोढवाड देश गांम नाडोलका राव, लाखणजी, चौहाणका बेटा, महेसराव वगैरह ६ पुत्र थे, उन्होंको श्रीभद्रसूरिजी खरतर गच्छाचार्यनें, सं। विक्रमके १४७८ में प्रतिबोध देके जैनधर्मी श्रावक बनाया, देवी इन्होंकी आसा पुरी, जात नाडोल गांममें इन्होकी लगती है गांम कुचेरोंमें आकरवसें मूलगच्छ खरतर है, पीछै बाद कोई २ दूसरा गच्छ भी मानने लगे, कुचेरा परगणेके भण्डारी अभी खरतर गच्छमे है, साखा दीपावत मोनावत, लूणावत, नींवावत,।

(वांगाणी)

विक्रम सम्वत् सातसयंम वृहद्गच्छी यशो देव सूरिःजैतपुर पधारे, उहा जयतसिंहजी चौहाण राजाके पुत्र अन्धे होगये थे, जयत सिहजीने गुरूसें विनती करी, तब गुरूनें जैनी श्रावक होणा कबूल करवाके, शासण देवतासें एक दिनमें दिव्य नेत्र करवाये, वंग देवका वांगाणी, गोत्र प्रसिद्ध हुआ यह यशोदेव सूरिः खरतर गच्छ वालोंके बडेरे थे, इस वास्ते मूल गच्छ खरतर, पीछै संवत् सोलहसेमें और २ सम्प्रदाय मानने लगे,

(डागा)

गोढवाड़ देशगांम नाडोलमें, चौहाण राजपूत, डूगर सिंहजीको पकड़नेके लिए, दिल्लीके बादशाहनें, फौज भेजी, कारण पहली डूंगर सिंहजीनें, बहुतसे

खान मुल्तानको, मार डाला था, ये खबर डूंगरजीको हुई, तब खरतर गच्छा चार्य, दादासाहिब श्रीजिन कुशलसूरजीके शरणागत हुए, गुरुनें कहा; जो तुम हमारे श्रावक बणो तो, बादशाह तुम्हारे सामनें आकर, अभी, आजीजी करणे लगे, डूंगर सिंहजी, अपणे कुटुम्ब समेत, कुशल सूरिदादासाहिबके, श्रावक हुए, रातको बादशाह अपणे महलमें सूतको दादासाहिबनें वीरको हुक्म देकर, उपासरेमें पलंग समेत उठाकर बुलाया, जब डूंगजी उहां बैठे थे, ये चमत्कार देखणेको डूंगजीनें बादशाहसूतकों जगाया, बादशाह जागकर देखे, तो, कहाका कहामें आगया, तब डूंगजी बोले, अहो दिल्लीपति, दिल्ली तखतके मालिक, आपनें तो हमको पकड़नेको फौज भेजी, सो तो अभी यहां पहुंचीही नहीं है, और मैंने तो तुम्हें कैद करवाके मंगालिया है, तब बादशाहनें पूछा ये बस्ती कौनसी है, तुम कौण हो, और मुझे कैसे बुलाया, तब डूंगजी बोले, देख मेरे जागती कला जागती जोत, सद्गुरुका मेरे शिर पर हाथ है, तूं मेरा क्या कर सक्ता है, बादशाहनें, उठके गुरुमहाराजके चरणोंमें अपना ताज रक्खा, और बोला, अय परवर्दिगार खुदाई कुदरत तुम्हें मुबारक है, मुझे क्या हुक्म है गुरुने कहा, डूंगजीके परिवारको, कभी कड़ी नजर नहीं देखणा, दूसरे तेरे राज्यमें जैनधर्मवालों पर कभी जुल्मीपणा मुसल्मीन करणा नहीं, और हमारे श्रावकोंको, हर व्यापार बादशाही फुरमाया जावे, बादशाहनें अजब कुदरत देख, सब करणा कबूल करा तब गुरुनें कहा, जा पलंग पर बैठ, आंख मूंचले, उसी समय दिल्ली दाखल कर दिया, उस दिनसें, सेवडोंकी कदम पोशी सब जात करणे लगी, डूंगजीसे, डागा गोत्र, प्रसिद्ध हुआ, राजाजीके राजाणी, पूंजेजीसें पूंजाणी, इन्हीं डागोंकी, शन्तान, जेसलमेर केटूंबस, वो जेसलमेरिया बजणे लगे, मूलगच्छ खरतर, सं. विक्रम १३८१ में डागा गोत्र हुआ, ।

(श्रीपति ढड्ढा तिलोरा गोत्र)

विक्रम सं. ११०१ में गोड़वाड़ देशमें नाणा वेड़ा नगरमें, पाटण नगर का राजा, सोलंखी राजपूत, सिद्धराज जयसिंहके पुत्र, गोविन्द चन्दको, खरतर गच्छी श्री जिनेश्वर सूरि, खरतर विरुद पाने वालेने, धर्म तत्वका

प्रति बोध देकर, जैनी महाजन बणाया, गोविन्द चन्दका पुत्र तेलका व्यापार करा, बहुत धन उपार्जन करा, तबसें श्रीपति गोत्रकों तिलेरा साखासें पुकारने लगे, तीसरी पीढी झांझण सीजी हुए, जिन्होनें संघ निकालकर सत्रुंजयकी यात्रा की, इन्होंकी ६ मी पीढी विमलसीजी हुए, जिन्होंने, नाडोल, फरड़, फलोधी, नागोर, बाहड मेर, अजमेर, इत्यादि क्षेत्रोंमें, जगह २ जिन मन्दिर कराकर प्रतिष्ठा कराई, सं. विक्रम बारहसेमें, इन्होंके वंशमे, भाडाजी हुए, जिन्होने जेसलमेर, सिद्धपुर, पट्टण, जालोर, भीनमालमें, शास्त्र संग्रह कराणेमें, ज्ञानभण्डार कराणेमें द्रव्यकी बहुत सहायता दी, भांडाजीके पुत्र धर्मसीजीनें शाह पद प्राप्त किया, सत्रुजय, आबू, गिरनार, बनारस वगैरहमे, प्रशाद कराया, संघ माल पहन कर, समेत सिखरकी यात्रा की, सत्रुंजय, गिरनार, तारंगा वगैरह, हरजगह पर, सोनेका कलश चढाया, चौरासी यात्रा की, संघमें मोहर २ लाहण वांटी, मोतियोकी माला, सोनहरी कल्पसूत्र, मुनियोंके अर्पण की, मुनियोनें संघके भण्डारको सुपरद किया, पृथ्वी परिक्रमादी तीन क्रोड असरफियां खरचकर, भण्डार स्थापन करा, बहुतसे मकान बणाये, धर्मसी नांमको धर्म करणीसें, अमर कर दिया, सम्बत् १२९६ में अम्बिका देवीनें, प्रशन्न होकर, आंमके वृक्षके नीचे, धन बतलाया, धर्मसीजीके नवमी पीढी, कुमार पालजी हुए, उन्होने सिद्धपुर पाटण छोड़ सिंधदेशका निवास किया, श्री शान्तिनाथजीका मन्दिर सिंधमें करवाया, कुमारपालजीके तीसरी पीढी वाढजी हुए, वह शरीरमें बडे हृष्टपुष्ट मजबूत थे, सं. १६१९ की सालमें, सिंधदेशकी भाषामें, इन्होको ढड्ढा कहणे लगे, संस्कृतमें (द्रढा), तबसें ढढानख प्रसिद्ध हुआ, वाढजी की चौथी पीढी सच्यावदासजी हुए, उन्होंके पुत्र सारंगजीसे सारंगाणी ढड्ढा कहलाये, सिंधदेशकों छोड, फलोधी नगरमें वसने लगे, सारंगजकि रुघनाथ मलजी, और नेतसीजी, दो पुत्र हुए, नेतसीजीके खेतसीजी आदि ४ पुत्र हुए, इस जगह रुघनाथ मलजीके परिवारका, पता नहीं मिला, नेतसीजीके तीन पुत्रोंका भी परिवार बहुत हुआ, लेकिन यहां खेतसीजीके परिवारका पत्ता पाया, सो लिखते है, खेतसीजीके, रतनसीजी, तिलोक-

सीजी, विमलसीजी, करमसीजी, एवं ४ पुत्र हुए, तिलोकसीजीनें, हुलकरकों सहायता दी, और जो धन, उस लडाईमें मिला, उसका चौथा हिस्सा, हुलकरने तिलोकसीजीकों दिया, क्रोडपती होगये, बाकी तीनों भाइयोकी शन्तान, बहुत है, लेकिन तिलोकसीजीके चार पुत्रोंके नाम,

१ पद्मसीजी	२ धर्मसीजी	३ अमरसीजी	४ टीकमसीजी
ज्ञानमलजी	रामचंदजी	नथमलजी	लालचंदजी
सदासुखजी	सागरचन्दजी	सुजाणमलजी	गुणचन्दजी
उदयमलजी	पुत्र २	सुमेर, उदय,	मंगलचन्दजी
		चांदमलजी	

शोभागमलजी लक्ष्मीचन्दजी गुलाबचंदजी एम ए जनरल
कल्याणमलजी कान्फरेंस जैन

तिलोकसीजी बीकोनर वसे, इन, ४ पुत्रोंकी शन्तान, बीकानेर, तथा जयपुर, अजमेर वसते है, बाकी दड्ढे फलोधी आदि मारवाडमें, सारगजीके पहलेका परिवार, कच्छदेशमें दसा वीसा हो गये,

(पीपाड़ा गोत्र)

गेलोत राजपूत, पीपाड नगरका राजा, करमचन्दकों, वर्द्धमानसूरिःनें स० १०७२ में प्रतिबोध करके महाजन किया मूलगच्छ खरतर ।

(घोड़ावत छजलाणी गोत्र)

राजपूत रावत वीरसिंह जायल नगरका राजा था, उसकों शिकार खेलनका बडा शौकथा, एक दिनभी शिकार खेले विना रहै नहीं, एक दिन राजा शिकार खेलनें गया, उसी समय नागोर नगरसें विहार करके, श्रीजय प्रभ सूरिः, रुद्र पल्ली खरतराचार्य जायल नगरके वनमें, उतरे थे, आचार्यनें कहा, हे राजा निरपराधी जीवोकों मारणा, ये राजपूतोंका धर्म नहीं, जो दुस्मनशस्त्र डालदै, मुंहमें घासका तृण उठालेवै, अथवा भगजावै तो, खानदानी राजपूत, न्यायवन्त, ऐसे शत्रुकों कभी नहीं, मारे, तो हे राजा, हिरण, खरगोश, बकरा वगैरह जानवर शस्त्र रहित, नंगे, घास मुंहमें डालणेवाले भयसे भागनेवाले, निरपराधियोंकों तूं कैसे मारता है, राजा न्यायवन्त बुद्धि

वाला था, पूर्व पुण्य जाग्रत हुए, और वोला, है प्रभु आज पीछे, शिकार करके किसी भी जीवकों मारणेका मुझें, यावज्जीव त्याग है, लेकिन सीधा मास मिल जाय, उसके खानेमें तो कुछ दोष नहीं, तब गुरू बोले हे राजा, मांस खानेवाले नहिं होय तो, कसाई जीवोंकों किसलिए मारे वह उन खाने वालोंके लिए मारता है, इस लिए आधाकर्म लगे मनुस्मृतीमें आठ कसाई लिखे है, तब राजा बोला जैसे हरी वनस्पतिके सागकों, जब गृहस्थीं पका डालते हैं तो, जैनके साधु उसें निर्दोष समझके, ले लेते हैं, इसी तरह ही किसी और राजपूतनें, मांस आपके लिए, मारके रांधा हो, फिर तो वनस्पतिकी तरह खाणेमें दोष मुझे नहिं लगे, गुरूने कहा, हे राजा, वनस्पति एकेन्द्री जीव चेतन, प्रथमतो शस्त्र, अग्नि, और खारके स्पर्शसें ही, निर्जीव अचित्त हो जाता है, वैसा मांस अचित्त निर्जीव नहीं होता, मांसके पिण्डमें समय २ असक्षा जीव, संमुर्छिम पंचेन्द्री अग्निपर रंधते भी उत्पन्न होते, और मरते है, इस तरह, वो पंचेन्द्री एक जीव मरण पाया तो, क्या हुआ, लेकिन असंक्षा जीवोंकी हिंसा, मांसाहारीकों लगती है, मल, मूत्र, सेडा, वीर्य, खून चरबीका पिण्ड, हे राजा मांस खाना मनुष्योंका धर्म नहीं, विवेकी, मनुष्य सुकाकर, अपणे हाथसें वनस्पति तक नहीं खाते हैं, और सूकी वनस्पति कालान्तरमें जीवाकुल हो जाय तो भी नहीं खाते, एकेन्द्री वनस्पति वगैरह ५ थावर विगर मनुष्योंका, जीवित नहीं रह सक्ता, लेकिन, बे इन्द्रीसें लेकर पंचेन्द्री तकके शरीरके पिण्डकी, मनुष्योंकों, खाणे विगर कोई हरजा नहीं पहुंचता, वल्कि मासके खाणेसें, प्रत्यक्ष दर्श[1] अवगुण है, इत्यादि अनेक प्रश्नोत्तरसे, राजा प्रति बोध पाकर जैनी महाजन हुआ, उस वखत, राजाकी कुलदेवी, नवरतोंमें, भेंसा, बकरा वलिदान नही मिलणेसें, उत्पात करणे लगीं, तब राजानें गुरूसे कही, गुरूने विद्या बलसें, देवीकों बुलाई तब देवी बोली, आज पीछे बलिदान नहीं लूंगी, तब राजाने विचारा, ये देवीकी मूर्ति अगर जायल नगरमे रही तो, न जाणे किसी समय,

---

१ देखो हमारा बनाया हुआ वैद्य दीपक ग्रन्थका तीसरा प्रकाश ।

फिर भी इस देवीके लोग उपासक होकर जीवहिंसा करणे न लग जावे, ऐसा विचार अपने पुत्र छजूं कुमारको हुक्म दिया के, जाओ, कुमार इस देवीकी मूर्तिको, जायल नगरके कुअेमें, जल शरण करदो, छजू कुमार, परम सम्यक्त्वीनें वैसा ही करा, और अपने पुत्र परिवारकों, हुक्म दिया के, आज पीछै, मेरे शन्तान कभी कूएकों आंखके मत्त देखणा, और न देवीकी पूजा करणी, तबसें छजूजीके छजलाणी गोत्रवाले, ये दोनो काम नहीं करते, फिर इन्होंका परिवार बहुत फैला, जिसमें एकशेर सिंह नामका पुत्र नागोर नगरमें, वडा घोडेका शौखीन था, उसकी औलाद घोडावत कहलाये, एक क्षातमें लिखा है कि, रावत वीरसिंह राजपूतोंमें, गौड राजपूत थे, इसवास्ते छजुजी छजलाणी दुसरा पुत्र वैरीसालके गौड़ावत कहलाये, जरूर जातके गौड ही थे, घोडावत कहणे लगे, प्रथम गच्छ रुद्रपल्ली, खरतर पीछै दुसरा गच्छ सं. १५०० सेमें मांनने लगे, छजू-जीका वनाया हुआ एक कवित्त भी, हमकों याद है, पिताके जीते वनाया है, (कवित्त) नंदनकी नवरही वीसलकी वीसर ही रावणकी सब रही पीछै पछताओगे, उततेंन छाए आथ इततेंन चले साथ इतहीकी जोरी तोरी इत ही गमाओगे, हेमचीर घोड़ा हाथी काहूकेन चले साथी वाटके बटाऊ जैसे कल ही उठ जाओगे, कहत है छजू कुमार सुण हो मायाके यार बंधी मुट्ठी आये हो पसारे हाथ जाओगे, । १ । धन्य है राज रिद्धी भोगते भी चित्त मै कैसा वैराग्य था, ।

(कठोतिया गोत्र)

जायल नगरके शमीप कठोती ग्राम है, उहापर अजमेरा ब्राह्मण रहता था, उसकों भगंदरका रोग था, सं. ११७६ में श्रीजिनदत्तसूरिःनें उसकों, मंत्र शक्तिसें, आराम कर उसकों जैन महाजन करा कठोतिया वजणे लगे, गच्छ खरतर ।

(भूतेडिया गोत्र)

सं. विक्रम १०७९ में सरसा पत्तन जंगल देशमें, कछावा राजा दुर्जन सिंघके राज्यमें, ब्राह्मन लोक वाममार्गथे, सो एक दिन आसोज वदी चतु-

दशीके दिन देवीके उपासी पणे कर, मदिरा मांसले गये, इस मतकी वहुत सी स्त्रिये, उस जगह एकट्ठी हुई, राजाका कोई तो प्रोहितथा, कोई कथा व्यास था, कोई देरासरका मालिक देरासरी था, कोई दानाध्यक्ष था, कोई यज्ञोपवीत धारणकराणे वाला गुरू था, राजा अपणे महलके गोख मै, बैठा संध्या करता था, इतनेमें, इन एकेक ब्राह्मनोको, अंधेरी रात्रि मै, एकही दिशाको, जाते देखा, राजानें, अपणा प्रछन्न मनुष्य भेजा, मनुष्यों-नें, खबर दी के, गरीब परवर, ये सब ब्राह्मन, आज काली चवदश है सो, देवकी पूजा करने गये हैं, इस बातकी खबर, अपने मतावलम्बी, वाममार्ग-वाले विगर, और किसीकों, ये बताते नहीं, ये सुणकर, राजाने देखा, ये क्या करते हैं सो, दिखाते नहीं, इस बातकों जाननेके लिए, सय्या पालककों कहा के, में किसी काम जाता हूं, तूं में आऊं जब दरवज्जा, दरवानोंसें कह-कर, खुला देना, राजा तलवार हाथमें ले, गुप चुप उहा गया तो, जंगलमें, एकान्तदेवीका मंडप, उसका दरवाजा वन्ध देखा, मगर अन्दर शब्द सुनाई दिया, अब वो स्वरूप देखनेके लिए पासमें एक ऊंचा बडका वृक्ष देख उसपर चढकर देखा तो, उहां एक जोगी, उसके पास शराबकी बोतलें धरी हुई, एक वड़ा पात्र जिसमें वडे पकोड़े मांस पकाया हुआ, सर्व एकत्र किया हुआ, एक प्याला जिसमें मदिरा भरकर, मंत्र बोलता था, फिर पहले उसनें पिया, पीछे सब ब्राह्मनोंकों देवीभक्तोंको उसी प्यालेसें पिलाया, पीछे एक स्त्रीको नग्न करके, उसके, भगकों, जलसें, मदिरासें, प्रक्षालकर, संबकों चरणामृत दिया, पीछे वह कुंडेका नैवेद्य, भगपर चढा २ कर, सबोंकों, बांट दिया, सो सब लोगोंने खाया, पीछे एक घडेमें सब स्त्रियोंकी, कंचुकी, उस योगीनाथनें, एकटी करके, उस घड़ेमें डालदी, फिर सबोंको आज्ञा दी के, जिसके हाथ डालणेसे, जिसकी कंचुकी जिसके हाथ लगे, वह चाहै माता हो, चाहै बहिन, बेटी, कोई हो, उससें रमण करे, अर्थात् मैथुन करै, वह गुरू वो देवीसें रमण करे, उस जोगीका और देवीका वीर्य जो निकले, उसकों एक पात्रमें लेकर, पुष्पोंके बीच धरके, भजन गायन करै फिर वह वीर्य, घी सहत मिलाके, सब वाममार्गीचाटे, इस तरह इन्होंके चार मार्गी धूम

मार्गी १ बीजमार्गी २ कांचलिये ३ और कौल ४ इन चारोंका स्वरूप देख, राजा अचम्भेमें, रह गया, राजा अपने महलमे आया, प्रभात समय, स्नानकर, कोई तो भस्मी लगा, रुद्राख्य धारण करा, पंचकेशी, पावोंमें खडाऊ, वगलमें मृगछाला, पुस्तक, कमण्डल धारे हुए, ओं नमः सिवाय जपते हुए, ब्राह्मण पधारे, कोई रामानन्दी त्रिपुण्डधारे, तप्त मुद्रा लिए भये, कोई माधवाचारी तिलक किये, कोई केशरकी आडम्बर खेंचे, कोई कुंकुमके दो फाड तिलक किये, कोई मूंछ मुंडाय, लम्बी एक लङ्ग खुली धोती, कुसा डाभ बिछाकर, बैठणेवाले, नानाप्रकारसें, विप्रगण पधारे, राजाने उन्होंको देखतेही, सुभटोंको हुक्म दिया के, जल्लादोंसे, इन सबोंको मरवादो, इन्होंने मेरा देश, कापट्यतासें, डूबादिया, बस उन सबोंको राजानें, मरवा डाला, वे मरते कुछ शुभ अभिप्रायसें भूत हुए, अब नगरीमें, घरोंमें विष्ठा वर्सावै, पत्थर फेके, इत्यादि बहुत उपद्रव करणे लगे, राजा इस बातसें बहुत दुखी हुआ, इस समय, तरुण प्रभसूरिःरुद्रपल्ली खरतराचार्य, उस वनमें आए, ये स्वरूप सुणके राजा, उहां आया, सब स्वरूप कहा, गुरूनें कहा, जो तूं, जैनी श्रावक हो जावै तो, अभी उन सबोंको, बुलाताहूं, राजाने कबूल करा, गुरूने जिनदत्तसूरि दत्ताम्नाय विधिसे, आकर्षण करतेही, भूत प्रकट हुए, गुरूने कहा खबरदार आज पीछे ऐसा उपद्रव, मत करणा, नहीं तो कीलन करताहूं, भयसें, सब भूतोंनें, कबूल करा, और अन्यत्र चले गये, गुरूनें उस राजाकी, भूत तेडिया जात प्रसिद्ध करी, लोग भूतेडिया कहणे लगे, मूल गच्छ खरतर,

(जडिया गोत्र)

सवालख देश, नागोर मेडतेके शमीप कुल्लारी नगर, यादव भाटी, कुलधर राजा, उसके राणी तो ३२, परन्तु पुत्र किसीके भी नहीं, उस चिन्तामें राजा दिलगीर था, इतनेमें श्रीजिन कुशलसूरिः, दादा साहिब उहा पधारे, तब दिवाननें कही, आप चिन्ता छोडके, इन महाराजाके, चरणका जल राणियोंको पिलाओ, यह गुरू दादासाहिब हाजिरा हुजूर साक्षात् देव है, जिस करके जरूर पुत्र होगा, तब राजानें, बडे हंगामसे, गुरूकूं, नगरमें

पगमंडे कर, चरण धोकर, केशरादिक उत्तम अचित्त द्रव्यसें नव अंगकी पूजा, देवमूर्त्तिकी तरह करी, और वह चरणामृत ३२ ही राणियोंकों भेजा, और राणियोंकों, कहला भेजा कि, इस जलकों, वांट २ कर, पिजाओ, इसमें २१ राणियेनें तो, गुरूकी भक्ति करके, पी गई, ११ राणियेंनें सुझा कर नहीं पिया, २१ राणियेंके तो पुत्र हुए, ११ राणियोंके नहीं हुए, उस दिनसें खरतर गच्छके सब श्रावक गुरूका महान् अतिशय जांण, पट्ट धारियोंका, चरण प्रक्षालन कर, नव अंगे पूजणे लगे, उस पर मोहर रूपिया वगैरह चढाणे लगे, पीछे वादसाह अकब्बरनें फुरमांण लिख कर आम श्रावकोंसे, प्रारम्भ केखाया, खरतरा चार्योंने, द्रव्य लेणा नहीं चलाया, शाहन्शाहने ये रिवाज प्रारम्भ कराया, सो श्रावक लोक करते है, और करते चले आये है, अब तो श्रावकोंकों कुछ २ सकल्प विकल्प भी उत्पन्न होता है, मगर इतना खयाल नहीं करते के, प्रथम इन आचार्यों विगर, तुम जैन धर्मको क्या जांणते, दुसरा तुम सर्वों पर, वादशाह हुमायूका जुलमका हुक्म, मुसल्मान वनानेका था, सो श्री जिनचन्द्रसूरिः न प्रगटते तो, इक लाय लाय इलिल्ला महम्मदे रसू लिल्लाके कल्मासरीक होना पडता, और इन्होंके पहले लाखों मनुष्योंकों, वादशाहनें हिन्दुओंसें मुसल्मीन कर भी डाला था, उस उपकारकों देखते, द्रव्य कोई चीज नहीं है, पश्च सूरिः महाराजका चतुर्मास, नागोर था, तब राजा गुरू महाराजका, झड़ोला २१ सोई पुत्रोंके सिर पर रक्खा, और गुरूके पास लेकर आये, गुरूनें कहा आवो बच्चे झडियाओ, इधर आवो, गुरूनें सबों पर वास क्षेप करा, वह जडिया गोत्र प्रगट हुआ, इन्हीं २१ सोंकी कई २ न्यारे २ नख भी, हो गये, सो लिखणेका अवकाश नहीं, मूल गच्छ खरतर, ।

---

१ सूरि. अने साम्राट् ग्रंथ विद्याविजयजीनें लिखा है, उसमें हीरविजयसूरि जीकी पृष्ठ २६४ मांडण कोठारी, मोहरोसे, पृष्ट २७६ में अबजीभणशाली स्वर्णमुद्रासे, पृष्ट २६५ में छ हजार मोंहरोसे राधनपुरमें पूजा करी, इस प्रवाहानुसार श्रीपूजजीकी पूजा द्रव्यसे सरू है हीरविजयसूरि जीकों त्यागी वैरागी सब मानते हैं,

(कांकरिया गोत्र)

ककरावत गामका खेमटरावका पुत्र, राव भीमसी, पडिहार, राजपूत, चित्तोडके राणाका सामंत वह राणाजीका हुक्म मानें नहीं, और न नौकरीमें जावै राणाजीनें तलब करा लेकिन गया नहीं, तब राणेजीनें इसकों पकड़ने शेन्या भेजी, सं. ११४२ में खरतर गच्छाचार्य श्रीजिन वल्लभ सूरिः भाग्य योग ककरा गाममें पधारे, राव भीमसी, राणेजीके क्रोधका समाचार कहा, गुरूनें कहा, सैन्या यहां आवेगी, उसका में प्रयत्न कर दूंगा लेकिन तुम हमारे श्रावक जैनी हो जावो तो, भीमसीनें श्रावक व्रत लिया, तब गुरूनें, कांकेर बहुतसे मंगवाये, और उस पर दृष्टि पास करा और राव भीमकों कहा के, जिससमय, राणे जीकी शेन्या आवै, उस समय, तोपों पर बन्दूकों पर तलवार वगैरह शस्त्रों पर, राणेजीकी सेन्या पर, ये कांकरे डाल देना, सो सब शक्ति हीन हों जायगे, और में मास कल्प यहा धर्म ध्यानसें करूंगा, शेन्या आने पर अपने विश्वासी ब्राह्मन पोकरनेकों देकर, वह कांकरे हर शस्त्र अस्त्र फोजी लोकों पर डलवाये, सब तोप, बन्दूक छूटनेसें रह गये, तरवारसे एक पत्ता भी नहीं कटे, तब निरास होकर, शेन्याके लोकोंनें, राणाजीकों लिखा, राणाजीनें, सात गुना माफ कर दिया, और तुम्हारी नौकरी माफ तुम्हारे हमारे मध्य परमेश्वर है, इत्यादि खातिरीसें खास रुक्का लिखा, तब राव भीमसिंहनें गुरूकी आज्ञा माग चित्तोड़ गया, राणाजीनें सत्कार किया, सब हाल पूछा, तब राव भीम सिंह बोला, गुरूश्री जिन वल्लभ सूरिःका, काकरिया करामाती है, मेरेमें तो अकड़ाई है, उस दिनसें कंकरावत गांमसें कांकरेके मंत्र अतिशयसें, कांकरिया गोत्र, हुआ, मूल गच्छ खरतर, ।

(आबेड़ा तथा खटोल गोत्र)

मारवाड गाम खाटूका चौहाण राजपूत आडपायत सिंह, १ बुधसिंह २ थे उन्होकी सं. १२०१ में श्री जिन दत्त सूरिः नें लक्ष्मी कामना पूर्ण कर जैनी करा आडपायतरा आबेडा, बुधसिंहका पुत्र खाटूगांव, से खटेड हुआ,

मूल गच्छ खरतर, । सं. १५८७ में कई २ इन वंश वाले और गच्छमें गये ।

(खेतसी पगारिया मेड़तवाल)

पमार राजपूतोंका गुरू शंकर दास ब्राह्मन, सनाढ्य था, सं ११११ में श्री अभय देव सूरिःका उपदेश सुण भीनमाल नगरमें शिव धर्म त्याग जैनधर्मी हुआ, अभय देव सूरिःको मल्धार विरुद था इस वास्ते मूल गच्छ खरतर, बाद और गच्छमें कई २ गये ।

(श्री श्रीमाल)

श्री दिल्ली नगरमें श्रीमन्त साहश्री मल्ल महतियाण जात पेढ पमार, वह बादशाहके खजानेके मालिक थे, बादशाह श्री मल्लशाहसें, धर्मके बाबत हमेश ठट्ठा करता था, तुह्मारे साहजी ईमान तो जगह पर है ही नही, ब्रह्मादेव, विष्णुदेव, महादेव, देवी, सूर्य, अग्नि, पानी, गणेश, इस तरह, अगर गिनावें तो साहजी लाखसें कम नाम नहीं होंगे, तब कहो, इमान तो कहां रहा, शास्त्र तुह्मारे पुराण ऐसे है सो, ठोड न ठिकाना, एक पुराणकी बात दुसरे पुराणसें गल्त है, सो तुम जानते ही हो, मेंने एक दिन जिन चन्द्रसूरिःसेवडेसें, धूर्त्ताख्यान हरिभद्रसूरिःका बनाया हुआ, सुना था, सो तुह्मारे पुराणोंमें, ठगाई और पागलके बनायेसें मालम देते हैं, गुरू तुह्मारे भोजन भट्ट, आजीविका करनेमें हुशियार, तुलसीकों माता कहे, और चाब जावे, शालग्राम गंडकी नदीका पत्थर, उसकों ठाकुर कहै, और काती सुदी ११ कों बेटाजी, तुलसीमां, सालग बापका, व्याह अपने हाथ करे, हमारे खान सलेमनें कहा था कि, लबे बांदी ऐसा नर, जो पीर बबरची भिस्ती खर, सोतो ब्राह्मण तुह्मारे गुरूकों ही देखके, कहा था, नीचसें नीच जातका दान ले लेते है, छोकरे खिलाता, पाणी पिलाता, बोझा उठाता, सन्देशा लाता सईसी, कोचवानी, ऐसा काम कोनसा है, जो तुह्मारे गुरू नहीं करते है, उडिया देशमें जगन्नाथ तीर्थ में, पंजाब काश्मीरमें, बंगाल वगैरहमें, ब्राह्मण मच्छी बकरेका गोस्त खाते हैं, वेद तुह्मारे ऐसे है,

जिसकों तुम, खुदाके कहे हुए मानते हो, उसमें किस जानवरको, मारके खाणा अंगारमें होमके नहीं वतलाया, छी छी इस वखतके जरूर मुसल्मान लोग गोस्त खाते हैं, मगर ये नहीं कहते हैं कि, खुदाका हुक्म है, कुरानकी रूहसे जानका मारनेवाला गुनहगार है, देखो वेदमें चारों वर्ण वालोंका वेटेका दामाद घर पर आवे, तब पहली मधुपर्क करना, यानें, गऊको जिवह करनी, फिर उस गोस्तको उवालकर, सब घर वालोंसें, मिजमानी करनी, साहजी मुसल्मीनोंको, क्यों बुरा कहते हो, हाथ लगजाय तो, स्नान करते हो, मुसल्मीन जाजमपर बैठ जाय तो, जल नहीं पीते हो, जैसे तुह्मारे वंह्मण वेदके मंत्रको पढ़कर छुरियोंसे, वा, गला घोट कर, घोडा वकरा हिरण वगैरहको, अंगारके कुण्डमें, हवन कर खानेसे स्वर्गमें जाना मानते है, ऐसे हमारे काजी पाजी विसमिल्ला कहके, जानवरोंकी गरदन काटते है, जैसा वेदका मंत्र, वैसा हमारे मजहवका विसमिल्लाह, अरव्वी मंत्र कुरानी है, इस तरह हमेश वादशाह, ताना दिया करै, श्री मल्लजी मुंहता, इस वातकों हमेश विचारे, और पुस्तकोंको देखे तो, वादशाहके वचन, सच्च मालुम देते है, एक दिन वादशाहनें कहा, देखो साहश्री मल्ल, तुह्मारे सब देव ऐसीथे जिन्होंसे तुम तरणा चाहते हो, भागवतके दुसरे स्कंधमें तुह्मारे ब्रह्माजीने सराव पीकर अपनी वेटी सरस्वतीसे जना किया, तोंवा २, जिसके वनाये वेद, और उसकी शन्तान ब्राह्मन, जो कुछ करे सो, थोडा है, इस समयमें, खवर नवेसीने खवर दी के, हजूर, जापनाह ,जिन चन्द्रसूरिःसे वडा आया है, वादशाह श्री मल्लको साथ लेकर, सामने गया, आदाव अरज वजाकर, सामने बैठा, गुरूनें देव तत्व गुरूतत्व और धर्म तत्वका, स्वरूप धर्मोपदेश दिया, वादशाहनें मांस खाना छोड़ दिया, श्री मल्ल साह प्रतिवोध पाकर निर्दोषित जैनधर्मका श्रावक हुआ, वादशाहनें कहा अहो श्री मल्ल, अब तेरा जन्म, सफल हुआ, में इस धर्मको अच्छी तरह जानता हूं, मगर इस धर्मके कायदे करड़े वहुत है, खुदामे मिल जाणे वास्ते, दुनियामें ये एकही धर्म है; वादशाहनें, उसदिनसें, अम्बाडी, मोर्छल, चमर, छत्र, वख-

सीसकर, राजा श्री श्री मल्ल, लिखकर. कुरब हाथी निवेश, और ताजीम दी, तुम्हारी शन्तान सदाके लिए पावोंमें, सोना पहर सकती है, इसकी औलाद श्री श्रीमाल कहलाये, भाईपाइनोंका, श्री मालोंसें रहा सादी मिजमानी श्रीमाल ओसवाल दोनोंसे, कोई ख्यातमे लिखा है श्री मालोंमें महतियाण गोत्र जो है सो ही श्री श्रीमाल पदवी पाई हैं, धर्म पहले शैव विष्णु सबोंकाही रहा था, मूलगुरू गच्छ खरतर है,

(बाबेल संघवी,)

चौहाण राजा, बाबेल नगरका, रणधीर, रगतपित्तके रोगसें दुखी था, उसने कई वैद्योंसें इलाज करवाया, लेकिन आराम नहीं हुआ संवत १२७१ की सालमें श्री जिन कुशल सूरिःजीके गुरू श्री जिन चन्द्र सूरिः, उहां पधारे, राजा वांदणे आया, राजाका वदन जगह २ से फूट गया, गुरूने कहा, हमारे श्रावक होवो तो, आराम होसक्ता है, राजाने कबूल किया, गुरूनें रातकों चक्रेश्वरी देवीकी आराधना करी, देवीनें संरोहणी ओषधी दी, प्रभात समय गुरूनें पेटमें पिलाई, और ऊपर भी लगाई, सात दिनसें, कंचन काया हो गई, बाबेल नगरसें, बाबेल कहलाये, इस वक्त वो गाम वापेऊ बजता हैं, मूल गच्छ खरतर, फेर सत्रुंजयका संघ निकाला, वो बाबेल संघवी बजते हैं, ये संघवी दूसरे है संघवी, और कोठारी, बहुत जातमें है।

(गड़वाणी भड़गतिया)

गडवा राठोड अजमेर परगणा, गांम भखरीमें, श्री जिन दत्तसूरिनें, प्रति बोध देकर, धनकामना पूर्ण करी, गडवेजीसेगड़ वाणी, मश्करी करनेसें भडक उठां, जिसवास्ते पूरसिंहजी कूं लोक भड़गतिया, कहने लगे। गच्छ खरतर सवालख देशमें सोढा राजपूत सवासौ रूणवाल वेगाणी गोत्र घर-रूण गांममें रहते है, उन्हाका मुख्य ठाकुर, वेगाजी, उन्होंके पुत्र नहीं, और क्षीणताकी बिमारी, अकस्मात् श्रीजिन दत्तसूरिः, सवालाख देशमें विच-रते २ पधारे, सोढे राजपूत सब गये, और ठाकुरकी, हकीकत कही, गुरू बोले, क्षीणता मिट जायगी, जो तुम जैनधर्मी हमारे श्रावक हो जाओतो,

इन्होंनें ठाकुर वेगेजीको कही, उसी समय सपरिवार आके मिथ्यात्व त्यागके जिन धर्मी हुए, रूंण गामके नामसें रूण वाल गोत्र हुआ, गुरूनें वेगेजीकों उपसर्ग हरस्तोत्रका, कल्प साधन वतलाया, दूध घृत चावल मिश्रीकी क्षीर खाकर, एक वखत, अरण्य वास, एकान्त ध्यान, सवालक्ष करना, वतलाया गुरू विहार कर गये सं १२०२ में रूण वाल गोत्र हुआ ६ महिना साधनासें, एक महिष जितना वली हो गये, गुरूदेव स. १२११ में अजमेरमें, देव लोक हुए, तव गुरू महाराजके प्रेमी, जो विमानक वासी देव हुए थे, उन्होने आकर सर्व खरतर गच्छके संघको कहा तुम्हारे गुरूदेवसो धर्मदेव लोकमें, चार पल्पकी आयुसें, टक्कलविमानमें, देवता हुए है, तव संघनें कहा, श्रीमधर स्वामीसें पूछ के, निश्चय कर दो, गुरू महाराज कितनें भवसें, मुक्ति सिधायगें, तव वह देवता, महा विदेह पुंडरीकणी नगरीमे, श्री सीमधर भगवानकों, वंदन स्तवन कर, खडा रहा, तव श्रीमधर जिनेश्वरनें दो गाथा कही, वह गाथा, गुर्वा वली, तथा गणधर पद वृत्ति प्रमुख ग्रंथोंमें दरज है, परमार्थ उसका ऐसा है, टक्कल विमानसें—चवके तुम्हारे गुरू, महाविदेह क्षेत्रमें, श्रीमन्त कुलमें जन्म लेकर, एक भवावतारी, उहासे दीक्षाले, केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष होंयगे वह देवता, यहां सर्व खरतर संघको, वह गाथा श्रीमंधर स्वामीकी कही सुनाई, तव सर्व संघनें, जगह २, ग्राम २ नगर २ में, गुरूके चरण थापना कर पूजने लगे, धर्म दाता सम्यक्त्व व्रत देणेके, उपकारी, जिन्होंने लाखोजीवोको, जिन धर्म देकर, तार दिया, इन्होंके पाट मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिः विराजै, वह गुरू रूण पधारे, तव वेगाजीनें पुत्रकी वीनती करी, गुरूने क्षेत्रपालसे पूछी, खोडिये क्षेत्र पालनें, जो विधी कही, चक्रेश्वरी देवीकी पूजा, वतलाई, चैत्र सुदी आशोज सुदी, अष्टमी, नोरल चढ़ाकर, लपसीका, नैवेद्य करनेसें, पुत्र होगा, वेगेजीके पुत्र ४ हुए दो पुत्रकी शन्तान नागोरमें सं. १५७७ में लोढा तपगच्छियोंकी वेटी व्याही थी, पार्श्व चन्द्र सूरि नें, तपागच्छमेंसे अलग सम्प्रदाय निकाली, तव वेगाणी २ पुत्रोंकी शन्तान, उस सम्प्रदायकों मांनने लगी, गुरू खरतर को भी मांनते है, मूल गच्छ खरतर, वीकानेर वगैरहमें वसते है ॥

(पोकरणा गोत्र)

गांम हरसोरका राठौड सकत सिंह, अपने परिवार समेत पुष्कर तीर्थके मेले पर, स्नान करनेकों, पधारे, उहां एक स्त्री, जिसके ४ छोटे २ पुत्र, और उसके सगा सबंधी कोई नहीं, वह विधवा स्त्री अपने ४ पुत्रोंकों, कुछ खानेकों देकर, घाट पर बिठाकर स्नान करने लगी, इतनेमें गोहने, आके, उस स्त्रीके पावोंमें, तन्तु डाला, वह स्त्री पुकारी, इतनेमें खरतर गच्छके, श्रीजिन दत्तसूरि महाराजका शिष्य देवगणिः अकस्मात् थंडिल, जाके आ निकला, सकतसिंह बोला, अरे दोडोरे दोडो, कोई नहीं गिरा-सकतसिंह दया लाकर, उस स्त्रीकों पकडने कूदा, इतनेमें गोहनें, इनकों भी, तन्तुसें, खेचा, तब देवगणिःने, जल निस्तारणी, अमोघ विद्या स्मरण कर, कहाकेमें, मेरा श्रावक जांण, बचाता हूं तत्काल ऐसा आश्चर्य हुआ के, मानो हाथ पकड़के, कोई निकालता होय, दोनोंको घाटपर लाके खड़ा कर दिया, हजारों आलम, ये चमत्कार देख, देवगणिःके चरण पकड़े सकतसिंहने देवगणिःके चरण पकड़के कहा, हे गुरू आपन होते तो आजमें, इस जीवका भक्ष होगया था, धिक् है ऐसे धर्मके चलाणे वालोंको, जो हजारां सूक्ष्म और बडे जीवोंका घात, आत्माका घात, ऐसा नदी, कुण्ड तलावोंमें, प्रवेश कर, स्नान धर्म बतलाया, अब आपने जैसा मुझे जिवतव्य दिया है, ऐसामें ऋणमुक्त हो जाऊं ऐसा करो, तब देवगणि बोले हे महाभाग, मेरे गुरू अजमेरमें है, सो कल यहां पधारेंगें, चौमासा आज उतर गया है, दुसरे दिन गुरू पधारे, धर्म सुनके, ४ पुत्र, उस महेश्वरीके और सकतसिंह सह कुटुम्ब जैन महाजन हुआ, किसी जगह लिखा है इनमें पुष्करने ब्राह्मण श्रावक हो गये इससे पोकरणे गोत्र नाम प्रगटा मूलगच्छ खरतर पुष्करसें पोकरणा कहलाये ।

(अथ कोचर गोत्र)

पृथ्वी अनादि, श्रेष्टि अनादि, छ द्रव्य अनादि, द्रव्य गुण नित्य, पर्याय अनित्य, उत्सर्पणी कालवर्त्तकर, अवसर्पणीवर्त्ते, ऐसे अनंते काल चक्र बीता, और बीतेगा, श्रीआदीश्वर भगवांनसें, जैन धर्म चला, आदिश्वरके

संग, ४ हजार राजवियोंने, दीक्षा ली, उन्होंसे, भूख नहीं सही गई, तब बनमें जाकर, ऋषभ देवका एक हजार आठ नाम बनाकर, गंगाके तट पर, आदि ब्रह्मा, आदि विष्णु, आदि शिव, आदि योगी, आदि बुद्ध, पुरुषोत्तम, जगत्कर्त्ता, इत्यादि स्तवन करते, फलफूल खाते, गंगाजल पीते, वृक्षोंकी छाल ओढते, बिछाते, तीनसे तेसठ मत उन्होंसें चला, वल्कल चीरी तापस कहलाये, ऋषभ देवके पोते, मरीचीनें पहले तो जैन दीक्षा ली, जब क्रिया लोच वगैरह नहीं कर सका, तब सुखदाई दण्डीका भेष बणाया, इसका चेला कपिल, कपिलका आसुरी, आसुरीकों कपिलदेव ब्रह्मदेव लोकमें देवता हुए पीछे प्रकृती १ और पुरुष दोसे २५ तत्वसृष्टिका अनादि पना सिद्ध करा इसके शिष्योंकी संप्रदायमें, शंख आचार्यसें, सांख्यमत प्रसिद्ध हुआ, भरत चक्रवर्तिनें, इन्द्रके कहनेसें, बारह व्रतधारी श्रावकोकों, भोजन कराया, वह भरत राजाकी भक्तिसें, माहन कहलाए, संस्कृतम, माहन प्राकृत शब्दका (ब्राह्मन) मतहन, यानें ब्रह्मको पहिचान, यथा राजा, तथा प्रजा, छखंडके लोक, माहनोंको, भोजन वस्त्रादिसें सत्कार करने लगे, विद्या माहण लोकोंके बालक पढ़णे लगे, तब भरत चक्रवर्तिने, इन्होको पढाणें, ऋषभदेव, ४ मुखसें, समवरणमें, देसना देनेवाले, आदि ब्रह्माके वचनानुसार, अहिंसा धर्मका स्वरूप त्याग व्रतका स्वरूप, छ द्रव्य, नवतत्वका स्वरूप, स्याद्वाद न्याय, गृहस्थके उपनयन, सोलह संस्कार वगैरह अनेक भावमिश्रित जिनयजनका स्वरूपरूप, चार आर्य वेद रचकर संसार दर्शन वेद १ संस्थापन परामर्शन वेद २ विद्या प्रबोध वेद ३ तत्वावबोध वेद ४ पाठशालामें पढाणे लगे, ६ महिनेसें परिक्षा अनुयोग होनेपर, विद्या मुजब इनाम पारितोपिक देणे लगे, और गृहस्थोंकें माननीय, ७२ कला, जो ऋषभ देवनें, दुनियाके सुख जीवनके लिए, ग्रन्थ बनाकर, प्रजाकों सिखाया था, सो सब ग्रन्थोंपर हक्क, चक्रवर्त्तिनें, माहणोकों सोंपे, सोलह संस्कार गृहस्थोंके, जन्मसे लेकर मरण पर्यन्त, गृहस्थोंका करवाना, माहनोके सुपुर्द करा इन्होंमेंसे, वैराग्य पाकर बहुत माहण लोक, ऋषभ देवके पास दीक्षा ले लेकर जगह २ साधू होते रहै, गृहस्थ धर्ममें, त्रिकाल श्रीजिनमूर्तिका

अष्टद्रव्यसें, नाना प्रकारसें, याग (पूजा) करते, साधुओंको वन्दन व उनका व्याख्यान सुनना, व्रत पञ्चखान ५ अनुव्रत ३ गुणव्रत ४ शिक्षा व्रत, पर्व तिथीमें पोसह करनेसे, पोसह करणा माहण प्रसिद्ध हुए, जिन्होंकी आज्ञासें माहण लोक प्रवर्ते उपधान, आवश्यकादि पट्कर्म करै, उन २ अत्यन्त उत्कृष्ट ज्ञानवन्त माहणोको, चक्रवर्त्तेने आचार्यपद दिया, जो वेद आवश्यकादि सूत्रोंके अध्यापक, उन्होको उवझाय (यानेउपाध्याय) पद दिया, जो आचारजओझा अपभ्रंस शव्दोंसे पुकारे जाते हैं, एक दिन, भगवान कैलाशपर समवसरे भरत वांदणेकों गया, और माहण वंश स्थापन करणेकी वधाई सुणाऊं, इस अभिप्रायकों, भगवानने, फरमाया, हे राजा, जो उत्कृष्ट श्रावक, माहण नामसें, तेंनें, स्थापन करा है, वह सव नवमें भगवान सुविधिनाथ निर्वाण तक तो, जैनधर्मी रहेंगे, पीछै जैनतीर्थके साधू विल्कुल विच्छेद हो जांयगे, तव, ये माहण लोक, तेरे वनाये, सम्यक् श्रुत, ४ वेदोंमें, अपनी पूजा प्रतिष्ठा वढानेको, सर्व देवोके देवमाहण, है, इत्यादि आजिवीका जमाने, श्रुतियां वणा २ कर डालेंगे, और क्रम २ सें, जैन धर्मके द्वेषीपणे कर अनेक मतोंके विश्वकर्मा वण बैठेंगें, सर्व ग्रन्थोंमें क्रम २ सें, मिथ्यात्व भरते जांयगे, आगे इन्होंमें, याज्ञवल्क्य उत्पन्न होगा, सो यथार्थ वेदकूं त्यागके, नई कल्पना कर, याज्ञवल्क्य हो वाच इत्यादि अपने नामका वेद श्रुति, जिसका नाम ही परावर्त्तन करेगा, फिर पर्वत, और राजा वसुके समय, यज्ञ शव्दमें, हलते चलते, जीवोकों, हवन करणा मांस भक्षण करणा, वेदका धर्म पर्वत करेगा, भावी प्रवल है भवतव्यता टलेगी नही, चक्रवर्ति वहुत पछताणेलगा, फिर वोला, हे प्रभु, मैने तो अच्छा काम, धर्मी जात थापना करी है, आगे जो करेगा, सो भरेगा, इसतरह ही हुआ, इस वेदमें हिंसा क्यों कर डाले गई, सो स्वरूप आठमें नारदने, रावणसें कहीं है, ये सव अधिकार, जैन रामायणमें लिखा है, इस तरह आर्य वेदकी कई २ श्रुति वेदोंमें, रह गई, वाकी सव, मासा हारी माहणोंने वेदको नष्ट भ्रष्ट कर डाला, वो श्रुतिया, जंगलमें रहनेवाले, व्राह्मनोको जुदी २ याद थी, सो व्यासनें

इकट्ठी करी, इस लिए उसकों ब्राह्मन वेद व्यास कहने लगे, प्रथम संज्ञा वेदकी तीन ही करी, ऋग् १ यजु २ और साम ३ फिर, इनमेंसे, उद्धार कर चौथा अथर्वण बनाया, इस तरह ४ इन्होंमेंसे, परमार्थकी बात बिल्कुल दोसे चार सय श्लोक संक्षा होय तो, आश्चर्य नहीं, बाकी यूं यज्ञ शाला बनाना, यो घोडेको बाधणा, यूं फरसींसें काटणा, यूं अग्निमें पकाणा यो फलाणेको हिस्सा देणा, माता मेध, पिता मेध, अश्व मेध, गौमेध, छाग मेध, फलाणे देवताकों, इस तरह यज्ञ कर तृप्त करणा, सोत्रा मणीं यज्ञ कर, मदिरा पीणा, इत्यादि अधिकार, ही भरा है, इतिहास तिमिर नाशकका तीसरा प्रकाश देखो, वेदोके भाष्यकार संस्कृत कायदेसें वेदकी श्रुतियोंमें विरुद्धता देखकर, आर्षत्वात् ऐसी समाधानी करते है, इस तरह वेदका हाल डाक्टर मेक्स मूलर संस्कृत साहित्य ग्रंथमें लिखते है कि वेदके मंत्र भाग बणेको, ३१ सो वर्ष, और छंदो भाग बणेको, २९ ससै वर्ष मात्र हुए है, दुसरी वेर वेद फिर लिखणेका समय विक्रम सम्वत् तीनसेमें मुन्शी जीयालाल अग्रवाल फरूख नगरवाला, सिद्ध करता है, और पुराणोंका बनाना विक्रम सम्वत् सातसेमें, उक्त पुरुष सिद्ध करता है ये मनुष्य भी वडा खोजी नर रत्न है, पहले इन्होंका वंश वेदमतका था, इन्होंके पिता श्वेताम्बर जैन हुए, अभी ये दिगम्बरी जैन अच्छेगृहस्थ सुननेमें आते हैं, कोचर वंशोत्पत्तिमें, ये बात इसवास्ते लिखी है के, कोचर वशके वडेरे, पहले तो जैम धर्मी थे, वाद फिर वेदमतमें होगये, वाद फिर जैन राजा हुए, वाद सुजाण कवर परम जैन धर्मी राजाके, ७२ सामन्त, परम जैनधर्मी थे, जिसका फिर, इन ७२ पुरुषोंकों माहेश्वरी होना पड़ा, सो वृत्तान्त यहां थोड़ा लिखते है, जैन इतिहास मुजब,—

खंडप्रस्थ नगर, जो अब मालवदेशकी सीमापर खण्डेला बजता है किसी इतिहास लेखकने खंडेला जयपुर शमीपस्थ लिखा है खंडेल राजा परम जैन धर्मी था, गुरू इनके दिगम्बर जैन थे, राजानें भट्टारकजीसें पूछा, मेरे पुत्र नहीं, सो स्वामी क्या कारण है, भट्टारकजी बोले, चैत्यालयमें, नाना- विधीसे पूजन करा अतिथी भिक्षुकोंकों, दान दे, साधर्मी वात्सल्यता कर, तब

सम्यक्ती देव प्रशन्न होकर, तेरी कामना होणी है तो, पूर्ण करेंगे, राजाने, अपने राज्यमें वह पुण्य कृत्य कराणा प्रारम्भ किया, १२ महिने सम्पूर्ण होनेसे, चक्रेश्वरी देवीनें, आकाशवाणी करी के, हे राजा, पुत्र तो तेरे होगा और दयावन्त, दातार, शूरवीर भी, होगा, परन्तु ब्राह्मण मिथ्यात्वी उसकों, धोखा देकर, मिथ्यात्वी, और भिखारी कर देंगे ब्राह्मण यज्ञथम्भ, जहां रोपते है, उस थम्भके नीचे अरिहन्तकी मूर्ति गाड देते है, जिससे कोई दयाधर्मी देवता देवी वगेरह उस यज्ञको विध्वंस करे नहीं, इस लिए सम्यक्ती देवता तो, उस यज्ञके पासही नहीं फुरकते है, ऐसा कह, देवी अन्तर्ध्यान हुई, पुत्र हुआ सुजाण कंवर नाम दिया, सम्पूर्ण ७२ कला सीखके हुशियार हुआ नवतत्व स्याद्वाद न्याय पढा, पितानें, पुत्रकों कहा, हे पुत्र अपने सुभटोंकों भेज २ कर, कहांई भी हिंसक यज्ञ मत होणे देणा, लेकिन तूं खुद यज्ञ होता हो, उहां मत जाणा, ऐसी शिक्षा देकर राज्य तिलक देकर, आप अनसन आराधकर स्वर्गवास हुआ अब राजा सुजाण सिंह, जिनेन्द्र देवके, गांम २ में, मन्दिर पूजा धर्मध्यान करता, जैनमुनि जैन सावर्मीयोंकी भक्ति करता, दयावन्त, कहीं भी जीवोंको कोई मारने नहीं पावै, ऐसी उद्घोषणा कराता हुआ सुखसे सामायक, प्रतिक्रमण, पोसह, दान, शील, तप भावनामें लीन, अपने सामन्तोंकों भेज २ कर, जगह २ हिंसक यज्ञ, ब्राह्मनोंका बंद करा दिया, जैनधर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनोंको समतुल्य गिनता हुआ, जैन ब्राह्मनोंकों लाखो क्रोडोंका द्रव्य देता हुआ हिंसक जीवोंको सजा देता वेदकी हिंसा जगह २ बन्ध करवादी, तीन दिशामें दयाधर्म सर्वत्र फैला दिया, उत्तराखण्डमें, म्लेच्छ मांसाहारियोंकी वस्ती, गुण पचास, वडी राजधानियोंमें, म्लेच्छोंहीकी वस्ती समझ इस दिशामें धर्मोपदेश नहीं करवाया, अब इस समयमें मांसाहारी ब्राह्मनोंको, मास मिलणा मुशकिल हो गया, पहले तो देवताओंके नामसें, यज्ञके वहानेसें, वडे वकरेका मांस मिल जाता था, तब काश्मीर देशमें, ब्राह्मनोंने गुप्त सभा- वेद धर्मी मांसा हारियोंकी सुजाणसिंहके भयसें, इकट्ठी करी, उहां ऐसा भाषण करा ईश्वरका कहा हुआ वेद, उसका जो कर्मकाण्ड अश्वहवन-गऊ

हवन, मधुपर्क वगैरह, पाखण्ड नास्तिकमती वौद्ध जैनोंनें, वन्द कर दिया, पुरोडासा यज्ञकी मासप्रसादी देवता, पितर, ब्राह्मनोंको जो मिलता था, सो सब बन्द कर दिया, इस वास्ते ऐसा कोई ऊपाय होणा चाहिये, सो यज्ञ पीछा शुरू हो जाय तब पांच ऋषियोंने इस बातका प्रचार करणा कबूल करा, और मनमें पांचों दाय उपाय सोचते, मरु धरमें आये, यहा इन्होकों, ४ राजपूत मिले, जिन्होको सुजाण कवरने नोकरी व जागीरसें, बे तरफ कर निकाल दिये थे, वह चारो, आबूगिरी राजकी तलहटीमें पांचो ऋषियोंको मिले, इन्होंने अपना २ दुःख उन ब्राह्मनोंको कह सुनाया, वस ब्राह्मनोंको, भूखोकों भोजन जाने मिला, विचार करा ये ४ उस सुजाण सिंहके, घरके भेदु है, अपना मनोरथ, इन्होंसे सिद्ध हो जायगा ऐसा विचार कर बोले, तुम हमारे कहे मुजब, करो तो, राज्यपति, राजाधिराज बन जाओगे, उन्होंने कहा, हे ऋषियों अधोंको तो, नेत्रही चाहिये है, हम इसी आसामें फिर रहे है, वह चारो, इन्होंके सग होगये, आबूपर जाके, इन्होंको कहा के, हम यज्ञ करते है, तुम जीते हुए जानवरोंको पकड लाओ, यद्यपि धर्म उन्होंका जैन था लेकिन राज्यका और धनका लालची, क्या क्या, अकृत्य नही करता, वह चारों, जगली भीलोसें मिले, और उन्होके हाथसे, तरह २ के जानवर पकडवा मगाये, यहा ब्राह्मनोंनें अनलकुण्ड बनाया, और उन जीवोंकों हवन करना प्रारम्भ करा तब वह राजपूत, घभराये, ब्राह्मनोंनें कहा हे राजपूतों, वेदमत्रासे, जो देवता, इन्द्र, वरुण, नक्त, पूषा, वगैरहको, बलि दी जाती है, इन जीवोंकी, हिन्सा नहीं होती, ये जीव, और, करणे, कराणेवाले, सब स्वर्ग ही जाते है, वडा पुन्य होता है, अब उनके दिलका खटका दूरकर, ऋषियोंने, मास आपभी खाया, और उन्होको भी, खिलाया, पहाडके वासिन्दे, भील मीणोंको भी खिलाया, अब वह भील मीणे, इन्होके हुक्म बरदार भये, ब्राह्मणोंनें कहा, हम जो छल करेंगे, सो तुम सुणों, हम एक ऋषिकों, महादेव बनायगे; एक भीलणीकों पारवती, और आबू पहाडसे ऐसी २, औषधी लाई जांयगी, उसका धूवां लगते ही मनुष्य तत्काल बेहोस हो जायगे, तुम लोक भीलमेंणोको संग लिए, यज्ञस्थानके आस

पास ही रहणा, और एक मनुष्यको भेजके सुजाणसिंहको, कहला भेजणा कि, हे राजा तुमनें तो, सारे आर्यावर्तमें, यज्ञ करणा बंध करवाया, लेकिन् ब्राह्मण तो, खण्डप्रस्थ नगरके पासही जीवहवनरूप यज्ञ शुरू करा है, वह जब यज्ञविध्वंस करणे आवेगा, तब हम उन्होंको, जहरका धूंवा देकर, अचेत कर भाग जांयगें, तुम लोक उस वक्त खंडप्रस्थक राज्य लेकर चार भाग करलेणा, और ब्राह्मणोंकी भक्ति, राजसूयादि यज्ञ करणा ब्राह्मणोंकी, ईश्वर समझणा, उन्होंकों, यथार्थ यह वार्ता पसन्द हुई, बस वैसाही, हुआ, वह सब ७२ राजा युक्त, विष धूम्रसें, अचेत हुए, जैसा क्लोरोफार्मसे होते है, उन्होने, राज्य दबा लिया, ब्राह्मण भाग कर एक योगीकों बैल पर चढ़ाकर, एक औरतको संग लिए, उन्होंके पास पहुंचे, ठंडा पानी छिडक कर उस मूर्छाका उतार करना ठंडे पदार्थ कपूर वगैरह वो विप्रलोग जानते थे, सो करवाया, वह जोगी बैल पर चढा, भस्मी लगाये, गलेमें सांप, आदमियोंके खोपरियोंकी माला पहना खडा रहा, इतनेमें मूर्छा रहित उठें, शस्त्र इन्होंके पहले ही ब्राह्मणोंनें, उठा लिए थे, ब्राह्मन लोक बोले, अरे ये महेश्वर शिवपार्वतीनें, तुमकों सचेतन करा है, तुम सब ब्राह्मणोंके यज्ञविध्वंस करणेको आये थे, तब दिया जो श्राप, उससे तुम पत्थर हो गये थे, अब तुम महेश्वरकी उपासना करो, इतनेमें एक मनुष्यनें खबर दी के खण्डप्रस्थमें, ४ पुरुष राज्याधिकारी होगये है, तब ब्राह्मनोंनें सुजाणसिंहको कहा, अरे अरे तूं मृत्युनींदसे जागा, बबसे जागा नांम प्रगट हुआ, तब ब्राह्मणोंने, अपनी २ ऋत उन्हों पर लगाई, वह सब माहेश्वरी कहलाये, इन ब्राह्मणोंने, अपने वेद धर्म पर अपने पंजेमें गंठे बाद इन्होंकी स्त्रियें, बाल बच्चे, और कुछ २ व्यापार करणे लायक धन, उन ४ राजपूतोंसे दिलाया, उहां ये माहेश्वरी जात हुई कोई कहते है, डीडवांनेमें होनेसे डीडू कहलाए, उस नगरीका नाम महेश्वर धरा, वो चोली महेसर मालव देशमें है सुजाणसिंह पर ब्राह्मणोका द्वेष था, तब ब्राह्मणोंने कहा अरे भिक्षुक तूं इन्होंकी पीढीयोंका गुणकीर्त्तनकर, मांग खा, वह इन बहोत्तरोंका भाट हुआ, विचारा करे क्या, परवस पड़े लगे

नहीं कारी, ये सब उहा मालवदेशसे, उठके मारवाड डीड वाणेमें आवसे वह सब महेश्वरी डीडू वाणिये कहलाये, ।

इन माहेश्वरियेमें, जोगदेव पमारके बेटे भी, महेश्वरी डीडू होगये थे, सो कई पीढीयों तक माहेश्वर ही रहे, ये बातका पूरा संवत् तो हाथ लगा नहीं है, मगर विक्रम सम्बत् सातसैका जमाना सम्भव है, वह चार राजपूत पमार १ चौहाण २ पड़िहार ३ सोलंखी ४ इस जातके थे, अव्वल वो सुजाणके नोकर थे, कर्म वस राजाका तो जागाभाट हुआ, और नौकरसो ठाकुर हुए, अब ब्राह्मण लोक इन महेश्वरियोंसें, कहणे लगे, तुम यज्ञ कराओ, और यज्ञका भाग पुरोडासा मास खाओ, तब ये राजपूत जैनधर्मीपणे, दयाके भींजे हुए अन्तरंग, से बोले, है ब्राह्मणों, ये अकृत्य तो, हमसे नहीं होगा, तुमको गुरू माना, महेश्वर देवभी पूजा, लेकिन ये काम तो, मरजायगे तोभी नहीं करेंगे, तब ब्राह्मण, मरणे, परणे, दान, दापा, लेणा इन्होंसे, ठहराया, क्रम २ सें इन्होंकी सन्तान, ब्राह्मण मिथ्यात्वीयोंकी संगतसे, रात्रीको भोजन, बिगर छाणा हुआ पाणी, और कन्दमूलादि अभक्ष पर उतरते गये, पीछै स्वामी शंकरका मत चला, उन्होंने जगतमें दयाधर्म फैला हुआ देख, अपना सिक्का जमाणेको, जैनियोंको मारकुटके वैदपर यकीन तो करवाया, लेकिन यज्ञकी क्रिया तो जैनके हुए दयाधर्मीयोंकों, कब रुचे, तब ब्राह्मणोंसे संप करा, सल्ला विचार कर कहा, अब बेदकी क्रिया छोड दो, वेद ईश्वरोक्त है उसकी फकत श्रुतिया विना अर्थ सोलह संस्कारादिकमें, काम लाओ, लेकिन यह बात कहते रहो, वेदकृत्य सच्चा है, ईश्वरोक्त है, यज्ञ करणा, सतयुगका काम था, अब कलियुग है, इसमें घी तिल खोपरा चिरोंजी, विदामादिक सुगन्ध द्रव्यही, हवन करणा चाहिये, ऐसा कराते रहो, करते रहो, नहीं तो, ये लोक हिन्सा जीवोंकी देखकर, फिर जैन होजायंगे, और ऐसे २ शास्त्र बनानेका हुक्म ब्राह्मणोंको दिया के प्रजाका, दिल ठहरावे, तब पारासर स्मृतीमें ऐसा श्लोक डाला (यतः) अश्वालंभ गवालंभं, पैत्रिकं पलमेवच । देवराच्च सुतोत्पत्तिः, कलौ पंच विवर्जयेत् । (अर्थ) अश्वहोमणा गौ होमणी, श्राद्धमें, तथा मरेके पिंछाडी, पिंडमें,

मांस देणा, और बड़े भाईकी स्त्री, पति मरे पीछे देवरसें लडका उत्पन्न करणा यह पांच कांम कलियुगमें मना है, यह काम होता था, वो ब्राह्मण वेद मतवालोंका सतयुग था, उसके पीछे जैन आचार्योंका उपदेश सुणके राजा राजपूत तथा महेश्वरी पीछै जैनधर्मी होते गये, सो हमने संक्षेपमें कई २ महेश्वरियोंका, जैनमतमें होणा, पीछा लिख भी दिया है, तब विक्रम सम्वत् तेरहंसेमें माधवाचार्य दक्षिणमें हुए, इससे माधवाचार्य सम्प्रदाय विष्णुमतमें कहलाती है, रामानुज, शंकरस्वामीके मतकों धक्का लगानेवाला दयाधर्म कुछ माननेवाला दुनियांको गोष्ठीप्रशाद रामचन्द्रजीका भोग खिलाकर रिझाणेवाला वेदपर पडदा डालकर अपना भक्तिमार्ग दिखाणेवाला, रामचन्द्रको ईश्वर माननेवाला, शठकोप कंजरका शिष्य मुनिवाहन, यवनाचार्य, चौथे दरजेके शिष्य रामानुज, इस तरह प्रगट हुए द्वैतपक्ष जैनियोंका मन्जूर करा, प्रपन्नामृत ग्रंथ बनाया, सौच मूलधर्म मानकर, खड़े तीन फाडेका, तिलक और शंख, चक्र, गदा, पद्म, लोहेका तपाकर, अपने मतावलंबियोंको, दाग देणेवाला, महादेवके लिङ्गको नमस्कार नहीं करणेवाला, उसने विष्णुमत नया सांक्षमत चलाया, इसके पीछै, माधवाचार्य २ नीमार्क ३ और विष्णुस्वामी ४ विष्णु स्वामीसे निकला वल्लभाचार्य, इन्होंने कृष्णकों देव माना इत्यादि मत चलाया, माधवाचार्यनें फिर अपने मतावलंबियोंको, जैन होता देखके, और जैन पंडितोने शंकर स्वामीके शिष्यनें, शंकर दिग्विजय अभिमानसें जो बनाया उसको खण्डन करता, ऐब लगाता देखके, शंकर स्वामीके २५० वर्ष वीते पीछै दूसरा शंकर दिग्विजय बनाया, उसमें अपने मतावलंबियोंको, ऐसा डर बैठाया, जैसै कोई मातापिता अज्ञान बालककों डराणेको कहते है के हाऊ है, बाघड़ है, ये है तो कुछ नहीं, लेकिन डराणेको कहा करते है, सोहाल किया है, (यत) न पठेत् यावनीं भाषां, प्राणैः कण्ठगतैरपि । हस्तिना मार्यमाणोपि, न गछेज्जिनमंदिरम् । १ । अर्थ । उरदू फारसी हिन्दुस्थानी प्रमुख भाषा न पढणी न बोलणी चाहै प्राण क्यों नहीं चले जांय, और हाथी मारता होय तो भी शरण लेणे भी, जैन मन्दिरमें नहीं घुसणा । १ ।

इसमें सिर्फ अपने वाडेकों मजबूत करणेसिवाय और कोई भी, प्रमाण सिद्ध नहीं होता, खैर ब्राह्मनोंके वचनसें अज्ञान बालकवत् शैव विष्णु लोक जैन मन्दिरमें नहीं घुसते हैं, और ज्ञानवान, इस वचनकों, कुजड़ीकेबेर समझते है, अपने बेर मीठे, ओरोंके खट्टे, लेकिन बडा अफसोस तो यह है कि शैव विष्णु ब्राह्मन लोक प्रथम लिखे शिक्षाकों क्यों भूल गये, माधवाचार्यने लिखा है कि उर्दू फारसी मत पढो, सो तो हमनें हजारों मनुष्योंको, फारसी उर्दू पढके नौकरी करते व वकालत करते देखे हैं, माधवाचार्यनें, संदिग्ध वचन धरा है, विचार करता था कि, सभामें पडित लोक प्रमाण पूछेंगें, तब तो कह दूंगा कि, जैन नाम वेश्याका है यानें। वैष्णवोने, हाथीसे मरते भी, वैश्याके घरमें जाणा नहीं, तब तो सब लोक कबूल करही लेंगे, नहीं तो अपढ लोकोंकों पञ्जेमें गाठणेकों, प्रगट नाम जैन मन्दिरहीमें जाना निषेधक होगा, इस समय, वोही हाल वण रहा है, ये इतनी वात प्रसंग वस कोचर जाती महेश्वरी हुए पीछे फिर जैन महाजन हुए, इस वास्ते जैन लोकोंकों, वाकिफ करणेको, लिखी है अब कोचरोंको महाजन होणा, लिखते है. सम्वत् ९५८ में पमार वंसी डीडू महेश्वरी जिनोंकी प्रथम जात. पवार डोडा, पीछै जोगदेव चोटीलेका पुत्र सुजाण कुंमर साथ, महेश्वरी होगया, जिनोंमें पंवारोकी राठी जात पड़ी, राठियोंके १६२ नख, जिनोंमें, डोडा मुंहता १२५ में नखमें, डोड़ाजीसूं डोडा मुंहता कहलाया सिरोहीमें पंवार वंसी राज करते थे, उन्होंकी दीवानी करणेसें मोहता पद, डोडाजीकों, राजानें इनायत किया, प्रथम सिरोही पमारोंनें वसाई थी सो वेद गोत्रके इतिहासमे हमने लिखा है, जब गोढ़ वाढमें विष्णु शैवमती पोरवालोंको, हरिभद्रसूरिजीने, उपदेश देकर, जैनी करा, तब डोड़ाजी भी जैनधर्म

---

१ डोडाजीसे डोडा मोहताराठी वजने लगे ये माहेश्वर कल्पद्रुम पाने ११३ में २ सिरोही पमारोंमे वसाई सो लेख कमले गच्छके महात्मा लखूजी वेदोंकी पीढी दी जिसमे लिखी है और भी कई गोत्रोंका नांम गांम देकर हमको ये इतिहासमें पहले सहायता दी है इन्होंका जम माननीय है कोचर वंसकी उत्पत्ति हमकों कोचर मुंहता लूण करणजी जे संक्षेप दी थी सो धन्यवाद देता हूं।

धारण किया है विक्रम सम्वत् ९।९८ में यहांसे जैनधर्म पालणें लगा, पीछे इन्होंके पोते स्याम देवजी ब्राह्मनोंकी मंगन, राजाओंकी नोकरीसे, श्राद्ध करना, मरेके पीछे, सब वरवालेनें, बाल मुंडाणा, इत्यादि अनेक कर्म मिथ्यात्वीयोंका करणें लगे, इस वक्त सं. १००९ में श्रीनेमिचन्द्र सूरि बृहद्गच्छ वालेनें, पुनः मिथ्यात्व छोडाय, बारह व्रत उच्चराय सम्यक्त्वकी पहिचान कराई, और गुरुनें फरमाया, यहांसें धन माल लेकर तूं गुजरात पाल्हणपुर चलाजा, यहां राज्यमें भंग होगा, तब श्याम-देवजीनें, अपने पुत्रकों, बहुतसाधन देकर, राजासे प्रच्छन्न भेजदिया, वह रामदेव, उहां बहुगयत करणें लगा, यहांसे पाल्हणपुरी वोहरा कहलाये, देवी इन्होंकी वीसल, गुजरातमें मांनी, पहली सच्चाय थी, सं. ११३४ में पाल्हणपुर दुकान रह वास पूगल करा, तबसें पूगलिया वजने लगे, पीछे पूगलमें मुसलमानोंका एल फैल देखके, सं. १३८९ में पूगल छोडके, मंडो-वरमें श्रीमंडजी आकर वसे, सं. १४४९ में महीपालजीकों राव चूंडा-जीनें मारवाडका सब काम सुपर्द करा राठोडोंने मुंहता पद फिर दिया इस महीपालजीके पुत्र नहीं सो चित्तमें चिन्ता किया करे एक दिन सांझत गांमके वासिन्दे महात्मा पोसालिया लंगोट वद्ध तपागच्छके किसी राज-काजके वास्ते मंडोवर आये वो काम महीपालजीके हाथ था महात्मा इन्होंके घर आया और बोला महताजी ये काम मेरा करो तुमारा कोई काम मेरे लायक होय तो कहो तब महीपालजीने वह काम राव चूंडजीसें कह निर्वाण चढाया और कहा मेरे पुत्र होगाया नही तब महात्मा बोला आज पीछे तेरी सन्तान तपागच्छके महात्माओंको गुरु मानें तब विधी बना देता हूं जिसमें पुत्र होगा इसके पहले सिन्धमें तथा मंडोवरमें रहते नेमिचन्द्र सूरिके पाटधारी खरतर गच्छकों गुरू मानते थे तब महीपालजीनें तपागच्छ मानना कबूल करा। तब महात्माने कहा—आसोज चेतमें नवरते करो, वीसल देवी मनावो पुत्र होगा। जब देवी कोचरीके रूपसे बोलेगी, तब कोचर नाम देना, फिर तुमारे वंशको कोचरीका अपशकुन नहीं लगेगा, पूजन आसोज चेत् ८ तथा ९ करना। वीसलरायकी भैंसेकी असवारी है, पुत्र जनमे तब अथवा

परणै तब १।) देवीकी भेट करै । जब पहले पुत्रका कोचरमें आधान रहे तब पाच महीना स्त्रीके वीतनेसे पूजे तो १।) कलसमें राती जागा दिरावे दसहरा पूजे लोंगी हाथ १।) नारेल १ नव नैवेद्यसे पूजा करणी, इतना काम कोचरोको करना नहीं, काला कपडा, नीला कपडा, रखै नहीं; धूवरा भैस बकरी सांकल राखै नहीं, बिछियेंमें रुणरुणा डालै नहीं; चन्द्रबाईका चूडा पहरै नहीं, कदास कोई पहरै तो पीहरसें पहरै चरखा पालना झुणझुणा राखे नहीं,। पीला ओढणा पहले पीहरका स्त्री ओढे, पीछे घरका ओढे, इतना काम करणा तब महीपालजी सब कबूल कर, वीसलदेवी मनाई, पुत्र हुआ, कोंचरी बोली, तब कोचर नाम दिया। पीछे कोचरजी मंडोवर छोड-कर महीपालजीके संग फलौदीमें आयबसे, सम्वत् १५१५ पीछे महाराजा सूर सिंहजीके संग, उरजाजी कोचर वंशी बीकानेर आये उसमें उरजेके बेटे आठ जिसमें रामसिहजी १ भाखरसीजी २ रतनसीजी ३ ओर भीममीजी पिताके संग बीकानेर आये, बीकानेरमें महाराजा सूरसिंहजी सं १६७२ में लेखणकी खिजमत इनायत करी और गांमपट्टा दिया, जिन्होंकी शन्ता-नके घर अन्दाजन १०१ बीकानेर वसते है फिर तो सायर मंढी दीवानी वगैरह, अनेक कामके करता सामधर्मी राजाओके हुए, कितनेक घर रतन गढ बीदासर गाम ददरेवा या गाम सारूंडे इलाके राजगढ, या तालूके सदरमें, रहते है, बेटे ४ फलोधी उरजेजीके रैह राहूजी १ डूंगरसीजी २ पचायण दासजी, ३ राजसीजी ४ इन्होंके घर ८० अन्दाजन फलोधी बाकी जोधपुर वगैरह बडी मारवाड़ सब मिलके जुमले अन्दाजन घर तीनसय कोचरोंके होयगे, जिनराजके मन्दिरोंकी भक्ति सातक्षेत्रमे धन लगाणा, गुरुभक्ति, सनातन जैनधर्म पर विचारणा, सूरवीर नामी २ पुरुष इन्होमें हुए, और होते जाते है, फलोधीमें, केइकोचर कानूगा, वजते है, (दोहा) देव गुरूकी भक्तिधर, पुत्र वधेपरि वार । अनधनसे चढतीकला, कोचर वड सुखकार ।। १ विद्यमान तपागच्छ ।

(पीढियोंकी तफसील)

रामदेवजी १ हरदेवजी २ धनदत्तजी ३ वाहडजी ४ भीमदेवजी ५

ऊग्रमसीजी ६ जसवीरजी ७ मेघरायजी ८ श्रीचन्दजी ९ पालणसीजी १० मूलराजजी ११ देहडाजी १२ भीमड़जी १३ चम्मडजी १४ आझणजी १५ महिपालजी १६ कोचरजी १७ भाणोजी १८ देवोजी १९ मीहोजी २० उरजोजी २१ ।

(अथ वेदश्रेष्टी गोत्र)

प्रथम राजपूत धूम १ अगन २ धीर ३ रावसी ४ धांधू ५ वीमल ६ आसल ७ सोमदेव ८ इन्होंके पुत्र ११ सो सब पमार कहलाये, सोढलसी इसकी औलाद सब सोढा कहलाये, भोमदेव १० सीहलदो भाई, भोमरनरदेव, ११) धीरके पुंडरीक १ माधादेव २ कीरतःचन्द ३ जोधदेव ४ सोपाल ५ धरणीवाट ६ नेरस ७ गर्द्दभिल्ल (गंधर्वसैन ८ विक्रमादित्य इन्होंके पाटानुपाट ५ राजा विक्रम हुए ५ भोज हुए राज तखत उज्जैन लघु भोजके मरे पीछे राज्य गया १२ पुत्र उहांसे निकल गये ६ वीमलका ७ चक्रवर्त्ति ८ पालणदेव ९ जोगीन्द्र १० ११ समरसेण १२ सुखसेण १३ नरदेवके गोदवनराज १४ अचलसेण १५ कर्मसेण १६ कवरसेण १७ सोहसेण १८ वीरधवल १९ देवसेण २० सनखत्त २१ सेणपाल २२ आसधर २३ महीधर २४ शिवधर २५ विक्रमसेण २६ भीमसेण २७ सामदेव २८ वछराज २९ सुदवछ ३० रतनसी ३१ चन्द्रसेन ३२ । २६ पटधर भीमसेन भीनमालनग्र अपणे नामसे वसाया और सिरोही नगरके पहाड़ पर गढ़ वणाया इस वास्ते नगरका नांम सिरोही हुआ ३२ डूंगरसी ३३ रामसी ३४ कनकसी) भीमसेनके तीन पुत्र उपलदेव बडा सो तो ओसिया वसाई सामदेव सिरोहीका राजा हुआ आसल भीनमालका राजा हुआ इसमें ऊपलदेवने तो जैन धर्म धारण करलिया सो ओसवाल हुआ और आसलका श्रीमालगोत्र प्रसिद्ध हुआ नाना श्रीमल्लराजाके नामसें २७ भीमसेणका २८ ऊपलदेव रत्नप्रभसूरिःनें सेठियागोत्र थापा और ओसवाल कहाया भीनमालमें आसल, पीछे कनकसी, सामदेवके शन्तानको राजा करा।

२८ ऊपलदेवके भृगुनरेश २९ चक्रवर्त्त ३० पालदेव ३१ जोगीय ३२ कांगुर ३३ समरसी ३४ सुखमल ३५ सुख[illegible] । छोटा भाई अचल,

सो भीनमालके राजा कनकसीके गोद दिया, सालो ३६ समरथ, ३७ करमण ३८ वोहत्थ ३९ यहांसें भीन मालका राज्य सिरोहीवाले इन्होंके परिवार वालोंने दाब लिया, यहां ४ पीढी तक भीनमाल और ओसियाका सिरोहीका एक राजाही हुआ, ४० वीरधवल नाणाने पैदा हुआ इस समय विक्रमादित्य पमार उजैणमें राजा हुआ, इसके वहिनका बेटा, भाणजा, सालिवाहन प्रतिष्ठान पुर (महेश्वर)का राजा सका, चलाया, ये राजा जैन था, उन्होकी शन्तान पहले महेश्वर, तथा गुजरात भावनगरमें, पालीताणे राज्य करते है।

यहांसे व्यापार करणे लगे ४० वीरधवल ४१ पुन्य पाल ४२ देवराज. ४३ सनखत्त ४४ जीवचन्द ४५ वेलराज ४६ आसधर ४७ उदयसी ४८ रूपसी ४९ मलसी ५० नरभ्रम ५१ श्रवण ५२ समरसी ५३ सावंतसी ५४ सहजपाल ५५ राजसी ५६ मानसी ५७ उदयसी ५८ विमलसी ५९ नरसी ६० हरसी ६१ हरराज ६२ धनराज ६३ पेमराज सुखराजभाई ६४ पेमके थानसी ६५ वैरसी ६६ करमसी व्यापार भी करता और वैद्यविद्या भी करणे लगा लोकवेद २ कहते ६७ धरमसी ६८ पुनसी ६९ मानसी ७० देवदत्त ७१ दुलहा स. १२०१ में चित्तोडके राणा भीमसीकी राणीके आखमें, आकका दूध गिर गया, तब दुलहाको बुलवाया, और कहा तुम वेद्य नाम धराते हो राणीजीकी आंख अच्छी करो, तब दुलहा बोला, अभी दवा लाता हूं, वो चौमासा श्रीजिनदत्तसूरिःजीका चित्तोडमें था, गुरूके पास जाके, अरज करी, तब गुरूने कहा तुमारे पोते दो है. सो एकको. हमारा श्रावक करो तो, तत्काल भाग्य खोल देता हू. दुलहेने कबूल करा तब गुरू बोले जाओ जो तुम लगाओगे उमसें तत्काल सिद्धी होगी दुलहेजीनें घीमें गुड मिलाके आखमें लगवाया, तत्काल आंख अच्छी होगई, तब राणाजीनें कुरब बढाकर, वैद्य पदवी दी यहासे श्रेष्ठि गोत्र बदलके वैद गोत्र हुआ, दुलहेके ७२ वर्द्धमान ७३ सच्चा तथा शिवदेव शिवदेवकों जिनदत्तसूरिःका वासक्षेप दिलाकर खरतर गच्छमे कर दिया, वो वर्द्धमानवैदकान्हासर, अजीम गञ्ज, मारवाड़ वगैरह देशोंमें, अभी चिरंजीवी है सच्चाके ७४

सहदेव और करमण ७५ सहदेवके जसवीर ७६ मोहले ७७ के माणक भाई गोद माणकसी इन्होंकी शन्तान बहुत फैली ७८ देल्हो ७९ केल्हणसी ८० त्रिभुवनजी ८१ मादूलसीजी ८२ लोणाजी लाखणसी जैतसी ३ भाई २ भाईतीकेजी संग बीकानेरमें आए जैतसीजीका परिवार फलोधीमें अन्दाजन ८० अस्सीघर वसते होंगे अवशेष सब मारवाड़मे लोणाजीके ८३ श्रीमन्तजी ८४ अमराजी सूरमलजी भाई ८५ अमरेकासीमाजी ८६ जीवणदासजी जीवण देसर बीकानेरके इलाके गाम वसाया ८७ ठाकुरसीजी ८८ राजसीजी ८९ आसकरणजी ९० रामचन्दजी ९१ उदयभाणजी ९२ दौलत रामजी ९२ माणक चन्दजी ९३ बमडसीजी ९४ मूल चन्दजी अबीरचन्दजी गच्छ कुंअला देवी सचाय सेवग बलि अद

(मिन्नी खजानची भुगड़ी साख १५)

मोहनसिंहजी जातका चौहाणराजपूत उसने दिल्लीमें मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिःसें प्रति बोध लेकर महाजन हुआ स १२१६ में मोहनजीरामीन्नी खजानेका काम राव बीकाजीका करा खजानची बजने लगे, भुगड़ी सूखे बेर सिन्धमें बेचते थे इसवास्ते भुगड़ी नख हुआ बाकी नख इनमेसे फटे है लेकिन नाम नहीं मिला, इसलिए मिलणेसें लिखेगे, मूलगच्छ खरतर

(मुंहणोतगोत्र पींचागोत्र)

किशनगढ़ मारवाड्के रावराजा राठोड़ रायपालजीके १२ पुत्र थे, सो मोहनसिंहजी और पाची सिहजी भाइयोंकी अणबणतसे जेसलमेर गये, उहां रावलजीने बहुत खातर मुजमानी करी, उहा माणिक्यसूरिः महाराजके पाटधारी, श्री जिन चन्द्रसूरिःका, त्याग वैराग्य उत्कृष्ट ज्ञान, तपकी तारीफ सुणके, हमेश व्याख्यान सुणने, आने लगे, अन्तकों मिथ्यात्व त्याग गुरूके पास सम्यक्त्व उच्चर कर व्रतधारी श्रावक हुए रावलजीनें बहुतही महिमा करी, जेसलमेरमें वसे मुणेजके मुहणोत, पांची सिंघजीके पींचा गोत्र, प्रगट १५९५ में हुआ उहा सम्वत सोलेहसेके करीबमें, तपा गच्छके विद्यासागर जतीनें मुहणोत गोत्री खरतरोंकों, अपने गच्छमें कर लिया पींछे खरतरमें ही रहै, बाद उहांसे मुहणोत किसनगढ़ जोधपुर वगैरहमें राज्यके मुसद्दी हो गये,

ठाकुर वजते हैं, वस ये आखिरी जात है ये विद्यासागर दूंढियोंकी तरह क्रिया कष्ट दिखाते बृहद्गच्छी खरतरादि गच्छोंके, प्रतिबोध, राजन्य वर्गियोंको अपने पक्षमें करते गया।

(विज्ञापन)

ओसवन्स रत्नागर सागर हैं मेरा ये इतिहासक ग्रंथ गागरतुल्य है इसमें कहा तक समावे लेकिन तथापि जो कुछ इतिहास मिला उसको संग्रह कर के अनेक इतिहास रत्नोंमें इस ग्रंथ गागरको अश्वपति महाजनोंके गुण रत्नमें भरके मैंने पूर्ण कलश करलिया और महाजनोंकी नांम श्रेणि रूप मुक्तावली इस कलसको पहराकर जैनधर्मरूपकमल पुष्पपर विराजमान अल्प बुद्धिसें करा है, जो कोई भूल चूक अधिक कम लिखा होय, सर्व श्री संघसे क्षमा मागता हूं॥ आपश्री संघका मुनिजन वांछक, उ। श्री रामलालगणि. दन्तकथामें सुणां है के एक भोजकने अश्वपतियोंके १४४४ नख लिखे घरपर आया स्त्रीनें पूछा सब जातलिखली, भोजक बोला, हां, तब बोली, मेरे पीहरके, डोसी जात असपत है, देखो तुम्हनें लिखाया नहीं, तब देखा तो डोसीका नांम नहीं भोजक हारके बोला, और लिखूं डोसी, फेर बणाई होसी सच है मूलगौत्र तो थोडे, लेकिन सगर कोई व्यापार, कोई गांमके नामसें. कोई राजाओंकी नौकरीसें, खजानेका कामसें खजानची. कोठारी मुसरफ, दफ्तरी वगसी. हीरजीकी शन्तान, हीरावत, इत्यादि पिताओंके नामसे. लेखणिया, कानूगा, निरखी. इत्यादि राजाओंकी तरफसें इनायत होके, जात पड़ी, सिवनी, भण्डारी, इत्यादि फिर मुल्कोंके नांममें, मरोटी, फलोधिये, रामपुरिये, पूगलिये, नागोरी, मडतवाल, लूणवाल, इत्यादि बहुत फिरवीया तेलिया. भुगड़ी, वलाई, चंडालिया, वाकूचार, बांभी, ये सब कारणोंमें नख हुआ है, ओसवालोंमें सैकड़ों गौत निज जात राजपूतोंसे भी विख्यात है. राठोड़ सीसोदिया, मासला, कछावा, इत्यादि अनेक जांण लेणा. इसवास्ते २ हजार नख होयंगे, अठारह जातके नख शाखा तो कवलागच्छ प्रतिबोधक है, ६०० नख खरतर गच्छ प्रतिबोध करे बाकी नख, खरतरके भाई, मल-

खरगच्छी. प्रतिबोध कहै, कई एक अल्प संख्या बड़गच्छ विद्यावाल गच्छ प्रतिबो-
धक राजपूत हूंगे, बाकी सरवार श्रावकोंको. हीरविजयसूरि: आदिकोंने, बहुतोंको
तपा गच्छ माननेवाले करे. और वस्तुपाल तेजपालके द्रव्यके सहायतासें, ज्या-
दह हो गये हैं, गुजरातके पूर्व वृद्ध गच्छके थे. इस वक्त तपागच्छ मानते हैं,
प्राय जैन पोरवाल हरि भद्राचार्य प्रति बोधक हैं. श्री श्रीमाल श्रीमाल
सर्व तात बेगाव हुए, बाद खरतर गच्छी श्रीजिन चन्द्र सूरि.के प्रति बोधक
हैं. जहां जिस नगरमें जिस गांवमें निज गच्छके गुरु नहीं हो उहां २
तीन वहीं बीतणमें जो बेपथर सम्प्रदाय होय वे गुरु ठहर जाते हैं
और वेस तो सुगन्ध है तो उसकी ओटमें बैठते हैं उसके ओरा फल
पुष्प सुगन्ध देते ही हैं. सुगन्धका बीज बोणे वालेके शास्त्रोंके
तो. जल्दही उसकारके आभारी होनेका फरज है. इस समय गच्छोंमें तो
कमला तपा खरतर इन तीनोंकी शाखाओं ही फलकर जती ७ फैल गये
है क्यों कि १३ तपोंमेंसें सम्प्रदाय निकली पाचमकी संवत्सरी माननेवाले
तो जो सम्प्रदाय हैं वह सब तपागच्छमेंसे ही निकले हैं लोंकाजी भी
तपा गच्छी श्रावक था इत्यादि सम्पूर्ण. जैसे किसी कविने कहा सेवं पदा
हस्तिरदं प्रविष्टा ८४ गच्छ महावीरके सब जाके चार रहे तपा. खरतर, बड
गच्छी भाई हैं. पार्श्व नाथके कुंअला, ये भी ८४ में ही है क्यों कि उद्योतन
सूरिके वासक्षेपमें आगये. जैनके सब सम्प्रदाय बड गच्छ. खरतगच्छ
कुंअलाको वर्जके इस तपागच्छमें अलग नहीं. गुजरातमें तपागच्छमेंसे ही
अलग होते गये, सामाचारी अलग २ होते गयी कमलामेंसे कोई शाखा
निकली नहीं खरतरमें १० शाखा अलग फंटी. लेकिन सबोंकी सामाचारी
एक है जिसमें ७ शाखा मौजूद हैं, दो तो आचार्य गच्छ खरतर पाली
१ दूसरे बीकानेर २ रंग विजय खरतर गच्छ लखनेऊ ३ भाव हर्ष खर-
तर गच्छ बालोतरा ४ मंडोवरा खरतर गच्छ भट्टारक जैपुर ५ बृहत् खर-
तर गच्छ भट्टारक बीकानेर ६ पीपलिया खरतर गुजरातमें फिरते सुणा है

लोंका गच्छके जती तो ६ के हैं लेकिन पूज्याचार्य तो ४ हैं विद्यमान
है गुजराती लूंपक गच्छी १ कंवरजी पक्षके गुजराती २ वलराजजीके

पक्षके ३ नागोरी २ इनमें १ में भी आचार्य नहीं है उतरावी लोंका गच्छी जती थोड़े है आचार्य नहीं है तपा खरतर वड़ गच्छ क्रमलोंसे लोंकागच्छवालोंके भाईपा है लेकिन् कच्छमें रही जो आंचल गच्छी सम्प्रदाय वो लोकागच्छ वालोंसे भाईपा नहीं रखते है, कारण वो पूर्व पक्षका लाते है लेकिन् हम तो गुजराती आचार्य नरपत चन्द्रजी पूज्याचार्यको तथा अजय-राजजी पूज्याचार्यको, तथा नागोरी प्रश्नचन्द्रजी पूज्याचार्यको, तथा रामच-न्द्रजी पूज्याचार्यकों, अतरग भक्तिसें जिनप्रतिमाको जिन सद्रश भावसे भाव भक्तिदर्शन पूजा करते देखा है, हमारे तो इस न्यायसें लोंकागच्छी प्राणसे भी प्यारे है सामाचारीका झगड़ा फिजूल आपसमें चलाणा नहीं अपणी २ रोटियोंके नीचे सब अङ्गार देते है व, देरहे है आत्मार्थी आत्मामाथे श्राव-कोंको जिन आज्ञा मुजब उपदेश करे पक्षपात करे नहीं वह अच्छा है जो प्रश्न श्रावक अथवा जती पूछे तो पूछे का जवाब सूत्र सिद्धान्त पंचांगी में लिखेका दाखला दिखाके देणा जिसकी सामाचारी सूत्र सिद्धान्तकी राहसें मिलती होगी तो वह जरूर खराही कह लायगा, क्रियावंत जरूर तपेश्वरी कह लायगा मित्रता पण वर्त्तना जिस कामोसे जैनधर्म जगतमें अतुल औपमा पावे उस वातोकी खोज करणा सर्व यती समुदायका सुनिजर वांछक उपा-ध्याय श्री राम ऋद्धिसार गणिः ।

(कच्छदेशी-श्रावकोंका वृत्तांत)

पारकर देशपाली महरके गिरदावके महाजनलोक, सोलहसे २९ के वर्षमें, मरुधरमें बडा काल पडा, उस वखत ५ हजार घर सिन्धुदेशमें अनाजकी मुकलायत जाणके, चले गये, उहां महनत कर गुजरान चलाणे लगे, दो तीन पीढ़ियां वीतनेपर धर्म करणी भूल गये, उपदेशक कोई था नहीं, विना खेवटिये नाव गोता खावे, इसमें तो आश्चर्य ही क्या, उहा इतना मात्र जाणते रहै के, हम जैन महाजन फलाणे २ गोत्रके है, तद् पीछै सवत् सतरेसयमें एक आचल सम्प्रदायके जती, कच्छके राजाके पास पहुंचा, और राजासे कहा मेरा कुछ सत्कार करो तो, वणियोंकी वस्ती ला देता हूं राजाने कहा जागीर दूंगा, गुरू भाव रक्खूंगा,

तब वह जती सिन्धमें पहुंचा और इन लोकोंको, मिला और पूछा इस देशमें सुखी हो या दुखी, तब वह लोक बोले मुसल्मीन लोक बहुत तकलीफ देते हैं, कोई जिनावर घरमें बीमार होता है तो, काजीकों खबर देणा होता है, तब काजी आकरके हमारे घरपर जीती गऊके गले पर छुरी फेरता है, और मुसल्मान हो गये है, उस जतीनें कहा, हमको तुम जांणते हो, हम कोण है उन्होंने कहा, नहीं जांणते, तुम कौण हो, तब वह बोला, हमारे संग चलो, कच्छ भुज देशमें राव खंगारके राज्यमें, तुमकों सुखस्थानसें, बसादूंगा, वह सब इकट्ठे होकर, उस जतीके संग कछे देशमें आए, रावखंगारनें सुथरी, नलिया, जखऊ आदि, गामोंमें, बसाया, बहुत खातर तब ज्या करी, अब वह जतीजी तो राज्यके माननीय, जागीरदार बण बैठे, एक तो राज्य-मद, दूसरे विना कमाया जागीरका धन, अब धर्म उपदेश इन्होंकी बलाय करें, वो महाजन खेती करें, गुरुजी जागीरदारसें, रुपया व्याजसें उधार लेवे, रोटी भी जतीके यहां खालेवे, इत्यादि हाल ऐसा बणाके बावाजीका बावाजी, तरकारीकी तरकारी, बावाजी तुम्हारा नाम क्या बावा बोले बच्चा बेंगणपुरी, वो हाल बणाथा तब राजानें अपने जो राजगुरू प्रोहित थे, वह इन्होंके गुरू बणा दिये, परणे मरणे जन्मणे पर, वो ब्राम्हनोंने अपना घर भरणे इन्होंको पोपलीला सिखलाई, अनेक देवी देव पुजाने लगे खेतीका काम करणेसें ज्यादह धनवान, इन्होंमें कोई नहीं था, क्यों के, नीतिमें लिखा है, (यत) वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी किंचित् २ कर्षणे । अस्ति नास्तिच सेवायां भिक्षा नैवच नैवच ॥१॥ (अर्थ) व्यापारसें लक्ष्मी बढती है, खेतीसें कभी होय कभी बरसात नहीं होय तो करजदारी हो जावे, नोकरीमें धन होय किसी सूंमके, नहीं होय खाऊ खरचूके, और भिक्षुक व भीख मांगणे वालेके कभी धन होवे नहीं लेकिन श्रीमाली ब्राह्मनकों वर्जके और भिक्षुकोंके १ इस तरह गुजरान करते थे इस वक्त मुंबई पत्तनकों, अंग्रेजसरकार ने, व्यापारका, मानो सागरही खोलके बसाया, इस वक्त आंचल गच्छके श्रीपूज्यरत्न सागर सूरिःके दादा गुरू सम्वत् १८ गुजरातसें कच्छमें पधारे पहले मार-वाड़में विचरते थे, इन्होने जिन २ पूर्वोक्त गच्छोंके प्रतिबोधे महाजनोंकों,

अपणी हेतु युक्तियोंसे अपणे पक्षमें करे थे, वो कई दिनो तक इन्होकी राह देखते रहै, ये तो कच्छ देशमें उतर गये, तब मारवाडके आचलिये, लोकोंने नागोरी, तथा गुजराती, कुंवरजीके, धनराजजीके पक्षको, मानने लगे, मारवाडमें ज्यादह प्रसार नागोरीलोकोंका हो गया, सम्वत् १८ में कच्छ देशके महाजन लोक जाती थोडी होणेके कारण, बेटी नहीं मिलणेसें, नाता भी करणे लग गये, उस वक्त आचल आचार्यने, उन्होंको धर्मोपदेश देकर समझाया, खेतीमें महापाप है, कई लोकोंको सौगन दिलाई, व्यापारके वास्ते बम्बई पत्तन बताया, कइयक लोक इधर आए बदनके मजबूत और उद्यमी साहसीकपणेकर, पहली मजदूरी करनेमे कुछ धन हुआ पीछे साझेसे कम्पनी व्यापार खोला, गुरूदेवकी भक्ति और जती लोकोंके उपकार पर कायम रहै, दिन पर दिन चढती कला, अब और धनसे होती गई, नरसी नाथा कोट्याधिपति धर्मात्मा प्रथम हुआ, उसने बहुत सहायता देकर जातीका सुधारा करा, अड्बों रुपये जगह २ मन्दिर धर्मशाला गुरुभक्ति साधर्मी भक्तिमें कच्छ वासी श्रावकोने सो डेढ़से वर्षोंमें लगाया वह प्रत्यक्ष हैं, जती श्वेताम्बरियोंका जैसा मान पान भक्ति कच्छीं श्रावक रखते है ऐसा कोई विरला रखता है, दस्सोंका नाता नरसी नाथेनें बन्द करा, अब तो धर्मज्ञ हो गये, लक्ष्मीसे कुसंप बढ गया, ये पञ्चम कालका प्रभाव, सब गच्छके थे, लेकिन वर्त्तमान आचल गच्छ मानते है इस्से सब, वीसे कच्छमें माड्वी बंदरादिकमें सैकडो घर खरतर गच्छ अभी मानते हैं, वीसे व्यापारके वास्ते मारवाडसे उठके कच्छमे बस गये, गुजराती कच्छमे गये वो तपागच्छ मानते है.

(अथ श्रीमालगोत्र)

(उत्पत्ति)

भीनमालनगरी जिसका नाम भगवान महावीर स्वामीके विचरते समय श्रीमाल नगर था, राजा श्रीमल्लकी पुत्री लक्ष्मी उसका विवाह करणेकी फिकरमें राजाने ब्राह्मणोंसें पूछा, मेरी कन्या साक्षात् लक्ष्मी तुल्य है, इसके लायक रूपवन्त, गुणवन्त वर राजकुमार मिलणेकी तदबीर बतलाओ, स्वयम्बर मण्डप करणेसे, बहुत राजा आयगे, इसके रूपको देखकर, मोहित

होकरके, आपसमें लडकरके, लाखों आदमी मरेंगे, इसमे बदनामी मेरी होगी, तब ब्राह्मनोंने कहा, हे राजेन्द्र, अश्वमेध यज्ञ कर, इसपर लाखों ब्राह्मण देश २ के एकत्रित होयगे, उन्होको पूछनेसे तथा जज्ञके पुन्यसें तुह्मारी कन्याकों इन्द्रके समान वर मिलेगा, राजाने अश्वमेध यज्ञकी सामग्री असंख्य द्रव्य लगाकर तइय्यार कराई भगवान महावीरका, समोसरण सत्रुजयतीर्थकी तलहटीमें हुआ, लाखों पशुजीवोंकी हिंसा देख, श्रीमल्लराजोका प्रतिबोध, गौतमसे होणेवाला देख, भगवाननें गौतम गणधरकों आज्ञा दी, हे गौतम, श्रीमाल नगरीका, श्रीमल्ल राजा तुमसे प्रतिबोध पावेगा, लाखों जीवोंका उपकार होणेवाला है, इसवास्ते तुह्मारे शिष्य पाचसय साधुओंको संगले, तुम श्रीमाल नगर जाओ, भगवानकी आज्ञासे, गौतम विहार करते २ मरुधर भूमीमें प्राप्त हुए, इधर राजानें लाखो ब्राह्मणोको, देश २ मेंसे निमन्त्रण देदे बुलवाया, वे सब यज्ञ करणे तइयार हुए, घोड़ेको देश २ में फिराके उहा लाए और भी जीव जलचर थलचर खचर ब्राह्मणोके वचनसे श्रीमल्ल राजानें अग्निमे हवन करणेको मंगवाये है सो सब जीव त्रास पाते विलापात करते करुणा स्वरसे ऐसा जता रहै है, अरे कोई दयाका भरा हुआ महापुरुष हमारी अरजी सुणके हमे बचावे, हम बे कसूर मारे जाते है, अपने २ दिलमें तथा निजभाषामें कहते है अरे दुष्ट ब्राह्मणों हम स्वर्ग नही जांणा चाहते, ऐसै स्वर्गमें तुम तुह्मारे कुटुम्बके प्यारे, माता पिता भाई वगैरहको, क्यों नही पहुंचाते अरे मास खाणेके लालचियो, हमारे प्राण लेणेसे तुमको स्वर्गके स्वप्न आवेंगें, इस हत्यासें राजा और तुम मासाहार करणेसें, नरक पात्र होवेगे, जिसनें एसा साश्त्र वणाया, और तुमको ये क्रिया सिखलाई वह कभी मुक्ति नहीं पावेगा, दुर्गतिमे भटकेगा, हे अन्तर्यामी तुम पूर्ण ज्ञानसें सचराचर जीवोंके, अभ्यन्तरी परणाम सब देखते हो, जाणते हो, हे प्रभु आप दयालु कृपालु हो अब हम निराधार निस्सरण अनाथ जीवोंकी, फरियाद सुनकर, हमारी सहायता करो, इस वखत गौतम गणधर उन २ जीवोंकी कामना मनपर्यव-ज्ञानसे, जाणकर, लब्धिबलसे शीघ्र उहा पहुंचे, उहा यज्ञ में हवन होणेवाले जीवोके, प्रतिपाल, यज्ञशालाके, बाहिर ठहरकर,

दयाधर्मका उपदेश करणे लगे, तब अग्निहोत्री ब्राह्मण गौतमके बहुतसे गोत्री, सगे सुसरे, साले, मामा, फूंफा, वगैरह तथा पाचसय मुनियोंके सगे, कुटुम्बी वगैरह, गौतमकों, देख, वेद पाठी यज्ञका निर्द्धार करण आए, गौतमनें न्याय सूत्रसे, सबोके मनमें, दयाका अंकुर बोदिया, यज्ञ याजन पूजाया, श्री जिनराजके मूर्तिकी पूजा है सो गृहस्थोंके ताइ दयाधर्म रूपयज्ञ है, श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमें दयाके साठ नांम, जिसमें पूजा है सो दया है, तब उन्होंने यज्ञका स्वरूप समझा, पचेंद्री जीवोंका हणना, यज्ञ छोडा, सम्यक्त्व युक्तव्रत धारी ब्राह्मण हुए, उह श्रीमालनगरके होणेसें, श्रीमाली ब्राह्मण दया धर्मी सज्ञा हुई, बाकी पंच गौड देश वासी, तथा पंच द्राविड देशवासी, जो जो ऋषि उस यज्ञमें, हाजिरथे, उन्होने तो जीवकों होमणेका यज्ञ छोडा, और मास मदिरा पीणा त्यागकर दिया, गौतमके चरण पूजणे लगे, सब जीवोंको यथास्थान पहुंचाया, उहा सवालक्ष राजपूतोंनें श्री महाराजाके साथ, जैनधर्म धारण किया, उन श्रीमालोंकी एकसौ पैंतीस जातस्थापन हुई, पंचाल देशी (पंजाब) बगदेशी कन्नौजदेशी सरवरिये इत्यादि ऋषि विप्र जो यज्ञमें नहीं आए थे, वह सब मासाहारी ही रहै, क्योंके वेदका यज्ञ तो, जैनाचार्योंनें, प्रायः आर्या वर्त्तमें वन्द कर दिया, तथापि वह ब्राम्हण तो, मांस खातेही रहै, दायमा गौड, गूजर गौड, संखवाल, पारीक, खण्डेलवाल, सारस्वत, और बाग्रड, इत्यादिकोंनें, गौतमके उपदेशसें, मासमदिराका खान पान करणा यज्ञ छोडा, इस तरह राजपूत ब्राह्मण दयाधर्मी गुरू गौतमके सेवक हुए, पूजा गौतमकी करणे लगे, उसके पीछै मुल्क २ में अलग २ वसणेसें श्रीमाली ब्राह्मणोंकी ४ शाखा फट गई मारवाड़ी १ मेवाडी २ लटकण ३ और ऋषि ४॥ इस यज्ञमें सैंधवारण्यवासी (सिन्ध देशके जगलमें रहणेवाले) पाच हजार ब्राम्हणोंकूं गौतमका उपदेश कर्मयोग नहीं रुचा वेदोक्त पुरोडासा खाणेको यज्ञक्रिया अश्वादिक हवनकों सत्य मानते गौतमकी पूजाको व सत्कारको नहीं सहते गौतमकी निंदा करणे लगे तब श्रीमल्ल राजाके हुक्मसें सर्वतत्रस्थ ब्राम्हणोने ब्रम्हकर्म रहित जांण, आर्यवेदके बाहिर किया रावणके दिग्विजय

समय पर्यंत ब्राम्हणमें पशुवधरूप यज्ञ प्रारम्भ हुआ अर्थवेदोंमें मांसाहारियोंने हिंसक श्रुतियें बणाकर मिला दी उव्वट महीधर सायन आदिक भाष्यकर्त्ताओंने भी वेदोंका अर्थ पशुवध रूप यज्ञ कर मांस भक्षण लिखा इसलिए श्रीमालमें बहुतोंकी सम्मती गौतमके सत्य दयाधर्म पर ठहर गई वो विप्र पीछे मेंधवारण्यको चले गये खेती करणे लगे भाटी राजपूत जो सिन्धुदेशमें तथा लवाणे जो सिन्धुदेशमें दरियावकी मच्छियोंको सुकाकर वेचते थे उन्होंके गुरू बण गये अब भी उन्होंके गुरू यही है जब सम्वत् सतरहमें ओसवाल लोक सिन्ध देशसें कच्छ देशमें आए तब कईयक भाटीये लवाणे कच्छमें आवसे, उन्होंको वल्लभाचार्यजी गुसांईजीने, वह व्यापार छुडाकर, व्यापारी वणादिया, जो अब भाटिया वजते है, अब थोडे ही अरसेमें, श्रीमल्लराजाकी राजधानी पर सिरोही गढके राजा पमारका पुत्र, भीमसेन, राजपूतोंको संग ले, श्रीमाल नगरीको घेरलिया, तब राजा श्रीमल्लने विचारा मैं वृद्ध हूं पुत्र मेरे है नहीं, एक कन्या लक्ष्मी है, मैं युद्ध करणेके समर्थ हूं मगर युद्धमें लाखों जीवोंका संहार करणा, आखिर तो कोई दूसरा ही राज्य करेगा, जीव वधका पाप मुझे भोगणा होगा, ये वर घर पर गंगा आगई है, पुत्री देकर पुत्र गोद ले लेणा, दुरस्त है, ऐसा विचार राजा श्रीमल्लने अपने प्रधान सुबुद्धिके संग भीमसेनको कहला भेजा के मेरी पुत्री आपको दी, व्याह करके हथलेवेमें श्रीमाल नगरका राज्य दिया, राजा श्रीमल्ल सब राजरीती सबोंका कुरब कायदामान मुलायजा पुन्य दान किए हुए ग्राम सुगद्वियोंकी खातरी सब गुप्त रहस्य, जामातको सिखलाते ५ वर्ष श्रावक धर्म पालते राज्यमें रहे तब लक्ष्मीराणीके दो पुत्र हुए ऊपलदेव १ और आसल २ और आसपाल पीछे हुआ ३ राजा भीमसेन आसलको नानेके गोद दिया और राज्य का हक्क आसलको कर दिया आसलका नानेके नामसे वोंही श्रीमाल गोत्र रहा वाद श्रीमल्ल राजा जामातकी वेटीकी आज्ञा लेकर गौतम पास जाके राजग्रहीमें दीक्षा लेकर तपकर केवल ज्ञानपाय मोक्ष गये, भीमसेनका मत वाममार्ग था, ऊपल और आसपाल वाममार्ग मानते रहे आसल फक्त जैन नामधारी, नानेके नामपर रहा, जैनधर्मकी शिक्षाचार

चार्यके जुल्मसे श्रीमाली पुष्करणे ब्राह्मनोंने वेद कृत्य कबूल करके यज्ञका मांस खाणा तो कबूल नहीं करा लेकिन मन्नावत श्रीमाली दशहरा वगैरह पर्वो पर लपसीका भैसा वणाकर कुसाग्राम डाभसे वेद मंत्र पढ़कर उसके गर्दन पर फेरके प्रशादी बांट खाते है ये महिमा अब भी वेदके यज्ञकी करते हैं पुष्करणे व्याहमें आधी रातको कोरपाण वस्त्रपर सब बैठके गुडकी लपसी और दूध खाते पीते है बाद कलसा जांनके दिन जनेऊ बदल कर स्नान करते है ये निशाणी स्वामी शंकराचार्यजीने पीछी सिखलाई, जो कि अब भी करते हैं, अब तो इन्होंमें सुद्धा चारकी वृद्धि है, त्याग देना ही उत्तम है, क्योंके वुद्धे फलंतत्व विचारणंच ज्ञाति सुधार विद्या वृद्धिसे संम्बन्ध धराता है, विक्रमसं. सातसयमें श्रीमाली ब्राह्मणोंने श्रीमाल पुराण वणाया, उसमें कुछ भेद पाठान्तर ये बात लिखी है, हिन्दमें संप नहीं, कर्ममोत राजपूतोंका कटक नहीं कुत्तों की कतार नहीं, पोकरणोंके पुराण नहीं, श्रीमाल पुराणके अन्तर्गतही अपणी उत्पत्ति मानते है, कई पुष्करणे भीनमालमें कच्छमें गये, आवे मरुधर, जेसलमेर, पोकरण, फलोधी, मल्हार जोधपुर बीकानेर, छंड विछंड, और २ जगह, इस वक्त सब पासह करणे ४० हजार करीब होंगे, विशेष गोकुली गुसाइयोंके सखा वण रहे है, बाकी कुछ शाक्त हैं ।

श्रीमाल वणिक गुजरातमें श्रीमाली दसावीसा बजते है गोत्रका नाम नहीं जांणते स्वामी शङ्कराचार्यजीके हमलेमे जैनधर्म छोड शैवमती विष्णुमती हो गये थे गुजरातमें हेमाचार्यने फिर जैनधर्म इन्होंका कायम रक्खा सगपण जैन विष्णुवोंके होता है दिल्ली लखनऊ आगरा जयपुर झुंझणूके जो श्रीमाल है इन्होंको श्रीजिनचन्द्र सूरिःने शैव धर्मसे प्रतिबोध देकर जैन धर्मी करा वह सब खरतर गच्छमें है बडे २ श्रीमन्त लक्षाधिपती श्रीमाल गोत्री धर्मज्ञ हैं इन्होंकी १३५ जाति राजपूतोंसे फटी है, ।

(श्रीमाल गोत्र १३५)

१ कटारिया २ कहूंथिया ३ काठ ४ कातेला ५ कांदल्य ६ कुराडिक ७ काल ८ कुठारिये ९ कूकड़ा १० कौडिया ११ कौनगढ़ १२ कवा-

तिया १३ खगल १४ खारेड १५ खार १६ खांचटिया १७ खोसडिया १८ गदउडघा १९ गलकटे २० गपताणिया २१ गडइया २२ गिला हला २३ गींदोड़िया २४ गूजरिया २५ गूजर २६ घेवरिया २७ वांवडिया २८ चरड़ २९ चाडी ३० चुगल ३१ चडिया ३२ चंदरीवाल ३३ छक-डिया ३४ छालिया ३५ जलकट ३६ जूंड ३७ जूंडीवाल ३८ जांट ३९ झामचूर ४० टाक ४१ टांकरिया ४२ टींगड ४३ डहरा ४४ डागड़ ४५ डूंगरिया ४६ ढोर ४७ ढोढा ४८ तवल ४९ ताडिया ५० तुरक्या ५१ दसाज ५२ धनालिया ५३ धूवना ५४ धूपड ५५ ध्याधीया ५६ तावी ५७ नरट ५८ दक्षणत ५९ नाचण ६० नांदरीवाल ६१ निवहटीया ६२ निरदुम ६३ निवहेडिया ६४ परिमाण ६५ पचौ-सलिया ६६ पडवाडिया ६७ पसेरण ६८ पंचोभू ६९ पंचासिया ७० पाताणी ७१ पापडगोत ७२ पूरविया ७३ फलवधिया ७४ फाफू ७५ फोफलिया ७६ फूसपाण ७७ वहापुरिया ७८ वरड़ा ७९ वदलिया ८० वंदूवी ८१ वांहकटे ८२ वाईसझ ८३ वारीगोत ८४ वायड़ा ८५ विम-नालक ८६ वीचड ८७ वौहलिया ८८ भद्रसवाल ८९ भांडिया ९० भालोटी ९१ भूवर ९२ भंडारिया ९३ भाडूंगा ९४ मोथा ९५ महिम वाल ९६ मऊठिया ९७ मरदूला ९८ महतियाण ९९ महकुले १०० मरहटी १०१ मथुरिया १०२ मसूरिया १०३ माघलपुरी १०४ माल्वी १०५ मारूमहटा १०६ मादोटिया १०७ मूमल १०८ मोगा १०९ मुरारी ११० मुदड़िया १११ राडिका ११२ राकिवांण ११३ रीहालीम ११४ लवाहला ११५ लडालूप ११६ सगरिप ११७ लडवाला ११८ सागिया ११९ माभडती १२० सीधूड १२१ सुद्राडा १२२ सोहू १२३ सौठिया १२४ हाडीगण १२५ हेडाऊ १२६ हींडोय्या १२७ अंगरीप १२८ आकोडूपड १२९ ऊवरा १३० वोहरा १३१ सागरिया १३२ पल्होट १३३ वूघरिया १३४ कूंचलिया १३५।

इसतरह श्रीमालोकी १३५-जाती थी वहुतसी तो गुजरातमें वसनेसें गोत्र मारे गये, गुजरातमें गोत नही, मारवाडमे छोत नहीं, इस न्यायसें और

बाकी देशोंमें, जो श्रीमालोंकी वस्ती है, उन्होंमें गोत्रका पत्ता लगता है, भीन-माल गुजरात मारवाड़की संधी पर है, इस वास्ते श्रीमालोंके विवाह मरणे परणे का रिवाज, गुजरातियोंकी राह मुजब है, अब तो गुजराती श्रीमालियोंकी. अनेक तरहकी नई जाती सज्ञा बन्धगई है, जैसे के मारफतिया, बमबम, देवी इन्होंकी लक्ष्मी है ये बात यथार्थ मिलती भी है श्रीमाली ब्राह्मण और श्रीमाल लक्ष्मीके तो पात्रही हमने बहुतोंको देखा है,

(पोरवाल जांगडा गोत्र २४)

श्री पद्मावती नगर (पारेवा) में २४ जातके राजपूतोंके सवालक्षगृह वसते थे. इन्होंको महावीर स्वामीके ५ में पट्टधारी, श्रीयशोभद्रसूरिःप्रभुके निर्वाण पीछे डेढ़मे वर्ष करीब विक्रमके पूणा तीनसय वर्ष करीब पहले प्रति बोध देके, जैन धर्म धारण कराया, पारेवा नगरके होणेसे पोरवाल कहलाये, पीछे फिर कई हजार घर शैवधर्मी राजाओंकी नोकरीसें होगये. बाकी जैनधर्मी रहे विक्रम राजाके १०८ वर्ष बीतने पर, पोरवाल जावड़सा, बडे नामी, शूर वीर जिनधर्मी अड़बों रुपये लगाकर, जिनमन्दिर, जीर्णोद्धार, सात क्षेत्रोंमे द्रव्य लगाया, सत्रुंजयका सघ निकालकर, क्रोडो सोनइये, जात्रियोंके लिये लगाये, फिर सत्रुंजय तीर्थका चौदहमा उद्धार कराया, सोले उद्धारोंमें इन्होका नाम मौजूद है, कई हजार घर विष्णुधर्मीयोको हरिभद्रसूरि.नें, प्रतिबोधे फिर संम्वत् एक हजारमे उद्योतनसूरिःजीके निजपट्ट धारी, वर्द्धमानसूरिः वैश्नव विमलशाह मंत्रीके, गोत्रवालोंको, तथा विमल मंत्रीको उपदेश दे आबू तीर्थ ब्राह्मणोंने दबा लिया था सो अठारह क्रोड बावन लाख / सोनइये खरच ब्राह्मणोंको द्रव्य दे खुशकर पीछे कबजा करा वर्द्धमानसूरिःने मंत्राराधनासे अम्बिका देवीको, प्रत्यक्ष कर बादशाहोंको, बुलाया, जमीनमे अलोपमन्दिर पुष्पमाल ब्राह्मणोंकी कुमारी कन्याके, हाथसे, जहां गिरे, उहां ही जिनमन्दिर है उसस्थान प्राचीन मन्दिर निकला ये सब विस्तार खरतर गच्छकी गुर्व्वावलीमें विस्तारसे विवरण लिखा है, जिनमन्दिर करवाया, सो विमलवसी नामसें विख्यात है, फिर वस्तुपाल तेजपाल, वह सब संघमे दसा करनेवाला, इन्होंने

जगच्चन्द्र सूरि.को चित्तोडके राणेके पास महातपा विरुद दिराके, आचार्य पदका नन्दी महोत्सव करा, महातपाका तपानामक रलिया जगचन्द्र सूरिःका, जगह २ विहार करवाया तपागच्छ माननेवालोंको हजारोंको श्रीमन्त वणाया, १२ सत्रुजयका सघ निकाला वे गिणतीका द्रव्य इन्होंने लगाया, तपागच्छको वहुत सहायता दी, इन्होकी सहायतासे मारवाड, गुजरात, गोढ़वाड़में तपागच्छ फैला, आज विद्यमान जो २ मन्दिर जैनियोंके मौजूद है, क्रोडोंके लागत केसो सब पोरवालोकाही कराया हुआ है, वाकी जैनराजाओंका श्री श्रीमाल श्रीमाल ओसवालादिकोंका क्रोड़ोंकी लागतका कराया हुआ मन्दिर मुसलमान बादशाहोंनें नामी मन्दिर तीन लाख तोड डाले गुर्जर भूपावली वगैरह इतिहास देखणेसे मालुम होता है फिर निन्नाणवे लाखसोनइये धन्ने पोरवाल राणपुरेके मन्दिरको लगाया ऐसे २ धर्मातमा पोरवाल वन्शमें होगये समय मुताविक मन्दिरोंकी भक्तिमें अब भी लगाते है गोटवाडमें जैन पोरवालोंकी वस्ती वहुत है खरतर गच्छमें भी पोरवाल वहुत थे उपाश्रय खरतरोंके खालीपडे खरतर साधुओंका विहार कम हुआ इस ६० वर्षोंमे तपागच्छी साधुओंका जाणा आणा वणतेरहा गच्छ दोनों पोरवालोका हैं खरतर तपा मालवेमें चम्बल नदीके किनार तीन हजार घर अभी भी वैष्णव धर्मी है।

(पोरवाल २४ गोत्र नाम)

१ चौधरी २ काला ३ धनवड ४ रतनावत ५ धनोट्या ६ मजावट्या ७ डबकरा ८ भादल्या ९ सेठया १० कामल्या ११ ऊधिया १२ वखराड १३ भूत १४ फरक्या १५ लभेपस्या १६ मंडावऱ्या १७ मुनियां १८ घाट्या १९ गलिया २० भैसोंटा २१ नेवपऱ्या २२ दानगढ २३ महता २४ खरड्या, देवी इन्होंकी पद्मावती है।

(हुंवड़ गोत्र)

पाटण नगरका राजा अजित शत्रु, जिसके पुत्र दो भूपतिसिंह १ भवानी सिंह २ भूपतिसिंहकी माता, देवलोक होगई, भवानीसिंहकी माता, पाटराणी, राजाके माननीय थी, राजपूतोंकी रसम है, बडा पुत्र होयसो,

पाटका मालिक हो, वैश्य महाजनोंकी रसम है छोटा पुत्र घरका मालिक होय हिस्सा बराबर जितने पुत्र होंय जितना करै, पिताके जीते दम एक पत्तीपिता अपणी रख लेवे, माताके जीते माता अपणा सब गहणा रख लेवे, पीहरसें मिला हुआ भी, माताको रखनेका अधिकार है, देवे तो खुशीसे हिस्सेमें दे सकती है लेकिन कायदेसे, हिस्सेदारोंका हक नहीं है, वह माता पिताके मरेबाद, छोटे पुत्रका होता है, यदि माता पिताका दिल दुसरे पुत्रोंको, या और किसीकों, देणा धारे देसकते हैं, पुत्रोंको रोकणेका अधिकार नहीं है, मातापिताके पास कुछ होय नहीं तो, पुत्र हिस्से मुजब, उन्होंका गुजरान चलावे, इसमें एक धनवंत कमाणेवाला होय तो वोही माता पिताके निर्वाहका जुम्मेवार होता है, सिरपर ऋण, कुटुम्ब खरचका होय तो, सब पुत्र हिस्से मुजब देणेमें जुम्मेवार है, कोई भाई बडा व छोटा अङ्गहीण कमाई रहित होय तो, बाकी भाई मिलके, या समर्थ एकही, रोटी कपडा देणेका जुम्मेवार हो, राजाओंके बड़ा पुत्र राज्यपती होता है इत्यादि कायदेसें विचार भवानी सिंहकी माता अपणे पतीकी बहुत भक्ति करणे लगी, राजाके भोजन करे पीछे भोजन करे, प्रभात समय मुख देखे विना मुंहमें पाणी नहीं डाले, पतीको निद्रा आये पीछे आप सोवे, विना हुक्म कोई भी काम नहीं करै, इसतरह पतिव्रता धर्म, पालती हुई, रहै एकदिन राजा परिक्षाके वास्ते राज्यकार्य करता रहा, जब रातको च्यार बजे राजा रणवासमें गया तो राणी खडी हुई सामनें आई राजाने पूछा, क्यों आज सोई नहीं, तब राणी बोली, हुजूरनें शयन नहीं फरमाया, मेरा तो क्या, तब राजा सत्कार कर बाहिर आया, और नाजरकों पूछ निश्चय किया, राणी बिल्कुल रातभर खड़ी रही, तब राजाने राणीके पास जाकर प्रसन्नतासे बोला, तुम्हारे सत्वपरमें प्रशन्न हूं जो मागणा होय सो मागो, राणी बोली हुजूरकी महरबानी, राजा बोला, महरबानी तो बनी ही है, लेकिन कुछ मागो (यतः) सकृद् जल्पन्ति राजानः सकृद् जल्पन्ति साधवः) सकृद् कन्या प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृद् २

(अर्थ) राजाकी आग्या एक, साधु वाक्य एक, कन्या एक वर दी जाती है, ये तीनों एक ही होते हैं १ पुनः ऐसा भी कहा है, अमोघं वासरे विद्युत् अमोघ निशि गर्जन, अमोघं साधुवाक्यञ्च, अमोघं देवदर्शनं १ (अर्थ) दिनकी चमकी बीजली, रातका गाजना, यथार्थ साधु हो उसके वचन और देवताका प्रत्यक्ष दर्शन व्यर्थ नहीं होता १ इस लिये वर याच तब राणीनें कहा. स्वामी आपका अग जात भवानी सिंह ठाकुर होगा के राजा, राजा समझ गया के राणी पुत्रकों राज्य मागती है, राजा बोला, जा तेरे पुत्रको राज्य दिया, भूपतिको जागीर दूंगा राजाने कई अर्से पीछे वडे पुत्रको जागिर तीसेर हिस्सेका दिया, भूपतिनें कबूल करा, राजा परलोक पहुंचा, पिताके तख्त भवानी सिंह बैठा, भूपति सिंहने अपणे बलसें पिता जितना राज्य बढालिया, अनेक राजा पायगा भी हुए. तब भवानी सिंहनें, ईर्ष्यासे दूत भेजा, तू मेरी सेवा कर, राज्यपती मैं हूं, तूं सामन्त है, भूपतिनें गिनाग नहीं, तब लडणेको फौज भेजी, तब भूपति सिंहने भाईको, अन्याइ जाणकर, फौजको मार भगाई और आप आके पाटणके बाहिर कर घेरा दिया, दोनोंके घोर युद्ध हुआ, तब इस भूपति सिंहका मामा, वृद्ध भोजराजा समझाणे आया, लेकिन दोनों भाई माने नहीं, इतनेमें मान तुंगाचार्य भक्तामरस्तोत्रके कर्त्ता, उस वनमे समवसरे, मामा भाणजेकों ले, वन्दनकों गया, और गुरुसें धर्म देशनासुनी, चित्तमें धर्मकी वासना हुई, तब गुरुसें बोला, हे गुरू हूंबड हूं. और भवानी लघु है, इस बातकों आप, न्यायसें फरमा दो, कसूर किसका है, । गुरुने वृत्तांत सुण कहा तूं सच्चा है, और भवानीका पक्ष अहंकारपूरित है, तब राजा भोजने, अपना मनुष्य भेजके भवानीको बुलाके चरणोंमें लगाया, तब प्रशन्न होकर भूपतिनें सब राज्य अपना भी भाईकों देदिया, और अपने पुत्रोंयुक्त जैन महाजन श्रावक हुआ, सत्रुंजयका संघ निकाला, गुरुके सामने कहा था के, हूं वड हूं, तब गुरूने जातीका नाम हूंबड धरा, पीछे परिवार बहुत बढा कुमुद चन्द भट्टारकने, कई घर दिगाम्बर धर्ममें किए, कई घर विष्णु होगये

थे, उन्होको अठारह हजार बावड़ देशमें रहनेवाले, जो बावडी बजते थे, उन्होंको खरतरा चार्य, बल्लभ सूरिःनें, प्रतिबोध दे खरतर किये, धुधुंकानगरीमें जिझागर हूंबड़नें, अपना पुत्र, बल्लभसूरिः को वहि राया, वो दादा श्रीजिनदत्तसूरिः भये, इस तरह मालवा, मेवाड, गुजरात, वगैरह देशोंमें, हूंबड दिगाम्बर स्वेताम्बर, दोनों वसते है, ।

(गोत्र १८)

सं.	गोत्र	वंश	सं.	गोत्र.	वंश	सं	गोत्र	वंश
१	खरजा-	गहाया	७	भद्रेश्वर	भाटी	१३	सोमश्वर	कछावा
२	कमलेश्वर	परमार	८	बिवेश्वर	सोनगरा	१४	जियाण	हाडा
३	काकडेश्वर	सोलखी	९	संगेश्वर	झाला	१५	ललितश्वर	गहोटिया
४	उत्रेश्वर	चौहाण	१०	गंगेश्वर	जादव	१६	शृंगश्वर	पडिहार
५	मात्रेश्वर	राठोड	११	अम्बेश्वर	नेहरा	१७	काश्यपेश्वर	चुवाल
६	भीमेश्वर.	देवडा	१२	मामनेश्वर	सीसोदिया	१८	बुधेश्वर	चन्द्रावत

(चौराशी गछोंके नाम)

२३ में श्रीपार्श्व प्रभुके शिष्य वर्गोका, उपकेश गच्छ बजता था, केशी कुमारके नांमसें, वह आचार्य मंदाचारी चैत्यवाशी होगये, पीछे उद्योतन सूरिके पास ८३ थविरोंके, और भी शिष्य जो त्यागी वैरागी महाव्रती बजते थे, उसमें पार्श्वप्रभुके शतानीभी, एक थविरके शिष्य पढते थे, महावीरस्वामीके ११ गणधरोंके नव गच्छमेंसें एक सुधर्मा स्वामीकाही गच्छ, कायम रहा, वाकी गणधरोंके शिष्य मुक्ति गये, इस गच्छका नाम तो यथार्थमें सौधर्म, निग्रन्थ गच्छ हुआ, वाद क्रम२ से आचर्योंके शिष्यवर्गोंसे, गच्छ कुलशाखा अनेकानेक चली, जोकि श्रीकल्प सूत्रमें दरज है, काल दोषसें, सब गच्छ प्राय· येडे रहे सम्वत् ९०० सें विक्रमकेमें शंकर स्वामीने राजोंके बलसे अत्याचार करा जिस कारण कोटिक गच्छ चन्द्रकुल बज्र शाखाधर आचार्य वृहद्गच्छी श्री नेमिचन्द्र-सूरिःके पट्ट प्रभाकरश्री उद्योत्तनसूरिः महागीतार्थ प्रभावीक. त्याग वैराग्य

विराजित, महाव्रती, एक आचार्यही सं. १००० मे विचरते रहे, वाकी सब थविर नामसे विख्यात थे, आज्ञा सबपर उद्योतनसूरिः हीकी थी, तब गुरुमहाराज जैन धर्मके उद्योतका समय अर्द्ध रात्रिको, नक्षत्रोका स्वरूप देख, वृद्धिभावसे, प्रथम निज शिष्य वर्द्धमान सूरिको सूरि मंत्र दिया, फिर ८३ विद्यार्थियोंको भी सूरिः मंत्र दिया, वह सब चौरासीही पालीताणेके सिद्ध वडके नीचेसे ही गुरुके हुक्मसें अलग २ विचरे, उन्होंने ज्ञानयुक्त क्रियासें, अपणे २ गच्छ प्रगट करे, साधु साधवी आत्मार्थी वणाये उन्होके नाम ८४ प्रथम निज शिष्य वर्द्धमान सूरिःके शिष्य जिनेश्वर सूरि कों खरतर विरुद मिला वह १ खरतर गच्छ २ सर्व देव सूरिका वड गच्छ पूनमिया ३ चित्रावाल गच्छ विच्छेद जाकर तपा-गच्छ प्रसिद्ध हुआ ४ उपकेश गच्छी ओसियामे जाके शिष्य वर्ग वधाया, इस करके ओसवाल गच्छ कहलाया, ये अभी चारों विद्यमान है, ५ जीरा-वला गच्छ ६ गगेसरा ७ कोरंडिया ८ आणपुरी ९ भरुअच्छा १० उड-विया ११ गुप्तउवा १२ डेका उवा १३ भीनमाला १४ मुहडसिया १५ दासरुवा १६ गच्छपाल १७ घोपपाल १८ मग उडिया १९ ब्रह्माणिया २० जालोरी २१ वोकडिया २२ मुझाहडा २३ चीतडिया २४ सात्रोरा २५ कुचडिया २६ सिद्धान्तिया २७ मसणिया २८ आगम २९ मलधार ३० भावराजिया ३१ पल्लीवाल ३२ कोरटवाल ३३ नाकदिक ३४ धर्म घोषा ३५ नागपुरा ३६ उस्तवाल ३७ तोपाचला ३८ साडेरवाल ३९ मडोवरा ४० सूराणा ४१ खंभायती ४२ वडउदिया ४३ सोपारिया ४४ नाडिया ४५ कोछीपुरा ४६ जागला ४७ छापरिया ४८ बोरसडा ४९ दो चंदणका ५० वेगडा ५१ वायड ५२ विजहरा ५३ कुतपुरा ५४ कोच-लिया ५५ सदोलिया ५६ महुकरा ५७ कपूरासिया ५८ पूर्णतल्ल ५९ रेव-इया ६० धूंधूंपा ६१ थभणिया ६२ पचवलदिया ६३ पाल्हणपुरा ६४ गधारा ६५ गुवेलिया ६६ सार्द्ध पूनमिया ६७ नगरकोटा ६८ हिंसारिया ६९ भटनेरा ७० जीतहरा ७१ जगायन ७२ भामसेणा ७३ तागडाया

७४ कंत्रोना ७५ सेवनागच्छ ७६ वात्ररा ७७ वाहटिया ७८ सिद्धपुरा ७९ घोत्ररा ८० नेगमिया ८१ संजमा ८२ वरंडवाल ८३ वाड़ा ८४ नागउन्या, ।

ये सत्र गच्छ कोई नग्रके नांम कोई क्रियासें कोई विरुदपानेकें कारणसें नांम भये ।

(अथ जैनी श्रावगी गोत्र ८४ खंडेलवाल)

प्रथम आदीश्वर भगवानसें लेकर महावीर स्वामीतक जैन धर्मके पालने वाले श्रावक कहाते थे महावीर स्वामीके मुक्ति गये पीछे चारसय तेइस वर्ष जत्र वीने, तत्र पीछे उज्जेण नगरमें, विक्रम सम्वत सूर्य वंसी पमार राजा विक्रमादित्यनें चलाया, विक्रम सम्वत् १ एककी सालमें, अपराजित मुनिःके शिष्यादामेंसें, जिन सेना चार्य ५०० सौ मुनिराजको साथ लेकर विहार करते २ सम्वत १ एकको मिती माह सुदी ५ को खण्डेला नगरमे आये, (खण्डेला नगर जोकि जयपुर राज्यके इलाकेमें है, इसवक्त) खंडेलाका राजा खंडेलगिरी सूर्य वन्सी चोहाण राज्य करता है अतराप खंडेलाके ८३ गाम लगे उस राजधानीमें कई दिनोंसें महामारी विषूचिका रोग फैल रहा था हजारों मनुष्य मर रहे थे. तत्र राजा रय्यतका फिकर करता, ब्राम्हनोंको पूछने लगा हे भूदेव, ये उपद्रव कैसे मिटे, तत्र ब्राम्हणोंने कहा, हे राजा. नरमेध यज्ञकर, उससे शान्ति होगी, तत्र राजाने यज्ञ प्रारम्भ करा और ब्राम्हणोंकी आज्ञा मुजब बत्तीस लक्षणवन्त पुरुष लाणेकी आज्ञा दी, अपने नोकरोंको, उसवक्त एक मुनिश्मशान भूमिमें ध्यान लगाकर खड़े थे, उन्होंको राजाके नोकरोंने पकडके, यज्ञशालामें ले आये, उन्होंको स्नान कराकर गहणा वस्त्र पहराकर राजाके हाथसें तिलक कराकर हाथमें ब्राम्हणोंने साकल्य देकर वेदमंत्र बोलते, वेदी कुण्डमें स्वाहाकर पुरोडासा वाटते भये, ब्राम्हणोंनें, राजासें, कैसा अनर्थ करा या उस पापसें, मुल्कमें, असंक्षा गुणा

---

१ कोई जमाना ऐसा मिथ्या हिंसा धर्म ब्राह्मणोंने फैलाया था घोड़े गऊ बकरे हिरण आदि ६०० तरहके नाना जीव यज्ञमें होमे हुए ब्राह्मणोंके भक्ष होते थे लेकिन हाथ

क्लेश, और उपद्रव होता हुआ, सच्चा मिसल्या लोक कहते है, (नीमे हकीम खतरे ज्यान, । नीमे मुल्ला खतरे ईमान, ॥ ऐसे दुर्बुद्धियोंके उपदेशसें, भलाई क्या होनी थी, महा भयङ्कर समय आन पहुंचा, अग्निदाह, प्रचण्ड अन्धकार, अनावृष्टि, नाना तरहके उपद्रवमें, प्रजा पीड़ित हाहाकार मचगया, तब राजा मूर्छा खाकर, अचेत होगया, उस मूर्छामें, जो वह मुनिः होम गये थे, वह दीखणे लगे, राजा वहांसें उठके, अपने उमरावोंको, सगले जंगलमे डोलने लगा, हाय मृत्युका वक्त आया, ऐसा विचारता उस वनमें पांचसय दिगाम्बर मुनी ध्यानमें खडे है देखके चरणोंमें जागिरा, और रोता हुआ प्रार्थना करणे लगा, तब मुनि बोले, धर्मवृद्धि, राजा देशके उपद्रवकी शान्ति पूछता हुआ, तब आचार्य बोले हे राजा पापसें तो रोग दुकाल्दुःख सन्ताप होता है, और फिर तेंने नरमेध यज्ञ कर, मुनियोंको, होमडाला, इस समय फल तो ये मिला है, बाकी तो कराणेवाले और तू नरकका दुख पावेगा, जैसें खूनका भींजा कपड़ा खूनमें धोणेसें साफ नहीं होता, इस दृष्टान्तानुसार वेदका यज्ञ है तेरा जीव जैसा तुझे प्यारा लगता है, वैसाही सर्व प्राणियोंका समझ, राजा बोला हे प्रभु, जो कुछ कसूर हुआ, सोतो हुआ, अब किसतरह शान्ति होय, वह विधी बतलाओ, गुरू बोले दयामूल जिनधर्म धारण करो, जगह २ चैत्यालय कराके, श्री जिनप्रतिमा धराके शान्तिक पूजन कराओ, धर्मका प्रभाव ऐसा है कि, दुष्ट पापकी शान्ति होगी. राजा खंडेलगिरीके खंडेलके सर्व राजपूत, ८२ गाम, और २ गांम सुनारोंके, एव ८४ गांमके सब मिलकर राजा खंडेलगिरि श्रावक धर्म

जुल्म मनुष्योंकों मारणेमें भी नहीं चूकने ये पतीके पिछाडी मे हाकुल स्त्रियोंको पती मिलापका, लालच दिखाकर उसका जर जेवर ले स्त्रियोंको अग्निमें जलाते थे, और अजाणलोक सती होणा अच्छा ब्राह्मणोंके बहकाये मानते चले आए, पुरुषोंका माल छीनकर कासीकरवतवणा मनुष्योंके प्राण लेते थे, बादशाह अकबरने जिनचन्द्रसूरि के उपदेशसें, करवात लेणा बन्द करा रायपुर छत्तीसगढ जिले महरिया पूजामे परदेशी मनुष्यका बलिदान होता था विसनोई ब्राह्मणोंके सवा जामेका साड मनुष्य बणाकर मारते थे अंग्रेजोंने सत्ती वगैरह बन्धकरा बाहर ब्राह्मणों बलिहारी है ।

भागता हुआ. जिन चैत्यालय ८४ गामोंमें करा २ कर, पूजन होते ही. मरी उपद्रव शान्त हुआ, वर्षात होके सुकाल हुआ, तब ८४ जात स्थापन हुई, मोढोलाकेतोमाह कहलाये, वाकी सबोंके गांम जात राजपूत कुल-देवी सब नीचे मुजब ।

संख्या	गोत	वंश	गांम	कुलदेवी
१	साह गोत	चौहाण	खंडेला	चक्रेश्वरी
२	पाटणी गोत	तंवर	पाटणी	आमा देवी
३	पापडी वाल	चौहाण	पापडी	चक्रेश्वरी देवी
४	दोसा गोत	राठोड	दोसागांम	जमाण देवी
५	सेठी गोत	सोमवंसी	घंटाणिया	चक्रेश्वरी देवी
६	भौसा गोत	चौहाण	भौसाणी	नांदणी देवी
७	गोधा गोत	गोधडवंस	गोधाणी	मातणी देवी
८	चांदूवाड गोत	चंदेलावंस	चंदूवाड	मातण देवी
९	मोठ्या गोत	ठीमरवस	मोठ्या	औरल देवी
१०	अजमेरा गोत	गोडवंस	अजमेऱ्या	नांदणी देवी
११	दरडोद्या गोत	चौहाणवस	दरजेद गांम	चक्रेश्वरी देवी
१२	गदय्या गोत	चौहाणवंस	गदयो गाम	चक्रेश्वरी देवी
१३	पहाड्या गोत	चौहाणवंस	पहाड़ी गाम	चक्रेश्वरी देवी
१४	भूच गोत्र	सूर्यवंस	भूंछड गाम	आंमण देवी
१५	वज गोत्र	हेमवस	वजाणी गाम	आमण देवी
१६	वज्जमहाराया	हेमवंस	वजमासी	मोहणी देवी
१७	राऊका गोत्र	सोमवंस	रालोली	औरल देवी
१८	पाटोद्या गोत्र	तंवरवंस	पाटोदी	पद्मावती देवी
१९	पाड्या गोत्र	चौहाणवस	पादणी	चक्रेश्वरी देवी
२०	सोनी गोत्र	सोलंखीवंस	सोहनी	आमण देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
२१	विलाला गोत्र	ठीमरसोमवंस	विलाला	औरल देवी
२२	विरलाला गोत्र	कुरूवसी	छोटीविलाली	सौतल देवी
२३	गगवाल गोत्र	कछावावस	गगवाणी	जमवाय देवी
२४	विनायक्यागोत्र	गहलोतवस	विनायकी	वेथी देवी
२५	वाकली वाल	मोहिलवंस	वाकली	जीणी देवी
२६	कासला वाल	मोहिलवंस	कोसली	जीणी देवी
२७	पापला गोत्र	सोटावस	पापली	आमण देवी
२८	सौगाणी गोत्र	सूर्यवंस	सौगाणी	कन्हाडी देवी
२९	जाझन्या गोत्र	कछावावम	जाझरी	जमवाय देवी
३०	कटान्या गोत्र	कछावावंस	कटान्यो	जमवाय देवी
३१	वैद गोत्र	सोरडीवस	वदवासा	आमणी देवी
३२	टोग्या गोत्र	पमारवस	टौगाणी	पावडी देवी
३३	वोहरा गोत्र	सोढावंस	वोहरी गाम	सौतली देवी
३४	काला गोत्र	कुरुवंस	कुलवाडी गाम	सौहणी देवी
३५	छावडा गोत्र	चौहाण	छावडा गाम	औरल देवी
३६	लौग्या गोत्र	सूर्यवंश	लगाणी गाम	आमणी देवी
३७	लुहाड्या गोत्र	मौरठ्यावश	लुहाड्या गांम	लौसल देवी
३८	भंडसाली गोत्र	सोलंखीवंश	भंडशाली गाम	आमणी देवी
३९	दगडावत गोत्र	सोलखीवश	दरडोदवश	आमणी देवी
४०	चोधरी गोत्र	तंवर वंश	चोधन्या गाम	पद्मावती देवी
४१	पोटल्या गोत्र	गहलोतवश	पोटला गाम	पद्मावती देवी
४२	गीदोड्या गोत्र	सोढावंश	गिन्होडी गांम	श्री देवी
४३	साखूण्या गोत्र	सोढावश	साखूणी गाम	सिखराय देवी
४४	अनोपड्यागोत्र	चंदलावंश	अनोपडी गाम	मातणी देवी
४५	निगोत्या गोत्र	गौडवश	नागोती गाम	नादणी देवी
४६	पागुल्या गोत्र	चौहाणवश	पागुल्या गाम	चक्रेश्वरी देवी
४७	भूलाण्या गोत्र	चौहाणवश	भूलाणी गाम	चक्रेश्वरी देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
४८	पीतल्या गोत्र	चौहाणवंश	पीतल्यो गाम	चक्रेश्वरी
४९	वनमाली गोत्र	चौहाण	वनमाल गाम	चक्रेश्वरी
५०	अरडक गोत्र	चौहाण	अरडक गाम	चक्रेश्वरी
५१	रावत्या गोत्र	टीमरसोमवंश	रावत्यो गांम	औंटल देवी
५२	मौदी गोत्र	टीमर सोमवंश	मौदहसी गाम	लौरल देवी
५३	कौंकण राज्या	कुरुवंशी	कौंकणज्यागाम	सौंनल देवी
५४	जुगराज्या गोत्र	कुरुवंशी	जुगराज्या गाम	सौंनल देवी
५५	मुलराज्या गोत्र	कुरुवंसी	मूलराज्या गाम	सौंनल देवी
५६	छहड्या गोत्र	कुरुवंसी	छाहड्या गाम	सौंनल देवी
५७	डुकडा गोत्र	डुलालवंस	डुकडा गांम	हेमा देवी
५८	गौती गोत्र	डुलालवंस	गौतडा गांम	हेमा देवी
५९	कलभण्या	डुलालवंश	कुलभाणी गाम	हेमा देवी
६०	बौरखंड्या गोत्र	डुलालवंश	बौरखंडी गांम	हेमा देवी
६१	सरपत्या गोत्र	मोहिलवंश	सरवती गाम	जीण देवी
६२	चिरडक्या गोत्र	चौहाणवंश	चिरडकी गांम	चक्रेश्वरी देवी
६३	निगर्दा गोत्र	गौडवंश	निरगद गांम	नादणी देवी
६४	निरपोलरा गोत्र	गौडवंश	निरपाल गाम	नादणी देवी
६५	सवड्या गोत्र	गौडवंश	सरवड्या गाम	नांदणी देवी
६६	कडवडा गोत्र	गौडवंश	कडवगरी गाम	नांदणी देवी
६७	मामरया गोत्र	चौहाणवंश	मामर्यो गाम	चक्रेश्वरी धीयाडी
६८	हलद्या गोत्र	मोहिलवंश	हरलोद गाम	जाणिधीयाडी देवी
६९	सौमगसा गोत्र	गहलोतवंश	सौंमठ गांम	चौथी देवी
७०	वंत्रां गोत्र	सोटावंश	वंत्राली गांम	सिखराय देवी
७१	चौवाण्या गोत्र	चौहाणवंश	चौंवरत्या गाम	चक्रेश्वरी देवी
७२	राजहंश गोत्र	सोढावंश	राणहंश गांम	सिखराय देवी
७३	अहंकाऱ्यागोत्र	सोढावंश	अहंकर गाम	सिखराय देवी
७४	भूसावड्या गोत्र	कुरुवंशी	भमवड्या गाम	सौंनल देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
७५	मोलसरा गोत्र	सोढावंश	मोलसर गाम	सिखराय देवी
७६	मांगडा गोत्र	खीमरवंश	मागड़ गांम	ओरल देवी
७७	लोहड़्या गोत्र	मोरठावंश	लोहट गाम	लैसल धीयाडी
७८	खेत्रपाल्या गोत्र	दुलालवंश	खेत्रपाल्या गाम	हेमा देवी
७९	राजभद्रा गोत्र	सांखलावंश	राजभद्रा गाम	सरस्वती देवी
८०	भुंवाल्या गोत्र	कछावावंश	भूंवाल गांम	जमवाय देवी
८१	जलवाण्या गोत्र	कछावा वंश	जलवांणी गांम	जमवाय देवी
८२	वनोल्या गोत्र	टीमर वंश	वनवोंडा गांम	ओरल देवी
८३	लठवाल गोत्र	सोढा वंश	लठवाडा गांम	श्री देवी
८४	निरपाल्या गोत्र	मोरठा वंश	निरपती गाम	अमाणी देवी

जैन धर्म पालनेवाले इस समय लाड परवाल पल्लीवाल वगैरह वणिक् जाती बहुत है मगर उन्होंकी उत्पत्ती गोत्रादिकका पत्ता मिलणेसें किसी वक्त जरूर लिखा जायगा ये बात बहुत जानने योग्य हैं आर्य देश २५॥ देशमें जितने वणिये व्यापारी दया धर्म पालते हैं वे सब राजपूत या ब्राह्मन वंश वालोंको हिंसा धर्म वेद यज्ञ तथा मांस मदिरा खाणापीणा छुडाकर व्यापारी वणाणेवाले जैनके आचार्योंका उपकार है उन्होंमेंसे कइयक स्वामी शङ्कराचार्यके पीछे कोई वणिया शैव कोई विष्णु पीछे हो भी गये है, तथापि दया धर्म पालणा मांस मदिराका त्याग तो उन वणियोंकी जातीमें प्रचलित है, वह जैन धर्मके आचार्योंका ही उपकार प्रथमका समझणा, क्योंकि स्वामी शङ्कराचार्यजी श्री चक्रको माननेवाले थे, उन्होंके च्यार शिष्योंके नामसे चारों ही हिन्दुस्थानकी दिशाओंमें जो शृंगेरी १ द्वारिका वगैरह मठ है, उसमें श्री चक्रकी थापना है, और श्री चक्र है सो वाममार्गी कूंडा पन्थी शाक्तोंका निजपरम इष्ट है इसलिये वाम मार्गी मदिरा पीणा मांस खाणा पवित्र धर्म समझते है, मांस १ मदिरा २ मच्छी ३ मैथुन ४ और मुद्रा ५ ये पांच बातोंके करणेवाले, मुक्ति जाते है, ऐसा वाम मार्गका सिद्धान्त है, चंडालणीमें भोग करणा पुष्कर तीर्थ मानते है, रजस्वला २

भीवण ९ इसतरह अधम जातीसे गमन करणा. ये वाम मार्ग वालोंके मतमें तीर्थयात्रा स्नान दानका फल मिलता है, इत्यादि मतके उपदेशकोंके, उपासक दया धर्म किस तरह पाल सक्के है गुरु स्वामी शङ्कराचार्यके शिष्य, १० नामके गुसाई बकरा असामीटा मारकर मांस खाणा, मदिरा पीणा, दक्षिण हैदराबादमें हमनें, सैंकडों गिरी पुरीयोंको आंखोंसे देखा है, जब उन्होंके धर्माचार्य इस तरह काम करते थे और करते है नो उन्होंके उपासकोंके दिलमें दया धर्म किसनें डाला है ये बदोलत जैनाचार्योंकी है, जहां एक ब्रह्म, ऽहं ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, ऐसा श्रद्धा रखणेवालोंके वास्ते न तो कोई ब्राह्मण है, न कोई चाण्डाल है, स्वामी शङ्करने काशीमें, ब्रह्मपणे जाति भिन्नता कुछ नहीं समझी. ऐसा ब्रह्म समाजी बंगाली कहते भी है कि, जातिका झगडा ऽहं ब्रह्मवाले अभी करते हैं सो बडी भूल है, हां अलबत्ते जैनी वैष्णव करें तो न्याय है, सो तो फक्त देखण मात्र है जिसनें अंग्रजी दवा सेवन करा अर्क वगैरह पिया वह मास मदिरा बेशक खाचुका, चाहे वैष्णव हो, चाहे जैन, विलायतके व्यापारियोंका ढंग रमणक दिखाणा है, मगर अभ्यन्तरी परिणाम तो, दया धर्म पालणेवाले विचार करे तो, निभाव होय, स्वामी शङ्कराचार्यजीनें, सब जातीको एकाकार करणेको, जैनियोंका तीर्थ, जीरावला पार्श्वनाथका जो अब जगन्नाथजीके नामसे प्रसिद्ध हैं, उसको बलात्कार अपने कबजेमें करा मूर्त्तिपर लक्कडका हाथ पाव कटा चोला पधराके, पार्श्व प्रभूकी मूर्ती अन्दर कायम रखके, भैरवी चक्र बिठलाया कि, यहा जातीकी भिन्नता नहीं रखणी, ऐसा दयानन्दजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं मतलब उन्होका ऐसा था कि यहा चारों वर्ण सामिल खालेंगे तो फेर आपसमें, नौ पूरबिया, तेरह चौका नहीं करेंगे, सो दोनों पार नहीं पडी, दोनो खोई रजोगिया, मुद्रा अरु आदेश, सो हाल बणगया, उहां जाके सब ब्राह्मण वैष्णव सामिल झूठन खाके जात भी खो बैठते है, और पुरीके बाहिर निकले फिर तो वही छूंआ मौजूद है, ये जगन्नाथ पार्श्व प्रभुका मन्दिर उडिया देशके राजा जो परम जैन थे, उन्होने कराया था, जो कि

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१६	पगान्या गोत्र	३०	अंबपुरा गोत्र	४४	चमान्या गोत्र
१७	कंगवड्या गोत्र	३१	निगोत्या गोत्र	४५	मुरलाया गोत्र
१८	दीवड्या गोत्र	३२	कावग्यिा गोत्र	४६	सोराया गोत्र
१९	वड्मुंल्या गोत्र	३३	टाट्या गोत्र	४७	सोठोम गोत्र
२०	नालहट्यागोत्र	३४	कुचोल्या गोत्र	४८	सा.वृण्या गोत्र
२१	संडाया गोत्र	३५	मावळ्यिा गोत्र	४९	जंबाल गोत्र
२२	वल्दूवट गोत्र	३६	सेठ्या गोत्र	५०	कतम्या गोत्र
२३	पनिल्या गोत्र	३७	मुंदवाल गोत्र	५१	सुरड्या गोत्र
२४	कुगान्दे गोत्र	३८	सांभन्या गोत्र	५२	
२५	भून्या गोत्र	३९	सरवड्या गोत्र		
२६	देहतोडा गोत्र	४०	पापल्या गोत्र		
२७	जिठागोवाल	४१	मूंगरवाल गोत्र		
२८	मथून्या गोत्र	४२	टग गोत्र		
२९	जोगिया गोत्र	४३	वहग्यिा गोत्र		

इन महाजनोंका वंश व देवीका पत्ता लगा नहीं इस वास्ते लिखा नहीं है और जाति इतिहास लिखणेमें ग्रंथ भी बध जाता है लोक गुणके तरफ ख्याल रखेंगे वाले कम वस यह कह उठेंगे दाम ज्यादह लगाये हैं इस लिये।

(अथ नरसिंघपुरे महाजन जैनी गोत्र २८)

नरसिंघपुर नगर जब्बलपुर दक्षण मध्यदेशमें है दिगाम्बराचार्य भट्टारकजी रामसेनजीके उपदेशसे बंद यज्ञ नानाजीव वध वातरूप मिथ्यात्व धर्मत्यागके अठाइस पूजा चैत्यालयमें श्री २४ तीर्थंकरके मूर्त्तिकी सम्यक्त युक्त नरसिंघपुराका राजा प्रजाके साथ जैनधर्म आदर करा इन्होंकी वस्ती मालवा मेवाड़ मध्य धूलेवगढ़ केशरिया नाथ तीर्थपर है।

संख्या	गोत्र	देवी	संख्या	गोत्र	देवी
१	खडनर	वारणी देवी	१५	तलियागोत्र	कान्तश्वरी देवी
२	पुलपगर	पावई देवी	१६	वलोलागोत्र	अम्बा देवी
३	भीलण होडा	अंबाई देवी	१७	खेलणगोत्र	कन्टेश्वरी देवी
४	रयणपारखा	रयणी देवी	१८	खामी गोत्र	वरवामनी देवी
५	अभाथिया	रोहणी देवी	१९	हरसोलगोत्र	चक्रेश्वरी देवी
६	भुद्रपसार	भवानी देवी	२०	नागर गोत्र	नीणेश्वरी देवी
७	चिभड़िया	धरू देवी	२१	जसोहरगोत्र	आझणी देवी
८	पवलमथा	पायई देवी	२२	झडपडागोत्र	पिशाची
९	पदमह	पलवी देवी	२३	वाराड़	पिपला
१०	सुमनोहर	सोहणी देवी	२४	कथैाटिया	पीरण
११	कलशधर	मौरिण देवी	२५	पंचलोल	मौरटा
१२	ककूलो	चक्रेश्वरी देवी	२६	मोकरवाडा	
१३	वारठेच	बहुरूपणी देवी	२७	वसोहरा	सींवाणी
१४	सापड़िया	पद्मावती देवी	२८		

(अथ गौरारा महाजन जैनी गोत्र २२)

गौरारे श्रावक तीन प्रकारके है१ गौरारा २ गौल सिघारे ३ गौला पूरव इन सबोंका जैन धर्म है रहना इन्होका ग्वालियर इटावा, आगरा, इलाकेमें है इन्होंकी उत्पत्ति कहांपर कैसे हुई सो तोपाई नहीं परन्तु गोत्र मिले सो लिख दिया है किसीकों मालूम होय तो लिख भेजणेसें दुसरी वेर छपाया जायगा।

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१	पावई कैसै गेई	९	जमसरिया	१७	चौधरी आन्तरिक
२	गयेली कैसैं गेई	१०	चौधरी जासूद	१८	चौधरी कूकच्या
३	पैरिया	११	चौधरी कौलसे	१९	डघा गोत्र
४	वेद गोत्र	१२	वरेडया गोत्र	२०	तसटिया गोत्र
५	नखेदबुखेद	१३	ढन सइया गोत्र	२१	वडसइया गोत्र
६	सिमरइया	१४	अदवइया गोत्र	२२	तत गुरिया
७	कौमाडिया	१५	सराफ गोत्र		
८	सौहानें	१६	चौधरी वरादकै		

अथ अग्रवाल जैन वैश्य उत्पत्ति गोत्र १७॥

ये वात जगत् विख्यात है कि चारवर्णोंमें सबसें पहले वैश्यवर्णका काम करणेवाले इस आर्यावर्तमें उग्र कुलवाले थे जैनियोके आवश्यक सूत्रकी टीकामें युगादि देशनामें भरतेश्वर वाहुवली वृत्तीमें तेसठ शलाका पुरुष चरित्रमे आदिनाथ (ऋषभ चरित्रमे) वडी मनुस्मृतीमें इत्यादि श्वेताम्बर संप्रदाई ग्रंथोंमें तथा इस तरह दिगाम्बराचार्य रचित आदिनाथ पुराण उत्तरपुराणादि धर्म कथानुयोगमें, इस तरहसे लिखा है, जब भगवान ऋषभ देव तेतीस सागरका आयू सर्वार्थ सिद्ध विमानसें पूर्ण कर, न्निर्मल तीन ज्ञानयुक्त इक्ष्वाकु भूमीं जो कश्मीरके पास परे है, जिसके चारों दिशामें चार पहाड आये हुए हैं सुर शैल्य १ हिम शैल्य २ महा शैल्य ३ और अष्टापद (कैलाश) ४ इसकी वीच भूमीमें ऋषभ देवके वडेरे सात कुलकर (मनु) विमल वाहन वगैरह युगलिक लोकोंमें कसूर करणे वालोपर वचन दण्ड करणेवाले हुए प्रथम हकार फिर मकार और फिर धिक् (धिकार) इस तरह कइयक उस जमानेके लायक कायदे बांधणे वाले हुए, लोक ऐसे ऋजु थे, सो जुबानसे धमकाणेसेंही डर मानते थे, काल जैसे वीतता गया, तैसे २ कल्पवृक्षहीन फल देणे लगे, तब उन युगलिक लोकोंके अन्यायका अंकुर वढणे लगा, विमल वाहनके सातमें मनु नाभिराजा उनके मरुदेवी राणीके, ऋषभ देवका जन्म हुआ, उहां नगरी वगैरह कुछ नहीं थी, जो वस्तु उन युगलिक लोकोंको चाहिये थी, वह १० जातके कल्पवृक्ष उन्होंको देते थे, पूर्वजन्मके तपके प्रभावसे युगलिक पुन्यवन्त पैदा होते है, ४५ लक्ष योजनमें जो अढाई द्वीपमें मनुष्योंकी वस्ती उसमें कर्माभूमि १५ मेंसे सुकृत करके युगलिक लोक अकर्मा भूमीमें कालधर्मसे, उत्पन्न होते थे, प्रजा इक्ष्वाकु भूमीमें कुल दोयसय ऊपर कुछ संख्या प्रमाण औरत मर्दोंके जोड़े रहते थे, वाकी पांचसय छब्वीस योजन छकला ऊपर सब भरतभूमी मनुष्य क्षेत्रकी जिसमैं वेताढ्य (हिमालय) इधर दक्षिण भरत आधा दोयसय १३ योजन तीन कला प्रमाणक्षेत्र, सब खाली मनुष्य विगरका था वैताढ्यके पहिले तरफ उत्तरमें म्लेच्छ खण्ड गुण

पचास नगर उस वक्त वस्तीवाले थे, उन लोकोका खान पान मांस मछलीका था क्यौं के जैन ग्रथेंमें लिखा है भरत पहिला चक्रवर्त छ खण्ड भरत क्षेत्र साधने लगा तव हिमालयकी तिमिश्रा गुफाके वाहर फौजका पड़ाव डाला जिसकों अभी खन्धार कहते है, यहांसे ४९ नगरवाले म्लेच्छ राजाकों, अपणी आना मनाने दूत भेजा, ऐसा लेख जम्बूद्वीप पन्नती मूलसूत्रमे लिखा है, इसलिए सिद्ध होता है के, ऋषभदेवके वडेरोंके वखतसेही, म्लेच्छ खण्डकी वस्ती कायम थी, आधे भरतमें कालधर्म पहिला दूसरा तीसरा आरा आदि वरतणा सिद्ध होता है, सर्व भरत क्षेत्रमें सिद्ध नहीं होता, ऋषभ देवने तो म्लेच्छ खण्ड वसाया नहीं, केवल सौ पुत्रोंके नांमका सौराज्य जिसमें निन्याणवे इधर १ एक हिमालयपार वहुली देश, का वल, जो बाहुबलकू वसा कर दिया, भरत चक्री ४९ नग्र म्लेच्छोंपर आज्ञा मनाकर फिर अयोध्या आकर बहुली देशकी लड़ाई तो, पीछे करी है, जैन लोकोंनें इस वातकों विचारणा कोई बुद्धिमान इस वातकों न्यायसे असत्य ठहरा देगा सिद्धान्तकी साक्षीसें तो दुसरी वेर वह वात लिखी जायगी, हमनें तो सूत्रकी साक्षीसें, ये वात लिखी है, हा खास तौर पर जैनधर्म वाले ये वात मानते है के भरत एरवतमें कालचक्र फिरता रहता है ऋषभ देवका होणा, तीसरे अरेका अतका भाग अवसर्प्पणी कालका था, अंग्रेज लोकभी हिमालय (वैताढ्यके दक्षिण मुल्क तीन खण्डकोही भारत भूमि कहते है क्या मालुम, ये नांम कौरव पाण्डवोंके युद्धके होणेसे भारत कहलाता था, इस-लिए धरा है या भरत चक्री पहला जव होता है, तव भरतही नांमका होता है इसलिए इस भूमीकों भारत क्षेत्र कहते है (भरतोद्भवा भारता) लेकिन जैनधर्म वाले तो, जहांतक भरत पहले चक्रवर्तका राज्य शासन चले, ऋषभ कूट पर्वततक, जिसपर अपणा नाम लिखता है, उहा तक भरत क्षेत्र मानते है, पैरिसतक, उसके पहले वर जैनियोंका लिखा चुल्लहिमवंत्तपहाड़ जिसकों आजकलकोकाफ कहते है, और उसके ऊपर, परियोंकी वस्ती मांनते है, उसके पहिलेवर कोई मनुष्य नहीं जासक्ता, वह उदयाचल पहाड कहलाता है, जहांसें सूर्यकी किरणें इस भारत भूमीपर प्रकाश कर

प्रभात समय दिखाई देती है, भारत भूमीमें फकत् म्लेच्छ भील वगैरह पहाडोंके पास अण पढ़ लोक रहते थे, और वस्ती नही थी, उन्होंको ग्रीक लोकोंनें पेस्तर आकर, इलम सिखाकर हुशियार करा, इस लेखका परमार्थ तो हमारी समझसें तो ऐसा निकलता है कि ये वार्ता दक्षिण भरतकी नहीं है हिमालियेके पहले तरफ जो उत्तर भरत है उसमें ४९ नग्र वालोंकों ग्रीक लोकोंने कोई जमानेमें अपणे सागिर्द बणाये होंगे, खैर रहणे देते है ॥ जब ऋषभ देवनें बाल्यावस्थात्यागी नाभी मनुके हुक्मसें, युगलिक लोकोंने, युगलियेंमें अन्याय फैलता हुआ देखके, ऋषभकों राजा बनाया, उस वक्त लोक जुबानकी सजाकों कुछ नही गिंणारने लगे, अव्वल तो कल्पवृक्ष फलहीन हुए, देख प्रथम तो चावल पकाकर सबोंको रसोई करके खांणा सिखाया, फेर वस्त्र बुननेवाले नाई चित्तेरे वगैरेह ५ कर्मके सो कर्म करणेवालोकों कारीगरी सिखलाई प्रजाकों वढाणे संगमें जन्मी कन्याका विवाह बन्दकर दूसरेकों बेटी देणा और दुसरे गोत्रीकी लाणा सिखाकर युगला धर्म मिटाया तब रसायणिक प्रयोग पास होकर, प्रजा बढी, गढ, कोट, किल्ला, अस्त्र, शस्त्र, हाथी घोडे, गऊ, ऊंठ सब मनुष्योंके काम लायक करे नोकरी लिखत पठित प्रमुख ७२ कला प्रगटकर प्रजाकों सिखलाई ६४ कला स्त्रियोंको, ग्रहाचार सिखाकर, नवनारू, नवकारू, ऐसे अठारह श्रेणीके १८ प्रश्रेणीके ३६ कुलक्षत्री वंशमेसे प्रगट करे

सीसगर १ दरजी २ तंबोली ३ रंगारे ४ गवाल ५ बढ़ई ६ संग्रास ७ तेली ८ धोबी ९ धुनियापिनारा १० कन्दोई ११ कहार १२ काछी १३ कुम्भार १४ कलाल अर्कअतरवाले १५ माली १६ कुंदीगर १७ कागजी १८। कृपाण १९ वस्त्रकार २० चितेरा २१ बंधेरा २२ रेवारी २३ लखारा २४ ठंठारा २५ राजपटूवा २६ छप्परबंध २७ नाई २८ भडभूंजा २९ सोनार ३० लोहार ३१ सिकलीगर ३२ धीवर पालखीवाले ३३ चमार ३४ गिंर ३५ सुथार ३६ इन्होमें फेर कई २ तरहकी भिन्नता भई, जैसे छींपादरजी १ मारूदरजी टोप सियानाई १ मसालचीनाई २ मारू कुंभार १ वाडा कुंभार २ इसतरह जिन्होने ये कृत्य किया वोही जाति होगई ब्राह्मणिया

सुनार १ भेद सुनारादि समझना, इनोंका कृत्य समयसे पलटा अब भगवानने प्रजामें ४ वर्ण स्थापन किये, उग्रकुल १ इन्होंकों दण्डपासक यानें कोट कचहरी दिवान मुसद्दी कोटवाल प्रमुख राजकार्य करणा न्यायाधीस बणाया १, भोगकुल २ प्रजाके वास्ते भगवान आप जिन्होंकों गुरू करके माना २ राजन्यकुल ३ जो भगवान इक्ष्वाकुका कुल जिसमे सूर्य यश पोतेका सूर्य वश १ चन्द्रयश पोतेका चन्द्र वश २ चन्द्र सूर्यके जिनने कोशोंमें पर्याय वाचक नाम है वह सब नाम इन वशवालोंका समझणा, जैसे आदित्य वश १ तो सूर्यही का नाम है, इस तरह सोमवंश २ वो चन्द्रहीका नाम है, कुरु पुत्रसे कुरु वंश, इत्यादि सौ पुत्रोंका परिवार सन्तान राजन्यवंश कहलाया, ३ बाकी युगलिक लोक प्रजा उन्होका काश्यप गोत्र और क्षत्रीवंश स्थापन करा जिसमें छत्तीस कर्मकर निकले, जिसके पीछे असंक्षा काल वीतणेसें उन चारोंका पर्याय वाचक नाम हो गया, उग्रकुल वाले गुप्त कहलाये, देखिये वाग्भट्ट नामका जैन गुप्त (वणिक्) ने वाग्भट्ट वैद्यक ग्रथनेम निर्वाण महाकाव्य वाग्भट्टालङ्कार काव्य अनेकानेक गुप्त जातीके बनाये हुये हैं. ये वाग्भट्ट जैनधर्मी थे उनके ग्रथही धर्मकी सबूती देता है, भोगकुलकों शर्म्मा संज्ञा हुई, राजन्य वंशीयोंको वर्मा संज्ञा हुई, इस तरह ही चारोंका पर्याय नांम धरा पीछेसें विप्र सज्ञा वेद पाठीकों, विगर संस्कार शूद्र संज्ञा, संस्कार किये पीछे द्विज सज्ञा, जब जीव अजीव पुन्य पाप इत्यादि नव तत्व जाणे, क्षमा १ मार्दव २ आर्जव ३ निर्लोभता ४ तप ५ सत्य ६ सौच अभ्यंतर और बाह्य ७ (संजम ८ इन्द्रियदमन) और जिन पूजादिक षट् कर्म ९ इतने करनेवालोंके गलेमें यज्ञोपवीत डाली गई, जिसका अपर नाम है, नोगुणी, उसको प्राकृत व्याकरणके शब्दसें, माहण भरत चक्रीनें कहा था उसका संस्कृत व्याकरणसें (ब्रह्म वेत्ति स ब्राह्मणः) यानें ब्रह्म जो अविनाशी आत्माका स्वरूप जाणे, सो ब्राह्मण कहलाये, शर्म्मापद देव पूजकोंको मिला, वर्मा नांम धराणेवाले राजन्य वंशीयोंको क्षत्री कहने लगे, वह जो राज्य कार्य कर्ता उग्रवंशी जो गुप्त नांम धराया था वो वैश्य कहलाये, छत्तीस श्रेणीके प्रश्रेणीक क्षत्री वंशवाले जो थे वह

कर्मा नाम धराते थे वह शूद्र कहलाए थे सज्ञा चार ब्राह्मण १ वैश्य २ क्षत्री ३ और शूद्र ४ श्रीकृष्ण चन्द्रके राज्यमें कृष्ण द्वैपायन व्यासने गीता बनाई उस वक्त यह नांम, पूर्व नाम पल्टाके धरे गये, गीतामें कर्मके अनुसार चार वर्ण बंधे है, व्यापार. खेती करणा, गऊओंको गोकुलमें रखणे वालेकों, वैश्य कहा है, इस न्यायमें तो जाट, कुणबी, सीरवी, अहीर वगैरह भी, ऐसा कृत्य करणेसें गीताके हिसाबसें वैश्य होणा चाहिये, पुराणोंमें छ कर्म करणेवाले ब्राह्मनोंकों अधम लिखा है। यतः) असीजीव मषीजीवि, देवलो ग्रामयाचक । धावकः पाचकश्चैव, षडेते ब्राह्मणाधमाः ॥ ९ ॥ अर्थ) तलवार बांधके फौजोंमें सिपाही रहै नोकरी करै, मसीयानें लिखणा नामाठामा व्यापार करे, देवलों यानें मन्दिरोकी नोकरी कर बलि भक्षिणादि करे, ग्राम याचक यानें ब्रती, यजमान वणाके, दापा, वट, परणें मरणें आदिका लेवे, धावक, यानें, नोकरीमें इधर उधर जावै, सन्देशा करे कासीदी करे, ऐसे ब्राह्मणोंको, पुराणोंमें, अधम लिखा है, अरे कलियुग ऐसा कोई कांम नहीं है, सो इस पेटके लिए ब्राह्मण लोक नहीं करते होय, केवल नांम मात्र ऋपियोंकी शन्तान है, दातारकी भक्ति, दान देणा गृहस्थका धर्म है, गृही दानेन शुद्धचति, इस वचनसे, बाकी नौकरी हाजरी भराके जो ब्राह्मणोको पुन्य समझ दान देते है. वो देणेवाले, बडे मूर्ख है. पुन्य उसका नाम है, जिसका बदला नहीं लिया जावै, इस बातको समेट, उग्र कुलका इतिहास लिखते है, ।

उग्रकुल दुनियांका कार्य चलतेही स्थापन हुआ, वह क्रमसें राजकार्य करते २ कोई भुजबली राजाधिराज भी बन गये, ऐसा जमाना नहीं गुजरणा बाकी रहा होगा कि, चारों वर्णोवाले राजा न हुए होय, यानें जमानेके फेरसें अत्यजभी राजा हो चुके, और राजा अबसें मोहताज हो गये, ये सब पुन्यपापके योगसें, कर्मोंने जीवोकों अनेक नाच नचाये हैं, और नचाता है, और नचावेगा, जमानेके फेरफारसें कभी धर्म जैन प्रबल रहा, इसवक्त नाना धर्मका शिक्का अपणा वक्त दिखा रहा है, मिथ्यात्व जीवके सग अनादि कालसे लग रहा है, संसारमें रुलणेवाले जीवोंकों, जिस तरफ शरीरके

पाचो इन्द्रियोके, सुख मिले, अपने लिए चाहे कितना द्रव्य खरच हो जावे परमार्थमें पैसा कम खर्च पडे, वह धर्म, कलियुगी जीवोंको, ससारसे तारणे वाला मालुम देता है, जिधर जिसका जी मानता हैं, उधरही धर्म कबूल करता है, लेकिन जिधर पाचोइन्द्रियोंको मजामिले उस धर्मकी तरफ ज्यादह, रजू होते दीखते हैं, उग्रकुलवाले वैश्य वजणे लगे, और आपसमे वली होकर, राज्य भी करणे लगे राजा उग्रकुली धनपाल धनपुरी नगरी पचाल देशकों कवजे करके, वसाई, इन्होंके कई पुस्तान तक, राज्य रहा,- राजा रग पुत्र विशोक, विशोकके मधु, इस वक्तमे वैताढ्य पर्वतपर, इन्द्रनाम विद्याधरोंमें वडा वलवन्त राजा उत्पन्न हुआ, इस मधुका वर्णन, जैनरामायणमे नारदजीकों रावणनें हिंसक यज्ञ क्यो कर चला, इम प्रश्न करनेंसें उत्तर दिया है, उसमें राजा मधुका और सगरका वृत्तान्त चला है, उहा देखणा, मधुका महीधर, इस वक्त राजा इन्द्रने रावणके वडेरोंकों, युद्धमें हटाकर, लङ्का छीनली, रावणके वडेरे पाताललङ्का (अमेरिका) में, जा रहे, महीधर रावणके वडेरोका, आज्ञाकारी था, इस वास्ते इन्द्रनें इसका भी राज्य छीन- लिया, महीधर फिर और राजाओंकी नौकरी करणे लगा, पीछै रावण पैदा हुआ, और इन्द्रसे युद्धकर, वैताढ्य पर्वतका राज्य छीनलिया, महीधरकों रावणनें बुलाकर सेनापती वणाया, जव रावणपर रामचन्द्रजी आए, तव बिभीषणके सङ्ग, महीधर भी रामचन्द्रजीके पास आगया, फिर अयोध्यामें, महीधर काम कर्त्ता हुआ, फिर कई लाख वर्ष बीतणेसे फिर महीधरके वशवाले राजा होगये, यों कई पुस्तान, इस वशवाले जैनधर्म छोडके ब्राम्हणोका, वेदधर्म मांनने लगे, आग्रायण (अग्रसेन) नांम राजा हासी हसार जो अव वस्ती है यहापर अपने नामसे अग्रोहानगर वसाया, उग्रकुली लोक तथा अन्य लोकोंकी वस्ती यहा वहुत वसी, ये जमाना करीव विक्रम राजाके कुछ पहिलेका है। राजाने दिल्ली मंडल कुल कवजे कर लिया, इस वक्त वैताढ्य पहाडपर, इन्द्रके वसवाला, सुरेन्द्र नामका राजा, राज्य तिब्बत राजधानीमें करता था; इस समय दक्षिण देशमें कोलापुर नगरमे, नाग वंशी राजा, अभंगसेनकी पुत्रीको, सुरेन्द्रनें मागी,

अभंग सेननें, दोनो कन्या, माधवी १ और चन्द्रिका, २ अग्रसेनको देदी, ऐसा कहला भेजा, तब सुरेन्द्र अग्रसेंनसें युद्ध करणे आया अग्रसेंन ये सुण कर, भग गया, कासीमें जाकर महालक्ष्मीका मंत्रसाधन करा लक्ष्मीनें प्रशन्न होके कहा माँग इसनें कहा लक्ष्मी मेरे घरमें अतूट रहै, और शत्रु मेरे कोई नहीं हो सके, लक्ष्मी बोली, तथास्तु, फिर अलोप हो गई, उहां इसको भूमिमें असक्ष निधान प्राप्त हुआ कोलापुर जाकर दोनो कन्याका व्याहकेर, स्वसुरका दातव्य लेकर, अग्ररोहा नगर पीछा लेलिया, उन कन्याओंके गर्भाधान रहा, तब ब्राह्मणोंने कहा, हे राजा, तेरेको लक्ष्मी प्रशन्न है, तूं पुत्रोंके कल्याणार्थ यज्ञ कर, तब राजानें यज्ञ शुरू करा, इस तरह अनेक यज्ञ अश्वमेध गऊमेध छागमेधादिक करते सतरह पुत्र होते रहै, यज्ञ करता रहा, अठारमां पुत्र गर्भमें था, यज्ञके लिए नाना पशु गण जमा किये हुए, त्रास पा रहे थे, इस समय महालक्ष्मी देवी चित्तमें व्याकुल हुई विचारणे लगी, जो मैंने सुकृतार्थ करणे, इसकों प्रशन्न होकरें द्रव्य दिया था, उसकों इसनें महा अघोर पापका हेतु नरक जाणेका मार्ग, जीव वधघात, कसाइयोंका कर्म, ब्राम्हणोके वचनोंसे कर रहा है, इस पापकी क्रिया

- महेश्वर कल्पद्रुम वालेने 'अग्रवालेकी उत्पत्तिमें लिखा है अठारमा यज्ञ आधा हुआ किसी कारणसे ग्लानि हुई ऐसा लिखा है वह ग्लानिके कारणकों प्रगट नहीं किया फक्त अपणे वेदधर्मकी वे अदवी छिपाणेकों आदि उत्पत्ति त्रेता युगके प्रथम चर्णवार तक लिखके सबूती दिखाते हैं कोई पुछे, किस वेदमे या स्मृतिमे या पुराणमें लिखा है तो मौन करणाही जवाब है और हमनें कुलका होणा असक्षा वर्षके पहिले दुनियाकी रीत रसम चलते ही पहले लिखे शास्त्रोसे प्रमाण देकर लिखा है उस जमानेको बीते असंक्षा चौकडी सतयुग द्वापर त्रेता कलियुग बीत गये है आगे चलकर लिखा है अग्रायणके कई पीढी वाद जैनधर्म अग्रवालोंने धरा है इतना नही विचारा कि यज्ञमे ग्लानि प्राप्त होणा ही जैनधर्मका कायदा था इस वास्ते खुद अग्रायण वेद यज्ञ छोड जैनी हुए थे जिसमें १७॥ गोत्र हुए थे लिखते शर्म आगई स्वामी शङ्कराचार्यजीके चेले आनन्द गिरी शङ्कर दिग्विजयमें लिखते हैं (वैदिक हिंसा हिंसा न भवति) अर्थात् वेदकी राहसे जो जानवरका मांस खाया जावै उसमे हिंसा नहीं होती तब विचारो वेदधर्मियोंकों ग्लानि कैसै आवेगी, वल्के ऐसे वचनोंसें तो हिंसा कर्म वेदधर्मी वेधडक कमर बाधके करेंगें, वाहरे धर्मोपदेशक जगद्गुरू बजणे वालोके चेलेजी, ऐसे न्यायके वचनोसे ही दिग्विजय हुआ होगा, धन्य दिग्विजय धन्य, फिर माहेश्वर कल्पद्रुम वालेनें आग्रायणके कुलको ब्राह्मण ठहराया है ।

मुझको भी लगेगी, और मेरा भी पराभव होणेसें, दुखकी भागनी होऊंगी तब रातकों देवी, इस राजाको उठाकर, नरकमें लगई, प्रथम तो उधर वह जीव फरसी लेकर राजाको मारणे दौडे, जिन २ जीवोंको इसनें अग्निकुण्डमें हवन किया था, और महा दुर्गंध महा विकराल मनुष्यसें वर्णन नहीं किया जावें, ऐसे नरककों देख राजा रोता पीटता भागणे लगा, तब लक्ष्मीदेवी मृत्यु-लोकमे लाकर बोली, अरे राजा इस यज्ञसें तुं मरकर, नर्क जायगा, और तेंनें जो पाप किये है और तेंनें जो मारे है वह जीव अग्निकुण्डमें, तेरेसे वदला लेंगे, तब राजा बोला, हे माता, अब इस पापसे कैसें छूटूं मेरा उद्धार कर (ऐसाही हाल प्राचीन वर्हीराजाका नारदजीने यज्ञके पापके बदलेमें नरक दिखाकर छुडाया है, देखो भागवत पुराण विष्णुओंका, उसमे लिखा है) तब महालक्ष्मी देवी बोली हे राजा प्रभात समय, भगवान महावीरके सन्तानी लोहा-चार्य महाराज, यहा आवेंगें, उन्होकी वाणी, सर्व जीवहितकारिणी, भव समुद्र तारणी सुणकर, पापारम्भ छोड, दया सत्य बोलणादि धर्मग्रहण करणा, तेरा उद्धार होगा, प्रभात समय, लोहाचार्य (गर्गाचार्य) अपर नाम, पधारे, राजा सपरिवार गया, दया क्षमाकों सुनकर, जैसें सांप कन्चुकी त्यागता है, तैसें मिथ्यात्व धर्म त्याग, सम्यक्त युक्त श्रावक व्रत लिया,

---

कपि लिखा है भिक्षुक कर्म करनेवाले छत्तीसही पूणसे दानादिक प्रति गृहीयोंकी सन्तान लिखा है जो उग्रवंश राजपुत्रोंमेंसे प्रगट हुए है वह भिक्षुक जाति जैनधर्मवालेको नहीं मानना अग्रवाले बडे दानी बडे शूर बडे व्यापारी प्रत्यक्ष दीखते हैं ये बात ब्राह्मणोमें कभी नहीं होसके दान लेनेवालेकी जाति कभी ऐसा दान नहीं कर सकती इसवास्ते अग्रवाल अव्वल राजन्य वंशी वैश्य हैं बीजकी तासीर, कभी मिटे नही जैनधर्मवालेके इति-हासको उल्टा सुल्टा करके माहेश्वर कल्पद्रुम वालेनें शैव विष्णु धर्मी प्रथमसे सिद्ध करणे की कल्पित बात लिखी है वैष्णवमती अग्रवसी निरापेक्षीपणेसें कसोटी लगाकर बुद्धिसे परिक्षा करले इतिहास कौनसा सच्चा है अल विस्तरेण, सतेरेराणियोंके तो १७ पुत्र किसी जगह लिखा हैं अठारमा पुत्र राजाकी पासवान ब्राह्मणी पडदायत्त थी उसका नाम गौण था इस वास्ते आधा गोत्र ठहराया, और बहुत लेख ऐसा है कि उग्रकुलवाले जो राजाके गोत्री वैश्य थे, उन्होंका आधा गोत्र ठहराया, मतलब आधेमें तो सत्रह पुत्र राजा होनेसें, और आधेमे सब गोत्री भाई, ऐसा एक अग्रवाल कुल व्याह करणा आपसमें ठहराया माता अलग २ होनेसें, फक्त दूध टाल दिया जैसें मुसल्मान लोक टालते हैं, आगे हिन्दमें ये

जगह २ चैत्यालय कराय, बाकी सर्व अग्र वंशियोका गोण गोत्र किया, सतरह पुत्रोंका सतरह गोत्र हुए, इनके कुल प्रोहित, हिंसक यज्ञ छोड कर, दया धर्म धारण करा जो गौड ब्राह्मण कहलाते हैं, त्यागी गुरु, मुनिः जती, राजानें कबूल करा, देवी महालक्ष्मी उपदेश देकर दया धर्म धराने वाली, लक्ष्मी पुत्र अग्रवाल लक्ष्मीके ही पात्र रहते हैं. पीछे नौकरी व्यापार, राजाके मुसद्दीपणा करते रहैं, एक पुत्रकी शन्तान अग्रोहाका राजा रहा मुसलमान सहाबुद्दीननें, राज्य छीनलिया, फिर हेमचन्द्र अग्रवालनें कोई लिखते है हे मूहसर बनिया था हुमायूं बादशाहको विक्रम सम्वत् १५७९ में युद्ध कर भगादिया, दिल्ली तख्तका बादशाह हो गया तब पीछे अकब्बरनें फिर युद्ध कर, छीन लिया, हेमचन्द्रको अकब्बर अपने पास रखणा चाहता था, मगर दिवाननें उसकों मार डाला इस बातसें अकब्बरनें नाराज होकर उसकों मक्के निकाल दिया देखो बङ्गवासी छापेमें छपा अकब्बर चरित्र, अग्रवाले राजाओंकी नौकरी करणेसें संगतका असर जैनधर्मके कायदे कठिन लगामदार घोडा जैसैं कुछ खासकेन पसिकैं, इसलिए, मालखाणा, मुक्तिजाणा, दिनरात दिल चाहे सो खाणा, लगाम छोड बेलगामी सातसय वर्ष हुए बहुतसे लोक, कोई शैव, कोई गोकुली, उधर लक्ष्मण गढके महानन्द रामजीके लडके पूरणमलजी दक्षिण

रसम जारी थी के, गोत्र पुत्रोंका अलग २ मान लेते थे, दायमे सब दधीचके, पारीक सब पाराशरके, खण्डेलवाल सखारडीके, एककी सब शन्तान लेकिन व्याह आपसमें करते हैं सिरफ माता अलग २ से अलग गोत्र समझा जाता था । कृष्णकी भूआ कुन्ति उसके पुत्र अर्जुनको कृष्णकी बहन सहोदरा व्याही एसा वैष्णव कहते हैं, जैनोंके अधक वृष्णी १ भोजक वृष्णी २ दोनो एक बापके बेटे यादव अन्धक वृष्णीका उग्रसेन भोजक वृष्णीका समुद्र विजयका पुत्र अरिष्ट नेमि (नेमनाथ) उग्र सेनकी पुत्री राजमतीसें व्याह होणे लगा, पडदादा एक था, इसवास्ते अग्रसेननें कुछ नई वार्ता नहीं करी, दक्षिणमे अभी भी मामाकी बेटी भाणजेसें शादी होती है राजपूतानेके सब राजा भी ऐसा करते है,कोई टालता नहीं,कोई टाल देता है, लेकिन ऐब नहीं गिनते है, माहेश्वर कल्पद्रुमवालेने अग्रवाल वंशवालोकी तारीफ तो लम्बी चौडी मनमानी लिखी है मगर अठारमा गोत्र गोल्हण ठहराया और लिखाये गोत्र कलयुगमे बहुत बढेगा मतलब गोलोंको अग्रवाल ठहराया है, आपसमें सगपण ठहराया है पूज्य पुरुषकी भक्ती तो करी मगर पूज्य पुरुषके नाक पर मक्खी बैठी जूतीसे उडाणा, ये मिसला

हैदराबादमें कोटयाधिपती बनके चक्राङ्कित् रामानुजधर्मा, श्री वैष्णव हो गये, द्रव्यकी सहायता देकर हजारां छन्यातिब्राह्मणोंको, महेश्वरी अग्रवालोंको, श्री वैष्णव बनादिया, और तोताद्री जो जीर स्वामीका काम था लाञ्छित करणेका, वह नई गद्दी बणाकर पुष्करजीमें स्थापित कर दिया, लाखो रुपये सीतारामबागको लगाया एक तर्फ दक्षिणी आचार्य एक तरफ अपने गौड ब्राह्मणोंकी गुरू गद्दी लगादी इस तरह कोई शैव, कोई विष्णुधर्मी हुए, और बहुतसे दिल्लीके गर्दनवाह, सनातन धर्म जैनही पालते हैं, दिगाम्बर ज्यादह श्वेताम्बरी अग्रवालोंमें कम है, सतरह पुत्रोंके नांम १ गर २ गोयल ३ मंगल ४ संगल ५ कांमल ६ वासल ७ ऐरण ८ ठेरण ९ विंठल १० जिदल ११ जिजल १२ किन्दल १३ कुंछल १४ बिछल १५ बुद्दल १६ मितल १७ सितल और आधे गोत्र गोंणमे सब उग्र कुल गिना गया इसतरह १७॥ गोत्र कहलाते है ॥

(इस समय प्रसिद्ध नांम गोत्र)

१ गरगोत्र २ गोयलगोत्र ३ सिंगलगोत्र ४ मंगलगोत्र ५ तायलगोत्र ६ तरलगोत्र ७ कासलगोत्र ८ वासलगोत्र ९ ऐरणगोत्र १० ढेरणगोत्र ११ सिन्तल १२ मिन्तल १३ झिंधल १४ किंधल १५ कच्छिल १६ हरहरगोत्र १७ वच्छिलगोत्र ॥ गरसू गण ॥

कर दिखाया है बीकानेरमें नाथी पातर मोहता महेश्वरी देश दीवान राजा सूरत सिंहजीके राज्यमें घरमे रक्खी थी उसकी सन्तान महेश्वरीयोमें मिलाई गई गडबड चलाते है मगर महेश्वरियोंकी बेटियोंसे ब्याह तो होते चार, पुश्तान बीतगये असलमें पिता तो मोहताजी महेश्वरी होनेसे महेश्वरी नाथीके मोहताही बजते है इन्साफसें तो कोई नुकसान नहीं दीखता क्योंके ब्राम्हणोकी सन्तान भी तो इस तरह ही भारतमें लिखी है कोई धीवरणीके पेटसें कोई कीरणीके पेटमें देखो विश्वामित्रका पाराशर उसका पुत्र कृष्ण द्वैपायन व्यासके शुकदेव इन सबोंकी माता अधम जातिवाली थी मगर ब्रह्मकर्ममें ब्राह्मण मानें गये इस न्यायसें रक्खी हुई स्त्रीकी सन्तान पिताके वीर्यसे है इस न्यायसे वैष्णवोंको दलील नहीं उठाणी चाहिये जैन लोकोंमे ये व्यवहार नहीं मालुम देता, अग्रसेनके भी वेद धर्मी थे, तभी अठारमा पुत्र निज सन्तानकों जैन धर्मके कायदेमें वरिवाद जो हुआ सो है तो, आधा गोत्र रहगया है, जैनधर्मवाले तो सब उग्रकुल १७॥ में मानतें है, ।

(श्री बीकानेर गद्दीनसीन महाराजा)

१ रावश्री बीकाजी
२ रावश्री नराजी
३ रावश्री लूणकर्णजी
४ रावश्री जैत सिंहजी
५ रावश्री कल्याण सिंहजी
६ महाराजा श्रीराय सिंहजी
७ महाराजा श्रीदल्पत सिंहजी
८ महाराजा श्रीसूर सिंहजी
९ महाराजा श्रीकरण सिंहजी
१० महाराजा श्रीअनोप सिंहजी
११ महाराजा श्रीसरूप सिंहजी
१२ महाराजा श्रीसुजाण सिंहजी
१३ महाराजा श्रीजोरावर सिंहजी
१४ महाराजा श्रीगज सिंहजी
१५ महाराजा श्रीराज सिंहजी
१६ महाराजा श्रीप्रताप सिंहजी
१७ महाराजा श्रीसूरत सिंहजी
१८ महाराजा श्रीरत्न सिंहजी
१९ महाराजा श्रीसरदार सिंहजी
२० महाराजा श्री डूंगर सिंहजी
२१ महाराजाधिराज श्रीगङ्गा सिंहजी बहादुर विजयराज्ये ॥
महाराज कुमार सादूल सिंहजी

जैसा लिख पाया वैसा सब राजवियोंकी पीढी लिखी है विद्यमान् महाराजा श्रीगङ्गासिंहजी बहादुर बडे भाग्यशाली बडे बुद्धिशाली बडे न्याय- नीतिमें अग्रेश्वर, प्रजा पालनेमें साक्षात् राजा रामचन्द्रजी जैसे जिन्होंकी कीर्ति सब बादशाहोंयोंमें रोशन है। अंग्रेज सरकार पंमचजार्ज सम्राट् तथा गवर्नर जनरल साहबोंके माननीय चन्द्रसूर्य ध्रुवकी तरह राज्य करते हुए, आप हुजूर साहब चिरंजीव रहे। यह ग्रंथ करताका आशीर्वाद है।

राष्ट्रकूट यानें राष्ट्रमायनें भारत वर्ष रूपराज्य जनपद देश उसके राज- वियोंमें कूट यानें शिखर समान उसका नाम (राठौड) कन्नोजकी बादशाही तूटी, तब सीहाराव आसथानजी खरतर गच्छ यती आचार्य श्रीजिनदत्त सूरिःके उपकारमें आभारी हुए. सं. विक्रम १२०० सेंके उतारमें पाली नगरमें खरतर गुरु जात राठोड मानेंगे एसी प्रतिज्ञा करी इसका विस्तार विवरण बीकानेरके बडे उपासरेके ज्ञान भण्डारमें सर्व चमत्कार उपकारका विस्तार वर्णन है आगे चूंडाजी पडिहारोंके मंडोवरमें साटी करी, (दोहा) चूंडा

चॅवरी चाढ़, दीवी मंडोवर दायजे, इदातणो उपकार कम वज कदियन वीसरे, पीछे मुनाहै के चूडेजीके १४ जाये १४ रावकहा ये प्रथम योध-पुर १ वीकानेर २ किशनगढ़ ३ रतलाम ४ झवुआ ५ ईडर ६ अहम-दनगर ७ इत्यादिक १४ ही राजा हुए।

(अथ योधपुर तख्तनसीन महाराज)

१ रावश्री योधाजी	११ महाराजा श्रीजसवन्त सिंहजी
२ रावश्री सांतलजी	१२ महाराजा श्रीअजीत सिंहजी
३ रावश्री सूजाजी	१३ महाराजा श्रीअभय सिंहजी
४ रावश्री गागोजी	१४ महाराजा श्रीराम सिंहजी
५ रावश्री माल्देवजी	१५ महाराजा श्रीवखत् सिंहजी
६ रावश्री चन्द्रसेनजी	१६ महाराजा श्रीविजय सिंहजी
७ महाराजा श्रीउदय सिंहजी	१७ महाराजा श्रीभीम सिंहजी
८ महाराजा श्रीसूर सिंहजी	१८ महाराजा श्रीमान सिंहजी
९ महाराजा श्रीगज सिंहजी	१९ महाराजा श्रीतख्त सिंहजी
१० रावश्री अमर सिंहजी नागोर तख्त विराजे	२० महाराजा श्रीजसवन्त सिंहजी
	२१ सिरदार० सुमेरु० उन्मेद सिंहजी चिरञ्जीवी विजयराज्यै

(जेसलमेररावलराजा)

मात कुलगर विमल वाहन वगैरह सातमानाभि १ ऋषभ व्रम्हा २ आत्रेय प्रथम वैद्य ३ असंक्षा पाटवीते सोम ४ असंक्षा पाटवीत बुद्ध ५ असंक्षा पाटवीत पुरूरवा ६ असंक्षा पाटवीते आई ७ असंक्षापाटवीत लवु ८ फिर असंक्षा राजाहुए ९ असंक्षा पाटवीते, जयात्र १० असंक्षा पाटवीते चन्द्र कीर्ति ११ इसके पुत्र नहीं तव युगलक दूसरे क्षेत्रसे लाकर देवता तख्त विठलाया हरि राजा यहासे हरि वंश कुल प्रसिद्ध हुआ चम्पा नगरीमें जो दक्षिण मुगलाईमें वीडनामसे प्रसिद्ध है १२ इसके असंक्षा वर्ष पर दृढाढ १३ असंख्या पीछे अजोन १४ असंक्षा वर्ष वीत अधिपती १५ असंक्षा वर्ष वीते थाई १६ सरमेन्द्र १७ उमेकर १८ चित्र १९ चित्र-रथ २० चक्रधन २१ अष्ट कर २२ चन्द्र कुमार २३ अत्रेय २४ मह-

स्राजुंन २५ सार २६ उद्धरण २७ वलिमित्र २८ प्रल्हाद २९ मृग घत्त ३० हरि विभ्रम ३१ भवण ३२ दूसल ३३ भूझक ३४ अचन सान सात ३५ भूमिपाल ३६ नवरथ ३७ दसरथ ३८ शक्त कुमार ३९ पृथ्वी भार ४० समर्थ ४१ श्रेष्ठपती ४२ यहित्रपत्र ४३ जादू ४४ इसके परिवार बहुत जादव कह लाये इस का सूर ४५ सूरके दो पुत्र सोरी ४६ दुसरा सुवीर सोरीका अन्धक वृश्नी ४७ सुवीरका भोजक वृश्नी इनके उग्रसेन मथुराका राजा हुआ अन्धक वृश्नीके समुद्र विजय वडा सोरी पुरका राजा छोटाही छोटा वसुदेव ४८ ये १० भाई दशारण वजते थे वसुदेवके कृष्ण ४९ प्रद्युम्न ५० अनिरुद्ध ५१ वज्र ५२ प्रतिबाहू ५३ बाहू ५४ सुबाहू ५५ भाटी ५६ इसका परिवार भाटी वजणे लगा जगसेन ५७ सालिवाहन ५८ भुवन पति ५९ भोपराज ६० मंगलराव ६१ वुद्ध ६२ वच्छराज ६३ देहल ६४ केशर ६५ तणा ६६ विजयराव ६७ देवराज सिद्धी ६८ तणु ६९ मधु ७० रावबाछ ७१ दुसाज ७२ जेसलजी जेसल मेर गढ डाला विक्रम सम्वत् १२१२ सावण सुदी १२ रविवार ७३ सालिवाहन ७४ राववीजलपिता द्रोणक रिष्ट ७५ राव कल्याण ७६ राव चोचावडो ७७ राव कर्ण ७८ राव लखण ७९ राव पुन्यपाल ८० रावजैतसी ८१ राव मूलराज ८२ राव दूदल ८३ राव घडसी ८४ राव केहर ८५ राव लखमण ८६ राव वैरसी ८७ रावधावो ८८ राव देइचीदास ८९ राव जैतसी ९० राव लूण करण ९१ रावमालदे ९२ राव हरदास ९३ राव भीमजी ९४ राव कल्याणदास ९५ रावमांनसिंह ९६ रावरामचन्द्र ९७ रावसवलराज ९८ राव अमरसिंह ९९ राव जसवन्तसिंह १०० राव जगत सिंह १०१ राव अखयसिंह १०२ राव मूलराजजी १०३ राव गजसिंहजी १०४ राव रणजीत सिंहजी १०५ वैरीसालजी १०६ शालिवाहनजी विजय राज्ये

---

* देरावर बसाई पमारो पास लोद्रवालिया ।

(अथ ओसवंश नाम)

श्रीमाल १ श्रीश्रीमाल १३५ गोत्र २ श्रीपना ३ श्रीपति ४

(अ)

आदित्य १ आसुपुरा २ आसाणी ३ अचल ४ अमरावत ५ अघोडा ६ आमाणी ७ आकोल्या ८ आमड ९ अशुभ १० अमोचिया ११ अमी १२ आइचणाग १३ आकाशमार्गी १४ आचलिया १५ आछा १६ आयरिया १७ आमदेव १८ आली झाड १९ आलावत २० अंबड़ २१ आवगोत २२ आसी २३ आभू २४ आखा २५ अछड २६ आभड रहा

(ई)

इलडिया १ ईदा २

(उ)

उत्कण्ठ १ उर २ ऊरण ३ ऊनवाल ४ ऊदावत ५ ओसतवाल ६ ओरड़िया ७

(क)

काउक १ कटारिया २ कठियार ३ कणोर ४ कनियार ५ कनोजा ६ करणारी ७ करहेडी ८ कडिया ९ कठोतिया १० कठफोड ११ कहा १२ कसाण १३ कठ १४ कठाल १५ कनक १६ कक्कड़ १७ कबा-ड़िया १८ काकलिया काकरेचा १९ कावसा २० काग २१ काकरिया २२ कासतवाल २३ काजल २४ कजलोत २५ काठोलड़ा २६ कावे-डिया २७ कावल २८ कातल २९ कावड़ ३० कांचिया ३१ करणावट ३२ कुगचिया ३३ कासेरिया ३४ केल ३५ काना ३६ कछावा ३७ कुंभटिया ३८ कोरा ३९ कांगसिया ४० कसूंभा ४१ केशरिया ४२ काला ४३ कोचर ४४ कानूगा ४५ कोठारी केई तरहका ४६ कोचेटा ४७ कातेला ४८ कातरेला ४९ कुद्दाल कई तरहका ५० कुहाड़ ५१ करमढिया ५२ करोंदिया ५३ कान्हडड़ा ५४ कुबेरिया ५५ कुचेरिया ५६ कुरकुचिया ५७ कछरोही ५८ कोकडा ५९ कर्णाट ६० कुलहट ६१ कूकड ६२ कुलभाण ६३ कयात्तर ६४ किरणाल ६५ कूंकूरोल

६६ काछ्वा ६७ कुंदण ६८ कोट ६९ कोटका ७० केहड़ा ७१ कालिया ७२ कंकर ७३ कावड़िया ७४ कान्हलिया ७५ कुकुम ७६ कटे ७७ कूकड़ा ७८ कूहड ७९ कौवर ८० कोंठेचा ८१ करहडा ८२ कल्पाणा ८३ कोटलिया ८४ कोठी फोड़ा ८५

(ख)

खटवड़ १ खाटोड़ा २ खोटड़ ३ खान्या ४ खींमसरा ५ खुड़द्या ६ खेमासस्या ७ खेमानंदी ८ खेतसी ९ क्षेत्रपाल्या १० खड़भण्डारी ११ खड़मणसाली १२ खजानची १३ खूतड़ा १४ खरधरा १५ खरहत्थ १६ खोखा १७

(ग)

गणधर १ गणधर चोपडा २ गिडीया ३ गेलडा ४ गडवाणी ५ गादहिया ६ गाय ७ गावडिया ८ गांग ९ गाधी १० गधिया ११ गूगलिया १२ गुल्गुलिया १३ गेवरिया १४ गोरा १५ गोखरू १६ गोंदेचा १७ गोलेछा १८ गोढ़वाडचा १९ गोव २० गोठी २१ गोगड़ २२ गटा २३ गर २४ गोय २५ गोसल २६ गहलोत २७ गह्राणी २८

(घ)

घुड़ १ घोरवाड़ २ घोडावत ३ घोपा ४ घंटेलिया ५ घीया ६

(च)

चौहाण २४ सोई जातवाले अश्वपति हुए १ चतुर २ चीपट़ ३ चीपड़ ४ चोरवेड़िया ५ चौपड़ा ६ चौधरी ७ चंडालिया ८ चव ९ चिड़चिड़ १० चींचड ११ चम्म १२ चामड़ १३ चीलमोहता १४ चोदू १५ चंद्रावत १६

(छ)

छजलाणी १ छाजहड़ काजलोत २ छाजेड़ ३ छोहन्या ४ छापरिया ५ छैत ६ छंदवाल ७ छापरवाल ८

(ज)

जणिया १ जालोरा २ जैणावत ३ जिन्नाणी ४ जुट्टल ५ जुजाणम

६ जुन्नर्हा ७ जोइया ८ जांबड़ ९ जांगड़ा १० जड़िया ११ जाइलवाल १२ जोधा १३ जलवाणी १४ जिन्द १५ जादव १६ जोहा १७

(झ)

झंबक १ झाबक २ झावड ३ झवरी ४ झोटा ५ झालाई ६

(ट)

टाटिया १ टूंकलिया २ टोडरवाल ३ टिकोरा ४ टेका ५ टीकायत ६ टाटया ७

(ठ)

ठाकर १ ठठवाल २ ठीक ३ ठीकरिया ४

(ड)

डहत्य १ डफरिया २ डफ ३ डागा ४ डाकलिया ५ डाकूपालिया ६ डागी ७ डूंगरवाल ८ डीडू ९ डौडिया १० डिडुता ११ डोसी १२ डूंगरंचा १३

(ढ)

ढड्ढा १ ढाबरिया २ ढिल्लीवाल ४ ढेढीया ५ ढेलडाया ६ ढींक ७ ढोर ८ ढेलड़िया ९

(त)

तलेरा १ तातहड २ तातेड ३ तिलहरा ४ तेलिया ५ तेलिया बोहरा ६ त्रिपेकिया ७ तेल्या ८ तोडरवाल ९ तिल्लाणा १० तेजाणी ११ तोसालिया १२

(थ)

थरावत १ थररावत २ थाहर ३ थोरिया ४

(द)

दरगड़ १ दक २ दरड़ा ३ दीपक ४ दूणीवाल ५ दूधेड़िया ६ दूदवेडिया ७ दूगड़ ८ देसरला ९ देहरा १० देवानन्दी ११ दोसी १२ दुदवाल १३ दस्साणी १४ दुड़िया १५ दूधोड़ा १६ दफतरी १७ दइया १८ देवड़ा १९ दसोरा २० द्रवरी २१ देल वाडिया २२ दाना २३ देशवाल

(ध)

धनचार १ धड़वाड़ि २ धाडीवाल ३ धाडेवा ४ धाकड़ ५ धीया ६ धूर ७ धूंध्या ८ धूप्या ९ धेनडाया १० धौन्या ११ धंग १२ धत्तूरिया १३ धन्नाणी १४ धेनावत १५ धाधल १६ धोका १७

(न)

नवलक्षा १ नपावल्या २ नडुल्लाया ३ नक्षत्रगोत्र ४ नाहर ५ नाहटा ६ नानगाणी ७ नाबरिया ८ नानावट ९ नागपरा १० नाबेड़ा ११ नाबे-डार १२ नाडूल्या १३ नाढेचा १४ नेणेसर १५ नेणवाल १६ नाग १७ नीबहडा १८ नारण १९ नारेला २० निरखी २१ नवकुद्दाल २२ नीमाणी २३ नाहउसरा २४ नीबाणिया २५ नाणी २६ नवाब २७ नागोरी भणसाली और भी कई तरहका २८ नागपुरिया २९

(प)

परमार १ पंवार २ पड़िहार ३ पंचोली ४ पचायणेचा ५ पसला ६ पटवा ७ पटवारी ८ पटविद्या ९ पगारिया १० पगाऱ्या ११ परधाल्या १२ पारख तीन तरहका १३ पापडिया १४ पामेचा १५ पालवत १६ पीपाड़ा १७ पींपलिया १८ पंचोली वावेल १९ पूनमिया २ तरहका २० पूनम्या २१ पूगलिया २ जातका २२ पोकरणा २३ पांचा २४ पचकुद्दाल २५ पोपाणी २६ पोमाणी २७ पीतलिया २८ पीथलिया २९ पोरवाल ३० पैंतीसा ३१ पचीसा ३२ पाचा ३३ पूण ३४

(फ)

फतह पुरिया १ फूमडा २ फूसला ३ फूल फगर ४ फोकटिया ५ फोफ-लिया ६ फलोधिया ७ फाकरिया ८ फलसा ९ ।

(ब)

वरढ़िया १ वरहडिया २ विछायत ३ वछावत ४ वराड ५ वडलोया ६ वड़गोता ७ वलाही ८ वलदोबा ९ वणभट १० वन्नाला ११ वावेल १२ वडोल १३ वरड १४ वोरड १५ बोंकडाया १६ वोकड़ा १७ वोहरा अनेक जातका १८ वोहरिया १९ वौल्या २० वौरधा २१ वंब २२ वबोढ़

२३ वग २४ वंका २५ वांका २६ वठिया २७ वांटिया २८ वांट्या २९ वाफणा ३० वहुफणा ३१ वापना ३२ वूत्रकिया ३३ वैदकई जातका ३४ वैतालिया ३५ व्रह्मैचा ३६ वडेर ३७ वद्धाणी ३८ विरहट ३९ वीर ४० वलहरा ४१ वसाह ४२ वाहंतिया ४३ वोक ४४ वोथरा ४५ वागाणी ४६ वाघचार ४७ वाघमार ४८ वाकरमार ४९ वेगाणी ५० वीराणी ५१ वीरी वत ५२ वाभी ५३ वुचा ५४ वूंत्रा ५५ वरा-हुऱ्या ५६ वगड़िया ५७ वायड़ा ५८ वाव्रडी ५९ वालिया ६० वरण ६१ विलस ६२ वाल ६३ वानल ६४ वाहवल ६५ वट ६६ विनाय-किया ६७।

(भ)

भल्लड़िया १ भड़ारा २ भद्रा ३ भड़कतिया ४ भक्कड़ ५ भटेवरा ६ भादाणी ७ भ्राद्रगोत ८ भाभू ९ भामूपारख १० भीलमार ११ भरट्ट १२ भौरड़िया १३ भौर १४ भंगालिया १५ भंडसाली १६ भणशाली-राय और खड़ १७ भंडगोत्र १८ भाडावत १९ भण्डारीराय तथा क० २० भूरा २१ भर २२ भेला २३ भूतेड़िया २४ भल्ल २५ भुगड़ी २६ भडसूरा २७ भूतोड्या २८ भटाकिया २९ भट्टारकिया ३० भेलड़ा ३१ भाटिया ३२ भाटी ३३ भूआत्ता ३४ भूप ३५ भंवरा ३६ भला-णिया ३७ भैसा ३८ भट्ट ३९ भींडा ४० भगत ४१

(म)

मटा १ मरड़्या सोनी २ मणहाडिया ३ मसरा ४ मम्मड़्या ५ मण-हड़िया ६ मकवाण ७ महाभद्र ८ मगदिया ९ मालू २ तरहका १० माधो-टिया ११ मुंहणांयी १२ मुहणो १३ मुंहणोत १४ मेड़तवाल १५ मोही-वाल १६ मौहीवाला १७ मौहव्वा १८ मंडोवरा १९ मंडोचित २० मंग-लिया २१ मेर २२ मोहड़ा २३ मेघा २४ मोदी २५ मल्ल २६ मुहाला २७ मुहियड़ २८ महेचा २९ मुकीम ३० मरोठी ३१ मरराणा ३२ मारू ३३ मोराक्ष ३४ मोलाणी ३५ मदारिया ३६ मरोठिया ३७ मकलवाल ३८ मगदिया ३९ मीठड़िया ४० मुंगरवाल ४१ महाजनिया ४२ मूग-

रेचा ४३ माल्हण ४४ मुसरफ वेगाणी ४५ मीन्नी ४६ मड़िया ४७ मह्ला-वत बाठिया ४८ महाव्रत ४९ मालविया ५० माधवाणी ५१ महति-याण ५२ मूंघडा ५३ मोर ५४ माचोदिया ५५ मेनाला ५६ महीपाल ५७॥

(य)

यक्षगोत्र १ यौगड़ २ यादव ३ येगेसरा ४

(र)

रतन पुरा १ रतन सूरा २ रतनावत ३ रत्ताणी बोथरा ४ रातडिया ५ राखेचा ६ रावल ७ राणाजी ८ राय भण्डारी ९ राका १० रीहड़ ११ रोटा गण १२ रूप १३ रूपधरा १४ रूणवाल १५ रायजादा १६ रावत १७ राठोड १८ रूणिया १९ रामपुरिया २ तरहका २० रेणू २१ राखड़िया २२ रामसैन्या २३ रणधीरोत कोठारी २४ राव २५।

(ल)

लक्कड १ लल्वाणी २ लींगा ३ लुंक्क ४ लूंकड ५ लूणावत ६ लालण ७ लालाणी ८ लूणिया ९ लेला १० लेवा ११ लोढ़ाराय १२ लोढ़ा कट्ट १३ लोटा १४ लोलग १५ लूटंकण १६ लांबा १७ ललितं १८।

(स)

सचिन्ती १ सचिन्ती दिल्हीवाल २ सखला ३ समुद्रिया ४ सवरला ५ सालेचा ६ साहेल ७ सियार ८ सीखाणा ९ सीसोदिया १० सिरोहिया ११ सियाल दो तरहका १२ सुदेवा १३ सूगणा १४ सराफ १५ सुन्दर १६ सूरपुन्या १७ सूरपुरा १८ सुकलेचा १९ सेठिया २० सेठीपावरा २१ सोनगरा २२ सोलंखी २३ सोनी २ तरहका २४ सांड २ तरहका २५ संघवी कईतरहका २६ संड़ २७ संखला २८ सुवड २९ संवल ३० संखवालेचा ३१ सचती ३२ सांखला पमारामांह सुवाज्या ३३ साखला निजराजपूत हुआ ३४ समदड़िया ३५ साम सुका ३६ सावण सुका दोनों एक ३७ सेठिया वेद बीकानेर महाराव प्रमुख ३८ लघुसेठी सोनावत ३९ साह बाठिया ४० साह बोथरा साह पद बहु जाती ४१ सिंघल ४२ सींप ४३ सीपाणी ४४ सुत ४५ सघरा ४६ सोझतवाल ४७ सिंघा-

डिया ४८ सेखाणी ४९ सुखाणी ५० सेठ ५१ मुथड ५२ सोमलिया ५३ समूलिया ५४ साहला ५५ सोनीवापना ५६ सापद्राह ५७ सामरिया ५८ सारंगाणी ५९ सूर ६० सींवड ६१ सिन्दुरीया ६२ सचोपा ६३ मेल्होत ६४ सेवड़िया ६५ साचोरा ६६ सोझतिया ६७ संभुआना ६८ सरला ६९ सुधेचा ७०

(ह)

हगुडिया १ हींगड २ हेमपुरा ३ हुडिया ४ हाहा ५ हाथाला ६ हाला ७ हीरावत ८ हिरण ९ हरखावत बांठिया १० हिड़ाऊ ११ हेम १२ हठीला १३ हमीर १४ हसारिया १५ हस १६

इसी तरह हमनें ६८० इतनें नाम पाए सो लिख दिये है बाकी अश्वपती जात रत्नाकर सागर है, इसमें गोत्र नख मुक्तावलीका पार कौन पासक्ता है अन धन सपदा पुत्र कलत्रादि परिवारसें गुरू देव सदा इन्होंकी सवाई वाजी रख, वड़ शाखा ज्यों, विस्तार पाओ.

(गृहस्थाश्रमव्यवहार)

अव्वल तो सोल्ह संस्कार जैनधर्मके (आर्य वेद) के प्रमाण मंत्र युक्त विधिसे जैनधर्मी श्रावकोंकों जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त केहै सो आगे तो जैनधर्मी ब्राह्मण थे वह कराते थे और अब श्रावकोंको चाहिए की जो काल धर्मको विचार कर जैन जती पडितोंसे करवाणा दुरस्त है जो किसी जगह जती पंडित नहीं मिले तो सोल्ह संस्कार की पुस्तक जैनधर्म आर्य वेद मन्त्रोंकी विधी समेत बीकानेरमे हमारे इहा मिलती है पडित महात्मा जैनी भोजकसे विधीसें करवावे मगर मिथ्यात्वियोंके संस्कार विधीसे दूरही रहना दुरस्त है, गुजरातमे प्रथा शुरू होगई है १ व्रत पच्च खान अपनी कायाकी शक्ती मुजिब नवकारसीसें आदिलेनिभेजेसाधारणा १ धन पैदा करके इसभव परभव दोनों सुधरे और दुनिया तारीफ धर्म वन्तकी दातारकी हमेशा करे वैसाही करणा २ शास्त्र पढ़े हुए- विचक्षण उपदेशी जैनधर्ममें तत्पर निष्कपट महापुरुषकी संगत और द्रव्य भाव भक्ति करणी ३ लैण दैण साफ रखणा ४ करजदार जहां तक बणे वे कारण होना नहीं ५ विश्वास पैठ प्रतिती पूरे वाकिफ

कार हुए विगर हर किसीका करणा नहीं ६ स्त्रियोंको कुलवन्ती सुलक्षणी चतुरा सिवाय हर किसीकी सगत नहीं करणे देणा ७ अपनी तासीरकों नुकशान करें ऐसा पदार्थ ऋतुके विरुद्ध व कुलके विरुद्ध व प्रकृतीके विरुद्ध कभी खाना नहीं या पूर्ण विद्यावान् देशी वैद्यकी आज्ञा उपदेश हमेशा धारण करणा ९ कोई तरह काभी व्यसन सौखसें सीखणा नहीं १० रोग कारण और विचारणा ११ कठिन शब्द किसीको वे कारण कहना नहीं १४ घरका भेद कुमित्रोंकों कभी देणा नहीं १५ धर्मी पुरुषकों वणे जहा तक सहाय देणा १६ परमेश्वर और मौत, अपने पर किया हुआ उपकार इन तीनोंको हर दफे याद करते रहना १७ किसीके घर पर जाणा तो बाहिरसें पुकार कर अन्दर घुसणा १८ मुल्कगिरी करते वक्त हाथकी सच्चाई १ जुवान की सच्चाई २ लेन देनकी सच्चाई, लंगोटकी सच्चाई रखणा, १९ और वे खबर गफलत सोणा नहीं २० वणे जहा तक इकेलेनें मुसाफिरी नहीं करणी, २१ फाटका करणेवाला तथा जुवारीकों गुमास्ता रखणा नहीं रुपया उधार देणा नहीं २२ मंत्र पढकर या किमिया गिरीसें जो पुरुष द्रव्य चाहते हैं, उन्हों पर देवका कोप हुआ समझणा, २३ अपने लडका लडकियोंको हर एक तरहका हुन्नर सिखलाणा, इल्म सिखाणा, अखूट धन देना है २४ सरकारके कायदेके वर खिलाफ पाव नहीं धरना, २५ धन पाकर गरीबोंको सताणा नहीं, २६ अभिमान करणा नही २७ तनमन और वस्त्र हमेस साफ रखणा, २८ जैनधर्मके मुकावले दूसरा धर्म नहीं २९ क्योंके अहिंसा परमो धर्मः इस वर्तावसें इस धर्मका सारा व्यवहार है, पक्का इतकात रक्खो ३० जीव अपने पूर्वके किये हुए पुन्य पापसें सुख दुख पाता है ईश्वर किसीका भला बुरा नहीं करता, ३१ दुनिया न तो किसीने बनाई है और न कोई नाश कर सक्ता है, पाच समवायके मेलसें सारा काम घटत वढ़त हो रहा है काल १ स्वभाव २ भवितव्यता ३ जीवोंके कर्म ४ जीवोंका उद्यम ५ सब इन्होंकाही फेरफार

---

१ खानपानादि आहार विहारादि आरोग्यताके लिए हमारा लिखा वैद्य दीपक ग्रंथ छपा हुआ पढो, न्योछावर ५)

कुदरत दिखाता है ३२ कर्मके नचाये देव पशु मनुष्य सव स्वांग नाच रहे है, ब्रम्हाको कुम्भारका कर्म करणा पडा विष्णुको दश अवतार धारण कर महा संकट उठाणा पड़ा, रुद्रको ठीकरा हाथमें लेकर भीख मांगणी पडी, सूर्यको हमेश चक्र लगाना पड़ा, वस कर्मकी गतिको जिसनें पहचाणा वही जन्म मरणसे छूट गया वह सर्वज्ञ ईश्वर ज्ञानानन्द मई अरूपी आत्मा है ३४ जैसे ईश्वर और जीव दोनों किसीके वनाये हुए नहीं वैसेही दुनिया किसीकी वनाई हुई नहीं ३५ दुनिया ईश्वरकी कर्त्ताकी दलील करती है, मगर इन्साफसे पेश नहीं आते ३६ आकाशमें सूर्य चन्द्र तारे जो तुम देखते हो यह ईश्वरके वनाये हुए नहीं है ज्योतिषी देवताओंके विमान है, इन्होंको देवता चलाते है ३७ कई लोग जमीनको नारंगीकी तरह गोल कहते हैं लेकिन जमीन थालीकी तरह गोल है और सपाट है ३८ जमीन नहीं फिरती, अचल है चन्द्र १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ और तारे ५ अपने कायदे मुजिव फिरते है ३९ आत्मा एक अविनाशी शरीर तापसें जुदा पदार्थ है मगर कर्म तापके वस मोह अज्ञान जड़नें घेरा हुआ है ४० मांस खाणेसें वैद्यक विद्याके हिसाव वडाही नुकशान करणे वाला और धर्मके कायदेसें नरक जानेका कारण, और जिसें जीवकों मारकर मास लिया जाता है वह पिछला वदला लिए विगर हरगिज छोड़ेगा नहीं ४१ पेस्तर रावण कृष्ण रामचन्द्र तथा लक्ष्मणादिक विमानके जरिये हजारों कोसोंकी मुसाफरी करते थे ४२ जिसके पुन्य प्रवल है उसका वुरा कोई नहीं कर सक्ता ४३ देव गुरूके दर्शन करे विगर भोजन करना श्रावकोंको उचित नहीं ४४ दौलत धर्मकी दासी हैं ४५ जैसा दुश्मनका कोप रखते हो ऐसा १८ पाप स्थानकोंका रक्खा करो ४६ वाप माका दिल, वदगी कर खुश रक्खा करो मांका फरज वापसें भी आला दरजेका है तुम वह करजा कभी नहीं फेट सकोगे, जहा तक धर्म प्राप्तिका सलूक नहीं करोगे उहां तक ४७ जलमें मत घुसो ४८ विगर छाणा जल मत पीओ ४९ विगर गुण दोष जाणे विगर नजरके वे दरियाफ्त कोई चीज मत खाओ पीओ ५० वासी भोजन मत करो ५१ सरकारी एनके कायदेसें

वाकिफ रहो ९२ राजद्रोह मत करो ९३ देशी उन्नतिका ढंग हुन्नर इल्म मप और मदत देणाही मुख्य है ९४ व्यापार सब मुल्ककी आर्व दानीका बीज है ९५ शराबसे खराब होणा है ९६ सभामें गुरूके पास और दरबारमें जाते संका मत लाओ पूछेका जबाब विचारके दो सभामें बैठणा बोलणा लायकीसें करो ९७ राजकी कचहरीमें हाकिम धमकावे तो या फुसलावे तो डरो भी मत और न फुसलाने पर कायदेके वर खिलाफ बात करो हाकिमोंका दस्तूर है कि मुद्दई और मुद्दायिलहके दिल्को कमजोर कर बात पूछणा जिससें वह हड़बड़ाके कुछका कुछ कह उठे अब वह जमाना नहीं है जोकी न्यायकी गहरी खोजसें सचका सच झूंठका झूंठ और अब तो चालाकी सफाई और गवाहीसे मिसलका पेटा भरा, बस झूंठा भी सच्चा बन जाता है ९८ जैनधर्मियोंकी रिवाज है कि, प्रात समय उठके, परमेष्ठी ध्यान मन गत करे, पीछे फिर शुच होके वस्त्र बदलके सामायक प्रतिक्रमण करे उहांसे उठ कर स्नान तिलक कर उत्तम श्रेष्ठ अष्ट द्रव्य लेकर जिन मन्दिरोंमें, या घर देरासरमें, पूजा करे, नैवेद्य बली चढ़ाकर, वस्त्र पहन कर, गुरूकूं यथा योग्य वन्दन कर, व्याख्यान सुणे, पच्चखाणकाया शक्ति मुजब, छछंडी चार आगार मोकला रक्खे, फिर घर पर सुपात्र तथा क्षुल्लक सिद्ध पुत्र, अनुकम्पावगैरह दान यथाशक्ति करके ऋतु पथ्य, प्रकृति पथ्य, कुलाचार मुजब भोजन दो भाग, एक भाग जल, एक भाग खाली पेट रक्खे, सराब ब्रांडी मिली तथा जीवोंके मांस चरबीसें बणा पदार्थ खाणा तो दूर रहा, लेकिन हाथसें भी स्पर्श, न करे वस्त्र उजले धोये हुए साफ पहरणा, आगे ऐसा रिवाज भारत वर्षमें था कि, शूद्र जातीके लोक, नग्न, बाल साफ कराए हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, शुद्ध ताईसें, भोजन रसवती तैय्यार-करते, तब राजपूत वैश्य और ब्राह्मण भोजन करलेते स्वामी दया नन्दजी, सत्यार्थ प्रकाशमे लिखते हैं ऐसा वेदोंमें लिखा है, कौन जाने इसी रिवाजकों, हमारी जैन जाति' कबूल करके चलते होंगे मारवाड़के, क्योंके आगे ब्राह्मण लोक भट्ट झोकणेका काम, शूद्रोंका समझ, नहीं करते थे, और वनोवासी ऋषि थे वह तो, मध्यान्हकों, एकही

समय भोजन अपने हाथकी बनाई हुई खाते थे, वह स्वयपाकी वजते थे, अब तो चारोंकामको, ब्राह्मण मुस्तैद है पीर १ बबरची २ भिस्ती ३ खर ४ तो बहुतही अच्छा है मांस मदिराके त्यागी जो मारवाड़ गुजरात कच्छके ब्राम्हण हैं, उन्होंसे चारों काम कराणा जैनधर्मियोंके लिए, वे जा तो नहीं है लेकिन जल दिनमें दोवक्त छाणना, चूलेमें लकड़ीमें, सीधे सरजाममें, साग, पात, फल, फूलके जीवोंकों, तपासणा, जैन धर्मकी क्रियेंको, अथवा मर्दोकों करणा वाजिब है ब्राह्मण तो फरमाते है हम तो अग्निके मुख हैं, जो होय सो सब स्वाहा लेकिन दया धर्मियोंको, इस बातका विवेक रखणा, एकका झूठा, तथा बहुत मनुष्योंनें सामिल बैठके जीमना, ये उभय लोक विरुद्ध है डाक्टर लोक कहते हैं गरमी सुजाक कोढ़ खुजली आख दुखणा वगैरह कई किस्मकी विमारी, ऐसी तरहकी है, जो झूठ खाणेवालोंकों, लग जाती है, जिस वरतणसें मुह लगा कर, पाणी पीणा, वह वरतण पाणीके मटकेमें नहीं डालणा, कारण, उस पाणीसें रसोई, बणनेमें आवे तो, साधू सन्त, अभ्यागतकों देणा, उन्होंको अपणी झूठ न खिलाना है, वह अपना रोग लगाना है, वह महा पाप है, धर्म ध्यानके कपडोंसें, गृह कार्य नहीं करणा, स्त्रियोंको तीन दिन ऋतुधर्म आनेपर, घरका अनाज चुगाणा, कोरा कपडा सीणा, वगैरह रिवाजोंको बन्ध करणा, ठाणाग सूत्रपाठके, दशमे ठाणे, खूनकी असिझाई भगवाननें फरमाई है, स्नान २४ पहर पीछे करणा, २ दिनसें करणा वाजिब नहीं है, सूतक जन्म पुत्रका १० दिन, लड़कीके ११ दिन, मरणका सूतक १२ दिन, जादह सूतक अभक्ष विचार देखणा हो तो रत्न समुच्चय हमारा छपाया हुआ पुस्तक देखना जहां तक भक्षाभक्षका विवेक नहीं, उहांपर्यंत पूरा व्रतधारी श्रावक नहीं हो सकता, रोगादिक कारण यत्न करे, श्रावकको तन दुरस्त रखणा, जिससे समझ वान, धर्म १ अर्थ २ काम ३ और मोक्ष ४ चारों साध सकता है, अन्य दर्शिनियोंकी संगत पाकर श्रावक धर्मकों छोडणा नही चाहिये, राज.दडे, लौकिक भंडे ऐसा रुजगार खान पान, धन प्राप्ति कभी नहीं करणा चाहिये, रात्रि भोजन करणेसें हैजा,

जलन्धर, अजीर्णादिक रोग होणा इसभव विरुद्ध है और नाना तरहका रात्रि भोजनसे जीवघात होणेसें, नरक तिर्यंच गति होती है यह परभव विरुद्ध है, मकान, चौका, और बरतण, और लड़का लड़कियें ये सब साफ सुघड़ रखणा चाहिये, जहा पवित्रता है वहां ही लक्ष्मी निवास करती है, श्रावक कुलाचारमें मांस मदिराका तो बिल्कुल अभाव ही है तथापि सर्वज्ञ फर्माते हैं जहा तक तुम आत्माकी देवकी और गुरूकी साक्षीसें सौगन नहीं करोगे, उहा तक निश्चय नयसें तुम्हें उन चीजोंकी मुमानियत नहीं मानी जायगी, हरी वनस्पति बिल्कुल छोडणेका रिवाज आज कल मारवाड़के जैनोंमें ज्यादह प्रचलित है, इससे मुंहमे मसूड़े पककर खून गिरणा जोड़ोंमें दर्द खूनकी खराबीनाताकत बहुत आदमी देखणेमें आते है, और गुजराती कच्छी जैन कोम ज्यादह सागपात तरकारी खाणेसें, बदहजमी, मेदवृद्धिदस्त बेटम, इत्यादि रोगोंसे पीड़ित देखणेमें आते है, इस लिये कलकत्ते मकसूदाबादवाले जैन कोमका रिवाज हरी वनस्पतिका मध्यवृत्तिका मालूम दिया है, जो कि ताजी वनस्पति आंम, कैरी, अनार, सन्तरा, मीठे नींबू, नेचू, गुलाबजामुन, परबलदूधी (कद्दू) आदिक बढिया फलोंका, और गिणती मुजब सागोंका, तनदुरस्तीका, वर्त्ताव देखणेमें आया, न तो अव्रतपणा रखते है, न ऊठोंकी तरह हर वनस्पतिको खाकर, दोनों जन्म बिगाड़ते है, गिणती माफिक पच्च खाण करते हैं, जैसे उपासगदशासूत्रमे आनन्द श्रावकनें कहा है वैसा इच्छारोधन शक्त्यानुसार करते है, श्रावकोंको, सड़ाफल चलितरस, गिलपिला हुआ, आपसें ही छेद हुआ, ऐसे फल तथा तुच्छ फल, बेर, पीलू वगैरह कमकीमती जिसमें, कृमि, अन्दर पड़ जाती है, ऐसोंसे, हमेश, बचणा चाहिये, पत्तोंके साग, बरसातके ४ महिनें, हरगिज नहीं खाणा चाहिये, और मोलका आटा, विगर तपासाभया, घी, साबत सुपारी खानेसे, जैन धर्मशास्त्र मास खाणेका, दोप फरमाते हैं, मगर मुसाफिरी करनेवाले, गरीब श्रावकोंसें मोलका आटा और घीका व्रत पालणा मुशकिल मालूम देता है, रेलके मुसाफिरोंको, मोलकी पूड़ी ही, मयस्सर होती है, विचार कर सौगन लेणा चाहिये, सौगन दिलाणेवाला पूरे जाण-

कार १ लेणेवाला पूरा जाणकार, दोनोंमेंसे एक जांणकार, ३ यहांतक तो मौगन यांनें पच्चखाण शुद्ध माना गया, और करणेवाला, कराणेवाला, दोनों पच्चखाणके स्वरूपके अजाण ये पच्चखाण तदन अशुद्ध हैं, सागपत्तोंके जीव तपासे विगर हरगिज वरताव नहीं करणा चाहिये जो जो पदार्थ वैद्यक शास्त्र-वालोंने रोग कर्त्ता निरूपण किया है सो प्रायः तीर्थंकरोंने अभक्ष फरमाया है देखो हमारा बनाया वैद्य दीपक ग्रन्थ, झूठे बरतणरातवासी नहीं रखणे चाहिये पत्तलोंमें भोजन करणेसें श्रावकोंको बडा पाप लगता है कारण उन पतलो पर भोजनका अंस लगा रहता है वह एक पर एक गिरणेसें प्रत्यक्ष कीडे पैदा होकर हिंसा होती है, पात्र चान्दीका सोनेका, गरीबोंकों उमदा कासीके थाली कटोरे रखणा दुरस्त है आजकल टैन एलियो मिनीम वगैरहके घर २ में चल रहे है धातू वह अच्छा समझणा चाहिये कि जिसके पर-माणु पेटमें जाणेसें कोई किस्मकी पीछै तकलीफ न पैदा करे तांवा पीतल जरूर हानि करते है हमेशाके मावरेमें ये पात्र बिल्कुल अच्छे नहीं कारण भोजनमे पट्रस आता है और खट्टा रस लोंण वगैरह जिस धातुके सग दुश्मन दावा रखता है ऐसा पात्र अच्छा नहीं श्रावककी करणी खरतर गच्छी जिन हर्षजीने चौपई रूप २२ गाथाकी बनाई है सो श्रावकोंके लिए नसियत है जरूर उसकों अमलमें लाणाफर्ज है बचपनेमें व्याह करणा उनोंका समागम कराणा जिन्दगानीको धका लगाणा है स्त्री तेरह पुरुष १८ यह कल्युगी रिवाजमे तदन हटना नहीं चाहिये बच्चोंको पढाणा जरूर है मगर याद रक्खो पहले दया धर्मकी शिक्षा दिला कर पीछै अंग्रेजी पढाणा मुनासिब है अगर न दी जायगी दयाधर्म शिक्षा तो अंग्रेजी पढ कर जरूर होटलोंके महमान बणेंगे कोरे घडेमें पहले घी डालकर पीछै आप चाहै सो वस्तु डालो खारखटाई विना हरगिज ठीकरी चिकणापन घीका नहीं छोडेगी खार खटाई शिक्षामें क्या चीज है-स्त्रीका लालच धनका लालच समझणा चाहिये, कारण धर्मशिक्षा पाये हुए भी इन दोनोंकी आसामें निज धर्म बहुतसे खो बैठते है मगर थोडे प्रायः नहीं छोडते है, इल्म पढाणेमें गणितकला, लिखतकला, शास्त्री अक्षर, अंग्रेजी अक्षरादिकोंकी, पठतकला,

शिखाणा जमानेके अनुसारही चाहिये, व्यापार हरकिस्मके करके, धन उत्पन्न करणा गृहस्थोंका मुख्य कृत्य है, तथापि तिल वगैरह अनाज फागुण महिने उपरान्त रखणेसें, महाजीवोंकी हिंसा होती है, सब कार्योंमें विवेकही रखणा मुख्य धर्म है, (विचार) जैसें गीतामें लिखा है (स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः इसका अर्थ निर विवेकी कुछका कुछ करते है, लेकिन कृष्ण द्वैपायन व्यास आगामी चोबीसीमें तीर्थंकर होणेवालेकी बनाई गीता कर्मयोग ग्रंथ है, इसके वचन प्रायः विरुद्ध होय नहीं, इस-वास्ते इसपदका सीधा अर्थ ज्ञानियोंके मान्य करणे योग्य विवेकी ऐसा सम-झते हैं, स्वधर्म क्या वस्तु, आत्माका ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ रूपधर्म, इस धर्ममें, निधनयानें इस शरीरके त्यागणेसें, श्रेय, यानें मोक्ष होता है, परधर्म, यानें कर्म जड पदार्थका, जो मोह, अज्ञान, मिथ्यात्व, अव्रत रूपधर्म है, सो भयका देनेवाला हैं, ऐसा अर्थ विवेकी करते हैं, इत्यादिक हर पदार्थपर, विचारणा, उसका नाम विवेक है,

(स्त्रियोंके लिये शिक्षा)

पवित्रता रखणा, शील व्रत धारणा, स्त्रियोंका मुख्य शृङ्गार है, पतिकी भक्ति करणा, आज्ञानुसार वरतणा, घरका काम देखणा, रसोई बनाना, चुणणा, वीनना, फटकणा, कूटणा, पीसणा, छाणना, सब कामोंमें जीवोंका यत्न करणा, पापडवडी दाल बनाना सुकाना विगड़नेवाले पदार्थोंमें फूलण कीडे न पडने पावे छायामें फैलाकर हवा देणा, ऊनू रेशमी वस्त्रोंको चातुरमासमें जीव नहीं पड़ने पावें इस तरकीवको ध्यानमें लाणा चाहिये, आचार मुरब्बा, बनाकर विगडने, नहीं देना, वस्त्र धोए रंगे सुगन्धित रखणा, बच्चोंको स्नान, मञ्जन खान पान, पोसाख गहणोंसे अलंकृत कर, पढाने भेजना, लडकियोंको लिखत पठत सींवना गुंथणा, कसीदा, चम्पा, अलमास, गोखरू वगैरह औरतोंकी चोसठकला, जैसें श्री ऋषभ आदीश्व-रने अपनी लडकियें, ब्राह्मी सुन्दरीकों सिखलाई, उसमेंकी बणे जहांतक सिखलाणा, क्योंके स्त्रियोंकों जगह २ पुरुषोंकी अर्द्धांगा फरमाई है, और सच है भी ऐसा, मनुष्य धन कमाणा इतनेही मात्रका मजूर है लेकिन

वर धणियाणी स्त्रीही कहलाती है, अगर वह अणपढ कलाहीण होगी तो, पुरुषका आधा अङ्ग बेकाम होजाता है, जैसै पक्षाघात (लकवा) में होता है, ये भी एक जन्मभरका रोगही लगा समझा जाता है (दोहा) पुत्र मूर्ख चपलाति या, पुत्री विधवा जात, धनहीना शठ मित्रते विना अग्नि जर जात, १ ये पाच योग जव वण आते है, तवविना अगारके मनुष्य जल जाता है, जिन स्वार्थ तत्परोंने ऐसै २ वहम हिन्दुस्थानमें डाल रखे है कि, लडकियोंको हरगिज नहीं पढणा, वह व्यभिचारिणी वा विधवा हो जाती है उन धर्माध्यक्षोंने ये विचार करा के, जो घर धणियाणी ज्यादह पढी हुई होशियार होगी तो, हम गपोड पुराण सुनाकर धर्म राजके ईश्वरके, तथा नवग्रहोंके अङ्क, या आडतिये, वणकर, माल उतारणेका, ढगजमावेंगेतो, हरगिज नहीं ठगायगी, सच्च है इस अण पढताके कारण घरमें किसीको विमारी होती है तो, झाडा फूका कराणे जोगी फक्कड काजी मुल्लोके हाथ हजारोंका माल ठगवाती है, या किसी मनमानें भूत पलीतका बोलवाकर मूर्ख अणपढ कुमार्गी कुपात्रोको भोजन वस्त्र रुपया वगैरह जो वह मागे, सो देती है, लेकिन रोगकी परिक्षा कराकर, विद्वान वगैरह वैद्य डाक्टरोंसे, किसी तरहसें पेश नहीं आने देती जो कभी भाग्य योग, घरमेंका स्याणा आदमी किसी वैद्यकों लावेगा तो प्रथम तो उसकी कही बात पर अमल न होणे देगी, या रोगीकों मनमाने कुपथ्य खिलावेगी, और मनमें समझेगी, वैद्य तो पथ्य कराकर, मारही डालते हैं, जब अच्छी मनमानी चीजें खायगा तो, ताकत आकर झट आराम आ जायगा दवाइयोंसें क्या होणा है, या तो अङ्कमें, भैरू पितर, मार्वाडिया, देविया नचायगी, ये सब काम अणपढी स्त्रियोंके साथ, सम्बन्ध रखते है, वाजै २ अणपढ, स्त्री भक्त, मोह ग्रसित मनुप्य भी काठके उल्लु ऐसे २ होते है, विधवा होना पूर्व जन्मका संस्कार है, प्रथम तो लडकेकी आयुरेखा समझ वारोसें मालुम कराणी ज्योतिषी पूरे विद्वानसें ग्रहाचार आयुरेखा निश्चय करा कर, पीछे लग्न करणा चाहिये, वरके तरफ खयाल नहीं करती, घरके तरफ खयाल करती है, गहना

ज्यादा डाले सो घर होना, कारण कोई पूछे तो, फरमाती है, जमाई मर जाय तो , मेरी बेटी क्या खायगी ऐसा मांगलिक शब्द सुनाती है, जो इल्मदार कला कौशल सीखी हुई कन्या होगी तो, ऐसे मोकेपर अपनी कारीगरीसें चारोंका पेट भरसक्ती है, अपनी तो विशायत ही क्या है, वाजे स्त्रियें इल्महीन पती मरे पीछे गुजरान चलाणे, पर पुरुषका आसरा लाचारीसें लेती है, लडकपनेमें व्याह करणेसे, जब पतीका वियोग होनेसे होश सम्हाले पीछे कुललाञ्छित करना सूझता है, या, जब हमलरहजाताहैतो, विरादगीके कोपसें गिराती है, वाजे अपघात करती है, मुल्क छोडती है, सरकारसें सजा पाती है, जाति वहिस्कृत हो जाती है, इस वास्ते शूद्रसज्ञाके लोकोंमें, पुनर्विवाहकी रसम जारी है, ऐसे २ बाबतोकों देख गवर्मेन्ट पुनर्विवाहको पूरा अमलमें लाया चाहती है, क्योंके प्रजा वृद्धि और पचेन्द्री जीवोकी हिंसाका बचाव, और स्वामी दयानन्दजी भी यही तूती बजागये, समाजी लोक बजाते फिरते है जैन निग्रन्थका हुक्म है, तपस्या करके इन्द्रियोंको दमन कर, धर्म तत्परता होणा विधवाओंने, या दुनियातार्के, सो प्रायः जैन कोमकी स्त्रिये बेलातेला अठाई, पक्ष, मासादिकोंकी, तपस्या करती है, कई रोज पीछे हाड मास सुकाकर मृत्यूको प्राप्त होती है, ऐसा व्यवहार करणे वालियोंके लिए, ये शिक्षा, निग्रन्थ प्रवचनकी, वहुत लायक तारीफके है, लेकिन सर्बोका दिल, और बदन, और आदत, एकसा होता नहीं, उन्होंके लिए, अपनी २ कोमके पचोंने, सुलभ निर्वाह मुजब कायदेके प्रबन्ध, सोचनेकी जरूरी है, राजपूतोंमें पडदेका रिवाज शील व्रत कायम रखणेकों ही जारी किया गया है, यह जबराईसे शील व्रतका, कायदा रखणा है, सच है जो स्त्री स्वेच्छा चारिणीयां होकर, ईधर उधर भटकेगी, जरूर लाञ्छित हो जायगी, पुरुषोंका संग, दुराचारी स्त्रियोंका सहवास, मनुष्योंकी प्रार्थना और धनका लालच, एकान्त पाकर भी, जो अपना व्रत कायम रखती है वही सती जगतमें धन्य है, स्त्रियोंका स्वभाव है, जब रूपवन्त युवानको देखे तब, मदन वांणसें मदको अधोभागमें छोड देता है भगवान महावीर भगवती सूत्रमें फरमा गये है जो स्त्री मनमें कुशीलकी

वाञ्छा रखती है, और लाजसें, या डरसे कायासें, दुराचार नहीं करती, वह मरके वैमानकवासी- पहले दूजे देव लोकमें, ५५ पल्य (असंक्षा) वर्षोकी ऊमरवाली अपरि गृहीता, (वैश्या) देवांगना होकर, सुख भोगती है, इतना पुन्य मन विगर शील पालनेका है; पंछी आकाशमें उडते हैं मनुष्योंमें भी कुदरत है, उडकर चलकर, ऐसा काम कर सक्ता है, विद्याधर, रेल, वाइस कल मोटरमें बैठे ऐसी चाल प्रत्यक्ष चल रहे है, पहाडको भी मनुष्य उठा सक्ता है, यानें नवोंई नारायण, क्रोडमणकी शिला उठाई हजारों पहाड अंग्रेजोने फोड डाले, सांपकों सिंहको आदमी पकड सक्ता है, दरियावमें प्रवेश कर रत्न निकाल सक्ता है, अग्निमें कूद जाता है, तरवारोंके प्रहार सह सक्ता है, ऐसे कठिन काम मनुष्य करते है, लेकिन हाय जुल्म इस अनङ्ग काम देवको नहीं जीत सकते है, अठयासी हजार ऋषी ब्राह्मण बडे २ तपेश्वरी पुराणोंमें लिखे हो गये हैं, तपस्या करते २ स्त्रियोंके दास बन गये है, ब्रह्मा विष्णु महादेव स्त्रियोंके नचाये नाचे, इस वास्ते काम देव जीतने वाला है वही परमेश्वर है, वीर्य पात नहीं करे तब, विषय कई किस्मके है, हस्त, पशु पंडग, स्त्री, इन सबोंको छोडणे वालेकों, भगवान वीर फरमा गये हे गौतम, ब्रह्म व्रत धारी, मेरे अर्द्ध सिंहासण बैठणेवाला है, यानें परमेश्वर है, इस वास्ते पडदेकी रीत अच्छी है, मनोमती फिरणा वाजिब नहीं, लेकिन एक २ तरह पडदा कई २ मुल्कोंमें बडी २ कोमोंमें जारी है उसमें कहार पहाडिये चाकर वगैरह जा सकते है, क्या उत्तम कोमके आदमियोंके लिए पडदा है वह क्या नाजर है, पडदा नाम राजपूतों काही सच्चा है, बाकी तो गुड खाना गुलगुलेका परहेज करे जैसा है, हर तरह पतिव्रता धर्म रखणा, श्रेष्ठ है, दिलमें पडदा तो होणा दुरस्त है, सो भी मन्दिर धर्मशालामें नहीं होणा, यह रिवाज गुजरातका, अच्छा मालूम देता है, धन लेकर अपणी लडकियोंको, साठ २ वर्षके बुड्ढोंके सग व्याहे जाती है, यह चाल उत्तम कोम वालोंके लिए तदन बुरा है साठ वर्ष बाद बुड्ढेको हरगिज व्याह नहीं करणा चाहिये, बेटीको बेच रुपये लेनेसे बरकत कभी नहीं होती अगर पुत्र नहीं होय मातापिताके पास धन नहीं होय अशक्त होय

बेटी धन वानके घर व्याही होय, मावापोका, खरच चलाणा इन्साफ है, वेटा जैसी बेटी, लेकिन यह मर्यादा आपतकालकी है, किसी कविने कहा है कि (आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति) व्याहोमें ज्यादह खरच करणा जमाईके धनसें दुरस्त नहीं, कच्छ देश मारवाड देशके गामोंमें थोडेधन वाले, कंवारे रह जाते है, कारण इसका यही है कि, रीत नहीं सकते है, रुपया दस हजार होय तो पाच छोकरीके मावाप भाईकों, पाचका दागीना ऐसा जुल्म गार रिवाज यातो न्यायी राजा वन्द कर सक्ता है, या विरादरीमे इकलास होय तो वन्द कर सक्ते है, वहुत जोगियोंकी संगत भी इकेली स्त्रियोंकों नहीं करणा, सतीयोंके चरित्र सुनना या पढ़णा

अर्हन्नीति मुजब हक्कदारी कानून

खयाल रक्खो जो सख्स अन्तकाल भये उसके मालमिल्कियत पर किसका हक्क है और पेस्तर किसका दोयम दर्जे है वाद फिर किस २ को पहुंचता है ।

दाय भाग कानून अर्हन्नीति

श्लोक) पत्नी पुत्रश्च भ्रातृव्याः सपिंडश्च दुहितृजः बन्धुजो गोत्रजश्चैव स्वामी स्यादुत्तरोत्तरं १ तदभावेच ज्ञातीया, स्तदभावे महीभुजः, तद्धनं सफल कार्य, धर्ममार्गे प्रदायचः २

अर्थ) स्वामीके मरणे वाद उसके कुल जायदादकी मालकिन उसकी औरत है, वेटेका कोई हक्क नहीं कि, आप मालिक, वन सके, औरत पेस्तर आई थी, तिस पीछे लड़का हुआ, तो फेर उसहीका हक्क पेस्तर है, वाद औरतके दुसरे दरजे वेटा, मालिक है, जिसके औरत वेटा, दोनों नहीं है, उस मिल्कियतके मालिक, भतीजे, उनके नहोने पर, सात मी पीढीतकका भाई, मालिक हो सकता है, वह भी कोई नहीं होय तो, वेटीका वेटा (दोहिता) मालिक है, और वह भी नहीं होय तो, चौदह पीढ़ीतकका-भाई मालिक है, वह भी नहीं होय तो, गोत्रके लोक मालिक है; गोत्र भी नहीं होय तो, उसकी जातिके लोक मालिक है, अगर जाति भी नहीं

होय तो, राजा उस धनकों, धर्मकाममें लगा सकता है, अगर खजानेमें डाले तो, गैर इन्साफ है। खाविन्दके मरणे बाद, उसकी औरतको कुल अख्तियार है, सब जायदादको. अपने अधिकारमें रक्खे, बेटेको अख्तियार नहीं के विना माके हुक्म कुछ खरच करसके, चाहे जात पुत्र हो, चाहे गोदका, स्थावर, (थिराहणेवाली) जंगम (फिरणे दुरणेवाली) मिल्कियतका देणा या बेचणा किसीका हक्क नहीं सिवाय धणियाणीके, इसमें इतनी शर्त्त जरूर है कि उसकी चालचलननाकिस नही मिल्कियतकी माल्किन सदाचारिणी हो सकती है, गैर चलण होणे पर बेटेको अख्तियार इन्साफी पत्र तथा सरकारके इन्साफसें हो सक्ता है, क्योंके धनके लालचमें झूठा भी बल्वा पुत्र उठादेवे बद चलण सबूत होनेमें बेटा मिल्कियतका मालिक होकर कपडारोटी वगैरह खरचा पचोके राह मुजब बांधणा माताके लिए इन्साफसे है गैर चलण हो तो भी, नेक चणल माता होय तो भी पुत्रके जायदाद पर कोई हक्क नहीं है हुक्म मातासें सब कांमकर सक्ता है.

अगर कोई शख्स विना शन्तान अपने मरणेके वक्त अपने घरका बन्दोबस्त करना चाहे तो इस तरह वसीहत नांमी लिख सक्ता है जो दत्त पुत्र अपनी औरतके हुक्मकी तामील करनेवाला हो, खाविन्दके मरणे बाद अगर दत्तपुत्र वसीहत नामवाला सख्स बदनियत हो जाय तो, स्त्रीकों अख्तियार है उस वसीहतनामेको खारिज करके, दुसरेके नांम पर वसीहतनामा लिखा सक्ती है, धर्म कामके लिए या जाति व्यवहारके लिए, खाविन्दकी मिलकियतकों रेण व्यय करणा स्त्रीकों अख्तियार है, मावापकों अपने जात पुत्र पर भी इतना अख्तियार है अगर हुक्मके बर खिलाफ चले, या धर्म भ्रष्ट हो जाय, याने कुल मर्यादा विपरीत खानपान करणे लगे तो घरसे निकाल देवें, इसी तरह गोद लियेको भी निकाल सक्ता है चाहे उसका व्याह भी कर दिया चाहे कुल अख्तियार दे दिया होय, मातापिताकी मौजूदगीमें जात पुत्रकों अख्तियार नहीं है जायदाद मावापकीको रेण वाव्यय करसके अलग होके कमाया होय. उस पर उसका अख्तियार है रेण वा बेचणेका।

जिसकी औरत वदचलन होय तो, पतिकों अख्तियार है, अपनें घरसें निकाल दे, वद चलन औरत, पती पर रोटी कपडेका दावा नहीं कर सक्ती है, कोई सख्सकी औरतनें पती मरे वाद लड़का गोद लिया, और वह कुंवारा ही मरगया तो, दूसरा वेटा फिर अपने नामपर गोद ले सक्ती है, मरे लडकेके नामपर नहीं ले सक्ती है सासूकी मौजूदगीमें मरे हुए बेटेकी वहूकों सुसरेके धनमें रोटी कपडेके सिवाय दुसरा कुछ भी अख्तियार नहीं है, वेटा गोद लेणा वगैरह सर्व काम सासूकी आज्ञा मुजव करणा चाहिये, सासूका अन्तकाल हुए वाद फिर वहूका अख्तियार चल सक्ता है, माता-पिताके मरे वाद बेटे अपने हिस्से अलग करणा चाहै तो, सवेके हिस्से वरावर होणे चाहिये, पिताके जीते हिस्सा चाहै तो, मुताबिक मरजी पिताके होगा, पितानें जीतेकराव सियतनामा सही है मरे पीछै भी अगर कोई भाई कंवारा होय, और हिस्से करणेका मौका आ जाय तो, मुनासिव है, उसके व्याहका खर्चा अलग रखकर, वा व्याह करके, वाकी दौलतका हिस्सा वरावर वांट लेना, अगर वहिन कंवारी हो तो, सवी भाई मिलकर पिताके धनसें सवोंको चौथा हिस्सा दूर कर व्याह कर देणा, कोई भाई ऐसा होय कि, अपने वापका धन नहीं खरच कर, नौकरीसें या किसी इल्मसें, या फौजमें वहादुरी वताकर धन हांसिल करै, उस दौलतमें दुसरे भाइयोंका हक्क नहीं है, विवाहसें सुसरालसे, जो कुछ धन मिले या दोस्तसे इनाम पावै, उसमें भी भाइयोंका हक्क नहीं पहुंचता, अपने कुलका दवा हुआ धन, वापभाईन निकाल सके, उसको अपनी ताकतसें, विना भाइयोंकी सहायताके, निकाल लावे तो उस धनमें किसी भाईका हिस्सा नहीं हो सक्ता:

विवाहके वख्त या पीछै जिस औरतको, उसके मातापितानें गहने कपडे गाम नगर जमीन जहांगीरी जो कुछ दिया हो; उसकों कोई पीछा नहीं ले सक्ता, वह सब औरतका है-चाचा, बडी वहन भूआ, मासी, भाई, सुसरा, सासू, या उसके खाविन्दने जो कुछ दिया हो वह सव औरतका

है खाविन्द उस हालतमें माग सक्ता है दुकाल वडी मुसीबत पडी हो, बाकी नहीं ले सक्ता, यह सब कायदे जैनी आमलोकोंके लिए, अर्हन्नितिसें, लिखा गया है, ॥

(अथ सूतक निर्णय,)

जिसके घर मृत्यु होय उसके घर १२ दिनका मूतक, एक बापके दो बेटे अलग सूतकके घर खान पान नहीं करे तो उसके घर सूतक नहीं सूतकवाले घरमें ५० रहवासी अन्य जाती रहती होय तो वह सब सूतकवाले गिने जाते है चोक १ दरवज्जा २ होय तो बारह दिन तक उस घरके लोक जिन मूर्तिकी पूजा नहीं कर सक्ते साधू तथा साधर्मी उस घरका खान पान फल सुपारी तक नहीं खाते २ मन्दिरमे दूर खडे दर्शन कर सक्ते है मुखसें धर्म शास्त्र प्रगट नहीं बोले मुर्देको काध देनेवाला २४ पहर सूतकी है, न पूजा करे, न किसी, खान पानकों चीजोंको छुवे, कपडे धुलाणे मुर्देके सग जाणेवाला ८ पहरका सूतकी है, दास दासी अपने घरमें मर जाय तो ३ दिन उस घरका सूतक जिस रोज बालक जन्में उसी दिन मर जाय तो एक दिनका सूतक, जापेवाली स्त्रीको ४० दिन सूतक जितने महीनेका गर्भ गिरे उतने ही दिनका सूतक, आठ वर्ष तकके बालकके मरणेका ८ दिन तक सूतक, हाथी घोडा ऊठ गऊ भैंस कुत्ता बिल्ली घरमें मर जाय तो जब तक उठावे नहीं उहा तक सूतक गिना जाता है, । -

(सर्व धर्मसार शिक्षा)

मोह द्वेष अज्ञानता, तजे कर्म अरुनार । ऐसो शिवहारि ब्रह्मजिन, सबको करो जुहार । १ । सवैया) विद्यमान तीर्थकरकों वन्दन जो पुन्य होत वैसोही पुन्यफल जिन मूर्ति वन्दनको । चारित्र व्रत पालवेको साधूकों फल कहा सो ही फल सूत्रोंमें प्रतिमा अभिनन्दनकों ॥ दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र आचारांग राय प्रश्नी तीनोंका पाठ एक हित सुख मोक्ष स्पन्दनको । ऐसी सूत्र आज्ञा देख शका मत चित्त राखो जिन प्रतिमा पूजन फल पापके निकन्दनकों । २ साधू दर्शन पुन्य फल, तीरथ दुयमसाध थावर तीर्थ देर

फल, तुरत मुनिः फल लाध। ३। अन्नपान घर वस्त्रसै, शय्यासनकर भक्त, सेवा शोभा वन्दना, नवविधि पुन्य प्रशक्त। ४। पर अवगुण देखे नहीं, निज अवगुण मन त्याग। निज शोभा मुखनाक है, समकित धरवड माग। ५। परनिन्दा निन श्लाघता, कर्त्ता जगमें बहोत निज अत्र गुणको जानता, विरलेई नरहोत, ६ उत्तम नरका क्रोध क्षण मध्यम का दो पहर। अधम एक दिन रखत है, अधम नीच नित जहर, ७। उत्तमसाधु पात्र है, अनुव्रत मध्यम पात्र, समकित दृष्टी जघन्य है, भक्ति करो शुभ गात्र ८ मिथ्यादृष्टि हजारतें, एक अनुव्रतीनीक, सहस अणुव्रतीतें अधिक, सर्व व्रती तहतीक, ९ सर्व व्रतीतें लखगुणा, तत्व विवेकी जांण, तात्विक सम कोई पात्र नहिं, यों भाखे जिन भांण, १० सत्य अहिंसा शीलव्रत, तजचोरी पुनलोभ, सर्व धर्मका सार यह, स्वर्ग मुक्ति जगशोभ ११ गुजरात देशमें औदिच्य ब्राम्हनोंकों हेमाचार्य उपदेशसें जैनधर्म धारण कराया, उन्होंको गुजरातमें भोजक कहते है, (मारवाड़ी जिन गुण गाणेसें गंद्रप कहते है) इन्होंके घर कुल तीनसौ है वहुत जगह इन्होंके सगे सोदरे विष्णुमती जोत्रिगाले वजते हैं, वो ५।५० जिन पद सीखके मारवाड़ादिक क्षेत्रमें गंद्रपोंके नामसे नाटकादिक कर मांग खाते हैं, असली गंद्रप भोजक ओस वंश तथा श्रावकों विगर हाथ नहीं मांडते, वो भोजक जिन मन्दिरके पुजारे गुजरातमे है, गंद्रप त्रिकालोंकी परिक्षा, जैन कान्फरेंस धारेगी तब होगी, न मालूम कौन तो जैन धर्मी है, और कौन वैष्णव है, परदेशवालोंकों क्या खबर होती है। लेकिन् नवकार पूछना।

(दोहा) खण्ड खंडेलामें मिली, सादी बारह जात, । खण्डप्रस्थ नृपकी समय, जी म्या दालरु भात । १ । बेटी अपनी जातमें, रोटी सामल होय, कच्ची पक्की दूधकी, भिन्न भाव नहीं कोय । २ । श्रीमाल भीनमालसें १ ओसवाल ओसियासे २ मेड़तवाल मेड़तासें ३ जायल वाल जायलसें ४ बघेरवाल बघेरासें ५ पल्लीवाल पालीसें ६ खण्डेलवाल खडेलासें ७ डीडू महेश्वरी डीड वाणेसें ८ पौकरा पोंकरजीसें ९ टींटोड़ा टींटोड गढ़सें, १० कठडा खाटूसें, ११ राजपुरा राजपुरसें, १२ आधीजात बीजा वर्गी ।

(मध्य देश ८४ वणिक् जाति ।)

गोंढ़वाड़ देश पारेवा पद्मावती नगरमें वस्तुपाल तेजपाल जितने दया धर्मी वणिक् जाती थी उन सबोंको मुल्क २ में खरच भेज इकट्ठे किये बड़ी भक्तिसें उतारा दिया भोजन पंक्ति जीमने लगी उस वक्त एक बुड्ढी पौरवालकी विधवा स्त्रीनें भर पचोंमें आकर कहा अहो धर्म भाइयों किसके घर जीमते होये वस्तुपाल तेजपालका नाना कौन है ये भी कुछ खबर है खबर करी तो मालुम हुआ बाप पोरवाल माता वाल विधवा दुसरे वैश्य कुलकी सबूत हुई तब जीम लिये सो १० । नहीं जीमे सो २० ये झगड़ा बहुत जगह २ फैल गया तब वस्तुपाल तेजपालने असंक्ष द्रव्य खर्च २ अपने २ पक्ष मन्तव्य गुरू आदि सबही अलग स्थापन करा उहां आये जिन्होंके नांम ।

श्रीमाल २ श्रीश्रीमाल ३ श्रीखण्ड ४ श्रीगुरू ५ श्रीगौड ६ अगरवाल ७ अजमेरा ८ अजोंधिया ९ अडालिया १० अवकथवाल ११ औसवाल १२ कठाडा १३ कटनेरा १४ कंकस्थन १५ कपौला १६ काकरिया १७ खरवा १८ खड़ायता १९ खेमवाल २० खंडेलवाल २१ गंगराडा २२ गोहिलवाल २३ गौलवाल २४ गांगवार २५ गींदोडिया २६ चकौड २७ चतुरथ २८ चीतोडा २९ चौरंडिया ३० जायलवाल ३१ जालोरा ३२ जैसवाल ३३ जम्बूसरा ३४ टींटौडा ३५ टटोरिया ३६ ढूसर ३७ दसौरा ३८ धंवलकोष्टी ३९ धाकड ४० नारनगरेसा ४१ नागर ४२ नेमा ४३ नरसिंह पुरा ४४ नवाभरा ४५ नागिन्द्रा ४६ नाथचल्ला ४७ नाछेला ४८ नौटिया ४९ पल्लीवाल ५० पवार ५१ पचम ५२ पौकरा ५३ पौरवाल

५४ पौसरा ५५ वघेरवाल ५६ वदनौरा ५७ वरमाका ५८ विदियादा ५९ वौगार ६० भत्रनमे ६१ भूंगडवार ६२ महेश्वरी ६३ मेडतवाल ६४ माथुरिया ६५ मौडलिया ६७ राजपुरा ६८ राजिया ६९ लवेचू ७० लाड ७१ हरसोरा ७२ हूवड ७३ हल्द ७४ हाकरिया ७५ सांभरा ७६ सडौइया ७७ सरेडवाल ७८ सौरठवाल ७९ सेतवाल ८० सौहित-वाल ८१ सुरद्रा ८२ सौनइया ८३ सौरंडिया ८४ ।

इसतरह दक्षिणके ८४ जाती तथा गुजरातके ८४ जातिके वणिकोंमें कोई नाम इसमेंके नहीं दूसरे है ग्रथ वढणेके भयसे यहां दरज निरुपयोगी जाणकें नहीं किया है ये वणिक् जाति दयाधर्म पालते है इससें प्रगट प्रमाणसे सिद्ध है प्रथम सर्वोका धर्म जैन था राजपूतोंमेंसें जैना चार्योनेही प्रतिवोध देकर व्यापारी कौम वणाई है जमानेके फेरफारसें अन्य २ धर्म कोई वैश्य मानने लग गये है मगर मास मदिराका परित्यागपणा जो इन जातियोंमे है वह जैन धर्मकी छाप है जो धर्म जैन पालते है उन्होंको लौकिकवाले अभी महाजन नामसे पहचाणते है जिन्होंने जैन धर्म छोड दिया है वो वैश्य या वणिये वजते हैं वीसे दशे पाचे अढाइये पूण तथा पचीसे इस किस्म इन्होंकी शाखायें कारण योगसें फंटती चली गई है दुनि-यामें सवसें वडे राजन्य वंसी लेकिन् धर्म मूर्त्ति दीनहीन षट् दर्शनादिक सर्व जीवोके प्रतिपाल गुणवन्त गुणीकी कदर करणेवाले महाजन, वैश्य, वणिक्, परमेश्वरके भक्त-जयवन्त रहो ये जाति वडी उत्तम दरजेकी सत्य धर्म पर चिरजीवी होकर वर्त्तो श्रीरस्तुः कल्याण मस्तुः ॥ आपका शुभेच्छक जैनधर्मी पडित । उपाध्याय रामलालगणिः ॥

(श्रीमद् बृहद्गच्छ खरतर पट्टावली)

१ भगवन्त श्रीवर्द्धमानस्वामी स्वय वुद्ध केवली २४ में तीर्थंकर ।

२ श्रीसुधर्मा स्वामी गणधर ५ में केवली सौधर्म गच्छ प्रगट ।

३ श्रीजम्बूस्वामी चरम केवली यहासें जिन कल्पादि १० वस्तु विच्छेद हुई ।

४ श्रीप्रभवस्वामी श्रुत केवली १४ पूर्व धर

५ श्रीशय्यंभव सूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर

६ श्रीयशोभद्रसूरिः श्रुत केवली १४ पूर्व धर

७ श्रीसंभूतिविजय सूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर

८ श्रीभद्रवाहुसूरिः अनेक सूत्र निर्युक्ती निमित्त ग्रन्थ रचे १४ पूर्वधर श्रुतकेवली कल्प सूत्रमें अशाढ़ चौमासेसें ५० दिनसें संवत्सरी पर्व करणा फरमाया जैन अभि वर्द्धन संवत्सरमें पोष असाढ़ सिवाय दुसरे महीने वढते नही इसवास्ते संवत्सरी वाद ७० दिनसें काती चौमासा लगता है समवायांग सूत्र और कल्प सूत्रका पाठ संमिलित है भद्र वाहुस्वामीनें कल्प सूत्रमें महावीरके ६ कल्याणक कहे। (पंच हत्थुत्तरे होत्था साइणा परि निव्वुए) पांच कल्याणक उत्तरा फाल्गुणीमें स्वाती नक्षत्रमें निर्वाण पाये

९ श्रीस्थूल भद्रसूरिः १४ पूर्वधर श्रुतकेवली ८४ चोवीसी नाम चलेगा

१० श्रीआर्य महागिरी सूरिः दस पूर्वधर श्रुतकेवली

११ श्रीसुहस्तिसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली

१२ श्रीसुस्थितिसूरिः इन्होंने कोटि सूरि मंत्रका जाप करा कोटिक गच्छकी थापना हुई १० पूर्वधर श्रुतकेवली

१३ श्रीइन्द्र दिन्नसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली

१४ श्रीदिन्न सूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली

१५ श्रीसिंह गिरिसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली

१६ श्रीवज्रस्वामीसूरिः १० पूर्वधर चरम श्रुतकेवली वज्रशाखा नाम हुआ

१७ श्रीवज्रशेनसूरिः भगवानके ६०९ वर्षपर दिगाम्बर सम्प्रदाय निकली

१८ श्रीचन्द्रसूरिः इन्होंके नामसेंकोटिक गच्छ वज्रशाखा चन्द्रकुल प्रासिद्ध हुआ

१९ श्री समंत भद्रसूरिः। २० श्रीवृद्धदेवसूरिः। २१ श्री प्रद्योतनसूरिः

२२ श्री मानदेवसूरिः लघुशान्तिस्तोत्रके कर्त्ता

२३ श्रीमानतुङ्गसूरिः वृद्ध भोजराजा सन्मुख भक्तामरस्तोत्र कर्त्ता तथा भयहर स्तोत्र रचकर नागराजाकों वसकरा । २४ श्री वीरसूरिः।

२५ श्री जयदेवसूरिः

२६ श्री देवानन्दसूरिः भगवानके ८४५ पीछे वल्लभी नगरी टूटी।

२७ श्री विक्रमसूरिः। २८ श्री नरसिंहसूरिः। २९ श्री समुद्रसूरिः।

३० श्री मानदेवसूरिः इन्होंके समय भगवानसें ८८५ हरिभद्रसूरिः स्वर्ग गये और पूर्वोकी विद्या विच्छेद हुई

३१ श्री विबुध प्रभसूरिः इन्होके समय सूत्रोंके भाष्य कर्त्ता जिनभद्रगणिः आचार्य हुए। ३२ श्री जयानन्द सूरिः। ३३ श्री रविप्रभसूरिः।

३४ श्री यशोदेवसूरिः। ३५ श्री विमल चन्द्रसूरिः।

३६ श्री देवसूरित्यागी वैरागी क्रिया उद्धारिसें सुविहित पक्ष हुआ।

३७ श्री नेमिचन्द्रसूरि प्रवचन सारोद्धार टीका ग्रथ वणाया, वरडिया वगैरह वहुत गोत्र स्थापन किए

३८ श्री उद्योतनसूरिः इन्होंके निजशिष्य चैत्य वास छोडके आए हुए वर्द्धमान सूरिः ८३ दूसरे २ थविरोके शिष्य जिन्होको सिद्ध वडनीचे शुभ मुहूर्त्तमे सूरिः मंत्रका वास चूर्ण दिया वह ८३ अलग २ गच्छों की स्थापना करी इसवास्ते खरतर गच्छमें अभीभी ८४ नदी प्रचलित है ८४ गच्छ थापन हुआ

३९ श्री वर्द्धमानसूरिः १३ वादशाह आवूपर अम्बादेवीकों, वसकर वुलाकर विमल मत्री पचायणेचा पौरवाल गोत्रीको, प्रतिवोध देकर आवू तीर्थपर १८ करोड तेपन लाख स्वर्ण द्रव्य लगाकर, मन्दिर विमल वसीकी प्रतिष्ठा करी, १३ वादशाहोंने गुरूको सन्मान दिया, हजारों सचिंती वगैरह महाजन वणाये, देवताको भेजके सीमधर जिनसे सूरिः मंत्र शुद्ध कराया

४० श्री जिनेश्वरसूरिः अणहिल पुरपाटणमे चैत्यवासी शिथलाचारी उपकेश गच्छियोंसें राजाने सभा कराई राजा दुर्लभनें शास्त्र मर्यादसे, यथार्थ ज्ञान क्रिया देख, राजाने कहा तुमे खराछो शिथलाचारी चैत्य द्रव्य भक्षकोंको कहा तुमें कुंवला छो, यहासें खरतर विरुद सं. १०८० में मिला, कोटिक गच्छ वज्र शाखा चन्द्रकुल खरतर विरुद प्रसिद्ध हुआ, सुविहित पक्ष,।

४१ श्री जिन चन्द्र सूरिः इन्होंने एक गरीबके अङ्गमें चिन्ह देखकर कहा, तूं शाहनशाह साम्राट होगा, आखिरकों मोजदीन दिल्लीका

बादशाह हुआ, गुरूको बडे उत्सवसें, धनपाल शिवधर्मा महतियान श्रीमालके घर विराजमान किया, उहा त्याग वैराग्य अतिशय विद्या उपदेशसे, श्रीमाल सर्व जैनधर्म धारण करा, महितियाण गोत्रियोको श्री श्रीमालकी पदवी बादशाहने प्रदान की ऐसा भी एक जगह लिखा-देखा है दिल्ली लखनेऊ आगरा भियाणी झुझणूं जैपुर वगैरह सर्व श्रीमाल १३९ गोत्रके गुरूके श्रावक हो गये प्रथम श्रीमाल जैन थे, वह शैव शङ्कराचार्यके हमलेमे हो गये थे, सबोंको पीछा जैन श्रावक करा जिन्होंकी वस्ती राजपूताना दिल्लीके अतराफ सबोंका गच्छ खरतर है, गुरूने सवेग रंग शाला ग्रथ रचा, ।

४२ श्री अभय देव सूरिः वारह वर्ष आंबिल तप करणेसे, गलत कुष्ठ उत्पन्न हुआ, तब शासन देवीनें प्रगट हो, नव कोकडी सूतकी सुल-झाणेका कहा, और कहा हे गुरू अणसण अभी नही करणा सेढी नदीके तटपर पार्श्व जिनेन्द्रकी स्तुति करणा, सर्व अच्छा होगा तब गुरू राजा दिकसंघ युक्त जयति हुअण वत्तीसी बनाकर स्तुति करी थंभणा पार्श्व नाथकी मूर्त्ति धरणीतलसे प्रगट हुई, स्नान जल छांटते सोवन वर्ण काया हुई, इस वक्त जिन वल्लभ सूरिः चैत्यवासी, चित्रावाल गच्छकी विरुद्ध आचरणा देख, श्रीअभयदेव सूरिःके शिष्य हुए योग्य जांण, गुरूनें वाचनाचार्यका पद दिया, आप नव अगोंकी टीका शासन देवीके आग्रहसे, गन्ध हस्ती कृत टीका, दुष्ट लोकोंनें गलादी, जलादी, शंकराचार्यनें, तब जिनेन्द्र व्याकर्ण पूर्व कृत गुरुमुख, अर्थ धारणासे, टीका वृत्ति रची, १२ वर्ष विचरते रहै, अपने हाथसें सूरि मंत्र देके वल्लभ सूरिःको आपने अनशण करा, तब गच्छमें केइयक साधु आचार्य पद वल्लभ सूरिःके क्रिया कठिनतासें, डरते नहीं देणा धारा, तब गुरूने चामुण्डासच्चाय देवीको बस करके, सौ ग्रथ संघ पट्टा, पिंड निर्युक्ती स्तोत्रादि रचकर, ९२ गोत्र, राज-पूत महेश्वरी, वाघड़ी, हुवडोंको प्रतिबोध देकर महाजन किये तब सर्व सघ और बडे २ आचार्योंने मिल कर आचार्य पद दिया; चामु-

ण्डानें कहा आज पीछै आपके शन्तानको जिन संज्ञा होणी ५ जिन ठाणांगमें कहे प्रमावीक पुरुषको जिन संज्ञा है सर्व २५ वर्ष वाचनाचार्य पदमें रहे छ महिने आचार्य पद पाला, द्वेष बुद्धिसें एक ग्रंथमें अपनी कल्पित पट्टावली लिखणे वालेंनें मनमानी वात लिखी है जिनेश्वरसूरिः के पाटवल्लभ सूरिःको लिखा है और अपने ही हाथसे जैन कल्प वृक्षमें जिनेश्वर सूरिः चन्द्रसूरिः अभयदेवसूरिः के पट्टपर वल्लभ सूरिः को लिखा है उस समय द्वेष नहीं जगा होगा बाद तो द्वेष बुद्धि प्रत्यक्ष दरसाई है कुछ तो पूर्वापर विचारणा था २ पाट दुसरे लेखमें उठाया जिनेश्वर सूरिः के ७० वर्ष वीतने वाद वल्लभसूरिः हुए हैं भगवतीकी टीका तो देखी होगी उसमें अभय देवसूरिः खुद लिखते हैं जिनेश्वर सूरिके चन्द्र सूरिः उन्होंकामें अभय देव सूरिः नेये वृत्ती रची तो जिनेश्वर-सूरिःके पट्ट पर वल्लभ सूरिःकैसें हुए प्रमाणीक ग्रंथ वनाकर उसमें कल्पित पट्टावलीमें असमंजस लिखणान्यायाभोनिधि पदको कलंकाया, मालुम देता है, चर्चाका चांद उदय करणेवाला जो लिखता है सो सव जाहिरा मालुम दिया है, फिर लिखा है कुर्च पुरी गच्छवासी वल्लभसूरिः छकल्याणकवीरके प्ररूपणा करी, न तो जिन वल्लभ सूरिःका कुर्च पूरी गच्छ था न षट् कल्याणक इन्होंनें प्ररूपणा करीछ कल्याणक प्ररूपणेवाले श्रुतकेवली भद्र वाहू स्वामी हैं, नहीं माननेवाले आपलोकहो, पहलेका गच्छ अगर लिखणेका प्रवाह आप मन्जूर करते हो तव तो मेघ विजयका लोंका गच्छ पीछै क्यों नहीं लिखा अगर फिर ऐसा है तो लिखणेसें कोई दूषापत्ती तो नहीं होगी पंजावी ढूंढिया जीवण दासका शिष्य आतमारामजीनें बुंटेरायजीका शिष्य हो अहमदावादमें मोरट देश सत्रुंजय तीर्थको अनार्य देशकी प्ररूपणा करी, इस बातको विचार कर प्रमाणीक लेख प्रमाणीक पुरुष होकर यथार्थ ही लिखणा जरूर था वल्लभ सूरिःनें तुह्मारी तरें विरुद्ध आचरणा छोड दी थी फेर ऐसा आक्षेप द्वेष बुद्धिसें क्यों करा।

४३ श्रीजिन वल्लभ सूरिः इन्होंके समय मधुकर खरतर गच्छ भेद। १।

४४ श्रीजिन दत्तसूरिःजीनें सवा क्रोड ह्रींकारका जप करा ९२ वीर ६४ योगणी पंच नदी पात्र पीरोंको बस किया १ लाख तीस हजार घर राजपूत महेश्वरी आदिकसे जैनधर्मी महाजन बणाये चित्तोड़ नगरके वज्र खम्भकी तथा उज्जैन नगरके वज्र खम्भकी साढा तीन कोटि सिद्ध विद्या निकाल कर जैन संघमें महाउपकार करावो पुस्तक अत्र जेसलमेरमें विद्यमान वन्द है विजलीगिरी उसको पात्रके नीचे दाव कर. विजलीसें वरदान लिया दादा श्रीजिन दत्तसूरिःजी ऐसा नाम जपणेवालेके घर नहीं गिरूंगी मरी गउकूंपर काय प्रवेशनि विद्यासें जिन मन्दिरके सामनेसे स्वतः उठादी, मरे हुए नवाबके पुत्रकों, भरु अच्छ नगरमे, परकाय प्रवेशनि विद्यासे, छ महिना जिला दिया संघकी आपदा मिटाई, पुत्र धन रोग अनेक वाच्छार्थियोंकी कामना पूर्ण कर, ओस वंश वधाया, रत्न प्रभ सूरिःनें ओसिया नगरमें १८ गोत्र रूप अश्व पति गोत्रका बीज वोया था, उसको खरतर गच्छाचार्योंने साखा प्रशाखा पत्र फल फूलसें ओस वंश सुरतरुकों शक्तिरूप जल उपकार रूप छाहसे गह मह कर दिया, जिन्होंसें जैन दर्शन तथा अन्यमती भी निर्वाह करते है इन्होंके विद्यमांन समय १२०४ में लोद्रव पट्टणमे रुद्रपल्ली खरतर दुसरा गच्छ भेद हुआ जिससें खरतर गच्छके द्वेषी वे प्रमाण लिखते है १२०४ में खरतर हुए, ये दूसरी शाखा फटी ऐसे तो ११ शाखा निकल चुकी है द्वेष बुद्धिवाला तो सत्यकों भी असत्य कहैगा लेकिन वे प्रमाण लिखणेसें अन्यायी ठहरते है।

४५ मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिः इन्होनें हजारों घर महाजन वणाये दिल्लीमें इन्होकी रथी उठी नहीं तव कुतबुद्दीन बादशाहकी आज्ञासें सिरे बाजार दाग हुआ खोडिया क्षैत्रपाल सेवित अनेकोंका मरणान्त कष्ट मिटाया मुसल्मीन भी जिन्होंको दादा पीर कहते थे इन्होंके समय पूर्ण तल्ल गच्छी देवचन्द्रसूरिःका शिष्य हेम चन्द्रसूरिः जिन्होंने शब्दानुशासन प्रकट करा कुमारपाल राजाकों जैनी करा छीपा भाव सालोंको जैनी

करा औदीच्य ब्राम्हणोंको उपदेश देकर जैनी करा जो गुजरातमें भोजक मारवाडमें (गंद्रपके नामसे पहचाणे जाते हैं) धर्म २०० वर जैन पालते है जैनीसिवाय दान नहीं लेते है इन्होंके समय १२१३ में आचल १२२६ में सार्ध पुनमिया १२५० आगमिया हुए

४६ श्री जिन पति सूरिःजी इन्होंके समय चित्रावाल गच्छी चैत्यवासी जग चन्द्रसूरिःनें वस्तुपाल तेजपालकी भक्तीसे क्रिया उद्धार करा तप करणेसे चित्तोडके राणेजींनें १२८५ में तपा विरुद दिया वस्तुपाल तेजपाल लहुडीन्यात ओसवाल पोरवाल श्रीमालियोंमें करनेवाला, मायाका अखूट भण्डारीने इन्होंका नन्दिमहोत्सव करा जिसनें जगत् चन्द्रसूरिःकी सामाचारी कबूल करी, उस गरीबकों श्रीमन्त वणाते गया,जगत् चन्द्रसूरिःने श्रावककों पोसह व्रत पच्चखाण करे पीछे पोसहमें भोजन एकाशन करणेकी प्ररूपणा करी और आविलमें ६ विगय टालके सींधा निमक काली मिर्च पोतीके वेसणके चिलडे वगैरह अनेक द्रव्य खाणेकी प्ररूपणा करी सो अभी गुजरातमें प्रथा चलती है बड गच्छके आचार्य जब अपने समुदायकों आज्ञा कारी नहीं देखा तब हनुमान गढ वीकानेरके इलाकेमें आय रहै पिछाडी फिर जती श्रावक मिलके आचार्य मुकरर किया उन्होंके पाटानुपाट विद्यमांन सं. विक्रम १९६६ कार्तिकमे मुम्बईमें बडगच्छके आचार्य हमसें मिले थे लेकिन तपागच्छके वस्तुपालतेजपालकी सहायतासे बडगच्छ निर्बल होता गया जतीभी कइयक तपागच्छमे मिलगये श्रावक भी मिलते गये तथापि पट्टधर आचार्य बडगच्छ विद्यमान है।

४७ श्री जिनेश्वर सूरिः इन्होंके समयमें १३३१ मे सिंहसूरिः सें लघुखरतर शाखा निकली ३ गच्छ भेद हुआ इनमें जिन प्रभसूरिः चमत्कारी हुए। ४८ श्री जिन प्रबोधसूरिः

४९ श्री जिनचन्द्रसूरिः दिल्लीके बादशाह चित्तोडका राणा जेसलमेरकारावल मंडोवरके राठौडराव राजा ऐसे ४ राजा गुरूके भक्तः हुए इस

आर्यावर्त्तमें जगह २ जीव दया और जैन धर्मकी उन्नती खरतराचार्योंकी महिमा विस्तारपाई बादशाहने कई २ बन्दोबस्तके फुरमाण लिखे तबसें राज्यगुरू खरतर राज गच्छ कहलाया अनेक प्रतिवादीयोंको जीता तब बादशाहने भट्टारक श्री जिनचन्द्रसूरिः ऐसा खास रुक्केमें लिखा भट्टारक नाम हेम अमरादि कोशोंमें पूजनीक पुरुषोंका है अथवा अनेक भट्टोंकों न्यायसें हराणेवाले भट्टारक सर्व गच्छके लोक खरतर भट्टारक गच्छ-कहने लगे।

५० श्री जिन कुशलसूरिः ५२ वीर ६४ योगनी पंचनदी पंचपीर वस करके सघका वहुत उपकार करा, ५० सहस्र श्रावककरे निर्धन श्रावककों धन अपुत्रियेकों पुत्र दिया, पाटण सहरमे गुरूव्याख्यान वाचते थे उस समय गूजर मलबोथरेकी जिहाज रतनाकरमें डूबने लगी उसने गुरूकी स्तुति शुरू करी कैसें २ अवसरमें गुरू रखी लाज हमारी उस समय गुरू पक्षी रूप हो उडकर गूजरमलकी जहाजको किनारे लगा दर्शन दे पीछे आकर व्याख्यान करा तब संघनेयेम्वरूपदेख आश्चर्य किया, १ महिनेसें गूजरमलनें पाटणमें आकर संघसें सर्व वात कही इसतरह स्वर्ग पाये पीछे समय सुन्दर उपाध्यायकी तथा सुखसूरिः की डूबती हुई जहाजको पार लगाई मुसल्मान लोकोंका वहुत उपकार कर दादा पीरकहलाये फाल्गुण वदी अमावस देरा उरमें धांमपाकर पूनमको अपने भक्तोंको जगह, २ दर्शन दिया फुरमाया भुवन पती निकायका आयुष्य मेरा पहली बंध गया था सम्यक्तवाद गुरूमहाराजसें पाया जो याद करोगे तो होणेवाले कामको शीघ्र कर दूंगा वडे दादा साहिब, सौधर्म देवलोक टकल विमान ४ पल्यकी स्थितिपर विमानाधिपति हुए है उन धर्मदाता गुरूका ध्यान पूजन भक्ती कारककोंमें सहाय करूंगा भक्तोंके आधीन रहूंगा अन्तर्ध्यान हुए तबसें लोक नगर २ में चरण पूजने लगे।

५१ श्री पद्मसूरिः कुशलसूरिः के शंतानी उपाध्यायश्री क्षेमकीर्तिगणीनें सबियाण गढमें राजपूतोंकी जान प्रतिबोध ५०० कों दिक्षादी कुशलसूरिः

प्रगट हो ५०० सेका उप गरण. राजासें दिलाया क्षेम धाड शाखा प्रगट हुई ये प्रथम भट्टारक गणशाखा १ तीन शाखा और एव ४ है।

५२ श्री जिनलब्धिसूरिः । ५३ श्री जिनचन्द्रसूरिः ।

५४ श्री जिनउदयसूरिः यावज्जीव एकान्तरोपवास नव कल्पी विहार एक लाहारी, स. १४२२ में जेसलमेरमें वेगड़ खरतर गच्छ भेद ४ था।

५५ श्री जिनराज सूरिजी न्याय मार्तण्ड कहलाये।

५६ श्री जिनभद्र सूरिः इन्होंने दोनों भैरवों की आराधना करी काला भैरूंकों गच्छाधिष्टायक बणाया गद्दी धरकों मंडोवर जाणा, आराधे तव साहाय कारी रहूंगा, वलि देणा अष्ट द्रव्यकी ऐसा वचन लिया वोहरा महाजन करे १४७४ में पीपलिया खरतर ५ मागच्छ भेद भट्टारक गच्छमें इन्होंसें भद्रसूरिः शाखा चली।

५७ श्री जिनचद्र सूरिः इन महाराजाके देव लोक हुए पीछे १५३१ में तपागच्छी दस्सा श्री माली वणिया लिखारी लूंकेनें जिन प्रतिमा निषेध रूपमत अहमदावादमें चलाया उसमें ३ गुजराती २ नागोरी १ उत्तराधी इन्होंमें ५ सम्प्रदाई विद्वान होकर जिन प्रतिमा मन्तव्य करली।

५८ श्री जिनहन्स सूरिः इन्होंने गहलडा गोत्र थापा वहुत महाजन बनाये आचाराग सूत्रपर दीपिका बनाई देव सानिद्धसें ५०० से कैदी वादशाहसें छुडाये मुल्कोंमे अमारी ढूंडी पिटवाई इन्होंके समयमें १५६४ में आचार्य खरतर गच्छभेद ६ जो पाली नग्रमें है १५६२ कड़वा मती १५७० मेंलूंकेकामतत्याग वीजे वैश्यने वीजा मत निकाल जिन प्रतिमामानी १५७२ में तपागच्छमें से पार्श्व चन्द्रजीनें ५ की सवत्सरी प्रमुख सम्प्रदाय निकाली।

६० श्री जिनमाणिक्य सूरि इन्होंके समय हुमायू वादशाहके जुलमसे (अत्याचारसें) त्यागियेंने अणसण किया कई लंगोट बद्ध महात्मा पोसा लिया होगये वाकी वहुत गच्छके जती घर वारी होगये तव लोक मति, हीन कहणे लगे (मथेण) यथार्थ नाम घरधारी मथेणका, मिथुन होगा, स्त्रीपुरुषके सहवास जोडेको मिथुन संस्कृतमें कहते हैं

तब आचार्य शिथलाचार बहुत फैला देखकर जैसलमेरमें रहै बाद बछावत संग्राम सिंहने गच्छभावसें महाराजकों बीकानेर बुलाया तब कुशलसूरिःजीका दर्शन करणेकों संघके साथ देराउर जाते दिनकों जल नहीं मिला रातको जल मिला यावज्जीव चोविहार तब अणसण कर शिष्यको क्रिया उद्धार करणेकी आज्ञा दे देवता हुए, जेसलमेरमें श्रीजिनचंद्रसूरिःको दर्शन देकर सहायकारी हुए, कहा, भस्म ग्रह उतरा है उदयका वखत है जो विचारेगा सो सब काम होता रहैगा।

६१ श्री जिनचन्द्रसूरिः इन्होंने लाहोर नगरमें अकबर बादशाहको धर्मोपदेश देकर जैनश्रद्धा कराई अनेक दुःख प्रजाका दूर कराया जैन तीर्थ श्रावकोंकी रक्षा कराई पारसीके मोहरछाप फुरमाण बादशाहके करे हुए बीकानेर बडे उपासरेमें भेज दिये महात्यागी पंच महाव्रतधारी प्रतिमा निंदकोंको परास्त करते गुजरातमें लूंपकमती तपोंको प्रतिबोध देकर श्रावक बणाया गुरूने विचारा गुजरातमें मतांतरी बहुत होगये है उन जीवों-पर करुणा लाकर गुजरातमें विचरकर मत कदाग्रह तोड़ा जगह २ खरतर गच्छ दीपाया और मतांन्तरियोंकों शुद्ध श्रद्धाकी पहचान कराई तपा गच्छी विजयदांन सूरिः के शिष्य धर्म सागरजीनें कुमति कुद्दाल कल्पित ग्रंथमें लिखा था कि अभय देवसूरिः नव अङ्गटीका कार खरतर गच्छमें नहीं हुए इसका निर्धार करणेको पाटणमें सब गच्छके प्रमाणीक आचार्य उपाध्याय वगैरहको एकट्ठे किये तब सबोने धर्म सागरजीकों ८४ गच्छ बाहिर कराये बात गीतार्थ विजयदांनसूरिः मेडतामें सुनकर कुमति कुद्दाल ग्रंथकी जो प्रति मिली सो सब जल शरण करी और खरतर गच्छसें विरोध करना बंध करा इन्होंके पट्ट हीरविजयसूरिः थे उन्होंने तपा गच्छके संघमें सात हुक्म जाहिर करे परपक्षीको निन्नव नहीं कहणा, परपक्षी प्रतिष्ठित मन्दिर प्रतिमा मानवा योग, पर पक्षिनी धर्म करणी सर्व अनुमोद वा योग इस तरह ७ है सो लेख बडे उपासरे बीकानेर ज्ञानभण्डारमें विद्यमान है, इन दोनोंनें बड़ा संप रख्खा प्रभावीक हो गये इस वखत बालोतरेमें भाव हर्ष उपाध्यायनें

७ गच्छभेद किया भाव हर्ष नामसें, इन्होंने अपने हाथसे सिंहसूरिःकों आचार्य पदवी दी बादशाहने चमर छत्रादि राजचिन्ह सग कर दिये।

६२ श्रीजिनसिंहसूरिः सागर चन्द्रसूरिः १ कीर्ति रत्नसूरिः २ शाखा हुई

६३ श्रीजिनराजसूरिः इन्होंके समय १६८६ में मण्डलाचार्य सागरसूरिःमें आचार्य खरतर शाखा निकली ८ मा गच्छभेद गुरुमहाराजनें सूरिः मन्त्र देकर जिन रत्नसूरिःकों आचार्य पदमें स्थापन करा।

६४ श्रीजिन रत्न सूरिः इन्होंके समय सं. १७०० में रग विजय गणिसे रग विजय खरतर शाखा ९ मागच्छ भेद इस गच्छमेंसें जिन हर्ष गणिके चेले श्रीसारनें श्रीसारखरतर शाखा निकाली ये १० मा गच्छान्तर हुआ।

६५ श्रीजिन चन्द्र सूरिः इन्होंके समय १७०९ मे ढुंढकमत प्रकटा धर्म दास छींपा वगैरह २२ पुरुषोंने वंधा मत निकाला, हाजी फकीरकी दवासे मत चलाया। इन २२ मेंसे निकले वे वदन करनेवालेको वेहाजी भाई कहा करते हैं

६६ श्रीजिन सुख सूरिः इन्होंकी गोगा वन्दरसें खभात जाते दरियावमे जहाज फटी पाणीसे भरगई कुशल सूरिः का स्मरण किया दादा साहबने नई जहाज वणाके खभात पहुंचाई वह जहाज अलोपकरी।

६७ श्रीजिन भक्ति सूरिः सादडी ग्राममें पर पक्षी तपोकों निरुत्तर, कग पूनामें सिवाजी पेशवाकी सभामें, वेदान्त मती ब्राम्हणोंको जीता।

६८ श्रीजिन लाभ सूरिः।

६९ श्रीजिन चन्द्र सूरि इन्होंने लखनेऊमें प्रतिमा उत्थापक जो मत फैला था, उन्होंको परास्तकर राजा वच्छ राज नाहटेको चमत्कार दे, नबावसे राजा वणवादिया,।

७० श्रीजिन हर्ष सूरिः इन्होंके पाच शिष्य निजथे छठा शिष्य नागोरके जती माणक चन्दजी का रूपवंत देखकर मांग कर लेलिया निज शिष्य सूरत रामजी, जो मांगकर लेलिया उन्होंका नाम मनरूपजी था इन्होंके समय खरतर भट्टारक गच्छमें, १८०० जतियोंकी शंक्षा थी।

७१ श्रीजिन सौभाग्य सूरिः इन्होंके समयमें १८९२ में मंडोवरमें महेन्द्र सूरिः सें ११ मांगच्छ भेद हुआ सौभाग्य सूरिः यावज्जीव एक लठाणी प्यादल विहार साढे १२ हजार सूरिः मंत्रका हमेश जाप सच्चितके त्यागी कंवर पदेमें हनुमन्त वीरका मंत्र साधा था सो सिद्ध हो गया था रामगढमें पोतेदारकी लड़कीके वचपणसें पथरी हो रही थी गुरूके पास लाया गुरूनें तीन चलू पाणी पिलाया उसी समय २) रुपये भरकी पथरी निकल पडी मुरसिदा वादमें प्रताप सिंह दूगड़ कों वृद्ध पणमें नव पद आम्नायदिया लक्ष्मीपती धनपति दो पुत्र धर्मोद्योतक हुए। बीकानेरमें महेश्वरी माणक चन्द वाग्रडीकों वृद्धपणे में पुत्र दिया राजा राठोड़कों अनेक चमत्कारसे बीकानेरमें सिरदार सिंहजीकों परम भक्त वना कर अनेक कष्ट आपदा जीवोंकी दूर की इत्यादि वहुत है ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखते हैं महाराजासिरदार सिंहजीने ४ गांम भेंट करणेकी वहुत विनती करी गुरूने कहा सन्यासियोंको भृष्ट करणेकों जागीर होती है सो सर्वथा इन्कार किया ऐसें दीर्घ दृष्टि त्याग बुद्धिः परम उपकारी हुए।

७२ श्रीजिन हंससूरिः इन्होंके समय श्रीजिन महेन्द्र सूरिःके पटोधर श्रीजिन मुक्ति सूरि वडे शास्त्र वेत्ता चमत्कारी प्रकटे जेसलमेरसें फलोधी पधारते पोकरणके ठाकुरके कंवर हिरण मारणेको वन्दूक उठाई गुरूने मना किया गुरूने कहा छोड़ तो देखता हू तीन वक्त कारतूस दिया वन्दूक काष्ठकी तरह हो गई यह चमत्कार देख चरणोंमें गिरपड़ा सहरमें पधराकर भक्तिकरी ऊठ फेरता फतह सिंह चम्पावतकों फरमाया १ वर्षमें तेरे राज्ययोग होणा है वैसाही हुआ जैपुरनरेश सवाई रामसिंहजीके सामने कुल कांम कर्त्ता मुसाहिब हुआ गुरू जैपुर पधारे तव फतह सिंहने राजासें सर्व वृत्तान्त कहा राजा वोला मेरे मनकी वात कहैंगे तो जरूर भक्ती करूंगा दोनों गुरूके पास आए गुरूने कहा विलायतसें जो आज्ञा चाहते होसो एकही मुहूर्त्तसें सिद्ध काम होणेवाला है वस बैठे २ ही तार आगया वैसाही तब राजाने भक्तिसें

५) रुपये हमेशके गांम भेटकर जैपुर रहणेकी प्रतिज्ञा कराई ऐसै प्रभावीक खरतराचार्य विद्यमांन हमनें देखा है। खरतर साधु १। रिद्धिसागरजी २। श्रीसुगन चन्दजी वड़े प्रभावीक निकलै श्रीक्षमा कल्याण गणिःके पौत्र थे ऋद्धि सागरजी वलिनाकल प्रतिष्ठामें दश दिग्पालोंको देते नारेल उछालते गोटा ऊपर आकाशमें अलोप टोपसियां फकत नीचे गिरती दुसाले पर आरती कपूर सिलगाकै धर कर श्रावकोंसे जिन प्रतिमाकै सामने उतरवाते दुसालके दाग नहीं लग सकता। मारवाड़में जिन मन्दिरकों वध कर विना पानी विना आदमी धोकर, साफ करवाया, हजार वड़े पानी ढुला पाया। मंदिर खोला तो सव मलीनता साफ और जलसें गीला मालम दिया इत्यादि अनेक विद्याओंसें सम्पन्न फलौधी लोहावट पोकरणके श्रावक देखनेवाले मौजूद है ३। श्रीसुगन चन्दजीने वीकानेर नरेश महाराजा डूंगर सिहजीको अनेक मन चिंताकी होनेवाली वात आगे कह दी। तव राजासें शिववाड़ीमें मंदिरके वास्ते भूमिका पट्टा करवाया। अभी आचार्य खरतर पंडित तन सुखजीनें मेघ वर्षाका विकानेरमे विल्कुल अभाव भया तव दरवार महाराज श्रीगंगासिंहजीनें हजारो रुपये खर्च कर ब्राह्मणोसे अनुष्ठान कराया वूद भी नहीं गिरी तव इनको वुलवाया। इन्होंने कहा यदि गुरुदेव करेगा तो भादवा वदी दशमीसे वर्षा शुरू होगी और सच्च ही उस दिनसे ही मेघनें जय जयकार कर दिया। यह वात १९६३ सम्वत्की है। ऐसे २ प्रभावशाली मन्त्रवादी सर्व शास्त्रवेत्ता यती अभी विद्यमान है खरतर गच्छमें।

७४ श्री जिन चंद्रसूरिः इनकी अवज्ञा करनेवालोंको महाराजने स्फुर माया तूं कोढिया होगा, सो सच्च होगया। पं. अनोपचन्द जतीको, शैतान लगा था, सो विना पढे अनेक भाषा वोलता था। वहुत लोगोंने इलाज किये परंतु अच्छा नहीं हुआ गुरूने एक तमाचा मारा सो उसी वख्त छोड़कर वोला जाता हूं। उसी वक्त वह होशमें आया। वह

यती विद्यमान बीकानेरमें है। ऐसें प्रभावीक गुरु होगये।

७४ श्रीजिनकीर्तिसूरिःतत्पद

७५ जंगमयुग प्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीजिन चारित्र सूरीश्वर विजयते, क्षेमधाड शाखामें उपाध्याय श्रीनेममूर्ति जीगणिः। वाचक विनय भद्रजीगणिः उपाध्यायक्षेम माणिक्यजीगणिः तथा पंडित राजसिंहजी गणिः इन्होंकों दादा साहिब अर्स पर्स थें जिन्होंने छत्रपती थारे पायनमें इत्यादि दरपूनम एक स्तवन सीरणी गुरूकी करते एकाशन हमेश करते वदन कमलवाणी विमल इत्यादि अनेक छन्द महाकवी पट् शास्त्र वेत्ता हुए उन दोनोंके शिष्य पडित लब्धि हर्षजी सवियाण गांममे ठाकुरके पूजनीय हुए उन्होंकेशिष्यछठेमासलोचपंच तिथी उपवास उभय कालप्रतिक्रमणवालब्रम्हचारी सर्व आरम्भके त्यागी सवाक्रोड़ परमेष्ठी मंत्रके स्मारक प्रसिद्ध नांम श्रीसाधुजी दीक्षानाम धर्मशीलगणिः उन्होंके बड़े शिष्य हेमप्रिय गणिः लघुपडित श्रीकुशल निधान मुनिके शिष्य उपाध्याय श्रीरामलाल (ऋद्धिसार गणिः) ने इस ग्रंथका संग्रह करा जो कुछ जादह कम लिखणेमें आया होय तो मिथ्यादुस्कृत, ये ग्रंथ सर्व विवेकी भव्य जीवोंको आनन्द मंगल सुख वृद्धि करो श्रीरस्तुकल्याण मस्तु लेखकपाठकयोशुभं (दोहा) विक्रम संवत् उगण शत, छासठ ऊपर मान, श्रीविक्रमपुर नग्रमें गंग-सिंह राजान। १ । खरतर भट्टारकपती; श्रीजिन कीर्तिसूरिन्द। पट्ट प्रभाकर जय रहो, काटो कुमति फंद । २ । गुण अनेक जगमें अचल, मंत्र विसारद पुरि, जापजपे उपगारपर श्री जिनचारित्रसूरिः३ धर्मशील गुरूराजके मुनिवर कुशल निधान । युक्ति वारिधिः गुण प्रगट, उपाध्याय पदथान । ४ । सग्रह कीनो ग्रंथको रामगणिः ऋद्धिसार । चार वर्णकी ख्यातको, समझोसवनरनार ५ विद्याशालासे सदा जैनधर्म उद्योत, । पढसुणकर श्रीसंघके, नित २ मंगल जोत । ६ । इतिश्रीओसवंसमुक्तावलि श्रावकाचार कुलदर्पण संम्पूर्णम्॥